प्रस्तावना ।



हिन्दीभाषामें प्रवास और इतिहास—सम्बन्धी पुस्तकोंका बहुत अभाव है । यदि सम्पूर्ण हिन्दीसाहित्य भाण्डारकी खोज की जाय तो इन विषयोंकी बहुत थोड़ी पुस्तकें देख पड़ेंगी । अतएव इस अभाव की पूर्त्तिके लिये उद्योग करना अत्यन्त आवश्यक है । वर्त्तमान पुस्तकके द्वारा हमारे पाठकगण फ्रैंक्विस बर्नियर साहब के सन् १६५६ से लेकर १६६८ ई० तक भारतकी यात्रा करने और मुगल-राज्यकी तात्कालिक दशाका बहुत कुछ हाल जान सकेंगे । बर्नियर साहब फ्रान्स देशके एक प्रसिद्ध डाक्टर थे । उनकी लिखी बात इतनी सत्य और विश्वसनीय समझी जाती है कि उनकी यात्रापुस्तकको लोग इतिहास मानकर बड़े आदरके साथ ग्रहण करते हैं । आज हम उसी पुस्तकका अनुवाद हिन्दीके स्वदेशहितैषी और इतिहासप्रेमी पाठकोंकी सेवामें उपस्थित करते हैं । आशा है कि यह अनुवाद गुणज्ञ पाठकोंके आश्रयका पात्र होगा ।

काशी
१—१०—०५ } निवेदक—गंगाप्रसाद गुप्त ।

मुख्य नगर गोंडुरको जाऊं, परंतु इनसे मुझे यह समाचार मिला कि राज माता के कपट प्रबन्ध के कारण जिस दिनसे गोवासे जासूस पादरी को अपने साथ लाने वाले पार्चुगीज लोग मारे गये अथवा देशसे बाहर कर दिये गये उस दिनसे रोमन केथलिक वालोंका वहां उतरना सलामती की बात नहीं है। और वास्तवमें कुछ समय पूर्व इस राज्यमें प्रवेश करने का प्रयत्न करने के अपराध में एक अभागा कृस्तान साधु सवाकीनमें बध भी किया गया था। मैंने सोचा कि यदि मै आर्मीनियन अथवा ग्रीक जैसा भेष बनाकर चलूंगा तो भय कुछ कम रहेगा और सम्भव है कि बादशाह मेरी योगता और कामोंको देखकर मुझे कुछ जमीन देगा जिसे यदि मैं उन्हे खरीद सकूगा तो गुलाम जोतें बोवें गे। परन्तु साथही यह खटका हुआ कि इस वेषमें मुझे वहां बिवाह भी अवश्य ही कर लेना पड़ेगा, जैसे कि एक योरपीय सन्यासीको जिसने अपने को ग्रीकके बादशाहका वैद्य प्रसिद्ध किया था ऐसा करनेके लिये विवस होना पड़ा था। और फिर इस अवस्था में मुझे इस देशके छोड़नेकी आशा एकबारही परित्याग करनी पड़ेगी।

मुगलबंश

इस तथा अन्य कई कारणोंसे जिनका हाल मैं आगे चलकर कहूंगा। मैंने गोंडुर जानेका बिचार परित्याग किया और एक जहाज की सवारी ली जो हिन्दुस्थानको जाताथा और बाईस दिनमें बाबुल मन्दबकी समुद्रधुनीके मार्गसे सूरतमें जो मुगलराज्य भारतवर्षका एक बन्दरगाह है आ पहुँचा। यहा पहुँचकर मुझे मालूम हुआ कि वर्त्तमान बादशाहका नाम शाहजहां है, जो जहांगीरका पुत्र और अकबर [illegible] है। अकबरका पिता हुमायूं था। शाहजहांके पूर्व-

और देहली हैं। वहां जाते समय रास्तेमें लुटेरोंके द्वारा लूटे जाने तथा सात सप्ताहकी यात्राके खर्चके कारण मैं तंगीमें आ गया। इससे मुगलराज्यमें मुझे नौकरी करनी पड़ी और आठ वर्ष तक मुगलोंसे मेरा संसर्ग रहा। पहले मैं राज्यका हकीम नियुत हुआ परंतु थोड़ही दिनोंमें भाग्यवशात् दानिशमन्दखां नामक एशिया खंड के एकश्रेष्ट विद्वान्का मुझेआश्रय मिला जोपहले मीरबख्सीअथवा घोड़ोंके सरदारके पदपर नियुक्त था परन्तु इस समय मुगल दरबार का सबसे जबर्दस्त और प्रतिष्ठित उमरा हो गया था।

शाजहांके बड़े बेटेका नाम दाराशिकोह, दूसरेका सुलतान शुजा, तीसरेकाऔरंगजेब, चौथेका मुरादबख्श और दोनों पुत्रियोंमें बड़ीका नाम बेगम साहब और छोटीका रौशनआरा बेगमहै।

इस देशमें राजकुटुम्बके लोगोका ऐसाही नाम रखनेकी रीति है जो राज्यका बड़प्पन प्रगट करे। इसालिए शाहजहॉकी बेगमका नाम जो अपनी सुन्दरता के लिये जगतप्रसिद्ध थी ताजमहल था। ताजमहलकी दर्शनीय समाधिके सामने जो आगरे में है इजिप्ट वा मिश्रदेशके बड़े बड़े पिरामिड जो संसारके सात अद्भुत स्थानों में समझे जाते हैं अनगढ़ पत्थरोंके ढेर और बेढंगे पथरीले ढोकोंके समान मालुम होते हैं। वैसेही जहांगीरकी बेगमका नाम पहले नूर-महल था पश्चात् नूरजहां बेगम हुआ। इसने बहुत दिनोंतक अपने पतिका इस अवस्थामें जबकि वह सब कामकाज छोड़कर मद्यपान और विलासितामें लिप्त हो गयाथा राज्यको स्वयं सम्हाल लियाथा।

भारतवर्षमें जो ये बड़े बड़े और प्रतिष्ठित नाम राजकुटुम्बके लोगों और उमराके रखे जाते हैं और योरपकी भांति स्थान अथवा राज्यअधिकारका परिचय देनेवाले नाम नहीं रखे जाते इसका कारण यह है कि यहां सब जमीन बादशाहकी समझी जाती है। अतएव

कहा जाता है कि इन्हीं लोगोंकी संगतिके कारण मुसलमानी धर्मके प्रति उसका विश्वास कम होगया था। इस सम्बन्धमें आगे चलकर हिन्दुओंके धर्मके विषयमें लिखते समय मैं कुछ विस्तारके साथ लिखूंगा। कुछ कालतक उसने बुजी नामक एक पादरीकी शिक्षाभी बड़े ध्यानसे सुनी थी और उस शिक्षाकी सत्यता पर उसे कुछ कुछ विश्वास भी उत्पन्न होने लगा था। इतना होने पर भी लोग ऐसा कहते हैं कि असलमें दारा नास्तिक था और ये दिखाऊ बातें केवल कौतुक और मनोविनोद के लिये था। कुछ लोगोंका यह भी कथन है कि वह जो कभी ईसाईपन दिखाता उसका यह कारणहै कि ईसाई लोग जो उसके तोपखानेमें नौकर थे और जिनकी संख्या बहुत थी उसे चाहें और हिन्दूपन प्रगट करनेसे उसका यह अभिप्राय था कि जिसमें राज्यके प्रतिष्ठित राजाओं और सरदारोंकी वह प्रीति सम्पादन कर सके, ताकि काम पड़ने पर दोनों जातिके लोग उसकी सहायता करें। परन्तु इन दो तीन धर्मोंकेबीचमें पड़ कर वह न केवल अपनी युक्तियोंमें विफलही हुआ बल्कि अन्तमें उसे अपने प्राणोंसे भी हाथ धोना पड़ा। इस इतिहाससे आगे चलकर पाठकों को मालूम होगाकि औरंगजेबने उसे काफिर अथवा धर्मद्रोही और धर्म्म-रहित कहकर ही उसका प्राण लिया।

सुलतान शुजा—शाहजहांका दूसरापुत्र सुलतान शुजा बहुत सी बातोंमें अपने बड़ेभाई दारासे मिलता-जुलताथा, परन्तु उसकी अपेक्षा यह अधिक विनयी और दृढ़ विचारका मनुष्य था। सामान्य चरित्र और बोलचालमें भी यह दारासे बढ़ चढ़ कर था। किसी प्रकारका कपट प्रबंध भी यह बड़ी दक्षतासे कर लेता। गुप्तरूपसेधन देकरबहुतसे रईसोंउमरा और (जोधपुर-नरेश) महाराजयशवन्तसिंह जैसे बड़े बड़े प्रतिष्ठित राजाओंको अपना मित्र बना लेना भी यह ... इतने गुण होने पर भी शुजा जो आनंद और

सुलतान शुजाने जो शीया धर्म ग्रहण किया था इसमें उसकी चतुराई थी। शाहजहां बादशाह के दरबारमें उस समय अधिकतर इसी धर्मके लोग बड़े बड़े पदोंके अधिकारी थे और दरबारमें उनका बड़ा मान था। शुजाकी आशा थी कि काम पड़ने पर इन लोगोंसे बहुत कुछ सहायता मिलेगी और लाभ पहुँचेगा।

औरंगजेब—तीसरा भाई औरंगजेब यद्यपि दाराके समान शिष्ट और उदार मनका नहीं था तौभी उसकी अपेक्षा अधिक दृढ़ विचारका और ऐसे मनुष्योंके चुननेमें अधिक चतुर था जो उसके कामोंको भक्ति और योग्यताके साथ पूरा कर सकते। उसके इनाम आदि बाँटनेमें यह विशेषता थी कि वह केवल उन्हीं लोगोंको खूब इनाम देता जिनको प्रसन्न करना या प्रसन्न रखना उसके लिये अत्यन्त आवश्यक होता। वह अपने भेदको बहुत छिपाकर रखता। धूर्त्तता और कपटता उसमें कूट कूट कर भरी थी। जिस समय वह अपने पिताके दरबारमे जाता उस समय जो भक्ति उसमें जरा भी न होती उसके भी दिखाने का प्रयत्न करता और सांसारिक सुख वैभव को धिक्कार बताता परन्तु भीतरही भीतर भविष्यमें ऊंचा पद पाने का मार्ग तैयार करता जाता। यहांतक कि जब उसे दक्षिणकी सूबेदारी दी गई तबभी उसने बहुतोंसे यही कहा कि "अगर मुझे तर्क दुनियां और दरवेशीकी इजाजत मिलजाती तो मैं जियादा खुश होता, क्योंकि मेरी दिली तमन्ना भी यही था कि बाकी जिन्दगी पारसाई और इबादतही मेंसर्फ करता। अफकारे दुनियावी और उमूर सल्तनत की जिम्मेदारीमें पड़ना मुझे नामरगूब और नापसन्द है।" यद्यपि औरंगजेबका समस्त जीवन धुर्तता और कपटाचरण मेंही बीता तथापि वह ऐसी बुधिमानीके साथ काम करता कि उसके भाई दारा शिकोहको छोड़ दरबारके सभी लोग उसकी चतुराईके समझनेमें धोखा खाते। शाहजहां बादशाहकेऔरंजेबके विषयमें ऊंचे विचार

बातोंमें इतना अधिक अधिकार रहना और बादशाहके मिजाजकी बागडोर उसके हाथमें होना तथा राज्यके बड़े और गम्भीर विषयों में भी उसका पूरा दबाव माना जाना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। बादशाहकी ओरसे मिलनेवाली बंधी हुई वार्षिक रकममेंसे और अपने अधिकारमें सौंपे हुए सहस्त्रों राजकीय कामोंसे तथा चारों ओरसे आने वाली बहुमुल्य भेंटोंसे बेगम साहबने बहुत धन इकट्ठा कर लिया था। दारा अपने कामोंमें सफता प्राप्त करता सुखी होता और बादशाहकी उसपर अधिक प्रीति रहती, इसका यह कारण था कि बेगमसाहब उसके कामोंमें बराबर भाग लेती, उसका हित चाहती और खुल्लमखुल्ला लोगोंपर अपनेको उसका पक्षपात करने वाली प्रगट करती। बेगमसाहबकी कृपा बढ़ानेका दाराभी निरन्तर यत्न करता और यहभी कहा जाता है कि उसने उससे प्रतिज्ञाभीकी थी कि जब मैं बादशाह जो जाऊंगा तब तुरन्त तुझको शादी करने की अनुमति दे दूंगा। किन्तु दाराकी यह प्रतिज्ञा हिन्दुस्तानके बाद शाहोंकी नीतिके विरुद्धथी जिसके अनुसार शाहजादियोंका विवाह बिल्कुल अनुचित माना गया है। इसका पहला कारण तो यही है कि कोई व्यक्ति राजकुटुम्बका सम्बन्धी होनेके योग्य नहीं समझा जाता, दूसरा यह कि इस बातका खटका रहता है कि कहीं शाहजादीका पति किसी समय बलवान होकर राज्यलोभी न बनजाय और राज्य को अपने अधिकारमें कर लेनेका उद्योग न करने लग जाय।

बेगम साहबकी प्रेमसम्बन्धी दो बातें यहांपर लिखकर मैं आशा करता हूं कि इसके पढ़नेवाले मुझपर किसी प्रकारका सन्देह नहीं करेंगे। मैं जो कुछ लिखता हूं वह एतिहासिक है और हिन्दुस्तानकी रीति नीतिका पूरा पूरा विवरण लिखना मेरा मुख्य उद्देश्य है। प्रेमका जैसा भयंकर परिणाम एसियामें होता है वैसा योरपमें नहीं होता। फ्रांसदेशमें ऐसीप्रेम घटनाओंको लोग हँसी और मनोविनोद

था। आराम करते हैं और [illegible] [illegible]

[illegible]

ऐसी बातोंका बड़ा ख्याल और [illegible] नहीं होता नहीं तो

बहुत बुरी दशा देख पड़ती है।

शाहजादी बेगम साहब महलके अन्दर रहती और दूसरी स्त्रियोंकी तरह उसपर भी पहरा रहता किन्तु इतना होनेपर भी कहते हैं कि किसी तरह दासियोंसे उसके पास एक नवयुवकका आना जाना आरम्भ हो गया जो यद्यपि कोई ऊंचे दर्जेका मनुष्य नहीं था तथापि सुन्दर बहुत था। परन्तु ऐसी बातोंका बेगमकी सहेलियों और बांदियोंसे छिपा रहना सम्भव नहीं था। जब इस बातकी खबर शाहजहांको लगी (कि उसकी बड़ी बेटी छिपे छिपे किसी युवा पुरुषसे मिलती है) तब उसने धोखे और कुसमयमें महलमें जाकर इस बातकी जांच करनेका निश्चय किया। एक दिन बादशाह अक-स्मात् ऐसे समय महलमें चला गया और उसके आनेकी खबर इतने पीछे बेगम को मालूम हुई कि अपने प्रेमीके छिपानेका विचार करने तकका उसे अवकास नहीं मिला। लाचार एक पानी गर्म करनेकी बहुत बड़ी देग जो रखी हुई थी उसीमें उसने उस घबराये हुए प्रेमी को लिटा दिया। जिस समय बादशाह अन्दर आया उस समय उसके चेहरेपर क्रोध और आश्चर्यका चिन्ह नही था, बल्कि सदा की भांति आकर उसने बेगमसे अनेक प्रकारकी बातें करना आरम्भ किया। कुछ देरके बाद उसने कहा " मालूम होता है तुमने आज हस्व-मामूल गुस्ल नहीं किया है। हम्माम करना चाहिये।" इतना कहकर उसने ख्वाजासराओंको देगके नीचे आग बालनेकी आज्ञा दी। फिर जबतक उसे इसबातका निश्चयनही होगयाकि वहव्यक्ति (अर्थात् शाहजादी बेगमका प्रेमी) जलकर प्राण रहित नही होगया तबतक वह वहांसे नही हटा।

कुछ दिनोंके बाद शाहजादी एक दूसरे पुरुषके प्रेमजालमें उलझ गई और अन्तमे वह भी ऐसी ही शोकजनक दशाको प्राप्त हुआ। अबकी उसने नजरखाँ नामक एक ईरानी नवयुवकको जोकि सुन्दरतामे प्रसिद्ध होनेके अतिरिक्त सुयोग्य बुद्धिमान् साहसी और धीर पुरुष था और जिसको दरबारके सबलोग बहुत मानते थे अपने खानसमाँके पदके लिये पसन्द किया। औरंगजेबका मामू शाइस्तखाँ इसकी बहुत प्रशंसा करता यहांतककि एकादिनभरे दरबारमे उसने यह प्रस्ताव कर डाला कि "यह ईरानी शख्स इस काबिल है कि बेगमसाहबकी शादी इससे कर दी जावे। शाहजहांको यह बात बहुत बुरी मालूम हुई। उसे पहलेहीसे कुछ कुछ सन्देह था कि नजरखाँ और शाहजादीमे परस्पर कुछ अनुचित सम्बन्ध होगया है। अब इस नवीन प्रस्तावको सुनकर वह सन्देह औरभी पक्का होगया फिर तो उसने उस नवयुवकको इस संसारसे विदा करनेके लिये कोई विशेष उपाय या सोच विचार करनेकी आवश्यकता नहीं समझी, वरन् दरबारे आममें उसे बुलाकर कृपा दिखानेकी रीतिपर अपने हाथसे उसे पानका बीड़ा खानेको दिया। पान लेनेके समय युवकके मनमें किसी प्रकारका खटका वा सन्देह नहीं हुआ क्योंकि इस राज्यमें पान देना बड़े मान और प्रतिष्टाकी बात है। अतएव उसने बीड़ा लेकर मुँहमे रख लिया। इस बातका उसे कुछभी ध्यान नहीं था कि इस हँसमुख बादशाहने धोखेसे उसे विष दे दिया है वरञ्च यह सोचकर कि अब बादशाहकी कृपादृष्टि होनेसे दिनपर दिन उन्नति होती जायगी वह हर्षपूर्वक पालकीपर सवार होकर अपने घरकी ओर चला, परन्तु विषका असर बहुत कड़ा होनेके कारण अपने घर पहुँचनेसे पहलेही वह दूसरे घर पहुंच गया।

रौशनआरा बेगम--शाहजहांकी छोटीबेटी रौशनआरा बेगम सुन्दरतामे अपनी बड़ी बहिनसे कमथी और बुद्धिमतामे भी

भाइयोंका राज्यलोभ-लड़ाईसे कईवर्ष पहले शाहजहांका चित्त अपने उपद्रवी स्वभावके पुत्रोंसे दुःखित और भयभीत हो गया था। यद्यपि उसके चारों पुत्र ब्याहे हुए और बालिग थे तोभी वे आपसमें बन्धुभाव नहीं रखते थे वरन् राज्यके लोभसे एक दूसरे के कट्टर शत्रु हो रहे थे यहांतक कि दरबारमें शाहजादोंके भिन्न भिन्न पक्षपातियोंके भी भिन्न भिन्न दल होगये थे। शाहजहां स्वयं अपने प्राणोंके भयसे सदा कांपा करता और भविष्यमें आनेवाली आपत्तियोंकी चिन्तामें डूबा रहता। उसने अपने पुत्रोंको ग्वालियरके सुदृढ़ और दुर्भेद्य पहाड़ी किलेमें जहां स्वच्छ जल और रसद आदिकी कमी नहीं थी और जिसमें पहले भी अनेक बार राजकुटुम्बके लोग नजर बन्द रखे जा चुके थे प्रसन्नतापूर्वक कैद कर दिया होता, परन्तु सोच विचार कर अन्तमें उसने इस बातको अपने मनमें मान लिया कि वास्तवमें अब वे इतने सबल होगये हैं कि उनकेसाथ ऐसा बरताव नहीं किया जा सकता। बादशाहको निरन्तर इस बातका भय लगा रहता है कि यदि ये परस्पर लड़ गये तो या तो अपने लिये अलग अलग स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लेंगे—या राजधानी मेंही मार काट मचाकर उसे एक घोर संग्रामकी रंगभूमि बना डालेंगे। अतएव इन भविष्यमें आनेवाली आपत्तियों और दुःखोंसे बचनेके लिये उसने-

अपने पुत्रोंको चार सुदूर प्रदेशोंका अधिकारी बनाना निश्चित किया। निदान अपने विचारके अनुसार शुजाको बंगाले, औरंगजेबको दाक्षिण, मुरादको गुजरात और दाराको मुलतान एवं काबुलका हाकिम बनाया। सुलतान शुजा, औरंगजेब और मुरादबख्श तुरन्त अपने अपने प्रान्तको चले गये और वहां जाकर उन्होंने स्वतन्त्र नरेशोंकी भांति रहना आरम्भ किया। इस प्रकार उनकी राज्य-लोलुपता शान्त हुई। वे राज्यकी आमदनी स्वयं अपने कामोंमें खर्च करने और देशियों तथा विदेशियों पर रोब रखनेके बहाने बड़ी बड़ी सेनाएँ इकट्ठी करने लगे। परन्तु दाराने जो अपने सब भाइयोंमें बड़ा था और जिसे इस बातकी आशा थी कि शाहजहांके बाद गद्दी का अधिकार मुझीको मिलेगा अपने पिताका दरबार नहीं छोड़ा। शाहजहांनेभी उसे राज्य-सम्बन्धी कामोंमें अनेक अधिकार प्रदानकर तथा दरबारमें अपने सिंहासनके पासही एक दूसरे नीचे सिंहासन पर बैठनेकी अनुमति देकर उसकी आशाओंको उत्तेजना दी। जिस समय दरबार लगता और पिता पुत्र दोनों अपने अपने आसन पर विराजमान होते उस समय ऐसा जान पड़ता कि मानों दो दो नरेश एकही राज्यका शासन कर रहे हैं। इन बातोंसे यद्यपि प्रगटमें यही मालूम होता है कि स्वयं बादशाह दाराकी आशाओंको पुष्ट करता परन्तु इस बातका पुरा प्रमाण तैयार है कि यद्यपि दारा अपने पिताको बहुत चाहता और उसका अदब मानता किन्तु बादशाह उसके प्रति अपने मनमें कपट रखता। उसे सदा विषदिये जानेकी चिन्ता लगी रहती और ऐसा कहा जाता है कि औरंगजेबसे जिसके विषयमें उसके विचार ऐसे ऊंचे थे कि यह लड़का राज्य-शासनके लिये बहुत ही योग्य और उपयुक्त है वह छिपे छिपे पत्र व्यवहार भी किया करता।

इस इतिहासकी उन बातोंको अच्छी तरह समझानेके लिये जो आगे आनेवाली हैं मैंने शाहजहां और उसके पुत्रोंका संक्षिप्त वृत्तान्त

[illegible] और [illegible] आवश्यक समझा. इसी प्रकार उनको दोनों व्यक्तियोंका भी कुछ हाल दे देना उचित हुआ क्यों कि ये दोनों भी इन भयंकर घटनाओंमें बहुत बड़ा सम्बन्ध रखती है। कदाचित् लोग इस बातको न जानते हों और अपनी अज्ञानताके कारण उनकी निन्दा और उनके विषयमें शंकाएं करते हों परन्तु हिन्दुस्तान कुस्तुनतुनियां और एशियाके अन्यान्य देशोंकी बहुत बड़ी बड़ी घटनाएँ प्राय औरतों हीके द्वारा हो जाया करती है।

भाइयोंमें संग्राम आरम्भ होनेसे पहले औरंगजेब शाह गोलकुंडा और उसके मंत्री मीरजुमलासे सम्बन्ध रखनेवाली जो घटनाएं हुई उनका कुछ हाल यहां पर लिख देनेसे आशा है कि इस पुस्तकका आगेका वृत्तान्त समझनेमें पाठकोंको अधिक सुभीता जान पड़ेगा और यह भी मालूम हो जावेगा कि शाहजहांके बाद हिन्दुस्तानका बादशाह होनेवाला तथा इस इतिहासकका नायक औरंगजेब कैसा था और उसकी युक्ति तथा रीति नीति किस ढंगकी थी। मीरजुमला ने जिस भांति शाहजहांके तीसरे पुत्र औरंगजेबकी क्षमता और सर्वो-परिताका पाया जमाया उसका विवरण यों है—

मीर जुमला—जिस समय औरंगजेबको दक्षिणकी सूबेदारी दी गई थी उस समय मीरजुमला नामक एक व्यक्ति शाह गोल कुण्डाका मंत्री और उसकी सारी सेनाका प्रधान अध्यक्ष था। मीरजुमलाका जन्म ईरान देशमें हुआ था और भारतवर्षमें आकर उसने बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की थी। यह व्यक्ति उच्च कुलका न होने पर भी बुद्धिमान बहुत था। वह पूर्ण योद्धा और कामकाजमें विशेष निपुण था। उसके पास बहुत धन था, परन्तु यह धन उसने केवल गोलकुण्डा-नरेशका मन्त्री होनेके कारणसे नहीं इकट्ठा कर लिया था वरञ्च देश देशान्तरोंमें व्यापारकी फैलावट तथा हीरेकी खानोंके ठेकोंसे भी जो दूसरोंके नामोंसे ले रखे गये थे पैदा किया था। इन

खानोंकी खुदाई निरंतर इतने परिश्रमसे होती और उनसे इतनी अधिकताके साथ हीरे निकलते कि उनकी गिनती न की जा सकती। उनकी गणनाके लिये उसने यह नियम जारी कर रखा था कि हीरोंसे भरे बड़े बड़े टाटके बोरे गिन लिये जाया करते थे। उसकी राजनैतिक शक्ति भी बड़ी प्रबल थी, जैसा कि इस बातसे मालूम होगा कि गोलकुण्डा-नरेशका प्रधान सेनाध्यक्ष होनेके सिवा उसने खास अपने लिये अपने खर्चसे एक बहुत बड़ी सेना मय एक तोपखानेके जिसमें प्रायः ईसाई नौकर थे नियुक्त कर रखी थी। यहां पर यह भी कह देना आवश्यक जान पड़ता है कि कर्नाटक पर अधिकार करनेके बहाने उसने वहांके सब प्राचीन देवमन्दिरोंको लूट लिया और इस प्रकार अपनी सम्पत्तिको बहुत ऊँचे दर्जेको पहुँचा दिया था।

मीरजुलाको गोलकुण्डाका राजा अपने पाससे दूर कर देने अथवा मारडालनेका अवसर ढूँढ रहाथा। उसे स्वाभाविक रीतिसेही वजीरको देखकर डाह होती और एक आज्ञाकारी नौकर न समझकर वह उसे अपना भयंकर शत्रु समझता। इतना होने पर भी वजीरके शुभचिन्तकों और मित्रोंके डरसे जो सदा दरबारमें वर्त्तमान रहते वह अपना इरादा बहुत छिपाकर रखता। गोलकुण्डा-नरेशकी माकी उमर अधिक होगई थी तौभी अबतक वह बहुत सुन्दर थी। बादशाहको फर्दोंसे खबर मिली कि वजीर और उसकी मामें कुछ अनुचित सम्बंध पैदा हो गया है। इतना सुनतेही जो बात बहुत दिनोंसे उसके हृदयमें छिपी थी वह सहसा फूट पड़ी, उसने ठान लिया कि इस जबर्दस्त शत्रुको इस अपराधके लिये अवश्य दण्ड देना चाहिये।

इस समय वजीर कर्नाटकमें था परन्तु दरबारमें बड़े बड़े पदों पर उसके साथ उसकी स्त्रीके सम्बंधियों और मित्रोंके नियुक्त होनेके कारण इन आनेवाली आपत्तियोंकी खबर तुरन्त उसके कानोंतक पहुँच गई। इस धूर्त्त वजीरने पहली काररवाई तो यहकी कि अपने

एकबार इसे मुहम्मद अमीनखांको जो इस समय गोलकुण्डामें था लिखा कि "जिस तरह और जहांसे मुमकिन हो इस मुल्कसे अपने लड़के होनेकी जरूरत जाहिर करके तुम फौरन मेरे पास चले आओ।" परन्तु जब उसका पुत्र शाही सिपाहियोंके पहरेसे बचकर निकल न सका तब उसने एक दूसरी चाल चली। उसकी यह चाल ऐसी प्रबल थी कि जिसने गोलकुण्डा-नरेशको एकबार ही बर्बादीके किनारे पर पहुंचा दिया। सच है, जो बादशाह अपना भेद छिपा कर नहीं रख सकता वह अपने राज्यकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं हो सकता। वजीरकी दूसरी चाल यह थी कि उसने औरंगजेबको जो दक्षिणकी राजधानी दौलताबादमें था नीचे लिखे अनुसार एक पत्र लिखा—



"साहबे आलम,

"मैंने शाह गोलकुण्डा की बड़ी बड़ी खिदमतें की हैं कि जिनको तमाम जमाना जानता है और जिनके लिय उसे मेरा बहुतही ममनून होना चाहिये। मगर इतने पर भी वह मेरी और मेरे खान्दानकी बर्बादीकी फिक्रमें है। इसलिये मैं आपकी पनाह लेना और आपके हुजूरमें हाजिर होना चाहता हूं और इस दरख्वास्तकी कुबूलियतके शुक्रानेमें जिसकी पिजीराईकी आपकी जानिबसे कामिल उम्मीद है एक मन्सूबा अर्ज करता हूं जिसके जरियेसे आप ब आसानी बाद-

किला छोड़कर अपने सूबेको चले जाओ। इस समय गोलकुण्डाका दुर्ग भोजनके पदार्थ और युद्धकी सामग्री न होनेके कारण अपनी अन्तिम अवस्थाको पहुँच चुका था. परन्तु ऐसा अवसर पाकर भी लाचार होकर औरंगजेबको लौटना पड़ा।

औरंगजेबको विश्वास था कि दारा और बेगम साहबके आग्रह सेही बादशाहने यह आज्ञा जारी की है, कारण कि वे समझते होंगे कि यदि औरंगजेब गोलकुण्डा-नरेश पर विजय प्राप्त कर लेगा तो बहुतही बलवान् हो जायगा। परन्तु इतना होने पर भी उसने कुछ भी क्रोध न दिखाकर एकदम पिताकी आज्ञा मानली। दुर्गका मुहासरा छोड़ने से पहले चढ़ाई करने में जो व्यय हुआ था उसके बदले में उसने हरजाने की रीति पर गोलकुण्डा-नरेशसे बहुतसा द्रव्य प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त उससे इस बातकी प्रतिज्ञा कराई कि जिसमें मीरजुमलाको अपने कुटुम्ब और माल असबाबके सहित राज्यके बाहर हो जानेकी परवानगी दी जाय और भागनगर-राज्यके चाँदीके सिक्को पर शाहजहां बादशाहके शब्दकी छाप रहे। यह सब हो जानेके बाद राज्यकी बड़ी शाहजादीके साथ उसने अपने ज्येष्ट पुत्र सुलतान महमूद (मुहम्मद सुलतान ?) का विवाह किया और बादशाहसे इस बातका वचन भी ले लिया कि उक्त शाहजादा ही अबसे गोलकुण्डा-राज्यका उत्तराधिकारी समझा जायगा। शाहजादी के साथ साथ यौतुकमें उसने रामगढ़का दुर्ग भी मय उसके सब समानों के ले लिया।

औरंगजेब और मीरजुमला बहुत दिनोंतक एक साथ नहीं रहे तथापि उन दोनोंने साहसके बड़े बड़े काम किये। दौलताबादको लौटते समय रास्तेमे ही उन्होंने बीदरके दुर्गका जो बीजापुर-प्रदेशमें एक अत्यन्त दृढ़ स्थान है घेरकर जीत लिया। वहांसे दौलताबादमें आकर वे बड़े मित्रभावसे रहने लगे। इस बीचमें उन्होंने भविष्योन्नति

के, अनेक अपने अपने उपाय किये । औरंगज़ेब और मीरजुमलाकी मैत्री हिन्दुस्तानके इतिहासमें एक चिरस्मरणीय बात समझी जानेके योग्य है कारण कि औरंगज़ेबको जो कुछ महत्त्व प्रसिद्धि और पदवियां प्राप्त मिलीं वह इसीके अवलम्बसे मिलीं ।

दौलताबाद पहुंचनेपर मीरजुमलाने इस ढंगका पत्र-व्यवहार आरम्भ किया कि शाहजहां बादशाहकी ओरसे उसके लिये निमंत्रण पर निमन्त्रण आने लगे । अन्तमें वह आगरेको गया और इस आशा से अपने साथ भेंट देनेकी बहुतसी वस्तुएं लेता गया कि जिसमें बादशाह उसके उभारनेसे आकर गोलकुंडा और बीजापुर राज्यों तथा पुर्तगालोंके साथ युद्ध करने पर उद्यत हो । यह वही अवसर था जब कि उसने कोहेनूर नामक वह अद्वितीय हीरा बादशाहको उपहारमें दिया था जो अपनी सुन्दरता बहुमूल्यता और वृहदाकार के लिये संसार भरमें प्रसिद्ध है । उसने बादशाहको समझाया कि कन्दहारके कंकड़ पत्थरोंकी अपेक्षा जहां आप चढ़ाई करने वाले हैं गोलकुंडा राज्यपर जिसकी खानोंमे बड़े बड़े बहुमूल्य रत्न निकलते है अधिकार कर लेनेसे अनेक लाभ हैं । उसने यह भी कहा कि आप को गोलकुण्डा राज्यके प्रति अपनी सैनिक शक्ति उस समय तक बराबर काममें लाना चाहिये जबतक आप समस्त देश कन्याकुमारी तक अपने अधीन न करलें ।

आश्चर्य नही कि मीरजुमलाकी बातोंने शाहजहांके चित्त पर बहुत असर किया हो और इसी कारण उसने उसकी राय पसन्द की हो, परन्तु बहुतोंका यह कथन है कि असलमें शाहजहांने दारा की बराबर बढ़ती ही जानेवाली उद्धता व बेअदबीको रोकनेके लिये ही चढ़ाईके निमित्त एक नई सेना नियुक्त की और मीरजुमलाकी सम्मति मान ली ।

अस्तु जो हो, कारण कुछ भी हो परन्तु बादशाहने इस बातका दृढ निश्चय कर लिया कि मीरजुमलाकी अध्यक्षतामें एक सेना दक्षिणाकी ओर अवश्य भेजी जाय।

दारासे शाहजहांके रुष्ट होनेका यह कारणथा कि उसने अपनी सर्वोपरिता और गौरव बनानेके लिये छिपे प्रपंच रचनेके उद्योग किये थे बल्कि एक ऐसा काम किया था जिसके कारण शाहजहां उससे बहुतही घृणा और भय करने लगा था। उसके इस अपराध को वह क्षमा नहीं कर सकता था। दाराका वह अपराध यह था कि उसने वजीर सआदुल्लाखांको जिसे शाहजहां एशिया भर में एक प्रवीण और सुयोग्य मन्त्री समझता और जिससे वह इतना स्नेह रखता कि समस्त दरबार के लोग इस बातको खूब जानते मरवा डाला था। मालूम नहीं वह कौनसा अपराधथा जिसके कारण दराने वजीर सआदुल्लाको बध किये जानेके योग्य समझा। कदाचित् उसने यह समझा होगा कि बादशाहकी मृत्यु होजाने पर अपनी शक्तिके कारण यह बात उसके अधिकारमें होगी कि वह जिसे चाहे उसे राज्यासन पर बिठादे अथवा बादशाहका ताज शुजाके सिर पर रख दे जिसका वह पक्षपाती जान पड़ता है। यह भी कहा जाता है कि सआदुल्लाखां हिन्दुस्तानी था अतएव दरबार के इरानियोंको देखकर उसे ईर्षा होती थी। दाराके उसपर क्रुद्ध होनेका यह भी एक कारण हो सकता है, क्योंकि लोगोंने ऐसी गप उड़ा रखी थी कि बादशाहके देहान्तके पश्चात् वह मुगलोंके हाथसे गद्दीका अधिकार छीन लेनेको है। कुछ लोग कहते थे कि वजीर स्वयं अथवा अपने पुत्रको राज्यका अधिकारी बनाना चाहता है और कुछकी यह राय थी कि वह पठानोंको राज्यका स्वामी बनाने के बिचारमें है। इस गपकी पुष्टि के लिये यह बात गढ़ी गई थी कि उसकी स्त्री पठानी है और अपने कामोंमें सहायता लेनेके लिये उसने

छोटे छोटे स्थानोंमें पठान सिपाहियोंकी सेनायें नियुक्त कर रखी हैं ।

दारा भलीभांति जानता था कि यह बड़ी सेना जो दक्षिणको भेजी जाती है औरंगजेबका बल बढ़ानेके लियेही जा रही है, अतएव उसने अनेकयुक्ति-प्रयुक्ति और वादविवादसे जहांतक उससे बनसका बादशाहके इस विचारको रोकना चाहा, परन्तु जब उसने देखा कि इस विचारका रोकना किसी प्रकार सम्भव नहीं है तब उसने नीचे लिखे अनुसार शर्तें उपस्थित कीं—

१—यह कि औरंगजेब इन बातोंमें किसी प्रकार हस्तक्षेप न करे । २—कि वह दौलताबादसे बाहर न निकले । ३—यह कि उसे जिस प्रदेशका अधिकार प्रदान किया गया है वह उसीके प्रबन्धमें लगा रहे, इस युद्धसे उसका कोई सम्बन्ध न रहे । ४—यह कि सेनाकी अध्यक्षताका सम्पूर्ण अधिकार केवल मीरजुमलाकेही हाथमें रहे परन्तु वह अपने सब आत्मीय सम्बन्धियों और बालबच्चोंको अपनी विश्वस्तताके लिये शरीर-बन्धककी रीति पर देहलीमें छोड़ जाय ।

यह पिछली बात यद्यपि मीरजुमलाको एकदम नापसन्द थी परन्तु शाहजहांने उसे यह समझा कर सन्तुष्ट कर लिया कि यह केवल दाराको प्रसन्न रखने और उसका सन्देह मिटानेके लियेही है, तुम्हारे बालबच्चे बहुत शीघ्र तुमसे जा मिलेंगे । निदान मीरजुमलाने उस सुन्दर सेनाका अध्यक्ष बनकर दक्षिणकी ओर प्रस्थान किया और विना कुछ विलम्ब किये वहांसे कूच करके वह बीजापुर प्रदेशमें पहुँच गया । यहां आतेही उसने कल्यानी नामक दुर्गको जो (बीदरसे ३० माल दक्षिणकी ओर) एक बहुतही दृढ स्थान है घेर लिया ।

इस समय जब कि देशकी ऐसी दशा थी शाहजहांकी उमरसत्तर वर्षके पार हो चुकी थी और वह ऐसी बीमारीमें फँस गयाथा जिसकी अवस्थाका वर्णन करना उचित नहीं है । इतनाही कहना बहुत

होगा कि ऐसे वृद्धको ऐसे खटपटमें पड़ना कदापि योग्य नहीं था, वरन् बची हुई शारीरिक शक्तिको नष्ट न करके सावधानीके साथ उसकी रक्षा करना उचित था ।

भाइयोंमें युद्ध—बादशाहकी इस बीमारीके कारण राज्य भरमें विशेष भय और घबराहट फैलगई । दाराने राज्यके प्रधान नगर देहली और आगरेमें बड़ी बड़ी सेनाएँ इकट्ठी की । बंगाले में शुजाने भी ऐसीही तैयारीयाँ आरम्भ की । उधर दक्षिण और गुजरातमें औरंगज़ेब तथा मुरादबख्शने भी समर-सज्जासे इस भांति अपनेको सज्जित किया जिससे उनके विचार साफ प्रगट होते थे । चारों भाइयोंने हर ओरसे अपने मित्रों और सहायकोंको बुला बुलाकर एकत्रित किया, इधर उधर पत्र भेजे, बड़ी बड़ी प्रतिज्ञाएँकीं और भांति भांतिकी युक्तियां और उपाय करने आरम्भ किये । यद्यपि दाराने उनमेंसे कुछपत्र पकड़कर पिताको दिखाये, अपने भाइयों की खूब निन्दाकी और (उसकी बहन) बेगम साहबने भी अवसर देखकर बहुत लगाव बुझाव किया, परन्तु बादसाहको दारापर जरा भी विश्वास नहीं हुआ, यहांतक कि उसकी ओरसे उसे इस बातका पूरा सन्देह था कि वह उसे विष दिलवानेकी चेष्टा कर रहा है और इस कारण वह खाने पीनेके समय बहुत सचेत और सावधान रहता था, बल्कि यह भी कहा जाता है कि उसने औरंगजेबसेभी कुछपत्र व्यवहार किया था जिसका समाचार पा और क्रोधमें आकर दारा ने पिताको बहुत धमकाया भी था । इस बीचमें बादशाहकी बीमारी इतनी बढ़ी कि उसके मरनेकी खबर उड़ गई और सारे दरबारमें उथल पुथल मचगया, आगरेके निवासियोंमें इतना भय समाया कि कई दिनतक बाजारोंमें हड़तालरही, चारों राजकुमारोंने खुलेआम यह बात प्रगट करदी कि अब केवल तलवार हमलोगोंकी इच्छाओं का निर्णय करेगी । वास्तवमें अब उनको उनके इस इरादेसे रोकना

ओर बढ़ा जिस समय शुजा बंगालेसे चला था। इसे भी दारा और शाहजहांकी ओरसे लौट जानेका आदेश हुआ जिसमें दाराने तो यहांतक लिख दिया कि 'अगर तुम दक्खिनसे हटोगे तो सजा पाओगे।" परन्तु शुजाके भांति इसने भी वही बहाना करके पत्रका उत्तर भेज दिया। औरंगजेबकी आय बहुत अधिक नहीं थी और सेनाभी उसके अधीन औरोंकी अपेक्षा कमथी इसलिये जो काम सामरिक बलसे नहीं हो सकता था उसे उसने बुद्धिबलसे करनेका विचार किया। मुरादबख्श और मीर जुमला ही दो ऐसे व्यक्ति थे जो तुरन्त उसकी चालके जालमें फंस सकते थे। अतएव उसने मुरादको नीचे लिखे अनुसार एकपत्र भेजा,—

"प्यारे भाई, इस बातकी याद दिलानेकी कोई जरूरत नहीं कि उमूर सल्तनतकी मेहनत उठाना मेरे असली मिजाज और तबीयत के किसी कदर खिलाफ है। इस वक्त जब कि दारा और शुजा निहायत सरगर्मीसे हुसूल सल्तनतके लिये कोशिश और सई कर रहे हैं मैं सिर्फ फकीराना जिन्दगी बसर करने में मुतरद्दित हूं। मगर, प्यारे भतीज अगर्चे सल्तनत के हक हुकूक और दावोंसे मैं बिल्कुल दस्त-बरदार हूं ताहम इस राय और खयालसे आपको मुत्तिला करना वाजिब समझता हूं कि यही नहीं कि दाराशिकोह फरमॉरवाईके औसाफसे खालीहै बल्कि ला-मजहब और काफिर होनेकी वजहसे बिल्कुल ताज व तख्तके काबिल नहीं। बड़े बड़े उमराए-सल्तनत और अरकाने दौलत सबबसस मुतनफ्फिर है। अलाहाजलकयास शुजा भी सल्तनतके काबिल नहीं; क्योंकि वह राफजी मजहब और हिन्दोस्तानका दुश्मनहै। पस इस सूरतमें इस अजीमुश्शान सल्तनतकी फरमॉरवाई लायक सिर्फ आपही हैं। यह सिर्फ मेरी ही राय नहींहै बल्कि पायए-तख्तके तमाम मशीर और अमीर जो आपकी बहादुरी के कायल हैं सब इसमें मुत्तफिकुर-राय और हमजबान होकर

दाराशिकोहके मुकाबलेमें औरंगजेबकी फ़तह मुमकिन है । मेरी राय तो यह तसौवुर कर लीजिये कि अगर आपको ताक़तसे मुनासिब तौर पर मुझे यह मौका मिल जायगा कि उस खुदाके फ़ज़्लसे आप बादशाह हो जायेंगे तो मुझे कोई दिक्कतके मौकेका नौबत शाकिरन फ़र्माबरदार खातिर हुक्मे-हुजूरी बजा लानेके लिये इनायत फ़र्मायेंगे तो पस इसीवक्तसे मैं फौरन आपकी तरफ़दारीमें खिदमत बजा लाने को आमादा और तैयार हो जाऊंगा, और सलाह व मशविरेसे, अपने तोपों और रफीक़ोंसे, अपनी तमाम फौज आपके हुक्मपर कर देनेसे, गरज किसी किस्मकी मददमें मैं दरेग नहीं करूंगा । फिलहाल मैं आपकी खिदमतमें एक लाख रुपये भेजता हूं और उम्मीद करता हूं कि आप इसको बतौर नजर कुबूल फर्मायेंगे जो कि मेरी खुशीका बायस होगा । हुनर-आजमाई और जवांमर्दीका यही वक्त है; पस आप एक लहमा भी जाया न कीजिये, मौकेको गनीमत समझिये और जल्दीसे सूरतके किले पर जहां मुझे खूब मालूम है कि बेशुमार दौलत मदफून है कब्जा करलीजिये । "

मुरादबख्श जिसकी आर्थिक और सामरिक अवस्था औरोंकी अपेक्षा घटकर थी भाईकी इस प्रार्थनासे जिसके साथ इतने रुपयेभी आये थे बहुतही प्रसन्न और आश्वासित हुआ । उसने इस भरोसे पर वह पत्र बहुतलोगोंको दिखलाया कि जिसमें युवा पुरुष उसकी सेना में भरती होना चाहें और धनाढ्य महाजन जिनसे वह बलपूर्वक रुपये मांग लिया करता था उसे ऋण देनेमें आगा पीछा न करें। इस पत्रके आनेके बादसे मुराद लोगोंसे ऐसी ऐसी प्रतिज्ञाएँ करने लगा कि मानों वह स्वयं बादशाह हो और ऐसी युक्ति और विजयसे उसने काम लिया कि थोड़ेही समयमें उसके पास एक बहुत बड़ी और सुन्दर सेना एकत्रित हो गई । सेना एकत्रित करलेनेके बाद सबसे पहले उसने यहकाम किया कि शाहअब्बास नामक ख्वाजासरा

आपका निगराने-हाल रहेगा। बाद इसके हम दोनो इस मुहिम की दुरस्तीकी तदबीरोंकी निस्बत बाहम गौर व फिक्र कर सकेंगे। इस सूरतमें हरगिज मेरे ख़याल और कयासमें नहीं आता कि दाराशिकोहके दिलमें कोई शुबहा पैदा होगा और वह ऐसे शख्सके बाल बच्चोंके साथ बदसलूकी करेगा जो बजाहिर मेरा इस कदर दुश्मन हो।"

मैं विश्वासके साथ कह सकता हूं कि मीरजुमलासे बातें करते समय औरंगजेबने ऐसीही नम्रताका प्रयोग किया था। इस विचित्र योजनाके उत्तरमें उसने क्या कहा यहतो मुझे नहीं मालूम, परन्तु हां इसमें सन्देह नहीं कि उसने औरंगजेबकी प्रार्थना मानली और अपना लश्कर उसके आधीन करदेने तथा धनसे सहायता करने और साथही दौलताबादके किलेमें कैद होजाने पर भी वह राजी हो गया जोकि एक बड़े आश्चर्यकी बात है! कुछ लोग यह कहते हैं कि औरंगजेबने मीरजुम्लाको समझा बुझाकर सचमुच इस बातका विश्वास करा दिया था कि आपके प्रसन्नता पूर्वक कैद हो जानेसे बहुत लाभ होंगे और मीरजुमला भी उसकी पुरानी मैत्री और सहायताका स्मरण कर वास्तवमें कैद हो जाने पर राजी हो गया था। औरोंका जिनकी बात अधिक सकारण मालूम होती है यह कथन है कि उसने केवल भयभीत होकर इस प्रार्थनाको स्वीकार कर लिया था, क्योंकि कहते हैं कि इस साक्षात्कार और बातचीत के समय औरंगजेबके दो युवा पुत्र (एक सुलतान मुअज्जम, दूसरा मुहम्मद सुलतान) उसके सिरपर खड़े थे और यद्यपि सुलतान मुअज्जम का अस्त्र शस्त्रसे सुसज्जित होना स्पष्ट बतला रहा था कि यदि उसने प्रार्थना अस्वीकार की तो बहुतही बुरा परिणाम होगा परन्तु मुहम्मद सुलतान तो सचमुच तलवार लिये मूछोंपर इस भांति ताव दे रहा था कि मानो अब वह उसे मारही डालना चाहता है। सुलतान

मुरादबख्शके इतना क्रोध प्रकाश करनेका इसके सिवा दूसरा कोई कारण नहीं था कि मीरजुमलाकी ओरसे उसका पहलेसे अपमान हो चुका था, क्योंकि उसका छोटा भाई उस औरंगजेबके पास तक ले आनेमें दुखकारी हुआ था और वह स्वयं नहीं। अतएव उसे अपने क्रोध और दुःखके छिपानेकी कुछ भी चिन्ता नहीं थी।

निदान जब मीरजुमलाके कैद होनेका समाचार चारों ओर प्रसिद्ध होगया तब उसकी सेनाके उस भागने जो बादशाहपुरसे उसके साथ आया था सहज शब्दोंमें कहा कि 'हमारे सरदारको छोड़ दो नहीं तो हम बलपूर्वक उसे छुड़ा ले जायँगे।' वास्तव में यदि औरंगजेब अपनी चतुराईसे उस समय तुरन्त उनका सन्तोष न कर देता तो वे अवश्य मीरजुमलाको निकाल ले जाते। औरंगजेबने यह किया कि उस सेनाके बड़े बड़े सरदारोंको तो यह समझाकर अपना मित्र बना लिया और शान्त कर दिया कि मीरजुमला अपनी इच्छा और प्रसन्नतासे कैद (नजरबन्द) हुआ है और यह भी कहा कि यह एक चाल है जो असलमें मेरी और उसकी सलाहसे की गई है; और सैनिकोंको खूब जी खोल कर इनाम देकर अपने वशमें किया। तात्पर्य यह कि उसने सरदारोंको तो भविष्योन्नतिकी बहुतसी प्रतिज्ञाएँ करके और साधारण सिपाहियोंको उनका वेतन बढ़ाके तथा तीन महीनेका (वतन) पेशगी देके अपना पक्षपाती बनाया।

सूरतमें लूट—इस उपायसे जो सैनिक अबतक मीरजुमलाके हाथमें थे वे औरंगजेबकी नीति-कुशलतासे उसकी सेनामें आ मिले। उसने समझ लिया कि अब सब काम अच्छी तरहसे हो जायँगे। अतएव सबसे पहले उसने सूरतकी ओर कूच किया, क्योंकि किले वाले जैसा कि अनुमान किया गया था अभी तक मुरादबख्शकी सेनासे अधीन नहीं किये जा सके थे और उसकी इच्छा यह थी कि बहुत शीघ्र यह किला ले लिया जाय। परन्तु उसके सूरतकी ओर

चल पड़नेके कुछही दिन बाद उसे समाचार मिला कि मुरादने सूरत के दुर्ग पर अधिकार करलिया। यह समाचार सुनतेही उसने अपने विजयी भाईके पास बधाई और धन्यवाद-सूचक एक पत्र भेजा जिसमे उसने इस बीचमें मीरजुमला और उसके सम्बन्धमे जो बातें हुई थी उन सबको भी लिख दिया। उस पत्रमें अपने विषयमें उसने लिखा—"मैं एक बड़ी फौजकी सरदारीमें हूं और दौलत भी मैंने बेशुमार इकट्ठी करली है। बड़े बड़े उमराए-दरबारशाहीसे मुझसे पुख्ता बातें हो चुकी हैं और अब बुरहानपुर व आगरेकी तरफ बढ़ने में मेरी तरफसे कुछभी देर नहीं है। पस आपसे भी इल्तिजा करता हूं कि आपभी कूचमें देर न कीजिये और दोनों लश्करों के मिल जानेके लिये कोई जगह करार देकर जल्द मुझे खबर कीजिये।"

सूरतके दुर्गमें आशाके विपरीत बहुत थोड़ा खजाना मिलनेसे मुराद बहुत निराश हुआ। इस कमीका कारण या तो यह था कि लोगोंने केवल झूठ ही यह बात प्रसिद्ध कर रखी थी कि वहां बहुत धन है अथवा यह हो सकता है जैसा कि बहुतोंको सन्देह था कि दुर्गके हाकिमने स्वयं बहुतसा द्रव्य चुपचाप उड़ा लिया था। अस्तु वहांसे जो रुपये मुरादबख्शके हाथ लगे वे इतनेही थे कि उनसे केवल उन सैनिकोंको वेतन दिया जा सका जो यह लालच देकर नौकर रख लिये गये थे कि सूरतकी लूटमें बहुत धन प्राप्त होगा। इस दुर्गका घिराव करने और उसके जीतनेमें मुरादकी कोई खास कुशलता भी नहीं प्रगट हुई, क्योंकि यद्यपि वह (दुर्ग) जैसा कि चाहिये युद्धके सब सामानोंसे सुसज्जित नहीं था तौभी उसके पानेमें मुरादको बहुत परिश्रम और यत्न करने परभी एक महीनेसे अधिक समय लगगया और जबतक कि डच जातिके इञ्जीनियर (जो उसकी सेनामें थे) सुरंग लगानेकी युक्ति उसे नहीं सिखलाई तबतक घिराव आदिसे कुछभी लाभ नहीं हुआ। डचोंकी पहलेही

[illegible] हुई युक्तिसे दुर्गकी दीवारको [illegible] और [illegible] गया, जिससे उसके अंदरके लोगोंमें बड़ी हलचल [illegible] गई और [illegible] उपस्थित कर दे [illegible]।

सूरतके दुर्गपर अधिकार हो जानेसे मुरादबख्शको भविष्यमें करनेवाले कामोंके लिये बहुत सुगमता होगई। इस जीतसे उसका बड़ा नाम हुआ और यहांके लोग सुरंग लगानेकी रीति भली भांति नहीं जानते थे इसलिये उसकी इस युक्तिने लोगोंके चित्तपर बहुत ही विचित्र असर डाला। इसके सिवा यह बात भी सर्वसाधारणमें प्रसिद्ध हो गई कि सूरतसे मुरादबख्शको बहुत धन प्राप्त हुआ है परन्तु इस जीतके कारण इतनी प्रशंसा और प्रसिद्धि होनेपर भी तथा औरंगजेबकी ओरसे बहुतसे स्तुति-वचनोंसे और प्रतिज्ञा-सूचक पत्रोंके आते रहने परभी शाहबाज ख्वाजा मुरादबख्शको बराबर ऐसाही समझाता रहा कि आप अपने भाईकी व्यर्थ बातोंपर भरोसा और विश्वास करके कदापि अपनेको उसके हाथोंमें फँसावें । यह । ख्वाजा मुरादका बड़ा शुभचिन्तक था। एक दिन उसने यह वाक्य में उससे कहा—"आप अबभी मेरी सलाह मानलें, और अगर आपकी ऐसीही मरजी है तो औरंगजेबको चिकनी चुपड़ी बातोंसे फुसलाये रखें, लेकिन फौज और लश्कर लेकर उससे शामिल हो जानेका इरादा हरगिज न फरमाएँ। बिलफैल आगरेकी तरफ उसे अकेलाही जाने दें। रफ्ता रफ्ता जब हमको बादशाहकी सेहत और मर्जकी पुख्ता खबर और सहीह हालत मालूम हो जावेग तब उस वक्त जैसा मुनासिब मालूम होगा वैसा किया जायगा। इस अर्से में आप सूरतके किलेको जो इस तरफमें सबसे ज्यादा कारआमद

* यह बात ठीक नहीं है, क्योंकि इस घटना से २६—२७ वर्ष पहलेही शाहजहांके सरदार गण सुरंग उड़ाकर हुगलीमें पुर्तगालों पर विजय प्राप्त कर चुके थे। देखिये उर्दूका इतिहास (बादशाहनामा)—ग० म० गुप्त।

चल पड़नेके कुछही दिन बाद उसे समाचार मिला कि मुरादने सूरत के दुर्ग पर अधिकार करलिया। यह समाचार सुनतेही उसने अपने विजयी भाईके पास बधाई और धन्यवाद-सूचक एक पत्र भेजा जिसमें उसने इस बीचमें मीरजुमला और उसके सम्बन्धमें जोबातें हुई थी उन सबको भी लिख दिया। उस पत्रमें अपने विषयमें उसने लिखा—"मैं एक बड़ी फौजकी सरदारीमें हूं और दौलत भी मैंने बेशुमार इकट्ठी करली है। बड़े बड़े उमराए-दरबारशाहीसे मुझसे पुख्ता बातें हो चुकी हैं और अब बुरहानपुर व आगरेकी तरफ बढ़ने में मेरी तरफसे कुछभी देर नही है। पस आपसे भी इलितजा करता हूं कि आपभी कूचमें देर न कीजिये और दोनों लश्करों के मिल जानेके लिये कोई जगह करार देकर जल्द मुझे खबर कीजिये।"

सूरतके दुर्गमें आशाके विपरीत बहुत थोड़ा खजाना मिलनेसे मुराद बहुत निराश हुआ। इस कमीका कारण या तो यह था कि लोगोंने केवल झूठ ही यह बात प्रसिद्ध कर दी थी कि वहां बहुत धन है अथवा यह हो सकता है जैसा कि बहुतोंको सन्देह था कि दुर्गके हाकिमने स्वयं बहुतसा द्रव्य चुपचाप उड़ा लिया था। अस्तु वहांसे जो रुपये मुरादबख्शके हाथ लगे वे इतनेही थे कि उनसे केवल उन सैनिकोंको वेतन दिया जा सका जो यह लालच देकर नौकर रख लिये गये थे कि सूरतकी लूटमें बहुत धन प्राप्त होगा। इस दुर्गका घिराव करने और उसके जीतनेमें मुरादकी कोई ख़ास कुशलता भी नहीं प्रगट हुई, क्योंकि यद्यपि वह (दुर्ग) जैसा कि चाहिये युद्धके सब सामानोंसे सुसज्जित नहीं था तौभी उसके पानेमें मुरादको बहुत परिश्रम और यत्न करने परभी एक महीनेसे अधिक समय लगगया और जबतक कि डच जातिके इन्जीनियरोंने (जो उनकी सेनामें थे) सुरंग लगानेकी युक्ति उसे नहीं सिखलाई तबतक घिराव आदिसे कुछभी लाभ नहीं हुआ। डचोंकी पहलेही

[illegible] ' मिर्जाजूने युक्तिसे दुर्गकी दीवारका एक बड़ा भाग उड़ गया, जिससे दुर्गके भीतरके लोगोंमें बड़ी व्याकुलता फैल गई और कुछ लोग हताहत कर दे शरणमें आगये ।

सूरतके दुर्गपर अधिकार हो जानेसे मुरादबख्शको भविष्यमें करनेवाले कामोंके लिये बहुत सुगमता होगी । इस जीतसे उसका बड़ा नाम हुआ और वहांके लोग सुरंग लगानेकी रीति भली भांति नहीं जानते थे इसलिये उसकी इस युक्तिने लोगोंके चित्तपर बहुत ही विचित्र असर डाला । इसके सिवा यह बातभी सर्वसाधारणमें प्रसिद्ध हो गई कि सूरतसे मुरादबख्शको बहुत धन प्राप्त हुआ है परन्तु इस जीतके कारण इतनी प्रशंसा और प्रसिद्ध होनेपर भी तथा औरंगजेबकी ओरसे बहुतसे स्तुति-वचनोंसे भरे प्रतिज्ञा-सूचक पत्रोंके आते रहने परभी शाहबाज ख्वाजा मुरादबख्शको बराबर ऐसाही समझाता रहा कि आप अपने भाईकी व्यर्थ बातोंपर भरोसा और विश्वास करके कदापि अपनेको उसके हाथोंमें फँसावे । यह ख्वाजा मुरादका बड़ा शुभचिन्तक था । एक दिन उसने स्पष्ट वाक्य में उससे कहा—" आप अबभी मेरी सलाह मानले, और अगर आपकी ऐसीही मरजी है तो औरंगजेबको चिकनी चुपड़ी बातोंसे फुसलाये रखे; लेकिन फौज और लश्कर लेकर उससे शामिल हो जानेका इरादा हरगिज न फरमाएँ । बिलफैल आगरेकी तरफ उसे अकेलाही जाने दे । रफ्ता रफ्ता जब हमको बादशाहकी सेहत और मर्जकी पुख्ता खबर और सहीह हालत मालूम हो जावेग तब उस वक्त जैसा मुनासिब मालूम होगा वैसा किया जायगा । इस अर्से में आप सूरतके किलेको जो इस तरफमें सबसे ज्यादा कारआमद

---

* यह बात ठीक नहीं है, क्योंकि इस घटना से २६—२७ वर्ष पहलेही शाहजहांके सरदार गण सुरंग उड़ाकर हुगलीमें पुर्तगालों पर विजय प्राप्त कर चुके थे। देखिये उर्दूका इतिहास (बादशाहनामा)--ग० प्र० गुप्त ।

मुकाम है खूब मुस्तहकम बना लें। इस जगहके काबूमें कर लेनेसे एक वसीह और जरखेज मुल्ककी हुकूमत आपके हाथ आ जायगी। और फिर थोड़ीसी तदबीरसे शहर बुरहानपुर भी जो सूबे दक्खिन का दरवाजा और निहायत कारआमद मुकाम है आपके कब्जेमें आ जायगा।"

मुराद और औरंगजेब-इधर औरंगजेबकी ओरसे मुराद बख्शके पास बराबर यही पत्र आते रहे कि तुम अपने काममें सुस्ती न कराना; अतएव बुद्धिमान और स्वामिभक्त शाहअब्बास ख्वाजाकी शिक्षा एकबारही अस्वीकृत हुई। यह ख्वाजा दृढ राजनीतिज्ञ, उत्साही और दयालु स्वभावका मनुष्य था और स्वभावसेही इसे मुरादसे प्रीति थी। अच्छा होता यदि मुराद भी अपने इस समझदार मित्रकी बात मान लेता; परन्तु वह तो राज्यलोभ में अन्धा हो रहा था, तिसपर उसके कुटिल भाईके प्रतिदिन इस आशयके आग्रहपूर्ण पत्र आते रहे कि मैं तुम्हारे कामोंमें बहुत अनुरक्त हूं। मुरादने सोचा कि यह काम जिसमें बादशाही और राज्य मिलजानेकी आशा है अकेले नहीं हो सकेगा। अतएव अहमदाबादसे जहां वह डेरे डाले पड़ा था उसने कूच कर दिया और गुजरातसे चलकर पहाड़ों और जंगलोंका सीधा मार्ग अवलम्बन किया, जिसमें कि जल्दीसे वह उस जगह पहुंच जाय जहां औरंगजेब कुछ दिन पहलेही आकर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

निदान जब दोनों सेनायें मिल गई तो बड़ा उत्सव और आनन्द मनाया गया। दोनों भाई एक दूसरेसे मिले और औरंगजेबने अपनी अत्यन्त स्नेही और एकदम स्वार्थ रहित होना नये सिरेसे जताया। उसने कहा—"भाई, बादशाही और सल्तनतकी मुझे जराभी हवस नहीं है। यह फौजकशी मैंने सिर्फ इसवास्ते की है कि जिस तरह बन पड़े दारा शिकोहसे जो मेरा और आपका मशहूर जानी दुश्मन

है तब मिलकर आपको तख्ते-सल्तनत पर जो खाली पड़ा है बिठा दूं।" राजधानीकी ओर चले, समस्त रास्तेभर औरंगजेब ऐसाही करता गया। इस बीचमें क्या अकेलेमें क्या सबके सामने वह मुरादको "हजरत" और "जहांपनाह" आदि कहकर इसी प्रकार सम्बोधन करता रहा जैसे प्रजा अपने राजाके प्रति करती हो। आश्चर्य है कि मुरादने उसके कपट वचनोंपर जरा भी सन्देह नहीं किया, न यह सोचा कि हालहीमें यह गोलकुण्डा नरेशके साथ ऐसीही युक्ति और अविश्वासका बर्ताव कर चुका है। बात यह है कि मुराद राज्य-लोलुपताके कारण ऐसा अन्धा हो रहा था और उसकी बुद्धिपर ऐसा पर्दा पड़गया था कि इतनी बेईमानीके साथ एक राज्यके छीन लेनेके लिये उद्योग कर चुका है आज कैसे सम्भव है कि उसके विचार ऐसे बदल गये कि फकीरोंकी भांति जीवन निर्वाह करनेके सिवा उसके मनमें किसी और बातकी अभिलाषा हैही नहीं !

दोनों सेनाएं मिलकर बहुत बड़ी हो गईं और उनके आनेकी खबर पहुंचतेही राजधानीमें बड़ी हलचल मच गई। दाराकी घबराहटका ठिकाना नहीं रहा और शाहजहां भी परिणाम सोचकर डर गया। इस घटनाके भावी परिणामके विषयमें उसने कुछ भी क्यों न सोचा हो परन्तु इसमे सन्देह नहीं कि वह इस बातको भली भांति जानता था कि औरंगजेबकी योग्यता बुद्धिमत्ता और मुरादकी शूरताके इकत्रित हो जानेसे ऐसा कोई कार्य नहीं जो असम्भव जान पड़े। यद्यपि शाहजहांने यह सम्वाद पहुँचाने के लिये आदमी पर आदमी भेजे कि अब हम बहुत अच्छी तरहसे हैं और यदि तुम लोग अपने अपने प्रान्तको लौट जाओगे तो तुम्हारी इस अनुचित काररवाई पर ध्यान नहीं दिया जायगा, परन्तु उसकी सब लिखावट और आज्ञा व्यर्थ हुई। दोनों सेनाएँ बराबर बढ़तीही चली आईं

और इस कारण कि बादशाहकी बीमारी वास्तवमें असाध्य समझी जाती थी ये लोग निरन्तर ऐसेही बहाने करते और जवाब लिखते रहे कि जो पत्रादिक बादशाही मुहर लगकर आते हैं वे जाली और बिल्कुल दाराकी बनावट हैं और शाहन्शाह या तो मर चुके या मरनाही चाहते हैं और यदि मान लिया जाय कि हमारे सौभाग्य से अभीतक वे जीते जागते हैं तो हम उनके चरणोंकी रज अपने शिर पर चढ़ाकर कृतार्थ होंगे और दाराने जो उनको एकबारही अपने अधीन कर रखा है उससे भी उनका छुटकारा करेंगे।

इन दिनों शाहजहांकी दशा सचमुच बहुत दुःखसे भरी थी। रोगग्रस्त होनेके सिवा वह वास्तवमें दाराके पञ्जेमें फँस गया था। इधर तो दाराशिकोहके हृदयमें क्रोधकी आग भड़क रही थी और लड़ाइके अतिरिक्त जिसकी वह बड़े तत्नसे तैयारी कर रहा था कोई दूसरी बात उसे सूझती ही नहीं थी उधर उसके दूसरे भाई पिताके आज्ञापत्रोंकी जो निरन्तर आते थे कुछ भी परवा न करके बराबर आगरेकी ओर बढ़ेही चले आते थे। एक ओर बादशाहको इस बातकी भी चिन्ता थी कि यदि उसका एकत्रित धन इन नवयुवक शाहजादोंके हाथ लग जायगा तो वे न जाने किस किस तरह उसको उड़ाकर नष्ट भ्रष्ट कर देंगे। निदान जब उस वृद्ध बादशाहको कोई दूसरा उपाय न रहा तब लाचार होकर उसने अपने स्वामिभक्त वीर योद्धाओं तथा बलवान सरदारोंको अपने पास बुलवाया। यद्यपि ये सरदार और योद्धे प्रायः दाराके विरुद्ध थे और बादशाहको भी दाराकी अपेक्षा अपने तीनों चढ़ाई करनेवाले पुत्रोंसे अधिक प्रीति थी तौभी उसने अपने कामोंको ठीक करनेके लिये इन्हीं अमीरोंको (जो दाराके विपक्षी थे) अपने बाकी तीनों पुत्रोंकी चढ़ाई रोकनेके लिये भेजना उचित और आवश्यक समझा। जिस ओरसे सुलतान शुजा बढ़ा चला आता था उस ओरकी अधिक चिन्ता थी, अतएव

...न, दूसरा उसको रोकनेके लिये पूरब ओर भेजी गई और दूसरी, ... इस मतलब से दक्खिन की गई कि जिसमें वह औरंगज़ेब और मुरादबख्शकी युक्त सेनाओंसे युद्ध करनेको तैयार रहे।

शुजा और सुलेमानशिकोह—दाराका ज्येष्ठ पुत्र सुलेमान शिकोह इस सेनाका नायक नियुक्त किया गया जो शुजाके बराबर बढ़ते हुए आनेवाले सैनिकोंको रोकनेको भेजी गई। इस नवयुवक की उमर २५ वर्षकी थी और यह अत्यन्त रूपवान्, शक्तिशाली उदार और प्रसिद्ध पुरुष था। बादशाहने इसको बहुत धन दिया था और उसकी ऐसी इच्छा थी कि यदि दाराकी अपेक्षा मेरे पश्चात् यह देहलीके राजासन पर बैठे तो अधिक उत्तम बात हो। शाहजहां का असल मतलब यह था कि इस अस्वाभाविक झगड़ेमें रक्तके छींटे न उड़े और अपने पौत्रसे उसे बहुत प्रीतिथी अतएव उसने मन्त्री और उपदेशककी भांति वृद्ध राजा जयसिंहको उसके साथ कर दिया। राजा जयसिंह इस समय भारतवर्षके राजाओंमें सबसे अधिक धनवान् श्रेष्ठ और योग्य पुरुष समझे जाते थे। शाहजहांने यह बात भली भांति उनको समझा दी कि जहांतक बने लड़ाई न होने पावे और शुजाको उसके प्रान्तको लौट जानेके लिये बाध्य करनेमें कोई बात उठा न रखी जाय। इसके अतिरिक्त अलग लेजाकर उसने उनसे कहा—"आप शुजासे कह दीजियेगा कि शाही हुक्मके मुआफिक वापस चले जाना सिर्फ तुम्हारा फर्ज ही नहीं है बल्कि फने हुकूमत और सल्तनत की रूसे भी यह निहायत जरूरी है कि वह इस तौर पर अपना जोर और ताकत न दिखलाओ, इस लिये जब तक कि एक मुनासिब मौका इस काम के लिये न आ जाय, याने तावक्ते कि हमारी बीमारी लाइलाज न साबित हो या औरंगज़ेब और मुरादबख्स की शामिल फौजोंका कोई नतीजा न मालूम हो जाय, ऐसी जल्दबाजी तुम्हारे लिये मस्लहत नहीं है।

यशवन्तसिंह थे जो श्रेष्ठता और प्रतिष्ठामें राजा जयसिंहसे किसी प्रकार कम नहीं थे। राजा यशवन्तसिंह (उदयपुरके) उस सुप्रसिद्ध वीर राजाराणाके दामाद थे जो अकबरके समयमें सब राजाओंका अधिराज समझा जाता था।

दाराने इन दोनों सेनापतियोंसे बड़ी नम्रता और शिष्टताके साथ बातें कीं और जब वे जाने लगे तो उस समय उसने उनको बहुतसी बहुमूल्य वस्तुएँभी भेटमें दीं; परन्तु शाहजहांने शुजाके विरुद्ध राजा जयसिंह और दिलेरखांको भेजते समय जो शिक्षा उनको दी थी वैसेही सावधानी से काम करनेको इनसे भी कहा; जिसका यह परिणाम हुआ कि जासूस पर जासूस औरंगजेबके पास यह कहकर भेजे गये कि आपको अपने प्रदेशकी ओर लौट जाना चाहिये परन्तु जब इधर अभी युद्धके विषयमें सन्देह ही सन्देह था तब औरंगजेब बड़ी दृढ़ता और फुर्तीके साथ लड़ाईकी तैयारियां करनेमें लिप्त था जो जासूस यशवन्तसिंह आदिकी ओरसे भेजे जाते थे वे लौटकर नहीं आते थे। योंही करते करते सहसा औरंगजेबकी सेना एक ऊंचे टीले पर जो (क्षिप्रा) नदीसे कुछ अन्तर पर है दिखाई दी।

गर्मीकी ऋतु थी और मारे उत्तापके नदीका जल इतना सूख गया था कि वह सहजमें पार की जा सकती थी. अतएव कासिमखां और राजा साहबने यह सोचकर कि औरंगजेब पार उतरना चाहता है लड़ाईकी तैयारी आरम्भ कर दी। परन्तु,वास्तवमें औरंगजेबकी पूरी सेना अभी पीछे थी। इन थोड़ेसे सिपाहियोंको आगे भेज देना एक बिलकुल धोखा था। कारण यहकि औरंगजेबको इस बातका भय था कि कहीं बादशाही सेना नदीके पार न उतर आवे और हमारा मार्ग रोककर हमारे थके मांदे सैनिकों पर आक्रमण न करदे। औरंगजेबका ऐसा सोचना उचित था क्योंकि उस समय उसके सैनिक मनुष्य लड़ने योग्य नहीं थे और यदि कासिमखां और

राजा साहब इस अवसर पर आक्रमण कर देते तो अवश्य उन्हींकी जीत होती। इस लड़ाईके समय मैं स्वयं उपस्थित नहीं था, परन्तु जिन लोगोंने इसका दृश्य अपनी आंखोंसे देखा है वे, विशेषकर औरंगज़ेबके तोपखानेके फ्रेञ्च लोग, इस युद्धके विषयमें ऐसाही वर्णन करते हैं। परन्तु कासिमखां तथा राजा साहब ऐसा किस तरह करते—क्योंकि उनको तो बादशाहकी गुप्त आज्ञाके कारण केवल इतनाही करने का अधिकार था कि नदीके इस पार उपस्थित रहें और यदि औरंगज़ेब इधर आना चाहे तो उसे रोकें।

यशवन्तसिंहकी वीरता—जब औरंगज़ेबके सैनिकोंने दो तीन दिनतक विश्राम कर लिया तब उसने बलपूर्वक उनको नदी पार उतारने का प्रबन्ध किया। पहले तो उसने अपना तोपखाना एक ऊंचे स्थानमें रक्खा, फिर सैनिकोंको गोले दागते हुए आगे बढ़ने की आज्ञा दी। इनको रोकनेके लिये दूसरी ओरसे भी तोपें चलना आरंभ हुई। प्रारम्भमें घोर संग्राम हुआ। राजा यशवन्तसिंहने बड़ीही वीरता और युक्तिसे शत्रुओंको पद पदपर रोका, परन्तु कासिम खांने—यद्यपि उसके एक वीर योद्धा होने में किसीको कुछ सन्देह नहीं—तथापि इस अवसर पर न तो कुछ वीरताही दिखाई न कुछ सामरिक युक्तिही प्रकट की। वरन् उसपर यह सन्देह किया जाता है कि इस अवसर पर उसने विश्वासघातकता की और लड़ाईसे पहलेही रातके समय अपनी ओरकी सब गोली बारूत रेतमें छिपा दी जिसका यह परिणाम हुआ कि लड़ाईके समय कई बाढ़ दागनेके बाद इधर की सेनाके पास इस प्रकारका कोई सामान न रहा। अस्तु कुछभी हो, परन्तु युद्ध घमसान हुआ और घाटके रोकनेमें सैनिकोंने बड़ी बीरता दिखाई। उधर औरंगज़ेबकी यह दशा हुई कि बड़े बड़े पत्थरोंके कारण जो नदीके पाटमें थे उसको बहुत कष्ट हुआ और किनारों की साधारण ऊंचाईके सबबसे उपर चढ़ना

बन्द कर दिये जायँ। इसके बाद उसने कहा—"मैं ऐसे निन्दित पुरुषको किलेके अन्दर नहीं आने दूंगी। ऐसा व्यक्ति और मेरा पति! राणाका दामाद और ऐसा निलज्ज! मैं कदापि ऐसे पुरुषका मुख नहीं देखना चाहती। ऐसा महान् पुरुषका सम्बन्धी होकर इसने उसके गुणोंका अनुसरण नहीं किया। यदि यह लड़ाईमें शत्रुओंको हरा नहीं सका तो यहां आनेकी क्या आश्यकता थी वहीं युद्धक्षेत्रमें वीरताके साथ लड़कर प्राण देना उचित था।" फिर तुरन्त ही उनके मनमें दूसरा विचार उत्पन्न हुआ और उसने कहा—"अरे कोई है जो मेरे लिये चिता तैयार कर दे! मैं अपनी देह अग्निको अर्पण करूंगी। सचमुच मुझे धोखा हुआ;मेरी पात वास्तवमें संग्राम में मारा गया; इसके अतिरिक्त कोई दूसरी बात नहीं हो सकती।" और फिर क्रोधमें आकर बहुत बुरा भला बकने लगी। ८-९ दिन तक उसकी यही दशा रही; इस बीचमें यशवन्तसिंहसे वह एकबार भी नहीं मिली। अन्तमें जब उसकी मां उसके निकट आई और उसने समझाया कि घबराओ नहीं राजा जरा विश्राम लेकर और नई सेना एकत्रित करके पुनः औरंगजेब पर आक्रमण करेगा और इसकी वीरता और साहसकी लोग फिर प्रशंसा करेंगे तब वह कुछ शान्त हुई।

इससे यह प्रगट होता है कि इस देशकी स्त्रियोंको अपने नाम प्रतिष्ठा और सम्मानका कितना ध्यान है और उनका हृदय कैसा सजीव है। मैं ऐसे और भी दृष्टान्त दे सकता हूं, क्योंकि मैंने बहुत सी स्त्रियोंको अपने पतियोंके साथ चितामें जलकर मरते अपनी आंखोंसे देखा है। परन्तु ये बात मैं किसी दूसरे अवसर पर (आगे चलकर) वर्णन करूंगा जहां मैं दिखाऊंगा कि मनुष्यके चित्त पर आशा, विश्वास,प्राचीन रीतिनीति, सधारण मत और मान सम्मान के ध्यानका कितना दृढ़ प्रभाव पड़ता है।

जिस समय दाराने इन हैकम संघटित दुःखदायिनी घटनाओंका हाल सुना उस समय यदि शाहजहाँ उसे उपदेश और युक्तिपूर्ण बातोंसे ठंढा न करता तो क्रोधके आवेशमें वह न जाने क्या क्या कर डालता। यदि उस समय कासिमखाँ वहाँ होता तो वह निस्सन्देह मारा जाता और मीरजुमलाके पुत्र मुहम्मद अमीरखाँको भी अपने प्राणोंसे हाथ धोने पड़ते और उसकी पत्नी तथा कन्या भी वेश्या होनेपर विवश की जाती, क्योंकि दाराको सन्देह था कि मीरजुमलाने औरंगजेबकी सेना और धन दोनोंसे सहायता की है और यही इस उपद्रवका प्रधान कारण है,— परन्तु बादशाहकी युक्तियुक्त बातों से उसका क्रोध और जोश शान्त होगया और मीरजुमलाके कुटुम्ब के लोग बच गये। बादशाहने उसे समझाया कि मीरजुमलाका औरंगजेबकी इन बातोंसे सम्बन्ध रखना कदापि सम्भव नहीं है। यह कैसे हो सकता है कि ऐसा दूरदर्शी और बुद्धिमान् आदमी एक ऐसे व्यक्तिके लाभके लिये जिससे उसको कुछ भी स्नेह वा प्रीति नहीं है अपने बालबच्चोंको ऐसे जोखिमके स्थानमें छोड़ देगा बल्कि इससे यह प्रगट होता है कि वह स्वयं औरंगजेबके पेचमें पड़ गया है।

इधर औरंगजेब और मुरादबख्शकी यह दशा थी कि वे मारे हर्षके फूले नहीं समाते थे। उनको इस बातका अहंकार हो गया था कि हमपर कोई विजय नहीं प्राप्त कर सकता और ऐसा कोई कठिन काम नहीं जिसे हम न करसकें। औरंगजेब अपने सैनिकोंका साहस बढ़ानेके लिये खुलेआम कहता फिरता था कि दाराकी सेनामें ३० हजार ऐसे मुगल हैं जो अभी हमारी सेनामें आ जानेको तैयार है। औरंगजेब का ऐसा कहना एक दम झूठ भी नहीं था क्योंकि पाठकों को आगे चलकर मालूम होगा कि कई उमराने वास्तवमें दाराशिकोह से विश्वासघातकता की। अब यद्यपि मुराद बहुत शीघ्रता कर रहा

था और उसकी यह इच्छा थी कि बराबर आगे बढ़ते चलें परन्तु औरंगजेबने उसे रोका और कहा कि इस सुन्दर नदी (क्षिप्रा) के किनारे ठहर कर जरा दम ले लेना और आराम करना आवश्यक है क्योंकि इस बीचमें हमको अपने मित्रों और शुभचिन्तकोंसे पत्रव्यवहार करके राजधानीका हाल जान लेनेका भी अवसर मिलजायगा। अतएव अब ये लोग धीरे धीरे कूच करते थे और आगरेसे जो समाचार आते थे उनपर खूब विचार करके आगे बढ़ते थे।

शाहजहांकी अवस्था—इस समय शाहजहां निराश और दुःखद स्थितिमें आ पड़ा था। एक ओर अपने दोनों पुत्रोंके राजधानीमें प्रवेश करनेके दृढ़ विचार और दूसरी ओर दाराको युद्धकी बड़ी बड़ी सामिग्रियां एकत्रित करते देखकर उसे बड़ी शंका होती थी। वह पहलेहीसे जान गया कि जिस भयंकर कालचक्रको वह अनेक उपायोंसे टालना चाहता था वह उसके कुटुम्ब पर गिरना चाहता है। दाराकी इच्छाओंको रोकना अब उसकी सामर्थ्यसे बाहर था, क्योंकि प्रथम तो वह अभी तक रोगसे मुक्त नहीं हुआ था दूसरे अपने ज्येष्ठ पुत्र (दारा) के शासक नहीं किन्तु नौकरके समान हो रहा था। दाराकी दुष्टताके कारण लाचार होकर उसने राज्यशासनके कामोंसे हाथ खींच लिया था और दरबारियों तथा अफसरोंसे कह दिया था कि उसकी आज्ञा और अनुमतिके अनुसार काम करना। मतलब यह कि इन दिनों उसकी यह अवस्था थी कि मानो दाराशिकोह तो बादशाह और शासक था और वह प्रजा अथवा शासित। अतएव यह कोई आश्चर्य नहीं कि दाराने सहजमें इतनी बड़ी सेना एकत्रित करली जितनी बड़ी सेना कदाचित् हिन्दुस्तानकी रणभूमिमें पहले कभी इकट्ठी नहीं हुई होगी। एक लाख सवार, बीस सहस्त्रसे भी अधिक पैदल, असंख्य तोपें और असंख्य नौकर बनिये दूकानदार मजदूर इत्यादि, जिनकी

इतर देते तथा इत्यादि कामोंके लिये चाहे जीत हो चाहे हार लड़ाईके समय वर्तमान रहना आवश्यक होता है और जिनको प्रायः इतिहास लेखक भूल से लड़ने भिड़नेवाले सिपाहियोंमें मिलाकर लिख देते हैं कि अमुक स्थानमें चार लाख योद्धे थे, एकत्रित होगये यद्यपि इस बातका निश्चय है कि दाराशिकोहकी सेना इतनी अधिक थी कि वह औरंगजेबकी भी जिसकी अधीनतामें चालीस सहस्रसे अधिक सैनिक नहीं थे और वे भी कड़ी धूपमें बराबर चले आनेके कारण थके मांदे थे दो तीन सेनाओंको हरा सकता था परन्तु इतने पर भी किसीको उसकी जीत होनेकी आशा नहीं होती थी। इसका कारण यह था कि जिन सिपाहियों और सरदारोंसे यह भरोसा किया जा सकता था कि ईमानदारी के साथ अन्ततक लड़ेंगे वे केवल वेही थे जो सुलेमानशिकोहके साथ गये थे; बाकी दरबारमें जितने लोग थे उनके रंगढंगसे साफ प्रगट होता था कि न तो वे दारासे प्रीति रखते हैं न उसका कुछ लाभ चाहते हैं। दाराके मित्रोंने यह अवस्था देखकर उसे सलाहदी कि आप इस भयानक लड़ाईमें पड़नेका साहस न करें। स्वयं बादशाह (शाहजहां) ने सेनापति बनकर औरंगजेबके विपक्षमें युद्धक्षेत्रमें जानेकी इच्छा प्रगट की। बादशाहकी यह युक्ति बहुतही योग्य और उचित थी। इससे अवश्य लड़ाई टल जाती और औरंगजेब जो बड़े अहंकारमें भरा था सफलता न प्राप्त कर सकता। प्रथम तो मुरादबख्श और औरंगजेब सम्भवतः पिताके विरुद्ध लड़ते ही नहीं और यदि आते भी तो अवश्य उनकी दुर्दशा होती क्योंकि औरंगजेब और मुरादके सब सरदार तथा सैनिक बादशाहके हृदय से भक्त थे।—

जब दाराने किसी प्रकार अपने मित्रोंकी सलाह न मानी तब लाचार होकर उन्होंने समझाया कि सुलेमान शिकोह के आ जाने तक जो आपकी सहायताके लिये शीघ्रतासे बढ़ा चला आता है

आप ठहरे रहिये। —यह सलाह भी अच्छी और लाभ पहुँचाने-वाली थी; क्योंकि सुलेमानशिकोहसे प्राय, सब लोग प्रसन्न और सन्तुष्ट थे और वह अपने साथ एक ऐसी सेना लिये चला आता था जिसमें बहुतसे खास दारा के नियुक्त किये हुए लोग थे और वे शुजापर विजय प्राप्त कर चुके थे। किन्तु दारा ने यह बात भी नहीं मानी। उसने इसी एक बातका दृढ संकल्प कर लिया था कि जिस तरह बन पड़े औरंगजेबको नीचा दिखाना चाहिये।

दाराका दुराग्रह-यदि दारा भाग्यवान् होता और सुसमय दुस्समय पहचान कर काम करता तो बहुत सम्भव था कि वह जीत जाता। परन्तु जिन विचारोंसे उसने किसीकी सलाह नहीं मानी और जल्दी से भिड़ जाना पसन्द किया उनमेसे एक तो यह था कि उसने सोचा कि इस समय बादशाह यहांतक मेरे पंजोंमे फँसा हुआ है कि उसके ऊपर मेरा पूरा पूरा अधिकार है दूसरे यह कि राजकोष मेरे हाथमें है, तीसरे कि समस्त बादशाही सेना मेरी आज्ञाके अधीन है, चौथे शुजा इस प्रकार हारा है कि मानो एकदम नष्ट हो गया है और औरंगजेब तथा मुराद जो एक थकी मादी सेना लेकर आते हैं इस अवस्थामें जो वे पराजित होंगे तो फिर उनको कहीं ठिकाना नहीं रहेगा। इस प्रकार नित्यका खटका मिट जायगा और मैं स्वतन्त्र होकर सफलता प्राप्त कर निष्कण्टक राज्य भोग करूंगा। उसने यह भी सोचा कि यदि बादशाहको युद्धक्षेत्रमें जाने दूंगा तो सन्धि हो जायगी और सब भाई अपने अपने प्रान्तको लौट जायेंगे, फिर बादशाह जिसका स्वास्थ्य अब पहलेसे अच्छा होता जाता है पुनः राज्यशासनका भार अपने ऊपर ले लेगा और राज्य-कार्य जिस भांति पहले चलते थे वैसेही फिर चलने लग जायेंगे। सुलेमान शिकोहके आ जानेतक रुके रहनेके विषयमें उसने यह विचार किया कि कहीं ऐसा न हो कि बादशाह उसके आ जानेतक

ऐसी लड़ाईका कोई प्रबन्ध कर डाले या औरंगजेबसे कोई ऐसा इकरारनामा करले जिससे उसे हानि होनेका डर हो । यह विचार भी उसके मनमें उत्पन्न हुआ कि यदि सुलेमानशिकोहके आनेतक ठहरा रहा जाय और मान भी लिया जाय कि उसके आनेपर उसकी सहायतासे जीत होगी, पर ऐसी अवस्थामें भी तो इस जीतका कारण लोग उसीको समझेंगे । उसकी वीरताकी पहलेहीसे धूम मच चुकी है, फिर यह कौन कह सकता है कि उस तेजस्वी राजकुमार के चित्त पर उस समय कैसा प्रभाव पड़ेगा जब लोग और भी उसकी प्रशंसा करेंगे । मतलब यह कि जब बादशाह और दरबारके बड़े बड़े सरदार उसकी वाहवाही करेंगे उसको शाबाशी देंगे तो क्या मालूम उसके विचार कितने बढ़ जायंगे और पिताकी प्रीति और प्रतिष्ठाका उसे ध्यान रहेगा या नहीं ।

येही कारण थे जिससे दारा बहक गया और अपने बुद्धिमान् मित्रोंकी उसने एक न सुनी । सेनाको युद्धके लिये तैयार होकर कूच करनेकी आज्ञा देकर वह विदा होनेके हेतु दुर्गमें पिताके पास गया । वृद्ध शाहजहां पहलेतो अपने ज्येष्ठ पुत्रसे गले मिलकर रोने लगा, परन्तु फिर कुछ सम्हलकर बोला—“खैर बेटा, तुमने अपनी मरजीका काम किया, खुदा तुमको इसमें सुर्खरू और कामयाब करे; लेकिन याद रखो कि अगर लड़ाई बिगड़ गई तो आकर मुझे क्या मुंह दिखाओगे !” पिताकी बातों पर अधिक विचार न करके दारा झटपट वहांसे चला आया । पश्चात् चम्बल नदीकी ओर जो आगरेसे लगभग ६० मीलके अन्तर पर है उसने यात्रा की और वहां पहुँचतेही यह सोचकर कि शत्रुओंकी सेना इसी मार्गसे जायगी उसने नदीका घाट रोक कर पड़ाव डाल दिया । परन्तु वह दीर्घ दृष्टिवाला प्रपंची “ फकीर ” (औरंगजेब) जिसने प्रत्येक स्थानमें अपने जासूस और भेदिये लगा रखे थे यह बात भली भांति जानता

था कि इतने शत्रुओंके रहते नदीपार उतरना कितना कठिन काम है। इतने पर भी उसने अपने डेरे खेमे उस पार आकर लगा दिये और जान बूझकर इतने पास लगाये कि जिसमें दाराकी दृष्टि उन पर पड़ सके। इतना काम करलेनेके उपरांत उसने यह किया कि चम्पत नामक एक राजाको कुछ भेट पारितोषिक देकर इस बातपर प्रसन्न कर लिया कि वह उसकी सेनाको अपने राज्यसे होकर उस घाटकी ओर निकल जाने दे जहां पानी कम हो या जहांसे नदी सहजमें पार की जा सके। इस राजाने वे दुर्गम जंगली और पहाड़ी पथ जिनके विषय में कदाचित् दारा यह समझे हुए था कि इस ओरसे औरंगजेब नहीं आ सकेगा स्वयं जाकर उसकी सेना को दिखा दिये। तात्पर्य यह कि इधर तो दारा और उसके सहायक को धोखा देनेके लिये डेरे खेमे ज्यों के त्यों खड़े रहे, उधर औरंगजेब सेनाके सहित दूसरे मार्गसे चुपचाप चम्बल के पार उतर आया। जब दाराको इस बातकी खबर लगी तब लाचार होकर उसे भी वहांसे हटना और उसका पीछा करना पड़ा। इस समय औरंगजेब चम्बल के पार उतरकर बड़ी शीघ्रतासे यमुनाके किनारे पहुँच गया था और अपने सैनिकोंको विश्रान्ति देनेके विचारसे युद्धकी सब सामग्रियोंसे ठीक होकर देख रहा था कि दारा कब आता है। (यह स्थान जहां उसने डेरा डाला था आगरे से लगभग १५ मीलके अन्तर पर है। पहले इसका नाम समूगढ़ था पर अब इस कारणसे कि औरंगजेब ने यहां विजय पाया था फतहाबाद कहा जाता है) दारा भी झट पट वहां आ पहुंचा और औरंगजेबकी सेनाओं तथा आगरे के बीचमें यमुना के किनारे उसने भी अपने डेरे खड़े किये।

तीन चार दिन तक दोनों सेनाएँ आमने सामने चुपचाप पड़ी रहीं। इस बीचमें यद्यपि शाहजहांने पत्र पर पत्र भेजे और लिखा कि "सुलेमान शिकोह करीब पहुंच गया है खबरदार बेटोंके जल्दी

न कर देना। लेकिन मुनासिब यह है कि बागियोंसे और करीब हो जाओ और सुलेमान शिकोहके आ जानेतक लश्कर को किसी मुनासिब जगह ठहराकर दूर ही से [illegible] खबर लो और मोर्चे बांध लो।" पर हमने केवल इतनाही उत्तर देकर तुरन्त लड़ाई की तैयारी कर दी कि "हुजूर कुछ अन्देशा न फरमायें। इनशा-अल्लाह तीन दिन गुजरने न पायेंगे कि औरंगजेब और मुरादबख्श दोनोंके हाथ पांव बांधकर हाजिर कर दूंगा। उस वक्त हुजूरको इख्तियार है कि जो मुनासिब हो उनको सजा दें।"

औरंगजेब और दारा--निदान सबसे पहले दाराने तोपखाना खड़ा किया और लोहेके सिक्कड़ोंसे इसभांति तोपोंको परस्पर जकड़ दिया कि शत्रुपक्षके सवारोंको आक्रमण करके घुस आनेका स्थान न रहे। उसके पीछे ऊँटोंपर एक विशेष प्रकारकी छोटी छोटी तोपें लगाई गईं। ये छोटी तोपें ऐसी थीं कि जिनको ऊँट-सवार बिना नीचे उतरे सहजमें घूमकर चला सकता था। इनके पश्चात् कई पंक्तियां पैदल बन्दूक दागनेवालोंकी थीं। शेष सेना सवारोंकी थी जिनके पास या तो तलवारें और बर्छियां थीं, जिनको राजपूत व्यवहारमें लाते हैं, या तलवार या तीर धनुष। मुगल लोग अधिकतर तरवार और तीर धनुषसे काम लेते हैं। यहां पर जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूं यह समझ लेना चाहिये कि मुगलके अन्तर्गत समस्त गोरे विदेशी मुसलमान, ईरानी, तूरानी, अरब, रूमी, सब आगये।

दाराशिकोहने सेनाको तीन भागोंमें बांटा। दाहिनी ओरका सरदार-खलीलउल्लहखां बनाया गया जिसके अधीन ३० सहस्र मुगल थे। बाईं ओरकी सरदारीका भार प्रसिद्ध वीर रुस्तमखां दक्खिनी, राव छत्रशाल और सरदार रामसिंह राठौरको दिया गया, (यह खलीलउल्लहखां दानिशमन्दखांके स्थानमें जिसके य-

कुछ कालतक मैं नौकर था सवारों की सेनाका बख्शी अथवा सेनापति बनाया गया था। इसका यह कारण था कि दानिशमन्दखां कदापि नहीं चाहता था कि कोई व्यक्ति शाहजहांके राज्याधिकारमें हस्तक्षेप करे, और इस बातसे दारा रुष्ट होता था अतएव उसने अपने पदसे इस्तीफा दे दिया था) अस्तु इधर दाराने यह प्रबन्ध किया उधर औरंगजेब और मुरादबख्शने भी प्रायः इसी रीतिसे अपनी सेनाएँ मैदानमें खड़ी कीं। हां, उसने इतना अधिक किया कि उमरावों सेनाओंमें जो दोनों ओर दायें बायें थी कुछ हलकी तोपे छिपे ढंगपर लगा दीं। कहा जाता है कि यह युक्ति मीरजुमला ने बताई थी और इसका कुछ अच्छाही फल हुआ। मैं नहीं जानता कि इस युद्धमें इसके अतिरिक्त कि एक प्रकारके बाण दोनों ओरके सवारों पर चलाये जाते थे जिनसे प्रायः घोड़े भड़क जाते और कुछ सिपाही भी गिर पड़ते थे और किसी सामरिक युक्तिसे काम लिया था या नहीं, परन्तु इतना मैं अवश्य कहूंगा कि यहां के सवारोंकी चाल अच्छी है। लड़ाई के समय सहजमें घोड़ोंको घुमाने और चक्कर आदि देनेका इनको बड़ा अभ्यास है। ये लोग ऐसी सुन्दर रीतिसे तीर चलाते हैं कि जितने समयमें कोई बन्दूकवाला दो बार गोली दाग सकता होगा उतने समयमें ये छः बार तीर चला सकते हैं। इनमें यह भी गुण है कि ये बड़ी उत्तमतासे पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं, विशेषकर आक्रमणके समय बहुत इकट्ठे होकर शत्रुओंपर गिरते हैं। इतने पर भी मैं इनको विलायती सैनिक सवारोंके समान समर विद्यामें सुचतुर नहीं समझता। ऐसा न समझने का कारण मैं आगे चलकर बताऊंगा।

लड़ाई की लीला—अब लड़ाईका हाल सुनिये कि जब दोनों ओर भली भांति तैयारी हो चुकी तब यहांकी रीतिके अनुसार पहले गोले चलने आरम्भ हुए, फिर तीर इस अधिकतासे बरसे कि मानो बादल छा गया, इतने में सहसा वृष्टि होने लगी जिसमें

तोपें जो वर्षा [illegible] हो रही थीं थोड़ीदेरके लिये रुक गईं. परन्तु पानी बरसना बन्द होतेही फिर तोपें चलने लगीं। इस समय दाराशिकोह सिंहलद्वीपके एक सुन्दर हाथीपर सवार होकर निकला और सब ओरसे धावा करनेकी आज्ञा देता हुआ स्वयं सवारोंकी एक सेनाके साथ शत्रुओंकी तोपें छीन लेनेके अभिप्रायसे साहस पूर्वक आगे बढ़ा। इधर शत्रुपक्षने ऐसी वीरतासे सामना किया कि उनके चारों ओर मृतकोंके ढेर लग गये और न केवल वही सेना जो पहले से उसके साथ थी परन्तु और भी जो पीछे आ गई थी एकदम तितर बितर हो गई। इतने पर भी दारा साहसपूर्वक मैदानमें हाथीपर बैठा बड़ी सावधानी और शूरतासे चारों ओर देखता हुआ अपना पक्ष सबल करनेका उद्योग करता रहा। उसकी देखा देखी उसके सैनिकोंने भी साहस किया और वे सिपाही जो जगह छोड़कर इधर उधर हट गये थे फिर अपने स्थान पर आगये। यद्यपि फिर दारा ने कई आक्रमण किये परन्तु औरंगजेबके पासतक वह नहीं पहुँच सका, कारण यह कि दूसरी ओरके तोपखानेने इतनी हानि पहुँचाई और इतना प्रभाव उत्पन्न किया कि इस ओरके सिपाहियोंका साहस जाता रहा, वरन् कुछ सिपाही भाग भी गये। परन्तु दाराका वीरत्व देखकर शेष सैनिकोंने मुँह नहीं मोड़ा। वे अपने सेनापतिके साथ बड़ी शीघ्रता से बढ़े, यहांतक कि तोपोंके निकट पहुंचकर उन्होंने उनसे बंधे हुए सिक्कड़ों को खोल डाला। इसके पश्चात् शत्रुओंके खेमोंमें घुसकर तोपवाले तथा पैदल सैनिकोंको एक दम मार भगाया। इस अवसर पर दोनों ओरके सवारोंमें घमसान लड़ाई हुई और इतने तीर बरसे कि आकाशका दिखाई देना कठिन होगया,—और तो क्या, दाराने तीरोंकी बौछाड़ करते करते अपना तर्कश बिल्कुल खाली कर डाला। परन्तु इन तीरों से दोनोंमेसे किसी पक्षकी विशेष हानि नहीं हुई, क्योंकि १० मेंसे ८

तीर या तो निशान तक पहुंचतेही नहीं थे या इधर उधर जाकर गिरते थे। जब तर्कश एकदम खाली होगये तब तलवारोंसे काम लिया जाने लगा। दोनों ओरके लोग इस प्रकार लड़ते थे कि जितने अधिक सिपाही मारे जाते थे उतनीही अधिक उत्तेजना फैलती जाती थी। दारा प्रचण्ड साहससे बार बार अपने सरदारोंको पुकार पुकार कर उत्साहित करता और बढ़ावा देता जाता था जिसका यह परिणाम हुआ कि लड़ते लड़ते अन्तमें शत्रुओं के सवार भी भाग गये।

औरंगजेब इस समय दूर नहीं था। वह हाथीपर बैठा सिपाहियों को लड़नेके लिये ढाढ़स दे देकर उत्तेजित करने लगा, परन्तु जब बहुत चेष्टा करने पर भी उसने देखा कि कुछ लाभ नहीं होता, उसके प्रधान सवार दाराको नहीं रोकते हैं वरन् भागे जाते हैं, और दारा ऊबड़ खाबड़ भूमिकी कुछ भी परवा न करके उसके बचे हुए सैनिकोंका भी (जो एक सहस्रके लगभग बल्कि जैसा कि मेरे सुननेमे आया था पांच सौसे अधिक नहीं थे) संहार किया चाहता है, तब निर्भीक होकर उसने अपने सरदारोंका नाम ले लेकर पुकारना और कहना आरंभ किया कि "बहादुरो खुदापर भरोसा रक्खो! भागनेसे क्या होगा? खुदा सब जगह मौजूद है। क्या तुम नहीं जानते कि मुल्के दकन यहांसे किस कदर दूर है? इतना कहकर अपनी दृढ़ता प्रगट करने के लिये कि चाहे कुछ हो हम लड़ाईके मैदानसे कदापि नहीं हटेंगे उसने यह विचित्र आज्ञा दी कि "हमारे हाथी के पावोंमें लोहेके सिक्कड़ डालदो जिससे कि वह आगे पीछे न हो सके।" यदि उसके सैनिक फिर लड़नेको तैयार न हो जातेतो वह निस्सन्देह ऐसा कर डालता, परन्तु अपने स्वामीका ऐसा दृढ़ निश्चय देखकर उनके मनमें धैर्य्य आया और पुनः साहसने उनका साथ दिया।

इस समय दाराने औरंगजेब पर छापा मारनेका विचार किया। परन्तु रुस्तमके उक्त दोनों हाथी तथा उसके सवारोंके कारण जो अब तक मैदानमें और टीलोंपर उपस्थित थे, यद्यपि व्यवस्थित नहीं थे) वह वहांतक नहीं पहुँच सका। दारा सोचता था कि औरंगजेब को मार डाले अथवा कैद किये बिना विजय पाना किसी कामका नहीं। औरंगजेब अब लड़ने योग्य नहीं रह गया था अतएव दाराको हालतमें तुरन्त आक्रमण करके, उसे अपने वशमें कर लेना उचित था; परन्तु कई कारणोंसे जिनका उल्लेख मैं अभी करता हूं उसका ध्यान एक दूसरी ओर चला गया और औरंगजेब सिर पर शीघ्रही आनेवाली आपत्तिसे बच गया।

औरंगजेबकी दृढ़ता–दारा औरंगजेबपर आक्रमण करने का विचार कर रहा था इतने में उसने देखा कि उसकी सेनाके बाईं ओर बड़ी हलचल मची हुई है। इतनेहीमें उसका एक मुसाहिब यह सम्वाद लाया कि रुस्तमखां और छत्रशाल मारे गये और रामसिंह राठौर जो बड़ी वीरतासे धावा करके शत्रुओंकी सेनामें जा घुसा था घिर गया है। अतएव औरंगजेब पर छापा मारनेका विचार त्याग कर उसे अपनी सेनाके बाएं भागकी सहायताके लिये जाना पड़ा। उसके वहां जानेपर भयानक मार काटके पश्चात् लड़ाईका रंग फिर पलट गया, शत्रुओंकी सेना चारो ओरसे पीछे हटा दी गई, परन्तु अभीतक उनकी ऐसी हार नहीं हुई थी कि जिससे दारा पूरी तरह निश्चिन्त हो जाता। इधर रामसिंह ने बड़ा पराक्रम प्रगट किया। उसने मुरादबख्शको बड़ी वीरता और तेजस्वितासे घायल कर डाला। केवल इतनाही नहीं वरन् वह अमारीका रस्सा काट कर उसे हाथी पर से गिरादेनेकी भी चेष्टा कर रहा था। मुराद घायल होगया था और चारों ओरसे राजपूतोंमें घिरा हुआ था, इतने पर भी उसने रामसिंह को सफल मनोरथ नहीं होने दिया।

वह बड़ा फुर्तीला और दूरदर्शी योद्धा था। उसे जो कष्ट पहुँच रहा था। उसकी चिन्ता न करके उसने अपने सात आठ वर्षकी उमरके बच्चेको जो पास बैठा था ढालकी छाया करके बचाया और फिर निशाना साधकर इस फुर्तीसे एक तीर माराकि वीरराजा रामसिंह सदा सर्वदा के लिये इस संसार से विदा हो गया।

दाराको राजा रामसिंहकी मृत्युका बहुत शोक हुआ, परन्तु जब उसने देखा कि अपने सरदारके मारे जातेही समस्त राजपूत योद्धे क्रोध और जोशके साथ मुरादबख्शको घेरे हुए हैं, तब कई विघ्नों के रहते हुए भी स्वयं बढ़कर उसपर आक्रमण करनेका विचार किया। यद्यपि ऐसी अवस्थामें औरंगजेब बचा जाता था और उसको छोड़ देना उचित नहीं था, तौभी दारा मुरादके हाथ आ जानेको भी औरंगजेबके पकड़े जानेसे कम नहीं समझता था; परन्तु उसका ऐसा सोचना व्यर्थ हुआ, उल्टे उसेही भयानक रूपमें पराजित होना पड़ा।

विश्वासघाती सरदार-दाहिने ओरके सैन्यदलके सरदार का नाम खलीलउल्लहखां था। उसकी अधीनतामें १० सहस्र मुगल थे जो ऐसे सिक्षित थे कि केवल वही औरंगजेब के समस्त सैनिकोंको हरा सकते थे, परन्तु जिस समय दारा बड़ी वीरता और साहस से बाईं ओर लड़ रहा था उस समय इस सरदार ने तनिक भी उसकी सहायता नहीं की, वरञ्च लोगोंसे यह बहाना करदिया कि हमारी सेना के लिये यह आज्ञा है कि जब तक विशेष प्रयोजन न हो और आज्ञा न दी जाय तब तक एक डगभी आगे न बढ़े और एक तीर भी न छोड़े। किन्तु उसका ऐसा बहाना करना विश्वास घातता और बेइमानीसे भरा हुआ था।

बात यह थी कि कई वर्ष पूर्व दाराशिकोहने इस सरदारका कुछ अपमान कर डाला था, वह अपमान रूपी आग अब तक इसके हृदय को जला रही थी, अतएव उसने सोचा कि बदला लेनेके लिये यह

इससे स्पष्ट है। परन्तु दाराशिकोहकी जो हानि उसने अपने [illegible] रहनेसे सोची थी वह नहीं हुई, क्योंकि दाहिनी ओरके लोगोंकी सहायताके बिनाही उसने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लिया। अब इस विश्वासघातीने एक और चाल चली. अर्थात् जब दारा मुरादबख्शके दबानेके अभिप्रायसे अपने सैनिकोंकी सहायताको जा रहा था, तब शीघ्रतासे अपने सहायकोंके सहित आगे बढ़ कर इस दुष्टने उसे पुकारा और कहा—"मुबारकबाद हजरत सलामत, अलहम्दुलिल्लाह! हुजूरको खैर व सलामती बादशाही और फतह मुबारक हो। लेकिन हुजूर यह तो फरमावें कि ऐसे खतरनाक मौके पर जब अमारीके सायबानसे कई गोलियाँ और तीर पार हो चुके हैं इतने बड़े हाथी पर क्यों सवार हैं। अगर खुदा न ख्वास्ता बे शुमार तीरों और गोलियोंसे कोई जिस्मे-मुबारक को छू जाय तो हम लोगोंका कहां ठिकाना रहेगा। खुदाके वास्ते जल्द उतरिये और घोड़े पर सवार हो लीजिये। अब क्या रह गया है! सिर्फ इतनी बात बाकी रह गई है कि इन चन्द भगोड़ोंका ज्यादा-तर चुस्ती और मुस्तैदी से पीछा किया जावे।"

दाराका पराजय-यदि दारा हाथी परसे उतरने में अपनी हानि समझता, यदि वह सोचता कि इस हाथी हीकी कृपासे आज वह कैसे कैसे काम कर सका है—और सैनिकोंको उसके दिखाई देते रहनेसे कितना साहस हुआ है, तो वही अपने पिताके सुविस्तृत राज्यका अधिकारी होता, परन्तु राज्यके लोभमें पड़कर उसने खलीलउल्लहकी बातोंका विश्वास किया। थोड़ी देर के बाद जब उसे कुछ सन्देह हुआ तब उसने पूछा कि खलीलउल्लहखां कहाँ है; परन्तु वह अब कहां था और कब उसके हाथ आता था! यद्यपि उस समय दाराने अनेक गालियां दीं और यह भी कहा कि मैं उसे जीता नहीं छोड़ूंगा, परन्तु उसका यह धमकी देना और क्रोध प्रगट

वह बड़ा फुर्तीला और दूरदर्शी योद्धा था। उसे जो कष्ट पहुँच रहा था। उसकी चिन्ता न करके उसने अपने सात आठ वर्षकी उमरके बच्चेको जो पास बैठा था ढालकी छाया करके बचाया और फिर निशाना साधकर इस फुर्तीसे एक तीर माराकि वीरराजा रामसिंह सदा सर्वदा के लिये इस संसार से विदा हो गया।

दाराको राजा रामसिंहकी मृत्युका बहुत शोक हुआ, परन्तु जब उसने देखा कि अपने सरदारके मारे जातेही समस्त राजपूत योद्धे क्रोध और जोशके साथ मुरादबख्शको घेरे हुए हैं, तब कई विघ्नों के रहते हुए भी स्वयं बढ़कर उसपर आक्रमण करनेका विचार किया। यद्यपि ऐसी अवस्थामें औरंगजेब बचा जाता था और उसको छोड़ देना उचित नहीं था, तौभी दारा मुरादके हाथ आ जानेको भी औरंगजेबके पकड़े जानेसे कम नहीं समझता था; परन्तु उसका ऐसा सोचना व्यर्थ हुआ, उल्टे उसेही भयानक रूपमें पराजित होना पड़ा।

विश्वासघाती सरदार-दाहिने ओरके सैन्यदलके सरदार का नाम खलीलउल्लहखां था। उसकी अधीनतामें ३० सहस्र मुगल थे जो ऐसे सिक्षित थे कि केवल वही औरंगजेब के समस्त सैनिकोंको हरा सकते थे, परन्तु जिस समय दारा बड़ी वीरता और साहस से बाईं ओर लड़ रहा था उस समय इस सरदार ने तनिक भी उसकी सहायता नहीं की, वरञ्च लोगोंसे यह बहाना करदिया कि हमारी सेना के लिये यह आज्ञा है कि जब तक विशेष प्रयोजन न हो और आज्ञा न दी जाय तब तक एक डगभी आगे न बढ़े और एक तीर भी न छोड़े। किन्तु उसका ऐसा बहाना करना विश्वास घातता और बेइमानीसे भरा हुआ था।

बात यह थी कि कई वर्ष पूर्व दाराशिकोहने इस सरदारका कुछ अपमान कर डाला था, यह अपमान रूपी आग अब तक इसके हृदय को जला रही थी, अतएव उसने सोचा कि बदला लेनेके लिये यह

उपयुक्त समय है। परन्तु दाराशिकोहकी जो हानि उसने अपने मतलब रखनेसे मोल ली थी वह नहीं हुई, क्योंकि दाहिनी ओरके लोगोंकी सहायताके बिनाही उसने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लिया। अब इस विश्वासघातीने एक और चाल चली, अर्थात् जब दारा मुरादबख्शके दबानेके अभिप्रायसे अपने सैनिकोंकी सहायता को जा रहा था, तब नमकहरामने अपने सहायकोंके सहित आगे बढ़ कर इस दुष्टने उसे पुकारा और कहा—"मुबारकबाद हजरत सलामत, अलहम्दुलिल्लाह! हुजूरको बखैर व सलामती बादशाही और फतह मुबारक हो। लेकिन हुजूर यह तो फरमावें कि ऐसे खतरनाक मौके पर जब अमारीके सायबानसे कई गोलियाँ और तीर पार हो चुके हैं इतने बड़े हाथी पर क्यों सवार हैं। अगर खुदा न ख्वास्ता बे शुमार तीरों और गोलियोंसे कोई जिस्मे-मुबारक को छू जाय तो हम लोगोंका कहां ठिकाना रहेगा। खुदाके वास्ते जल्द उतरिये और घोड़े पर सवार हो लीजिये। अब क्या रह गया है! सिर्फ इतनी बात बाकी रह गई है कि इन चन्द भगोड़ोंका ज्यादा-तर चुस्ती और मुस्तैदी से पीछा किया जावे।"

दाराका पराजय—यदि दारा हाथी परसे उतरने में अपनी हानि समझता, यदि वह सोचता कि इस हाथी हीकी कृपासे आज वह कैसे कैसे काम कर सका है—और सैनिकोंको उसके दिखाई देते रहनेसे कितना साहस हुआ है, तो वही अपने पिताके सुविस्तृत राज्यका अधिकारी होता, परन्तु राज्यके लोभमें पड़कर उसने खलीलउल्लहकी बातोंका विश्वास किया। थोड़ी देर के बाद जब उसे कुछ सन्देह हुआ तब उसने पूछा कि खलीलउल्लहखां कहाँ है; परन्तु वह अब कहां था और कब उसके हाथ आता था! यद्यपि उस समय दाराने अनेक गालियां दीं और यह भी कहा कि मैं उसे जीता नहीं छोड़ूंगा, परन्तु उसका यह धमकी देना और क्रोध प्रगट

करना एक दम व्यर्थ हुआ। कारण यह कि सिपाहियोंने जब देखा कि उनका मालिक हाथीपर नहीं है तब तुरन्त उसके मारे जानेका सम्बाद चारों ओर फैल गया और सारी सेनामें हलचल मच गई। सबको किसी प्रकार प्राणरक्षा करनेकी चिन्ता पड़ गई। क्षणमात्रमें विचित्र परिवर्त्तन दिखाई दिया, अर्थात् विजयी विजित हुए और विजित विजयी। यह विलक्षणता देखिये कि औरंगजेबके केवल पाव घण्टे हाथी पर चढ़े रहनेका यह परिणाम हुआ कि वह भारतवर्षका बादशाह हो गया और कई क्षणके निमित्त हाथीसे उतरनेका दारा को यह फल मिला कि वह हाथीसे क्या उतरा मानों राजासन गिर पड़ा और अभागे राजकुमारोंकी श्रेणीमें परिगणित हुआ! देखिये मनुष्य कैसा अदूरदर्शी है; एक छोटी सी बातसे इस संसारमें कैसे बड़े बड़े परिवर्त्तन हो जाते हैं!

बड़ी बड़ी सेनाएँ बहुत बड़े बड़े काम करती हैं इसमें सन्देह नहीं, परन्तु जब घबराहटमें पड़कर वे नियम-विरुद्ध हो जाती हैं तब उनको उनकी पूर्व अवस्थामें लाना बहुत कठिन होता है। यदि कोई बड़ी नदी उछलकर किनारोंके बाहर हो निकले तो जैसे उसके फैले हुए पानी को बांधना असम्भव होगा वैसेही किसी बड़ी सेनाके नियम-विरुद्ध होकर तितर बितर हो जाने पर उसे सम्हालना और नियम-पूर्वक ठीक करना असाध्य होता है। अतएव जब मैं कुनियमसे चलनेवाले इन सैनिकोंको जो भेड़ बकरियोंके झुण्डोंके समान चलते हैं देखता तो सदा मेरे मनमें यही विचार उत्पन्न होता कि हमारे यहां के (अर्थात् फ्रान्स देशके) केवल २५ सहस्र लड़ने भिड़नेवाले सुशिक्षित सिपाही (१) प्रिन्स काण्डी अथवा (२)

(1) Prince of Conde, better known as Conde the Great.
(2) Marshal Turenne, one of the greatest soldiers of France

मारशल ट्यूरेन की अधीनतामें रहकर भारतवर्षके ऐसे सैनिकोंपर (चाहे वे संख्यामें कितने ही हों) विजय प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त जब मैं पुस्तकोंमें पढ़ता हूं कि ग्रीस देशके दस सहस्र सिपाहियोंने कैसी वीरता प्रगट की थी और मकदूनियांके पचास हजार सैनिकोंने जो महान् सिकन्दरके साथ थे ईरानके बादशाह दाराके छः सात लाख आदमियोंको किस भांति हराया था। यदि यह सच हो कि दाराकी सेना भांड़के सिवा वास्तवमें इतनीही थी) तो नियम-विरुद्ध और सुनियम-गठित सेनाओं की दशाका विचार करने के बाद मुझे इन ऐतिहासिक कथाओं पर तनिक भी आश्चर्य नहीं होता। मेरी समझ में फरासीसी सिपाही अपने साहससे शत्रु-ओंका पहला आक्रमण रोककर प्रत्येक हिन्दुस्तानी सेनाको घबराहट में डाल सकते हैं, अथवा सिकन्दरकी भांति शत्रुदलकी किसी विशेष पंक्तिपर ही अपना सम्पूर्ण बल डालकर शेष सेनामें भय और हल-चल उत्पन्न कर सकते हैं।

औरंगजेब जो अपना मतलब निकालनेके लिये नीचसे नीच काम कर डालनेको सदा तैयार रहता था यह आकस्मिक और ईश्वरीय-विजय पाकर तथा यह समझकर कि अब समय उपयुक्त आया है अपनी चालके जाल फैलानेमें प्रवृत्त हुआ। तुरन्तही विश्वा-सघाती खलीलउल्लह भी उससे आ मिला। उसके आतेही इसने उसकी खूब प्रशंसा की और अनेक आशाएँ दिखाई, परन्तु जो कुछ प्रतिज्ञा की वह अपनी ओरसे नहीं किन्तु अपने भाई मुरादकी ओर से; और इसके उपरान्त वह स्वयं उसे मुरादके निकट लेगया। उसने भी समयके अनुसार बड़ी प्रसन्नतासे इसका स्वागत किया। औरंग-जेबने दिखानेके लिये खलीलउल्लहसे कहा कि "जनाब, सिर्फ हजरतही (अर्थात् मुराद) तख्तनशीनीके लायक हैं और यह फतह इन्हींकी काबूलियत और शजाअत से हासिल हुई है।"

औरंगजेबकी नीति-इधर तो औरंगजेब ऐसी प्रीतियुक्त बातें कहता था। उधर रात दिन राज-दरबारके उमराको पत्र लिख लिख कर धीरे धीरे अपने पक्षमें करता था। इन दिनों इसका मामूँ शाइस्ताखां भी इसके निमित्त बहुत कुछ उद्योग कर रहा था। उसकी सहायतासे इसको बहुत लाभ भी हुआ, क्योंकि शाइस्ताखां एक चतुर बुद्धिमान् और शक्तिशाली पुरुष था। सारे भारतवर्षमें यह बात प्रसिद्ध थी कि वह बहुत सीधी मीठी और प्रभावशालिनी भाषामें पत्र लिख तथा बातें करके बड़े बड़े काम निकाल सकता है। यह भी कहा जाता है कि दाराने किसी समय उसके साथ अनुचित बरताव किया था जिसके कारण उससे इसको बहुत घृणा हो गई थी और वह उस अपमानका बदला लेनेके लिये अवसर ढूँढ रहा था। सो इस अवसरको उसने उपयुक्त समझा। इस ओर राज्यका विकट लोभी होनेपर भी औरंगजेब लोगोंके दिखावमें ऐसा बना रहता कि मानो इस खटपटमें उसका कुछ स्वार्थही नहीं है। जो काम होते मुरादके नामसे होते; लोगोंको जो आज्ञाएँ दी जातीं अथवा लोगों से प्रतिज्ञाएँ की जातीं वे मुराद बख्श के नामसे की जातीं। तात्पर्य यह कि मुरादहीकी आज्ञा मानी जाती और वही भविष्य बादशाह समझा जाता। औरंगजेब अपने बरतावोंसे अपनेको उसका एक सरदार और सामन्त प्रगट करता; यह भाव दिखाता कि राज्यके खटपटमें पड़नेकी उसकी कदापि इच्छा नहीं है, वरन् सन्यासियोंकी भांति पवित्रता और शान्तिसे वह अपने जीवनका अन्त कर देना चाहता है।

इस समय दारा भय और निराशाके समुद्रमें डूब रहा था। आगरे तो वह चला गया परन्तु इस कारणसे कि बादशाहके ये वाक्य—"ऐ बेटा तुमने अपने मर्जी का काम किया, खुदा तुमको इसमें खुर्रम और कामयाब करे, लेकिन याद रखो कि अगर

लड़ाई बिगड़ गई तो आकर मुझे क्या मुंह दिखाओगे" अभी तक उसे चाह थे. वह पिताके सामने नहीं जा सका। पर शाहजहां ने इतना सुनतेही कि दारा यहां आया है एक ख्वाजासराके द्वारा उसके आश्वासनके लिये यह सन्देसा कहला भेजा कि हम तुमको अब भी वैसाही चाहते हैं और तुम्हारी दुरवस्थाका हमको बहुत शोक है। बाहक उसने यह भी लिख भेजा कि निराश होनेका कोई कारण नहीं है क्योंकि सुलेमानशिकोहकी सेना अभीतक ज्योंकी त्यों सुन्दर अवस्थामें वर्त्तमान है। हमारी राय है कि तुम अभी देहली चले जाओ। वहांके सूबेदारको आज्ञापत्र भेज दिया गया है; वह तुमको बादशाही अस्तबलसे एक सहस्र घोड़े तथा हाथी देगा और धनसे भी तुम्हारी सहायता करेगा। तुमको आगरेसे दूर न जाना चाहिये बल्कि ऐसी जगह ठहरना चाहिये जहां हमारे पत्र तुमको शीघ्र मिलते रहें। हमको अब भी आशा है कि हम औरंगजेबको वशमें कर सकेंगे वरन् दण्ड दे सकेंगे।—शाहजहांने दाराके निकट ऐसाही सन्देसा कहला भेजा पर वह ऐसा शोकग्रस्त और निराश हो गया था कि इन प्रीतिपूर्ण बातोंका उससे कुछ भी उत्तर देते नहीं बना। कुछकाल पश्चात् उसने बहिन बेगमसाहबके पास कई सूचनाएं भेजीं और फिर आधी रातके समय अपनी स्त्री, पुत्रियों छोटेपुत्र सिफरशिकोह और तीन चार सौ आदमियों के साथ वह देहलीकी ओर चल दिया। पाठक महाशय, इसको तो इसी दु:खद स्थिति में देहली की ओर बढ़ने दीजिये, आइये इधर हमलोग देखें कि औरंगजेबने आगरे में पहुंचकर किस नीति, उपाय और जोड़तोड़से काम लिया।

औरंगजेबने आगरेमें पहुंचतेही सुलेमान शिकोहकी सेनामें फूट का बीज बोया और कई सरदारोंका अनेक युक्तियोंसे अपनी ओर मिलाकर दाराकी आशाओंका एकबारही अन्त कर दिया। राजा जयसिंह और दिलेरखांको जो उनकी सेनाके सबसे बड़े अफ–

औरंगजेबकी नीति-इधर तो औरंगजेब ऐसी प्रीतियुक्त बातें कहता था उधर रात दिन राज-दरबारके उमराको पत्र लिख लिख कर धीरे धीरे अपने पक्षमें करता था । इन दिनों इसका मामूँ शाइस्ताखाँ भी इसके निमित्त बहुत कुछ उद्योग कर रहा था । उसकी सहायतासे इसको बहुत लाभ भी हुआ, क्योंकि शाइस्ताखाँ एक चतुर बुद्धिमान् और शक्तिशाली पुरुष था। सारे भारतवर्षमें यह बात प्रसिद्ध थी कि वह बहुत सीधी मीठी और प्रभावशालिनी भाषामें पत्र लिख तथा बातें करके बड़े बड़े काम निकाल सकता है । यह भी कहा जाता है कि दाराने किसी समय उसके साथ अनुचित बरताव किया था जिसके कारण उससे इसको बहुत घृणा हो गई थी और वह उस अपमानका बदला लेनेके लिये अवसर ढूँढ रहा था । सो इस अवसरको उसने उपयुक्त समझा । इस ओर राज्यका विकट लोभी होनेपर भी औरंगजेब लोगोंके दिखावमें ऐसा बना रहता कि मानो इस खटपटमें उसका कुछ स्वार्थही नहीं है । जो काम होते मुरादके नामसे होते; लोगोंको जो आशाएँ दी जातीं अथवा लोगों से प्रतिज्ञाएँ की जातीं वे मुराद बक्श के नामसे की जातीं । तात्पर्य यह कि मुरादहीकी आज्ञा मानी जाती और वही भविष्य बादशाह समझा जाता । औरंगजेब अपने बरतावोंसे अपनेको उसका एक सरदार और सामन्त प्रगट करता; यह भाव दिखाता कि राज्यके खटपटमें पड़नेकी उसकी कदापि इच्छा नहीं है, परन्तु सन्यासियोंकी भांति पवित्रता और शान्तिसे वह अपने जीवनका अन्त कर देना चाहता है ।

इस समय दारा भय और निराशाके समुद्रमें डूब रहा था। आगरे तो वह चला गया परन्तु इस कारणसे कि बादशाहके ये वाक्य—" खैर बेटा तुमने अपने मर्जी का काम किया, खुदा तुमको इसमें मुबारक और कामयाब करे. लेकिन याद रखो कि अगर

कुमार के निकट आकर कहा कि "राजकुमार, जिस प्रकार अवस्थामें आप पड़े हैं मैं उचित नहीं समझता कि उसे आपसे छिपा रखूं। जो स्थिति पहले थी उसमें ऐसा परिवर्तन हुआ है कि इस समय आपको न तो दिलेरखां पर भरोसा करना चाहिये न दाऊदखां पर, न सेनाही पर। यदि आप इस समय अपने पिताकी सहायता करनेकी इच्छासे अब भी आगे बढ़ेंगे तो अवश्य कुंइयांमें पड़ जायेंगे। अतएव उचित है कि श्रीनगर (गढ़वाल) के पहाड़ोंकी ओर चले जायँ, वहांके राजाके यहां आपको आश्रय भी मिलेगा और दुर्गम होनेके कारण औरंगजेबके उस स्थानतक पहुंचनेका भय भी नहीं है। वहां जाकर आप यहां की घटनाओंपर सदा दृष्टि रखें और जब सुयोग मिले तब तुरन्त चले आवें।"

सुलेमानशिकोह की अवस्था—इतना सुनतेही राजकुमार समझगया अब इस जगह कोई हितैषी नहीं देख पड़ता; जयसिंह वा सेना किसीपर अपना अधिकार नहीं रहा। अतएव यह सोचकर कि अब यहां ठहरना अपनेको मृत्युमुखमें डालना है उससे सैन्यादिको वहीं छोड़ पहाड़ोंकी ओर यात्रा की। वही सच्चे हितैषियों, अधिकांश मन्सबदारों, सैयदों और कितने ऐसे लोगोंने जिनकी अवश्यही जानेकी इच्छा थी इस यात्रामें उसका साथ दिया। शेष सेना जयसिंह और दिलेरखांके अधीन रही। इन दोनोंने उसके जानेसे पहले बहुत कुछ सामान उससे ले लिया। इतनेपर भी उनको सन्तोष नहीं हुआ तो उन्होंने उस बेचारेका बाकी माल असबाब लूटने लानेके लिये भी सिपाही भेजे! इस लूटमें मोहरोंसे लदा एक हाथी भी था जिसके निकल जानेसे स्वार्थी मनुष्य राजकुमार का साथ छोड़कर भाग आये। आगे बढ़ने पर कुछ देहाती गंवारोंने और भी लूट खसोटकर दुःखित किया और कुछ लोगोंको मारा भी। इतना होने पर भी जैसे बन पड़ा वैसे सुलेमान शिकोह अपनी बेगम और

थे उसने लिखा कि "दारा तो बिल्कुल तबाह हो गया और वह बड़ा लश्कर भी जिसका उसे बहुत भरोसा था शिकस्त फाश खाकर हमारे कब्जेमें आ गया। अब वह ऐसी बैसरोसामानीसे भागा जाता है कि सवारों का एक रिसाला तक उसके साथ नहीं है। उम्मैद है कि हम बहुत जल्द उसे गिरफ्तार कर लेंगे। और हजरत (शाहजहां) इस कदर अलील हैं कि अब सिर्फ चन्द रोजके मेहमान रह गये हैं। इसलिये इस हालत में अगर तुम हमारा मुकाबला करोगे तो नतीजा बजुज खराबी और हलाकत के कुछ न होगा। इसके सिवा,—इस अबतर हालतमें दाराशिकोहकी तरफदारी करना निहायतही नादानी है। तुम्हारे हकमें अब यही बेहतर है कि हमारे पास हाजिर हो जाओ और सुलेमानशिकोहको जो बआसानी गिरफ्तार हो सकता है पकड़कर अपने साथ लेते आओ।"

जयसिंहका उपदेश—जयसिंह कुछ समय तक चिन्ता करता रहा कि अब क्या करना चाहिये। शाहजहां और दाराका उसे अभी तक भय था और वह सोचता था कि राजघरानेके एक कुमार पर इस प्रकार हाथ उठानेका परिणाम अच्छा नहीं होगा। राजकुमारके कैद करनेका अपराध अवश्य दण्डनीय है और सम्भव है वह दण्ड औरंगजेबही की ओरसे मिले। सुलेमान शिकोहके भी बल पराक्रम और साहससे वह परिचित था—और यह बात भी उसे भली भांति मालूम थी कि वह प्राण दे देनेको तैयार हो जायगा परन्तु पराधीनता कभी नहीं स्वीकार करेगा।

अन्तमें अपने मित्र दिलेरखांसे सलाह करके और परस्पर किसी विशेष बातके लिये शपथ लेकर जयसिंहने यह निश्चय किया कि वह सुलेमान शिकोहके खेमेमें जाय, औरंगजेबके पत्र दिखा कर उसे सावधान करे और अपना विचार उसपर साफ साफ प्रगट कर दे। निदान ऐसाही किया गया। राजा जयसिंह ने राज-

और दाराके भागनेके पश्चात् जैसी भूल शाहजहांसे हुई थी वैसीही भूल इस समय मुहम्मदसुलतानसे हुई। अब इस कारण कि मैंने यह बात उठाई है यह भी कह देना उचित है कि कुछ राजनीतिज्ञोंका यह मत भी था कि दाराके पराजयके पश्चात् बादशाहने महलमेंही बैठे रहकर छलसे औरंगजेबको अपने वशमें करना विचारकर बुद्धि-मानी की। यह तो एक साधारण बात है कि परिणाम देखकर लोग किसी उपायकी प्रशंसा या निन्दा करने लगते हैं। चाहे उपाय कैसाही कच्चा और निर्बल रहा हो जब उसका परिणाम भला हो जाता है तब लोग कहने लगते हैं कि देखो अमुकने कैसा अच्छा ढंग सोचा कि जिसका यह शुभ फल मिला। अतः शाहजहां का प्रीति और शुभेक्षा दिखाकर औरंगजेबको अपने वशमे कर लेना कुछ असम्भव नहीं था। यदि ऐसा हो जाता तो उसकी बुद्धि और समझकी लोग वैसेही प्रशंसा करते जैसे इस समय उस-पर यह दोष लगाते थे कि यह बुद्धिहीन बुड्ढा एक ऐसी स्त्री(बेगम साहब) के कहने पर चलनेसे इस दशाको पहुँचा जो केवल ईर्षा और डाहके आवेशमें अन्धी हो रही थी और यह समझे बैठी थी कि वह चतुर काक (औरंगजेब) जब किलेमें हमसे मिलने आवेगा तब उस पंक्षी की भांति जो स्वयं पिंजरे में आ जाता है फँस जायगा। अस्तु, अब मुहम्मद सुलतानको देखिये कि उसके विषय में यहांके राजपुरुष कहते थे कि राजगद्दी उसे अनायास मिलती थी पर उससे वह ली नहीं गई। यदि वह शाहजहां का कहना मानता तो " एक पन्थ दो काज के अनुसार उसे राजगद्दी तो मिलतीही ऊपरसे दादाको कैदसे छुड़ादेने की प्रशंसा भी प्राप्त होती।—ऐसा न होता (जैसा हुआ) कि ग्वालियरके दुर्गमें कैदीकी भांति उसे अपने दिन बिताने पड़ते।

शाहजहांका कैद होना-- यद्यपि कुछ लोग यह भी अनु-

सन्देसा लेकर जाता हूँ वह सहसा उन सिपाहियोंपर झपट पड़ा जो फाटक पर नियुक्त थे। इस समय उसके जो सिपाही इधर उधर छिपे थे झटपट आ पहुँचे और दुर्गवालोंको जिन्हें इस होनेवाली आकास्मिक घटनाका स्वप्नमें भी ध्यान नहीं था हराकर उन्होंने वहां अपना अधिकार कर लिया।

जिसके पकड़नेके लिये वह इतने दिनोंसे घात लगा रहा था अब स्वयं उसका कैदी बन गया यह देखकर शाहजहां जितना घबराया और भयभीत हुआ होगा वह स्वयं प्रगट है। कहते हैं कि अभागे बादशाहने कैद होतेही मुहम्मदसुलतानके पास यह सन्देसा भेजा कि "मैं तुमसे तख्तकी कसम खाकर कहता हूं और कुरान मजीद मेरे तुम्हारे दरम्यान है कि अगर तुम इसवक्त इमानदारी बर्तोगे तो मैं तुमहीको बादशाह बना दूंगा। इस मौकेको गनीमत जानकर हाथसे न जाने दो। फौरन चले आओ और दादाको कैदसे छुड़ा लो। याद रखो कि इससे सवाबे-आखिरतके अलावे दुनियामें भी तुमको एक दायमी नेकनामी हासिल रहेगी।"

लोगों का कथन था कि यदि मुहम्मद सुलतान जरा साहस करके शाहजहांका कहना मान लेता तो कदाचित् सब कुछ हो जाता क्योंकि अबतक भी लोगोंके हृदयमें बादशाहकी भक्ति और प्रतिष्ठा बहुत कुछ बाकी थी। यदि राजकुमार उस दुर्गके बाहर निकलने देता और वृद्ध बादशाह कुछ सेना लेकर स्वयं औरंगजेबपर आक्रमण करता तो सम्भव था कि सब सैनिक आज्ञा मानकर उसकी सहायता करते, राज्यके बड़े बड़े लोग सच्ची प्रभुभक्ति दिखाते और औरंगजेब भी पिता के विरुद्ध युद्धक्षेत्रमें जानेका साहस न करता, बल्कि उसे सन्देह होता कि कदाचित् ऐसा करनेसे सब लोग मुझसे अलग हो जायँगे और स्वयं मुरादबख्श साथ छोड़ देगा।

सब लोगोंका इस विषयमेंभी एक मत था कि समूगढ़की लड़ाई

दालचीनि और पन्द्रहोदार तक बन्द हो गये! शाहजहांको किले-दारके पास बिना सूचना भेजे अपने कमरेसे बाहर निकलने तकका अधिकार न रहा।

इस अवसर पर औरंगजेबने पिताको एक पत्र लिखा जो बन्द किये जानेसे पहले जान बूझकर सब लोगोंको सुनाया गया। उस पत्रमें यह बात लिखी थी,—"यह बेमदर्दी मुझसे इसलिये सरजद हुई है कि हुजूर जाहिरा मेरे निस्बत इजहारे-उल्फत व मेहरबानी फरमाते थे और यह इर्शाद होता था कि दारा शिकोह के तौर व तरीकेसे हम सख्त नाराज हैं मगर मुझे पुख्ता खबर मिली है कि हुजूरने अशर्फियों से लदे हुए दो हाथी उसके पास भेजे हैं जिनसे वह नई फौज तैयार करलेगा और इस खूँरेज लड़ाईको तवालत देगा। पस हुजूरही गौर फरमायें कि मुझसे इन हरकतोंके जो फर्जन्दोंके मामूली तरीकेके खिलाफ और सख्त मालूम होती हैं सरजद होजाने का बायस क्या दाराशिकोहकी खुदसरी नहीं है? इन बातों का सबब कि हुजूर कैद किये गये और मैं फर्जन्दाना खिदमत बजा लानेके लिये इतनी देरतक हुजूरकी खिदमतमें हाजिर नहीं होसका क्या वही नहीं है?—मैं हुजूरसे बकमाल माजरत इल्तिजा करता हूं कि मेरी इस हरकतकी ताज्जुबअंगेज जाहिरी सूरत पर ख्याल न फर्माकर सिर्फ चन्दरोजके लिये सब्रके साथ इसे बर्दाश्त करें। फिर ज्योंही दाराशिकोह चैन व अममें खललअन्दाज होने और हुजूरको और मुझको तकलीफ पहुंचानेके काबिल न रहेगा त्योंही मैं खुदबखुद किलेकी तरफ दौड़ा चला आऊंगा और हुजूरके कैद-खानेका दरवाजा अपने हाथोंसे खोलकर हाथ जोड़कर अर्ज करूंगा कि अब कुछ रोक टोक नहीं है।"

मैंने सुना कि शाहजहांने वास्तवमें अशर्फियोंसे लदे हुए हाथी उसी रातको दाराशिकोहके पास भेजे थे जब कि उसने देहली की

मान करते हैं कि सुलेमानशिकोहने पितृधर्म्म पर दृष्टि रखकर शाहजहांकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की, परन्तु सम्भव ऐसा जान पड़ता है कि उसको बादशाहकी प्रतिज्ञाका विश्वास नहीं हुआ। उसने यह भी सोचा कि ऐसे चतुर और प्रवीण मनुष्यसे जैसा कि औरंगजेब है लड़ाई मोल लेना एकदम व्यर्थ और सरासर भयंकर है। अस्तु राजकुमारका वास्तविक विचार चाहे कुछ भी रहा हो, उसने शाहजहांकी बात नहीं मानी और यह बहाना करके उसके निकट जाना भी अस्वीकार कर दिया कि "मुझे औरंगजेबकी तरफ से हुजूर में हाजिर होने की इजाजत नहीं है बल्कि ताकीदी हुक्म यह है कि किलेके कुल दरवाजों की कुञ्जियां खुद अपनी सुपुर्दगी में लेकर मैं यहांसे बहुत जल्द वापस जाऊं, क्योंकि वे हुजूरकी कद्मबोसीके निहायत मुश्ताक हो रहे हैं और सिर्फ इतनीही देर है कि इस तरफसे इतमीनान हो जाय तो फौरन हो जायँ।"—अब दो दिनतक तो शाहजहां कुञ्जियोंके देनेमें आगा पीछा करता रहा किन्तु जब उसने देखा कि सब लोग उसे छोड़ छोड़कर चले जा रहे हैं बल्कि थोड़ेसे जो उसके निजके संरक्षक थे वे भी चले गये और बचावकी कुछ आशा न रही तब विवश होकर उसने दुर्गकी तालियां उसे देदीं और कहाकि "अब तो औरंगजेबको जरूरही आना चाहिये और समझदारी भी इसीमें है कि वह आकर जल्द हमसे मिले, क्योंकि सल्तनत के बाज जरूरी इसरार हम उसको समझाना चाहते हैं।"—परन्तु वह अब भी धूर्त्तता और चतुराईसे नहीं चूका। स्वयं न आकर उसने तुरन्त एतबारखां नामक अपने एक विश्वासी अनुचरको किलेदार नियुक्त किया जिसने यहां पहुंचतेही सब बेगमों, बड़ी राजकुमारी बेगमसाहब और स्वयं बादशाहको कैद कर लिया, बल्कि किलेके सब द्वार एकदम बन्द करा दिये। शाहजहां और उसके कुमकचिन्तकोंका बाहर आना जाना तो कहां, उनकी

बातचीत और पत्रव्यवहार तक बन्द हो गये। शाहजहांको किलेदारके पास बिना सूचना भेजे अपने कमरेसे बाहर निकलने तकका अधिकार न रहा।

इस अवसर पर औरंगजेबने पिताको एक पत्र लिखा जो बन्द किये जानेसे पहले जान बूझकर सब लोगोंको सुनाया गया। उस पत्रमें यह बात लिखी थी,—"यह बेअदबी मुझसे इसलिये सरजद हुई है कि हुजूर जाहिरा मेरी निस्बत इजहारे-उलफत वो मेहरबानी फरमाते थे और यह इर्शाद होता था कि दारा शिकोह के तौर व तरीकेसे हम सख्त नाराज हैं मगर मुझे पुख्ता खबर मिली है कि हुजूरने अशर्फियों से लदे हुए दो हाथी उसके पास भेजे हैं जिनसे वह नई फौज तैयार करलेगा और इस खूँरेज लड़ाईको तवालत देगा। पस हुजूरही गौर फरमायें कि मुझसे इन हरकतोंके जो फर्जन्दोंके मामूली तरीकेके खिलाफ और सख्त मालूम होती हैं सरजद होजानेका बायस क्या दाराशिकोहकी खुदसरी नहीं है? इन बातों का सबब कि हुजूर कैद किये गये और मैं फर्जन्दाना खिदमत बजा लानेके लिये इतनी देरतक हुजूरकी खिदमतमें हाजिर नहीं होसका क्या वही नहीं है?—मैं हुजूरसे बकमाल माजरत इलितजा करता हूं कि मेरी इस हरकतकी ताज्जुबअंगेज जाहिरी सूरत पर ख्याल न फर्माकर सिर्फ चन्दरोजके लिये सब्रके साथ इसे बर्दाश्त करें। फिर ज्योंही दाराशिकोह चैन व अमनमें खललअन्दाज होने और हुजूरको और मुझको तकलीफ पहुंचानेके काबिल न रहेगा त्योंही मैं खुदबखुद किलेकी तरफ दौड़ा चला आऊंगा और हुजूरके कैद-खानेका दरवाजा अपने हाथोंसे खोलकर हाथ जोड़कर अर्ज करूंगा कि अब कुछ रोक टोक नहीं है।"

मैंने सुना कि शाहजहांने वास्तवमें अशर्फियोंसे लदे हुए हाथी उसी रातको दाराशिकोहके पास भेजे थे जब कि उसने देहली की

ओर प्रस्थान किया था और इस बातकी सूचना रोशनआरा बेगम ने औरंगजेबको दी थी। यह रहस्य उसीने बतलाया था कि यदि दुर्गमें आओगे तो तातारी बांदियां तुमपर आक्रमण करेंगी। यह भी कहा जाता है कि बादशाहने दाराको जो पत्र लिखे थे उनमें से कई पत्र किसी प्रकार औरंगजेबके हाथ लग गये थे।

तथापि बहुतसे बुद्धिमान और सूक्ष्मदर्शी लोग इन बातोंपर विश्वास नहीं करते; वे कहते हैं कि, ये पत्र जिनको (जैसा कि कहा जाता है)औरंगजेब ने किसी प्रकार पा लिया और सर्वसाधारणको सुनाया था बिलकुल झूठे और बनावटी थे। औरंगजेबने केवल इस लिये इनको प्रकट किया था कि जिसमें शाहजहां के शुभचिन्तक और सहायकगण जो उसके अनुचित व्योहारोंसे असन्तुष्ट होरहे थे ठंडे पड़ जायँ। अस्तु सत्य बात चाहे कुछभी हो, इस बातका निश्चय है कि जब बादशाह इस कठोर रीति से कैद हो गया तब प्रायः सभी उमरा औरंगजेब और मुरादके दरबारमें सलाम करनेके लिये उपस्थित हुए। शोक! उस बेचारे वृद्ध और अत्याचार-पीड़ित बादशाहके पक्षमें किसी अमीर या सरदारने हाथ पांव नहीं हिलाये और किसीके भी फूटे मुँहसे कोई बात न निकली! ये उमरा उन भयंकर अत्याचारियोंके आगे शिर झुकाने जाते थे जिन्होंने उनके स्वामी और पालक के साथ ऐसा कठोर बर्ताव किया था। विशेष शोक इस बातका है कि वही लोग ऐसा करतेथे जो न केवल बादशाहके यहां पलकर प्रतिष्ठित और द्रव्यवान हुये थे वरञ्च जिनको शाहजहांने एकदम गुलामीसे मुक्तकर उच्चपदों पर नियुक्त किया था! हां, दानिशमन्दखां आदि कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने औरंगजेब या बादशाह किसी का पक्षपात नहीं किया, पर ऐसोंकी संख्या बहुतही कम थी. औरंगजेबकेही आगे शिर झुकाने वाले प्रायः सब थे।

इतने पर भी जब मैं इस दशाका विचार करता हूं कि भारतवर्षके उमरा फ्रान्स आदि योरपीय देशोंकी भांति किसी सम्पत्तिके स्थायी मालिक नहीं समझे जाते वरन जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं कि "दरबारियोंको जो भूमि दी जाती है वह केवल पेन्शनकी भांति और उनके निर्वाहके लिये; और जो कुछ उनको दिया जाता है उसका बढ़ाना घटाना या उसे वापस कर लेना बादशाहकी इच्छापर निर्भर रहता है" तब मैं इन कृतघ्न उमराकी इतनी निन्दा नहीं करता; क्योंकि जब इनसे इनकी भूमिका अधिकार ले लिया जाता अथवा जो कुछ इनको वार्षिक मिलता है वह बन्द कर दिया जाता है तब ये बड़ी दुरवस्था में आ पड़ते हैं; यहांतक कि थोड़ासा ऋण भी इनको उस समय कहीं से नहीं मिल सकता।

अस्तु पिताकी ओर से निश्चिन्त होकर दोनों युवराजोंने दरबारियों की भेंट स्वीकारकी अपने मामूं शाइस्ताखांको आगरेकी सूबेदारी का पद सौंपा और राजकोषसे व्ययका प्रबन्ध करके दारा की खोजमें आगरे से बाहर प्रस्थान किया।

मुरादका कैद होना--जिस दिन ये लोग सैन्यके सहित आगरेसे कूच करनेको थे उस दिन मुराद के मित्रों और विशेषकर उसके हितैषी ख्वाजा शाह अब्बासने उसे आगरे औरदेहलीके पड़ोस मेंही रहनेकी सलाह दी। शाहअब्बासने उससे कहा कि "आपको मय अपने लश्करके आगरे या देहलीसे दूर नहीं जाना चाहिये। औरंगजेबकी ये बड़े अदब आदाबकी बातें जो बेहद मीठी मालूम होती हैं फरेब और दगाबाजी का निशान हैं। फिर जब कि हर खासो आम बल्कि खुद वह भी इस बातको तसलीम करता है कि अब बादशाह आप हैं तो यह क्योंकर मुनासिब है कि आप आगरे और देहलीके नजदीक न रहकर कहीं दूर चले जायँ।पस,मेरी रायमें आप उसीको दाराशिकोहका पीछा करनेके लिये जाने दें।"-यदि मुराद

इस बुद्धिमानीसे भरे हुए उपदेशपर ध्यान देता तो औरंगजेबके आगे अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होतीं, परन्तु उसे तो उन व्यर्थ प्रतिज्ञाओं और कसमों पर पूरा भरोसा था जो बीचमें कुरान रखकर बहुत बार परस्पर की गई थीं। आखिर दोनोंने आगरा परित्याग कर देहली की ओरका रास्ता लिया।

जिस समय वे मथुरामें पहुँचे (जो कि आगरेसे तीस मीलपर यमुनाके किनारे है) तो मुरादके मित्रोंने जो इस बीचमें बहुत कुछ देख और सुन चुके थे विवश होकर परस्पर यह सलाहकी कि एकबार फिर उसे समझाना चाहिये, आगे मानना या न मानना उसके आधीन है। निदान उसके पास जाकर उन्होंने कहाकि हमको विश्वास-नीय मार्गसे विदित हुआ है कि औरंगजेबकी वास्तव में कुछ बुरी इच्छा है और किसी भयंकर कार्यके कर डालनेके लिये वह बहुत कुछ उपाय कर चुका है। अतएव उससे मिलनेके लिये खास उसकी मण्डली में आपका जाना उचित नहीं है। विशेषकर आजकी रात को तो कदापि न जाइये। इस आपत्तिके टालने का सबसे सहज उपाय यह है कि शरीर के अस्वस्थ होनेका बहाना कर दीजिये। यह सुनकर जैसा कि नियम है वह स्वयं कुछ आदमियों के साथ आपके पास चला आवेगा।

मुराद के हितैषियों ने उसे इस प्रकारकी बातें समझाईं। पर इन बातोंका उसपर कुछ भी असर नहीं हुआ, उनके निवेदनपर उसने जरा भी ध्यान नहीं दिया; क्योंकि उस समय वह एक ऐसी दशामें था कि मानों किसीने उसपर जादू कर दिया था। अपने शुभचिन्तक मित्रोंका उपदेश न मान कर उसने उसीरात को औरंग-जेबके डेरेमें जाकर भोजन करनेका न्योता स्वीकार कर लिया। इधर औरंगजेबको पक्का विश्वास था कि मुराद अवश्य निमन्त्रणके अनुसार आवेगा; अत: उसने मीरखाँ तथा तीन चार अन्य

अभिन्नहृदय मन्त्रियोंसे सलाह करके निश्चय कर लिया था कि किस प्रकार मुरादको विवश करना चाहिये।

जब सरल हृदय मुराद वहां पहुंचा तब औरंगजेबने और दिनों की अपेक्षा अधिक आदर सत्कारसे उसका स्वागत किया, बड़ी प्रसन्नता प्रगट की और अपने हाथोंसे उसके मुखपरकी गर्द तथा पसीना पोंछा। भोजनके समय वह हँसी मजाक और आनन्दकी अनेक बातें करता रहा। इससे निश्चिन्त होने के पश्चात् जब काबुली और शीराजी मदिराके पात्र उपस्थित किये गये तब धीरेसे उठ और मुस्कुराकर उसने मुरादसे कहा—"हजरतको मालूम है कि मैं अपने मजहबी ख्यालातके बायस इस ऐशो निशातकी सुहबत में मौजूद नहीं रह सकता, ताहम ये लोग जो इस पुरलुत्फ जलसेके शरीक हैं और मीरसाहब व दीगर मुसाहिब आपकी खिदमतगुजारी के लिये हाजिर रहेंगे।"—एक तो मुराद स्वयं मदिराका प्रेमी था, तिसपर ऐसी आनन्दमयी मण्डली और मद्यके सुन्दर पात्र देखकर उसे और भी उत्साह हुआ। उसने यहांतक मदिरा पी यहांतक पी कि एकदम बेहोश होकर लेट गया। औरंगजेबकी भी यही इच्छा थी। उसी समय उसके नौकर इस बहानेसे विदा कर दिये गये कि अब आप लोग जायँ, इनको यहीं आराममें सोने दें। इसके पश्चात् मीरखांने उसके सब अस्त्र शस्त्र (तलवार, खञ्जर इत्यादि) अपने अधिकारमें कर लिये। थोड़ी देरके बाद औरंगजेब भी उसे इस अनुचित नींदसे जगानेके बहाने आया और सब पिछला आदर सम्मान भूलकर पहले तो उसने कई ठोकरें मारीं और जब उसने कुछ आँखें खोलकर देखा तब वह तिरस्कार पूर्वक कठोर शब्दोंमें बोला, —"बड़ी शर्म की बात है कि तुम बादशाह होकर ऐसे गाफिल और बेखबर हो जाओ। भला दुनियाके लोग तुमको बल्कि मुझको भी क्या कहेंगे!" इतना उससे कहकर उसने अपने आदमियोंसे

कहा—"इस बदमस्तके हाथ पांव बांधकर खिलवतखानेमें ले जाओ ताकि नशा उतरनेतक यह इस बेशर्मीका सोना वहीं सोये।" इस आज्ञाका तुरन्त पालन हुआ। उसी क्षण पांच छ: मनुष्यों ने जो अस्त्र शस्त्रसे सज्जित थे उसे आ दबाया। उस समय यद्यपि मुराद बहुत चिल्लाया, बहुत बलप्रयोग कर उसने अपना बचाव करना चाहा, पर उसके पावोंमें बेड़ियां और हाथोंमें हथकड़ियां डालही दी गईं और लोग उसे अन्दर लेही गये।—यद्यपि ये बात बहुतही गुप्त रीतिसे की गई थी तथापि मुरादबख्श के उन सेवकोंपर प्रगट हुए विना नहीं रह सकती थी जो बहाने से बाहर भेज दिये गये थे। जब उनके कानों तक इसके चिल्लाने का शब्द पहुंचा तब उन्होंने कोलाहल मचाना आरम्भ किया और भीतर घुसकर बलपूर्वक उसे छुड़ा ले जाना चाहा; परन्तु उन्हीं के दलके मीर आतिशकुलीखांने जिसको औरंगजेबने कुछ देकर पहलेहीसे अपने वशमें कर रखा था उनको समझा और धमका कर शान्त कर दिया। उधर सेनामें यह सम्बाद पहुँचते ही सब सिपाहियोंके मनमें सन्देह हुआ कि औरंगजेब जब इतना कार्य्य कर चुका तो कहीं वह सहसा चढ़ाई न करदे। उनका सन्देह मिटानेके लिये कुछ लोग रातही को भेज दिये गये जिन्होंने यह प्रसिद्ध कर दिया कि—"औरंगजेबके डेरेमें जो यह घटना हुई है वह कुछ बड़ी बात नहीं है; क्योंकि हम लोग भी वहीं वर्त्तमान थे। बात यह कि मुराद बहुत मदिरा पीकर अचेत हो गया है और नशेमें सबके प्रति अनुचित शब्दोंका व्यवहार करता है। ऐसा कोई व्यक्ति वहां नहीं था जिसको उसने गालियां न दी हों यहांतक कि औरंगजेबके विषयमें भी उसने बहुत तिरस्कार और अपमानसूचक बातें कही हैं। निदान यह है कि जब वे बहुत बकने झकने लगा और किसी प्रकार शान्त न हुआ तब उसका एक दूसरे स्थानमें कैदमें बंद करना आवश्यक हुआ, परन्तु कल प्रातः काल

होनेमें आने पर वह पुनः अपने स्थान और पद पर दिखाई देगा।"— एक ओर जिस समय सिपाही इस प्रकार की बातोंसे समझाये गये उस समय दूसरी ओर बड़े बड़े अधिकारियोंको उच्च आज्ञाएँ दी गई, खूब तरक्की दी गई और सारी सेनाका मासिक वेतन बढ़ा दिया । निदान सुबह होते होते वह कोलाहल और आन्दोलन जो अब तक हो रहा था एकदम शान्त हो गया— उसका चिन्हमात्र भी शेष न रहा। कारण यह कि ऐसे लोग बहुत कम थे जो इन बातों का गूढ़ मर्म्म न समझते हों। अस्तु जब यह बन्दोबस्त हो चुका और औरंगजेबने देखा कि अब कुछ चिन्ता नहीं है तब उसने मुरादको एक जनानी अमारीमें बन्द करके देहली भेजा जहां पहुंचने पर वह सलीमगढ़ नामक दुर्गमें जो यमुनाके मध्यमें है (अब टूटी फूटी अवस्थामें है) कैद किया गया।

दारा के पीछे धावा—अब शाह अब्बास ख्वाजाके अतिरिक्त (जिसके कारण औरंगजेबको कुछ कठिनाइयोंमें पड़ना पड़ा) मुरादकी ओरका कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने औरंगजेबकी सेवामें आकर उसका पक्ष ग्रहण करना न स्वीकार किया हो। निदान उसकी सेनाको भी अपने दलमें मिलाकर उसने दाराके पीछे धावा किया जो बड़ी शीघ्रतासे लाहोर की ओर भागा जाता था। दाराकी इच्छा लाहोरमें पहुंच और वहांकी किलेबन्दी करके अपने मित्रों और शुभचिन्तकोंके एकत्रित करनेकी थी, परन्तु उसका यह प्रबल शत्रु इस भांति उसके पीछे पड़ा था कि लाहोरमें किलेबन्दी करनेका अवकाश न पाकर उसे मुलतानकी ओर भागना पड़ा। औरंगजेबने वहां भी उसको जमने नहीं दिया। इस धावेमें औरंगजेबकी जिस बुद्धि और कार्य पटुताका परिचय मिला वह निसन्देह प्रशंसनीय है; अर्थात् यद्यपि गर्मी की ऋतु थी और असह्य गर्मी पड़ रही थी तथापि उसकी सेना रातदिन बराबर आगे बढ़ताही चली जाती

थी और वह स्वयं सिपाहियों का साहस तथा उत्साह बढ़ानेके लिये थोड़ेसे मनुष्योंके साथ प्राय चार पांच कोस सेनाके आगे आगे चलता था। इसके अतिरिक्त एक साधारण सिपाहीकी भांति बुरे भले पानी और रूखी सूखी रोटी पर सन्तोष करता और रातको अमीरी ढंगसे पलंगपर न सोकर केवल सामान्य बिस्तर बिछाकर उसीपर लेट रहा था।

इस देशके राजपुरुष कहते हैं कि दारा लाहौरके छोड़नेके पश्चात् काबुलकी ओर नहीं बढ़ा यह उसने बड़ी भूलकी। उसके हितैषियों ने काबुल जानेके विषयमें उसे बहुत कुछ समझाया था पर सदाके अनुसार इस बार भी न जाने क्यों उसने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। इस समय काबुलका अमीर महाबतखां नामक भारतवर्षका एक बड़ा जबर्दस्त और वृद्ध मनुष्य था। औरंगजेबसे उसकी शत्रुता थी। उसके अधीन दश सहस्रसे भी अधिक लड़ने भिड़नेवाले ऐसे मनुष्य थे जो अफगानों उजबकों और ईरानियोंके विरुद्ध तुरन्त रणक्षेत्रमें आ सकते थे। दारा के पास धन रत्न की कमी नहीं थी, अतः यदि वह वहां जाता तो अवश्य महाबतखां और वहांके सैनिक पुरुष प्रसन्नता पूर्वक उसका पक्ष ग्रहण करते। इन लाभोंके अतिरिक्त ईरान के और उजबक देश भी वहांसे निकट होते और इन देशोंमें उसे आश्रय मिल सकता। दाराको इस समय इस बातका स्मरण करना उचित था कि बादशाह हुमायूँको जब शेरशाह सूरने (जो पठान जातिका नरेश था) हराकर भारतवर्षके बाहर निकाल दिया था तब उसने ईरानियोंहीकी सहायतासे पुनः राज्यलाभ किया था। पर अभागा दारा तो स्वभावहीसे ऐसा था कि विद्वान् और समझ-दार लोगोंके उपदेश का मूल्य नहीं समझता था। निदान इस बार भी उसने ऐसाही किया कि काबुल न जाकर वह सिन्धुदेशको चला गया और वहां जाकर उसने ठट्ठाके प्रसिद्ध सुदृढ़ दुर्गमें आश्रय

लिया जो सिन्धुनद के मध्यमें है।

जब औरंगजेबको दाराकी इच्छाका पता लग गया तब उसने सोचा कि अब उसका पीछा करना निष्प्रयोजन है। यह निश्चय कर कि वह काबुलकी ओर नहीं जाता है उसके मनका एक विशेष खटका और सन्देह मिट गया और मीरबाबा नामक अपने दूधभाई की अधीनतामें केवल सात आठ सहस्र मनुष्योंको उसके पीछे भेज कर वह उसी शीघ्रतासे आगरेको लौटा जिस शीघ्रता और तेजीसे यहांतक आया था। इस समय वह यह सोच सोचकर बहुत चिन्तातुर हो रहा था कि उसकी अनुपस्थितिमें राजधानीमें न जाने क्या क्या घटनाएं संघटित हो गई होगी. और रह रहकर उसे इस बातकी शंका होती थी कि सम्भव है मैदान साफ देखकर जयसिंह, यशवन्तसिंह या और कोई बलवान् राजा बादशाहको कैदसे छुड़ा दे, या सुलेमान शिकोह श्रीनगरनरेश और सैन्यसहित पहाड़ों से उतर आवे, या सुलतान शुजा आगरे पर चढ़ाई करनेका साहस कर बैठे, इत्यादि यहांपर एक घटना का हाल दृष्टान्त की रीति पर लिखा जाता है जिससे पाठक उसकी कार्यपटुताकी परिचय पा सकेंगे।

जब कि औरंगजेब उसी तेजीके साथ मुलतान से लाहौरको लौट रहा था जिस तेजीसे गया था उसने राजा जयसिंहको चार पांच सहस्र वीर योद्धा राजपूतोंके साथ अपनी ओर बढ़ते सुना। इससे वह बहुतही आश्चर्यान्वित और चकित हुआ। वह इस समय पूर्वके अनुसार थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ अपने सैन्यदलसे कई कोस आगे आगे चल रहा था, अतः जयसिंह के आनेका सम्बाद सुनकर उसको ध्यान हुआ कि वह इस समय बहुत बुरी स्थिति में है। बादशाहसे जयसिंहकी जैसी प्रीति थी वह उससे छिपी नहीं थी, इसलिये ऐसी अवस्था में उसके मनमें इस बातकी शंका उत्पन्न होना कि राजा जयसिंह इस अवसरको जोकि शाहजहांके

कैदसे छुड़ाने और उनके दुष्ट अत्याचारी पुत्रको दण्ड देनेके लिये बहुतही उपयुक्त है हाथसे जाने नहीं देंगे कुछ आश्चर्यका विषय नहीं है। अनुमान किया जाता है कि वास्तवमें राजा साहब औरंगजेब के पकड़नेहीकी इच्छामें यहांतक आये थे और इस अनुमानकी पुष्टि यह कहकर की जाती है कि अभी थोड़ीही देर पहले औरंगजेबको खबर लग चुकी थी कि राजा साहब देहलीमें थे और वहांसे बदूसुद तेजीके साथ कूच करते हुए यहां आये हैं। अस्तु कुछ भी हो, मानसिक धैर्य्य और निश्चयात्मक बुद्धिसे औरंगजेबने भावी विपत्तिसे अपना बचाव कर लिया। उसने तनिक भी भय या घबराहट नहीं प्रगट की, वरन् यह दिखाने के लिये कि उनके आनेसे उसे बहुतही हर्ष हुआ है वह घोड़ा दौड़ाता और हाथसे संकेत करता हुआ कि शीघ्र आइये, शीघ्र आइये, आनन्दपूर्वक आगे बढ़ा। निकट पहुँचने पर उसने पुकार कर कहा—"सलामत बाशद राजाजी, सलामत बाशद बाबाजी! खुशामदेद, खुशामदेद! मैं बयान नहीं कर सकता कि मुझे आपके आनेका किस कदर इन्तजार था। बहुत ही खूब हुआ कि आप आगये। अबतो लड़ाई खतम हो चुकी और दाराशिकोह तबाहो बरबाद खाक छानता फिरता है। मैंने मीरबाबा को उसके पीछे भेज दिया है और अगलब है कि वह जल्द गिरफ्तार हो जायगा। (इसके पश्चात् अत्यन्त प्रीति और विनय दिखाते हुए अपनी मोतियोंकी माला उनके गलेमें डालकर) हमारी फौज निहायत थकी हुई है इसलिये आपको बहुत जल्द लाहौर पहुँच जाना चाहिये, क्योंकि शायद वहां कुछ बेइन्तजामी और गड़बड़ हो जाय। मैं आपको वहांका सूबेदार मुकर्रर करता हूं और तमाम इख्तियार सौंपता हूं। मैं भी बहुत जल्द आ मिलूंगा। हां रुखसत होनेसे पहले मुझे वाजिब है कि सुलेमानशिकोहके मुआमिलेमें आपने जो कार गुजारी की उसके लिये आपका शुक्रिया अदा करूं। लेकिन आपने

हिन्दुस्तानियों को कहां छोड़ा ? मैं उन्हें खूब मज़ा दूंगा। खैर आप जल्द लाहौर की तरफ ले जाइये। अच्छा खुदा हाफिज़।

अहमदाबादमें दारा—जब दारा ठट्ठके दुर्गमें पहुंचा तब उसने एक ख्वाजासराको जो अपनी बुद्धिमता और दृढ़ता के लिये प्रसिद्ध था वहांकी सूबेदारी अर्पण की, पठानों तथा सैयदोंको सेनामें भर्ती किया और पुर्त्तगीजों अंग्रेजों फरासीसियों और जर्मनी वासियों को तोपखानेमें नौकर रखा। इन सभोंसे उसने प्रतिज्ञाकी कि यदि हम बादशाह हो जायेंगे तो तुमको उच्च पदोंपर नियुक्त करेंगे। इस प्रकार दुर्गका प्रबन्ध करके उसने अपना खजाना वहीं छोड़ दिया क्योंकि अभीतक उसके पास अशर्फियां और रुपये बहुत थे। इसके पश्चात् लगभग तीन सहस्त्र मनुष्यों के साथ सिन्धुनद के किनारे किनारे बड़ी शीघ्रतासे यात्रा करता हुआ राव कच्छके राज्यसे होकर वह गुजरातमें पहुंच गया और अहमदाबादके बाहर जाकर उसने डेरा डालदिया। शाहनेवाजखां नामक एक व्यक्ति जो औरंगजेबका ससुर था और जिसकी उत्पत्ति मस्कटके प्राचीन राजकुलमें हुई थी उस समय अहमदाबाद का सूबेदार था। वह चतुर और सभ्य था, पर कोई प्रसिद्ध योधा नहीं। उसने न जाने मनकी निर्बलता या दाराके सहसा आ पड़ने या और किसी कारण से यथेष्ट सेना और युद्धकी सामग्री रहते भी नगर के द्वार खोलदिये। केवल इतनाही नहीं, वरन् वह बड़ी प्रीति और स्नेहसे दारासे मिला और बड़े सम्मान सत्कारसे उसने इसका स्वागतकिया। दारासे लोगोंने कह दिया था कि यह मनुष्य कपटी है, पर उसकी प्रीति,सरलता,नम्रता और बिनय पर विश्वास करके इसने अपने मनका सब भेद उसपर साफ साफ प्रगट कर दिया, बल्कि उन पत्रोंको भी दिखा दिया जो यशवन्तसिंह आदि शुभचिन्तकोंकी ओरसे उसके पास आये थे और जिनमें लिखा था कि हम जहांतक

यनता है सेना एकत्रित करके शीघ्र सहायता के लिये आते हैं।

इधर यह समाचार मिलतेही कि दारा अहमदाबादमें पहुंचकर वहां का मालिक बन गया है औरंगजेबको बहुतही आश्चर्य और चिन्ता हुई। वह जानता था कि अभी दाराके पास बहुत रुपये हैं और ऐसी अवस्था में न केवल उसके मित्र वरन् दूसरे राजेभी जो मेरी ओरसे असन्तुष्ट हैं अवश्य उसका साथ देंगे। वह यह भी खूब समझता था कि अहमदाबाद जैसे सुदृढ़ अस्थानसे दाराकेपांव उखाड़ देनेकी कितनी अधिक आवश्यकता है; तथापि बन्दी शाहजहांको आगरेमें छोड़कर इतनी दूरके देशकी यात्रा करना उसे उचित नहीं मालूम होताथा। इस बातका भी भय था कि अहमदाबाद जानेमें जयसिंह और यसवन्तसिंह प्रबल पराक्रमी राजाओं के राज्यसे होकर जाना पड़ेगा। इधर एक बड़े सैन्यदलके साथ सुलतान शुजाके आनेका समाचार भी उसने सुना; यह भी उसे विदित हो चुका था कि वह इलाहाबाद तक आगया है। दूसरी ओरसे उसे सम्वाद मिला कि श्रीनगरेशकी सहायतासे इस लड़ाईमें योग देनेकी सुलमानशिकोहने भी तयारी की है। इस प्रकार चारों ओर कठिनाइयां देखकर उसने सोचा कि दाराको शाहनेवाजखांके साथ जिस अवस्थामें वह है उसी अवस्थामें छोड़कर शुजाकी चढ़ाई तुरन्त रोकनी चाहिये जो इलाहाबादमें गंगाके इस पार तक आ गया है।

औरंगजेबकी कठिनाइयां--खजुआ नामक एक छोटे गांवके निकट तालाबके किनारे उत्तम स्थान देखकर शुजाने वहीं डेरा डालदिया। वहां डेरा डालके वह औरंगजेबके आनेकी बाट जोहरहा था जो ४-४॥ मीलके अन्तर पर एक नदीके किनारे आकर ठहरा था। दोनो छावनियोंके बीच लड़ाईके योग्य एक विशाल मैदान था। औरंगज़ेब लड़ाई के लिये आतुर हो रहा था अत. इस स्थानमें पहुंचनेके दूसरेही दिन सामान इस पार रखकर आक्रमण करनेके

पहुँचनेके दूसरेही दिन भागीन इस पार रहकर आक्रमण करनेके अभिप्राय से वह नदीके दूसरे तटपर गया । उसी दिन प्रात काल मीरजुमला भी उससे आ मिला, क्योंकि दैवके अभागे दाराके प्रतिकूल होनेसे उसके कुटुम्बके लोग छुटकारा पागये थे और औरंगजेब के शुभके लिये उसके अब भी कैद रहनेकी आवश्यकता नहीं थी। अस्तु, जहांतक बन सका था मीरजुमला अपने साथ बहुतसे सैनिक भी इकट्ठे कर लाया था । सबेरही लड़ाई आरम्भ हुई; पर शुजाकी इच्छा अपने पसन्द किये हुए और किलेबन्दीवाले स्थान से आगे बढ़कर मैदानमें जानेकी नहीं थी, अतएव जब जब शत्रु आक्रमण करते थे तब तब वह बड़ी चेष्टासे उनको मारकर पीछे हटा देता था । इससे औरंगजेबको कुछ कठिनता पड़ी । शुजाने सोचा था कि जब गर्मीके मारे घबराकर शत्रुदल नदीकी ओर लौटेगा तब सहसा उसपर टूट पड़कर हमलोग सहजमें विजय प्राप्त कर लेंगे । औरंगजेब अपने विपक्षीका यह विचार समझता था इस कारण वह पीछे नहीं हटा, वरन् लश्करको बराबर आगे बढ़ाने की चेष्टा करता रहा । परन्तु इतनेहीमें एक घबराहटमें डाल देनेवाली घटना सहसा संघटित हुई ।

राजा यशवन्तसिंहने जो कुछ दिन पूर्व बड़े सद्भावसे औरंगजेब से आ मिले थे सहसा उसकी पिछली सेना पर आक्रमण कर दिया जिसका यह परिणाम हुआ कि वह तितर बितर होकर भाग गई और राजा साहब ने खजाना तथा असबाब लूटना आरंभ किया । तुरन्त यह सम्बाद चारों ओर फैल गया जिससे एशियाके सैनिकों के साधारण नियम के अनुसार सिपाहियोंको भय और घबराहटने आ घेरा । ऐसा समय आगया तथापि औरंगजेबने धैर्य्य नहीं छोड़ा; उसने सोचा कि पीछे लौटनेसे सब आशाएँ धूलमें मिल जायँगी इसलिये जैसे दारा के साथ युद्ध करने में उसने किया था वैसेही

इसबार भी परिणाम तक दृढ़ रहनेका निश्चय किया; परन्तु प्रतिपक्ष उसके सैनिकोंकी घबराहट और चिन्ता बढ़तीही गई और शुजाने इस अवसरको बहुतही उपयुक्त समझकर एक बहुत बड़ा आक्रमण किया। इतनेमे सहसा एक तीर लगनेसे औरंगजेबका महावत मारा गया जिससे हाथीका सम्हालना भी कठिन होगया। यह देखकर वह उसपर से उतरनेही को था कि मीरजुमलाने जो निकट था उसे पुकारकर कहा—"हजरत, यह दकन नहीं है। क्या गजब करते हैं? क्या भागकर दकन जायँगे?" मीरजुमलाने आज दिन भर रणमें ऐसी कुशलता दिखाई थी कि लोग आश्चर्यमें आगये थे। इस समय सन्ध्या हो चली थी और लक्षण बुरे दीखते थे तथापि मीरजुमलाने औरंगजेबको हाथीसे उतरनेसे रोककर एक भयंकर परिणामसे बचा लिया। वास्तवमें इस समय चारों ओर निराशाही निराशा दिखाई देती थी, स्वयं औरंगजेब प्रतिक्षण सोचता था कि अब मैं शत्रुओंके हाथोंमें पड़ा चाहता हूं; परन्तु भाग्यकी प्रबलता कैसी विचित्र है! मीरजुमलाकी बातोंसे उसे धैर्य आया और हाथीसे वह नहीं उतरा थोड़ीही देरमे वह विजयी हुआ और जिसप्रकार समूगढ़की लड़ाई में एक छोटी बातके कारण दाराको युद्धक्षेत्रसे भागना पड़ा था शुजाको भी वैसेही एक घटनाके कारण अपने प्राण बचाकर रणभूमिसे निकल जाना पड़ा।

जहाँतक हो सके बहुत शीघ्र शत्रुओंपर विजय प्राप्त करनेके विचारसे सुल्तान शुजा हाथीसे नीचे उतरा, पर हाथीसे उतरतेही उसकी भी वही दशा हुई जो दाराकी हुई थी। यह नहीं कहा जा सकता था कि जिस व्यक्तिने उसे सलाहदी थी उसने विश्वासघात किया था या सच्चे हृदयसे उसे सलाह दी थी। जो हो, उसके प्रधान सरदारोंमेंसे अलीवर्दीखां नामक सरदारने उससे हाथीसे नीचे उतरनेको कहा और जिसप्रकार दाराको खलीलुल्लहखांने

वह मुसल्मान हो था इसी प्रकार वहांसे दौड़कर शुजाके पास गया और कुछ दूरहीसे हाथ जोड़कर बोला—"हुजूर इस बड़े हाथीपर ऐसी आनआज़ोम क्यों देते हैं? क्या मुलाहिजा नहीं फर्माते कि दुश्मन भागे जाते हैं और अब चुस्तीसे उनका तअक्कुब न करना सरासर गलती है. बस जल्दी घोड़ेपर सवार होकर उनका पीछा कीजिये और फिर देख लीजिये कि हिन्दोस्तानका तख्त आपके कद-मोंके नीचे है और आप हिन्दोस्तानके बादशाह हैं।" निदान ऐसा करनेसे वही दृश्य उपस्थित हुआ जो समूगढ़की लड़ाईमें दाराके सन्मुख हुआ था, अर्थात ज्योंही शुजा सैनिकोंकी दृष्टिसे लोप हुआ त्योंही सबके मनमें यह सन्देह उत्पन्न हुआ कि यातो वह मारागया या धोखेसे शत्रुओंने उसे पकड़ लिया और उसी समय उसकी सेना ऐसी छिन्न भिन्न हो गई कि उसे पुनः एकत्रित करना असम्भव था।

औरंगजेबकी आकस्मिक जीत देखकर राजा यशवन्तसिंह लूटके मालसेही सन्तुष्ट हो अपने राज्यको जानेके लिये आगरे आये। जिस समय वे आगरे पहुंचे उस समय नगरमें यह किम्बदन्ती उड़ रही थी कि औरंगजेब हारा और मीरजुमलाके साथ पकड़ा गया है। इसके अतिरिक्त यह खबर भी थी कि शुजा अपने विजयी सैन्यदलके साथ शीघ्र शीघ्र आगरेकी ओर आ रहा है। औरंगजेबके मामा तथा आगरेके अधिकारी शाइस्ताखांने इन किम्बदन्तियोंको सच माना और अपार भयके कारण विष पीकर प्राण देनेको वह तैयार होगया। निस्सन्देह वह विष पी भी लेता यदि जनानखानेकी स्त्रियां उसपर न आ गिरतीं और प्याला छीनकर न फेंक देतीं। अस्तु, दो दिनतक आगरेके लोग लड़ाईके असली वृतान्तसे इतने अनजान थे कि यदि राजा यशवन्तसिंह साहस करके इस बीचमें लोगोंको धमकाते और भविष्यके लिये कुछ अच्छा भरोसा देते तो अवश्यही शाहजहां को कैदसे छुड़ा सकते; पर यह बात वह अच्छी

तरह जानते थे कि समय कैसी है स्थिति किस प्रकार की है और ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिये: अतः आगरेमें अधिक ठहरना और इन बखेड़ोंमें पड़ना उचित न समझकर वे पहले किये हुए विचार के अनुसार अपने राज्यको चले गये।

इधर औरंगजेबको यह चिन्ता हो रही थी कि राजा यशवन्तसिंह न जाने क्या कर रहे होंगे और प्रतिपल उसे ऐसा जान पड़ता था कि अब आगरे से विग्रह समाचार शीघ्र आना चाहते हैं; अतएव शुजाका अधिक पीछा न करके उसने सैन्यादिके सहित जल्दीसे राजधानीकी ओर कूच कर दिया, पर यह कठिनता उपस्थित हुई कि उसको शीघ्र मालूम हो गया कि इस लड़ाई में शत्रुओं की कुछ अधिक हानि नहीं हुई, वरन् शुजाकी धनाढ्यता और उदारता की बातें सुनकर वे सब राजे जिनके राज्य गङ्गाके दोनों तटोंपर हैं उसकी सहायताके लिये अपनी सेनाएँ भेज रहे हैं। यह सम्वाद भी उसे मिला कि शुजा इलाहाबाद में अपने पांव जमाना चाहता है ताकि गङ्गाके इस प्रसिद्ध घाटको जो बङ्गदेशका द्वार समझा जाता है हाथसे न जाने दे।

ऐसी अवस्थामें औरंगजेबने देखा कि केवल दो व्यक्ति ऐसे हैं जिनसे इन कठिनाइयोंमें सहायता मिल सकती है। एक उनका ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद सुल्तान और दूसरा मीरजुमला। परन्तु इसके साथ ही वह यह भी जानता था जो व्यक्ति कोई प्रशंसनीय काम करता है तो प्रायः ऐसा होता है कि चाहे उसके परिश्रमका कुछही बदला क्यों न दिया जाय उसे सन्तोष नहीं होता। वह देखही रहा था कि मुहम्मद सुल्तान अभीसे स्वतंत्र और निरंकुश रहना चाहता है। और आगरेके दुर्गपर विजय पाने तथा शाहजहांको कैद कर लेनेसे उसके विचार बढ़ गये है। अब रहा मीरजुमला, सो यद्यपि औरंग- जेब उसके साहस, गम्भीरता और सद्गुणोंकी मनमें प्रशंसा

करता था तथापि उसके इन्हीं गुणोंको देखकर वह डरता भी था; क्योंकि एक तो समस्त भारतवर्षमें यह बात प्रसिद्ध थी कि मीरजुमला के पास बहुत धन है, जिसपर लोग यह भी उसके विषयमें खूब जानते थे कि वह समय पड़नेपर अपनी युक्ति नीति और बुद्धिसे कठिनसे कठिन काम भी कर सकता है। इन कारणोंसे औरंगजेब इसको भी किसी बातमें मुहम्मद सुलतानसे घटकर नहीं समझता था।

इसलिये यद्यपि ये कठिनाइयां ऐसी थीं कि किसी साधारण विचार के आदमीको अवश्य घबराहटमें डाल देतीं, परन्तु चतुर औरंगजेब ने एक ऐसी चाल चली कि उन दोनोंको राजधानीसे हटा भी दिया और दोनोंमेंसे कोई रुष्ट भी नहीं होने पाया। अर्थात् एक बड़ी सेना सुपुर्दकर उसने उन दोनोंको शुजाके युद्ध करनेके लिये भेजा। विदा करते समय उसने मीरजुमलासे कहा "फतहके बाद बंगालके जर्खेज सूबेकी हुकूमत आपहीके कब्जेमें रहेगी, बल्कि आपके बाद आपका बेटाभी इस सूबेदारीका मुस्तहक समझा जायगा और गोकिं आपकी खिदमतमें बहुतसी इनायतोंके काबिल है मगर उनमेंसे फिलहाल एक यह है कि जब आप शुजापर फतह पा लेंगे तब "अमीरुलउमरा:" का खिताब जो हिन्दोस्तानमें सबसे बड़ा खिताब है आपको दिया जायगा।"

मीरजुमलासे इतना कहकर औरंगजेब मुहम्मद सुलतानकी और लपटा और उससे उसने केवल इतना कहाकि "बेटा, खयाल करो कि मेरी औलादमें तुम सबसे बड़े हो और अपनेही कामपर जाते हो। इसमें शक नहीं कि तुमने बड़े बड़े काम किये हैं मगर सच पूछो तो अभी कुछ भी नहीं किया है। जबतक सुलतानशुजा को जो हमारे मुखालिफोंमें एक बहुत बड़ा शख्स है शिकस्त देकर पकड़ न लाओ अब तक सारेही काम अधूरे हैं।"

इतना कहकर औरंगजेबने मीरजुमला और मुहम्मद सुलतान

को राजसी वस्त्र और अनेक हाथी घोड़े भेटमें दिये। अन्तमें जिस प्रकार बन पड़ा उसने मुहम्मद सुलतान की बेगमको और मीरजुमलाके पुत्र मुहम्मद अमीनको अपने पति तथा पिताके साथ जानेसे रोक लिया। मुहम्मद सुलतान की बेगमों को तो जो गोलकुण्डा-नरेशकी पुत्री थी उसने इस बहानेसे ठहरा लिया कि ऐसे उच्च कुलकी राजकुमारीका लड़ाईके समय सेनाके साथ जाना किसीप्रकार उचित और शोभाप्रद नहीं है—और मुहम्मद अमीन खांको इस बहानेसे रोक लिया कि अभी उसकी उमर बहुत थोड़ी और मुझे उसे देखकर बड़ा स्नेह मालूम होता है अतः मैं स्वयं उसकी शिक्षा आदि का प्रबन्ध करूंगा। पर वास्तवमें धूर्त औरंगजेबने इनको इस लिये आगरे में रोक लिया कि जिसमें दोनों शरीरबन्धककी रीति पर यहां रहें और इनके कारण मीरजुमला व मुहम्मद सुलनान किसी प्रकार का कपटाचरण न कर सकें।

अब शुजाका हाल सुनिये। उसे निरन्तर चिन्ता लग रही थी कि कदाचित् बङ्गालके निचले भागके वे राजे जो उसकी छीनाझपटीसे अप्रसन्न हो रहे थे किसीके बहकानेसे पीछे उपद्रव न खड़ा कर बैठें जब औरंगजेबके इन प्रबन्धों की उसे खबरें लगी तब इलाहाबादसे डेरा डण्डा उठाकर वह बनारस और पटनेकी ओर चल पड़ा; क्योंकि उसे भय था कि सम्भव है मीरजुमला इलाहाबाद के बदले किसी और घाटसे गंगाके पार उतरकर मेरे बंगदेशको लौटजानेका मार्ग बन्द करदे। इसी सन्देहसे पहले बनारस और पटने जाकर वह मुंगेरको चला गया जो गंगाके तटपर एक छोटासा नगर है और एक ओर पर्वत तथा दूसरी ओर जंगल और नदी होनेके कारण उत्तम स्थानहै। इसके अतिरिक्त बंगालका द्वार समझा जाता है। यहां पहुंचकर उसने स्थान दृढ़ करनेका प्रबन्ध किया और नगर तथा नदीके किनारे से लेकर पहाड़ तक एक बड़ी गहरी खाई खुदवाई। इस घटनाके

गई थी बाद इन खाईको मैंने भी देखा था। अस्तु इतना प्रबन्ध करके शुजा गंगाके घाटको रोके हुए शत्रुओंका मार्ग देख रहा था। कि इतनेमें सहसा उसे यह दुःखदायी सम्बाद मिला कि वह सैन्यदल जो गंगाके किनारे किनारे बढ़ा आता था केवल धोखा देनेके लिये था और मीरजुमला उसके साथ नहीं है, परन्तु वह उन राजाओंको सन्तुष्ट करके जिनके राज्य नदीके दाहिने तटों पर पर्वतोंमें हैं पर्वतों को पार करता हुआ मुहम्मद सुलतान और कुछ सिपाहियोंके साथ राजमहल की ओर इस इच्छासे जा रहा है कि हमारे पीछे हटनेका मार्ग रोककर हमको बंगालके भीतरकी ओर न जाने दे। अतः यह खाई आदि जो बड़े परिश्रम और प्रबन्धसे बनी थीं ज्योंकि त्यों छोड़ देनी पड़ी। मुंगेर और राजमहलके बीच गंगाजी कई चक्कर और फेर खाकर गई हैं इससे यद्यपि बहुत कष्ट उठाना पड़ा तथापि वहांसे चलकर शुजा किसी प्रकार मीरजुमला से कई दिन पहलेही राजमहल पहुंच गया; बल्कि वहांसे लड़ाईका सामान ठीक करनेका महल पहुंचने से रोकना असम्भव है मीरजुमला और मुहम्मद सुलतान अपने बाएँ हाथ अनेक दुर्गम और भयानक मार्गोंसे होते हुए इस अभिप्राय से गंगाकी ओर बढ़े कि अपने भारी तोपखाने और सैनिक आदि को भी जो जलमार्गसे आ रहे थे अपने साथ लेलें निदान जब उन्होंने इतना काम कर लिया और उनके साथी उनको मिलगये तब राजमहलमें जाकर उन्होंने लड़ाई आरंभ कर दी। पांच दिनतक शुजा खूब लड़ा, पर इसके पश्चात् जब उसने देखा कि मीरजुमलाके तोपखानेकी मारसे उसके मोर्चे (जो वृक्षोंकी डालियों और लकड़ियोंसे बुर्जकी भांति मट्टी और रेत भरकर बना लिये गये थे) नष्ट हुए जातेहैं और सोचा कि बरसात की ऋतु निकट आ गई है उस समय इनकी और भी दुर्दशा होगी तब रातके अन्धेरेमें वह वहांसे निकलगया; पर दो तोपें जो बहुत भारी थीं वहीं छोड़ता

गया। इधर एक तो मीरजुमला इस भयसे उसका पीछा न कर सका कि छापा मारनेकी इच्छासे कहीं वह उसकी घातमें न लगा हो दूसरे शुजाके सौभाग्यवश सवेरा होनेसे पहले ऐसी प्रबल वृष्टि हुई कि उसका पीछा करनेके लिये राजमहलकी ओर यात्रा करनेका विचार करना भी असम्भव होगया। यह वृष्टि बहुतही प्रबल और बरसातका आरम्भ भी जो बंगाल देशमें जुलाईसे अक्तूबर तक बहुतही अधिकता से होती है और मार्ग ऐसे खराब हो जाते हैं कि किसी चढ़ाई करने-वाली सेनाके चलने योग्य नहीं रहते। निदान लाचार होकर मीर जुमलाको बरसातके समाप्त होनेतक राजमहलमें ठहरना पड़ा।

इस अवसरमें शुजाको जहां चाहे वहां ठहरकर अपने इच्छा-नुसार उपाय करनेका अच्छी तरह सुयोग मिलगया। उसने बहुत सी नई सेना नौकर रखली जिसमें अधिकांश पोर्चुगीज थे जो कुछ तोपोंके सहित बंगालके उन प्रान्तोंमें आ गये थे जो नीचे की ओर है और बहुत हरे भरे फलवान् तथा सुन्दर होनेके कारण जहां प्रायः पश्चिम देशके निवासी आ बसते हैं। ऐसे समयमें वास्तवमें यह शुजाकी चतुराई और सुनीति थी कि उसने इन अपरिचित लोगोंके साथ उत्तम बर्ताव करके उनको अपनी सेनामें भर्ती कर लिया; क्योंकि पुर्त्तगीज असल और दोगले मिलाकर कमसे कम ८—१० सहस्र यहां वर्त्तमान थे और निसन्देह उनसे शुजाको बहुत सहा-यता मिल सकती थी। उसने इस अवसर पर कुछ विशेषताके साथ उनके पादरियोंको भविष्यके लिये बहुत आशा दिलाई और परितोषिकादिके अतिरिक्त यह भी कहा कि आपकी जहां इच्छा हो वहां अपने गिर्जे बनालें।

अभी बरसात नहीं बीती थी और मीरजुमला तथा मुहम्मद सुलतान राजमहलमेंही थे कि इतनेमें दोनोंमें कुछ अनबनाव हो गया। मुहम्मदसुलतान अपनेको समस्त सैन्यका अफसर समझने

और मीरजुमलाको तिरस्कारदृष्टिसे देखने लगा । उसके आचार व्यवहार और बातचीतसे प्रगट होने लगा कि वह पिताकी भी कुछ अधिक परवा नहीं करता, बल्कि एक दिन उसने बड़े गर्व के साथ स्पष्ट कह भी दिया कि "आगरेके किलेकी दस्तयाबी मेरीही कोशिस और मिहनतसे हुई, पस अगर हजरत (औरंगजेब) इसके लिये किसीके ममनून हों तो उनको मेराही ममनून होना चाहिये।" इन बातों का परिणाम यह हुआ कि उसने पिताको अपनेपर बहुत रुष्ट कर लिया और फिर जब उसको उसके रुष्ट होनेका समाचार मिला तब इस भयसे कि कहीं वह पकड़कर कैद न कर लिया जाय केवल कुछ थोड़ेसे गिनतीके आदमी साथ लेकर राजमहलसे चल दिया वहां से चलकर उसने "अपनेको शुजाकी सेवामें उपस्थित किया।" परन्तु शुजाको इसकी बातोंका जरा भी विश्वास नहीं हुआ, उलटे उसे इस बातका सन्देह हुआ कि सम्भव है औरंगजेब और मीरजुमलाने मुझे मूर्ख बनानेके लिये यह चाल चली हो। अस्तु, मुहम्मद सुलतान की बड़ी बड़ी प्रतिज्ञाओं और कसमोंपर विश्वास न करके उसने उसको अपनी सेनाका कोई बड़ा आधिपातित्व नहीं सौंपा, वरन् वह सदा उसकी चालकी जांच करता रहा। अन्तमें यह दशा हुई कि सुलतान शुजासे भी उससे बिगड़ गई और कई महीनो के बाद निराश होकर वह फिर मीरजुमलाके पास गया। मीरजुमलाने थोड़े सत्कारसे उसे स्थान दिया और कहा कि "अगर्चे आपने बहुत बड़ा कुसुर किया है, मगर खैर बादशाहसे सिफारिश करके माफीकी दरख्वास्त करूंगा।"

बहुत लोग कहते हैं कि औरंगजेबकेही कहनेसे मुहम्मदसुलतान सुजाके पास गया था क्योंकि औरंगजेब चाहता था कि उसके पुत्रको चाहे कैसीही भयानक दशा में क्यों न पड़ जाना पड़े पर सुलतानशुजा अवश्य नष्ट हो जाय। यह बात चाहे सत्य हो या न हो

और वास्तविक बात चाहे कुछ भी हो, पर जब औरंगजेबको मालूम हो गया कि मुहम्मदसुलतान राजमहलको लौट आया तब सुयोग देखकर कि अब इसे भी कारागारमें बन्द कर देनेका अच्छा बहाना मिल गया है सच्चा अथवा झूठा कोप प्रकट करते हुए उसने उनके पास एक ताकीदी आज्ञापत्र भेजा कि तुम तुरन्त देहली को चले आओ। अब भाग्यहीन सुलतान मुहम्मद आज्ञा टाल सकताही नहीं था लाचार आगे बढ़ा पर ज्योंही गङ्गाके उसपार उतरा त्योंही हथियारबन्द सिपाहियोंके एक झुण्डने उसे घेरकर पकड़ लिया और बलपूर्वक एक अमारी में बन्द करके वे उसे ग्वालियर ले गये। मुझे विश्वास है कि उसकी आयु की समाप्ती उसी स्थानमें होगी। (सन्१६७६ ई० की ५ वीं दिसम्बरको इसी दुर्गमें मुहम्मदसुलतान की मृत्यु हुई)

इस प्रकार अपने ज्येष्ठ पुत्रकी ओरसे निश्चिन्त होकर औरंगजेब ने द्वितिय पुत्र शाहजादा मुअज्जमसे कहा-"ऐसा नहो कि कहीं तुम भी सरकशी और बलन्दपरवाजीके खयालातमें भाईकी तरह हो जाओ और वही मुआमिला तुमको पेश आये जो उसको पेश आया है। याद रखो कि सल्तनत एक ऐसा नाजुक मुआमिला है कि बादशाहोंको अपने सायेसे भी हसद और बदगुमानी हो जाती है; बस यह खयाल कभी न करना कि औरंगजेब भी अपने बेटोंसे वही कुछ देख सकताहै जो जहांगीरने शाहजहांके हाथोंसे देखा था, या जिस तरह शाहजहां ने तख्तोताज खो दिया औरंगजेबभी उसी तरह खो सकता है।" तथापि सब बातों पर विचार करके मैं कह सकता हूं कि औरंगजेबको सुलतान मुअज्जमकी ओरसे ऐसा सन्देह करना अकारण था, क्योंकि वह तो एक तुच्छ दाससे भी अधिक आज्ञाकारी बना रहता है। अस्तु, इस विषयमें मैं विशेष बातें आगे चलकर लिखूंगा इस समय अन्य आवश्यक बातें लिखता हूं।

जिस समय आगरा और देहलीका यह हाल था उस समय बङ्गालमें लड़ाई पहलेकी तरह हो रही थी; लेकिन कुछ सुस्तीके साथ। जहां तक बनता था शुजा लड़ता था और उसका चतुर शत्रु मीरजुमला नद्दीसे उतरने और अगणित नदी नालोंके पार करनेमें जैसा ठीक और समयोचित समझता था वैसा करता था। इस बीचमें औरंगजेब आगरेमें थे; परन्तु अन्तमें जब मुरादबख़्शको वह ग्वालियरके दुर्गमें भेज चुका तब उसने उन धोखेकी टट्टियोंको जो लोगोंको भ्रममें डाल रखनेके लिये खड़ी की गई थी एकदम उठा दिया और सिंहासन पर बैठकर खुल्लमखुल्ला राज्यशासन करना आरम्भ किया। अब उसका सारा चित्त दाराको गुजरातसे निकाल बाहर करनेके उपायोंमें लगा था, पर उन कारणोंसे जो पहले बताये चुके हैं वह अपनी इस इच्छाको पूरा करना सहज नहीं समझता था। तौभी पीछे उसकी अगाध बुद्धि और सौभाग्यसे इस कामके लियेभी एक अच्छा अवसर उसके हाथ लगगया। उसका हाल यों है,—

राजा यशवन्तसिंह ने घर पहुँचतेही उस धन सम्पत्तिसे जो खजुआ की लूटमें मिली थी एक बड़ी सेना एकत्रित करनी आरम्भ की और दाराशिकोहको लिख भेजा कि आप शीघ्र आगरेको चले, आवें; मैं सैन्यके सहित रास्तेमें आपसे आ मिलूंगा।" इधर दाराने भी बहुत बड़ी सेना इकठ्ठी कर ली थी, पर वह कुछ अच्छी नहीं थी; अत. राजा यशवन्तसिंहका इस आशयका पत्र पाकर वह इस आशासे अहमदाबादसे चल पड़ा कि जब मै ऐसे नामी राजाके साथ राजधानी के निकट पहुंचूंगा तब मेरे शुभ चिंतकोंको मेरे झण्डेके नीचे आकर एकत्रित होनेका साहस हो जायगा। अस्तु यह सोचकर वह बहुत शीघ्र अजमेरमें आ पहुंचा पर राजा यशवन्तसिंह अपनी प्रतिज्ञा का पालन नहीं करसके। कारण यह हुआ कि राजा जयसिंहने यह सोचकर कि लड़ाईका रंगढंग देखनेसे औरंगजेबहीकी

जीतकी आशा होती है उसको सन्तुष्ट करनेके लिये यशवन्तसिंहको दाराशिकोहका पक्ष छोड़नेकी सलाह देना उचित समझा और लिखा कि " आपने डूबते हुएके साथी बनानेमें क्या लाभ सोचा? यदि आप इस विचार पर दृढ़ रहेंगे तो मेरी समझमें इससे कुछ लाभ तो होगा नहीं, उलटे कदाचित् आपको अपनी और अपने कुटुम्बकी दुरवस्था देखनी पड़ेगी और औरंगजेब आपको कभी क्षमा नहीं करेगा। और इसलिये कि मैं भी एक राजा हूं आपसे सविनय निवेदन करता हूं कि राजपूत वीरोंके रक्तकी नदी व्यर्थ न बहाइये और ऐसा न समझिये कि और राजे भी आपका साथ देंगे, क्योंकि मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा। यह एक ऐसी बात है जो प्रत्येक हिन्दूसे सम्बन्ध रखती है, इसलिये आपको ऐसी आग भड़कानेकी अनुमति किस प्रकार दी जा सकती है जो देशभरमें फैल जाय और फिर कोई उसको न बुझा सके। यदि आप दाराको जिस अवस्थामें वह है उसीमें पड़े रहने देंगे तो औरंगजेब आपके सब पिछले अपराध क्षमाकर देगा और वह धन भी नहीं मांगेगा जो आपने खजुआकी लड़ाईमें लूटलिया था; बल्कि तुरन्त गुजरातकी सूबेदारी आपको मिल जायगी। आप समझ सकते हैं कि एक ऐसे प्रान्तके अधिकारका प्राप्त होना जो आपके राज्यके सन्निकट है कितने लाभकी बात है। वहां निश्चिन्त भावसे आप बड़े आनन्दसे रह सकते हैं। जो प्रतिज्ञा मैं इस पत्रमें करता हूं उसके पूरा करनेका भार मैं अपने ऊपर लेता हूं। " राजा यशवन्तसिंहपर जयसिंहके इस पत्रका बहुत प्रभाव पड़ा, उन्होंने घरसे बाहर न निकलनेका निश्चय करलिया और औरंगजेब सेना लेकर अजमेरमें दाराशिकोहकी सेनाके सामने जा पहुंचा।

अब ऐसा कौन मनुष्य होगा जिसे इस इतिहासको पढ़कर इस बातका दुःख न होगा कि अभागे दाराको लोगोंने कैसे कैसे उलटे दांव बतलाये और अन्तमें उसे कैसा धोखा दिया। यद्यपि यशवन्त

सिंहके दिवाराके बदलेजानेका हाल उसे मालूम होगया, पर उसके भयंकर परिणामको कौन रोक सकता था ? वह निस्सन्देह अपनी सेनाको अहमदाबाद ले जाता, पर प्रचण्ड गर्मी पड़ रही थी और जलके अभावके कारण जो इस ऋतुमें राजपूतानेमें हो जाता है ३०-३५ दिनतक उन राजाओंके देशोंमें जो यशवन्तसिंहके मित्र और हितैषी थे यात्रा करना अत्यन्त कठिन था। इस पर विशेषता यह थी कि औरंगजेबसा प्रवीण शत्रु नई और सबल सेना लिये हुए उसके पीछे लगा हुआ था। अतएव अन्तमें उसने वीरतापूर्वक रणक्षेत्रमें प्राण दे देना उचित समझा। यद्यपि वह जानता था कि यह लड़ाई बराबरकी नहीं होगी तौभी उसने सोचा कि क्या चिन्ता है, या तो शत्रुको मार लेंगे या स्वयं मर जायँगे। पर अबतक भी बेचारे दारा के लिये जो प्रपंच रचे जाते थे वे उसको मालूम नहीं थे। जिनपर कुछ भी सन्देह नहीं किया जाता था वेही उसकी दुर्दशाके लिये घातमें लगे थे। दुष्ट शाहनेवाजखां जिसपर उसे पूरा भरोसा था बराबर औरंगजेबसे पत्र व्यवहार करता और दाराकी सब युक्तियां छिपी रीतिसे उसपर प्रकट कर देता। परन्तु इस विश्वासघातका दण्ड उसे शीघ्र मिल गया, अर्थात् वह लड़ाईमें मारा गया। कुछ लोग कहते हैं कि स्वयं दाराशिकोहके हाथसे उसकी मृत्यु हुई पर अधिक सच्ची यह बात मालूम होती है कि उसे दाराशिकोहके उन गुप्त हितैषियों ने जो औरंगजेबकी सेनामें थे इस भयसे मारडाला कि यदि यह जीवित रहेगा तो हमारा सब भेद खोल देगा और उन प्रार्थनापत्रोंका हाल उससे कहेगा जो हम दाराशिकोहकी सेवामें भेजते रहे हैं। परन्तु अब इस विश्वासघातीके मारे जानेसे क्या लाभ था ? दाराको तो उसी समय उसके साथ समझ बूझकर उचित बरताव करना उचित था जिस समय उसके मित्रोंने समझाया था कि शाहनेवाजखां विश्वासके योग्य नहीं है; इससे सावधान रहना।

अस्तु, पहर दिन चढने पर लड़ाई आरम्भ हुई। दाराके तोपखानेसे जो कुछ ऊंचे और उचित स्थान पर लगा था पहले गोलोंके छूटनेके भारी शब्द सुनाई दिये। पर ऐसा कहा जाता है कि उससे शत्रुओंने यहांतक जाल फैला रखा था, कि इन तोपोंसे शब्द मात्र किये जाते थे; इनकी थैलियां बिना गोली की भरी हुई थीं। इस लड़ाईका वर्णन करना व्यर्थ है, क्योंकि इसे लड़ाई नहीं किन्तु प्रपंचसे भरा एक नाशकारक उत्पात कहना चाहिये। पहला गोला चलतेही राजा जयसिंह एक ऐसे स्थान पर आकर खड़े हुए जहांसे दारा उनको देख सकता था। वहां जाकर उन्होंने एक सरदारके द्वारा यह सन्देसा उसके पास भेजा कि "यदि तुम पकड़ जानेसे बचना चाहते हो तो तुरन्त युद्धक्षेत्रसे अलग हो जाओ।" सन्देसा पातेही उस बेचारे राजकुमारके चित्तमें ऐसा भय समाया कि वह सामग्री इत्यादिकी ओर कुछ भी ध्यान न देकर एकदम रणक्षेत्र छोड़कर भाग गया। उसने अपने बाल बच्चोंको सकुशल निकाल ले जानाही बहुत समझा; क्योंकि उस समय वह एकदम जयसिंहके अधिकारमें था। राजा जयसिंह की नीति थी कि वे सभी राजकुमारोंके साथ सदा प्रतिष्ठाका बरताव करते थे क्योंकि वे सोचते थे कि राजकुलके किसी व्यक्तिके साथ अनुचित बरताव करनेका किसी न किसी दिन बहुत बुरा परिणाम हो सकता है।

बेचारा दुखियारा दारा जिसका बचाव केवल अहमदाबाद पर पुनः अधिकार प्राप्त करनेपर निर्भर करता था ऐसे लम्बे चौड़े प्रदेश में होकर जानेको विवश था जो प्रायः सबके सब विपक्षी राजाओंके आधीन थे। खेमेतक उनके पास नहीं थे और अधिकसे अधिक जो गर्मी बहुत पड़ रही थी और उस पर विशेषता यह थी कि कोली लोग रात दिन पीछा नहीं छोड़ते थे। उसके सिपाहियों को वे इतना लूटते और काटते थे कि केवल कुछ पग पीछे रह जाना भी मा।

भयंकर था। ये कोली इस देशके किसान हैं जो बड़ेही लुटेरे और भारत वर्षमें एक ही दुष्ट हैं। अस्तु, इन सब कठिनाइयों और आपदाओंसे बचकर यद्यपि दारा एक ऐसे स्थानतक पहुंच गया जहांसे अहमदाबाद केवल एक दिनमें पहुंचा जा सकता था और उसे आशा भी हुई थी कि कल अपने को मैं अहमदाबादमें पाऊंगा और फिर एक सेना एकत्रित कर लूंगा; पर भाग्यहीन और हारे हुए लोगोंकी आशालता क्या कभी लहलहाती है?—उस व्यक्तिने जिसको वह अहमदाबादका किलेदार और प्रबन्धकर्त्ता बनाकर पीछे छोड़ आया था यह स्वामिद्रोहिता और दुष्टता की कि यातो औरंगजेबके धमकानेसे या कुछ लालच दिखलानेसे वह दाराके विरुद्ध हो गया और इस आशयका एक पत्र उसने इसके पास लिख भेजा कि नगरके निकट न आइयेगा, फाटक बन्द है और लोग अस्त्रशस्त्रसे सज्जित खड़े हैं!

इस समय मैं भी तीन दिनसे दाराशिकोहके साथ था। मैं उसे अचानक मार्गमें मिल गया था। उसके साथ कोई वैद्य नहीं था, इसलिये उसने मुझे जबर्दस्ती अपने साथ ले लिया था। अहमदाबाद केगवर्नरका पत्र पहुंचनेसे एक दिन पहलेकी बात है कि दाराने मुझसे कहा कि कदाचित् आपको कोली मार डालें। यह कहकर वह आग्रहपूर्वक मुझे अपने साथ उस कारवांमें ले गया जहां वह स्वयं ठहरा था। अब उसकी यह दशा थी कि एक खेमातक उसके पास नहीं था। उसकी बेगम और स्त्रियां केवल एक कनात की आड़में थीं। कनात की रस्सियां मेरी सवारीकी बहलीकी पहियोंसे जिसमें मैं सोया करता था बांधी गई थीं। जो लोग इस बातको जानते हैं कि भारतवर्षके अमीर लोग अपनी स्त्रियोंके पर्देके विषयमें कितनी अत्युक्ति करते हैं वे मेरी इस लिखावट पर विश्वास न करेंगे परन्तु मैंने इस घटनाका हाल उस दुःखद अवस्थाके प्रमाणमें लिखा

फटनेके समय जब अहमदाबादके हाकिमका वक्त सन्देसा आया तब औरतोंके रोने चिल्लानेने हम सबको रुला दिया। उस समय एक विलक्षण प्रकारकी हैरानी और निराशा छा रही थी, सभी डर के मारे चुपचाप एक दूसरेका मुख देखते थे; कोई उपाय नहीं सूझता था; कुछ नहीं मालूम था कि क्षण भरमें क्या हो जायगा। जब दारा-शिकोह स्त्रियोंसे मिलकर कनातके बाहर आया तब मैंने देखा कि उसके मुख पर मुर्दनीसी छा रही है; वह कभी इससे कुछ कहता है कभी उससे कुछ बात करता है; एक साधारण सिपाहीसे भी पूछता है कि अब क्या करना चाहिये। जब उसने देखा कि प्रत्येक व्यक्ति डरा और घबराया हुआ मालूम होता है तब उसे विश्वास हो गया कि सम्भवतः अब इनमेंसे एक भी मेरा साथ न देगा। वह बड़ा ही हैरान था कि अब क्या होगा; किधर जाना चाहिये, यहां ठहरने से तो खराबी ही खराबी दीखती है।

इस तीन दिनकी अवधिमें जब कि मैं दाराके साथ था हमलोगोंको रात दिन बिना कहीं ठहरे हुए जाना पड़ा। गर्मी ऐसी प्रचण्ड थी और धूल इतनी उड़ती थी कि दम घुटा जाता। मेरी बहलीके तीन बहुत सुन्दर और बड़े गुजराती बैलोंमेंसे एक मर चुका था, दूसरा मरनेकी दशाको पहुंच चुका था और तीसरा इतना थक गया था कि चल नहीं सकता था। यद्यपि दारा बहुत चाहता था कि मैं उसके साथ रहूं, विशेषकर इस कारणसे कि उसकी एक बेगमके पैरमें बहुत बुरा घाव था, पर वह इस दुर्दशाको पहुंच गया था कि धमकाने और अनुनय विनय करने पर भी किसीने उसको मेरी सवारीके लिये कोई घोड़ा या बैल या ऊंट नहीं दिया। अब कोई सवारी नहीं मिला तब लाचार होकर मैं पीछे रह गया। दारा को चार पांचसौ सवारोंके साथ जाते देखकर (क्योंकि घटते घटते अब उसके साथ इतनेही सवार रह गये थे) मैं एकदम रो पड़ा।

परन्तु इतनेपर भी दो हाथी उसके साथ थे जिनपर लोग कहते थे कि रुपये और अशर्फियां लदी हुई हैं। उस समय मैं समझा था कि दारा ठट्ठकी ओर जायगा और वर्त्तमान अवस्थाओंको देखते हुए यह उपाय कदाचित कुछ बुरा नहीं था, पर वास्तविक बात तो यह है कि इधर भी विपत्तिका सामान था और उधर भी। मुझे कदापि ऐसी आशा नहीं थी कि वह उस मरुस्थानसे जो अहमदाबाद और ठट्ठके बीचमें है कुशलपूर्वक बचकर निकल जायगा। हुआ भी ऐसाही। उसके साथियोंमेंसे बहुतसी स्त्रियां मर गईं और पुरुषों पर तो ऐसी आपदा आई कि कुछ तो भूख प्यास और थकावटसे मर गये और अधिकांशको निर्दय कोलियोंने मार डाला। यदि ऐसी आपदाओंसे भरी यात्रामें स्वयं दाराशिकोह मर जाता तो मैं उसे बड़ाही भाग्यवान् समझता, पर सब प्रकारके कष्ट और विपत्ति सहता हुआ अन्तमें वह कच्छ प्रान्त मे पहुंच गया।

वहांके राजाने जैसा कि चाहिये बड़ी उत्तम रीतिसे उसका स्वागत किया और अपने यहां उसे स्थान दिया, पश्चात् उसने दारासे कहा कि यदि आप अपनी कन्याका विवाह मेरे पुत्रसे करदें तो मैं अपनी सब सेना आपकी सहायताके लिये उपस्थित कर दूं। परन्तु पीछे जिस प्रकार यशवन्तसिंहपर जयसिंहका जादू चल गया था उसी प्रकार यहां भी हुआ। शीघ्रही उसके भाव बदले हुए दिखाई दिये। जब कोई बातोंसे दाराशिकोहने देख लिया कि यह दुष्ट तो मेरे प्राणही लेना चाहता है तब वह तुरन्त वहांसे ठट्ठ की ओर चल दिया।

अब यदि मैं वह सब हाल कहने लगूं कि किस प्रकार दुष्ट कोलियोंका मेरा सामना हुआ, किस रीतिमें मैंने उनको अपने ऊपर प्रसन्न किया और किस युक्तिसे वह थोड़ासा रुपया जो मेरे पास था बच गया, तो कदाचित् इस पुस्तकके पढ़नेवाले ऊब जायँगे,

अतएव संक्षेप यह है कि मैने अपनी डाक्टरी विद्याकी बड़ी प्रशंसा की और मेरे दो नौकरोंने भी जो उसी भयमे डूबे हुए थे जिसमें मैं था उनको यही जताया कि डाक्टरी विद्याके ज्ञान और अनुभव में इस संसार में हमारे स्वामी की कोई बराबरी नही कर सकता। दाराशिकोहके सिपाहियोंने इसको ऐसा सताया है कि जो कुछ बहुमूल्य माल असबाब इसके पास था वह सब इससे छीन लिया गया है। निदान हम लोगोंके सौभाग्यसे इतना कहने सुननेका यह परिणाम हुआ कि दुष्ट कोलियोंका मन कुछ पसीज गया। हम तीनोंको सात आठ दिनों तक कैद रखनेके बाद अन्तमें एक बैल हमारी गाड़ीमें जोतकर उन्होंने हमको वहांतक पहुँचा दिया जहांसे अहमदाबादके गुम्बद देख पड़ते थे। इस नगरमें एक अमीरसे मेरी मुलाकात हो गई जो देहलीको जाता था और उसीकी शरणमें मैं यहांतक चला आया। मार्गमें स्थान स्थान पर आदमियों, हाथियों, घोड़ों, ऊंटों और बैलोंकी लाशें पड़ी देख पड़ी जो दाराशिकोहकी दुर्दशाग्रस्त सेनाका हाल मानो गला फाड़कर सुना रही थी।

जिस समय दारा उट्ठकी आपदापूर्ण यात्रामें लगा हुआ था उस समय बङ्गालमें लड़ाई पहलेकी तरह हो रही थी और शुजा अपने शत्रुओंकी आशासे बहुत बढ़कर साहस और उद्योग दिखा रहा था; तथापि औरंगजेबको उसकी ओरसे कुछ अधिक चिन्ता नहीं थी, क्योंकि मीरजुमला की युक्ति और बुद्धिमानीसे वह भली भांति परिचित था। हां, जिस बातका उसे विशेष खटका था वह यह थी कि सुलेमानशिकोह निकट था और यह चिन्ता साधारणतः फैली हुई थी कि श्रीनगरसे जहांसे आगरा आठ दिनमें भी कमका मार्ग है वह वहांके राजा और सेना समेत उतरने वाला है। औरंगजेब ऐसा बुद्धिहीन नहीं था कि ऐसे शत्रु को तुच्छ समझता, सो अब उसको अधिकतर इसी बातकी चिन्ता थी कि किस तरह सुलेमान

शिकोहको वशमें लाना चाहिये। इसका सबसे उत्तम उपाय उसकी समझमें यह आया कि राजा जयसिंहके ही द्वारा इस राजा से भी कुछ बन्दोबस्त किया जाय। निदान जयसिंहने श्रीनगर-नरेशके पास इस आशयका एक पत्र लिखा कि यदि आप सुलेमानशिकोह को पकड़कर भेज देंगे तो आपको बड़े बड़े इनाम मिलेंगे नहीं तो बहुत हानि उठावेंगे। इस पत्रका उसने यह उत्तर दिया कि चाहे मेरा सम्पूर्ण देश मुझसे छीन लिया जाय पर मैं ऐसी अप्रतिष्ठा और कापुरुषताका काम नहीं करूंगा। जब औरंगजेबने देख लिया कि धमकी वा लालच देनेसे कुछ नहीं हो सकता, यह राजा न्यायके विरुद्ध न होगा, तब उसने अपनी सेनाको पहाड़तलीकी ओर भेजा और अनगनित बेलदार पहाड़ों को काटकर रास्ता चौड़ा करनेके लिये नियुक्त किये पर राजा अपने विपक्षियोंके इन व्यर्थके उद्योगों को जो उसके देशमें प्रवेश करने के लिये नाहक किये जाते थे निरा बच्चों का खेल समझता और हंसता था। वास्तवमें उसका हँसना ठीक था, क्योंकि यदि औरंगजेब जैसे चार बादशाह भी मिलकर उस पहाड़ी देशपर चढ़ाई करते तो भी उन कुढब पहाड़ी मार्गोंमें प्रवेश न कर सकते। अन्तमें हुआ भी यही कि औरंगजेबको क्रोधमें आकर अपनी सेना पीछे बुलानी पड़ी।

इस बीचमें दाराशिकोह ठट्ठके निकट पहुँच चुका था और केवल दोही तीन दिनका मार्ग बाकी था। मुझको उन फरासीसियों और कई दूसरे युरोपियनोंसे जो इस दुर्गकी सेना में थे मालूम हुआ कि यहां पहुँच कर दाराको यह समाचार मिला कि मीरबाबाने जो बहुत दिनोंसे दुर्गको घेरे हुए था भीतरवालोंको यहांतक तंग कर दिया है कि आधसेर मांस या चावल २॥) को मिलती है और दूसरी वस्तुएँ भी बहुत महँगी हैं; तौभी बहादुर किलेदार अबतक उसी प्रकार साहस किये हुए है, बल्कि प्रायः वह दुर्गके बाहर निकल कर

शत्रुओंपर ऐसे आक्रमण करता है जैसे चाहिये, हर प्रकारकी सच्ची वीरता और स्वामिभक्तिसे मीरबाबाके आक्रमणोंको रोकता है और औरंगजेबकी धमकियों तथा प्रतिज्ञाओं पर हँसता है। उसके इस प्रशंसनीय कामके विषयमें वे युरोपियन भी जो उसकी सेनामें थे कहते थे कि सब सच है। उन्होंने मुझसे यहभी कहा कि जब उसको दाराके निकट आनेका सम्वाद मिला तब उसने और भी उत्साह दिखलाया और इस प्रकार सिपाहियोंका मन अपने हाथमें कर लिया कि दुर्गवाले मीरबाबाका घिराव तोड़कर दाराको दुर्गमें लानेके लिये अपने प्राण दे देनेको तैयार दिखाई दिये।

इसके अतिरिक्त उस साहसी सरदारने और भी कई अच्छे उपायोंसे युक्तिनिपुण जासूसोंको मीरबाबाके सैन्यमें भेजकर घेरा करनेवालोंके मनमें इस बातका विश्वास उत्पन्न कर दिया कि दारा एक बहुत बड़ी सेनाके साथ घेरा तोड़ देनेके लिये यहां आ रहा है और अब शीघ्र पहुँचना चाहता है और यहांतक अत्युक्ति करके कहा कि हम दारा और उसकी सेनाको अपनी आंखोंसे देख आये हैं। यह युक्ति ऐसी चलगई कि घेरेवालों के छक्के छूट गये। इसमें सन्देह नहीं कि यदि दारा उस समय जा पहुँचता तो मीरबाबाके लोग अवश्य तितर बितर हो जाते, परन्तु उनमेंसे कुछ लोग उसकी ओर हो जाते, पर उसके भाग्यमें ऐसाही लिखा था कि किसी उद्योग में वह सफलता न प्राप्त करे! अस्तु, यह समझकर कि थोड़ेसे आदमियोंके साथ घेरेका तोड़ना असम्भव है पहले तो उसका यह विचार हुआ कि सिन्धु नद पार करके ईरानको चला जाय (यद्यपि इस उपायका काममें लाना बहुत ही कठिन था, क्योंकि पठानों और बलूचोंके ऐसे छोटे छोटे सरदारोंके देशोंमें होकर जाना पड़ता जो न तो ईरानके अधीन थे न हिन्दुस्तान) परन्तु सबसे सिवा उसकी बेगमने एक निर्बल और वाहियातसी बात कहकर उसका यह विचार

भंग कर दिया। अर्थात् उसने कहा कि " अगर आप ईरान जानेका इरादा करेंगे तो खूब समझ लीजिये कि मुझको और मेरी बेटी दोनों को शाहईरानकी लौंडियाँ बनना पड़ेगा, जो कि ऐसी बेइज्जती है कि हमारे खान्दानमें किसीको गँवारा न होगी।" इस बातको बेगम और दाराशिकोह दोनों भूलगये कि हुमायूँ जब ऐसीही आपदाओं में पड़कर ईरान गया था और उसकी बेगम भी उसके साथ थी तब उन दोनोंके साथ कोई अनुचित व्यहार नहीं हुआ था, बल्कि बहुत ही सम्मान और शिष्टाचारसे वहां उनका स्वागत हुआ था। अस्तु इसी प्रकार विचार करते करते दाराने सोचा कि जीवनखाँ पठानके यहां जाना उचित होगा जो एक प्रसिद्ध और बलवान सरदार है और उनका स्थान भी कुछ बहुत दूर नहीं है। दाराके मनमें जीवनखांकी सहायताका ध्यान आनेका कारण यह था कि उसके विद्रोह मचाने और दुष्टता करनेके कारण शाहजहांने दो बार उसे हाथीके पांवोंके नीचे कुचलवा डालनेकी आज्ञादी थी पर दोनोंही बार दाराके कहने सुननेसे वह छूट गया था। दाराको इस समय उसके पास जानेसे यह मतलब था कि उससे कुछ सामरिक सहायता लेकर वह मीर-बाबाको ठठ्ठके दुर्गसे हटासके और वह खजाना जो वहांके किलेदार के पास था लेकर कन्दहार चला जाय जहांसे सहजमें काबुल पहुँच सके। उसे विश्वास था कि उसके वहां पहुँच जाने पर काबुलका सूबेदार महातखां (जो एक बड़ा भारी अमीर था और काबुलवाले उसे बहुत मानते थे) बिना कुछ आगा पीछा किये वरन् बड़े प्रेमसे उसकी सहायता करनेको तैयार होगा, क्योंकि काबुलकी सुबेदारी उसे इसीकी मददसे मिली थी। इन कारणोंसे दाराका ऐसा सोचना कुछ बुरा नहीं था; परन्तु उसकी स्त्रियां उसका यह विचार सुनकर बहुतही घबराई चिन्तित हुई और बोली की जीवनखांके यहां जाना उचित नहीं है—बल्कि बेगम उसकी पुत्री और पुत्र

शिफरशिकोहने उसके पावों पर गिर गिर कर प्रार्थना की कि आप इधरका विचार छोड़ दें क्योंकि यह पठान एक प्रसिद्ध डाकू और लुटेरा है; ऐसे आदमी पर भरोसा करना अपनी मृत्युको आप बुलाना है। उन्होंने यहभी समझाया कि ठट्ठका घिराव उठा देनेकी कुछ ऐसी आवश्यकता भी नहीं है; इस लड़ाई झगड़े मे हाथ डाले बिना भी आप काबुलका मार्ग अवलम्बन कर सकतेहैं;क्योंकि मीरबाबा कभी ठट्ठका घेरा छोड़कर आपका रास्तानहीं रोकेगा।परन्तु यहतो निश्चित बातथी कि दाराकी उलटी समझ सदा उसको सीधे मार्गसे भड़का देती थी: इसी कारण उनकी बात उसको बिलकुल अच्छी नहीं मालूम हुई। उसने कहा कि काबुलकी यात्रा बहुतही कठिन और भयानक है और जिस व्यक्तिके प्राण मैंने बचाये हैं क्या सम्भव है कि वह इस समय मेरी सहायता न करेगा? आखिर बहुत समझाये और प्रार्थना किये जानेपर भी वह काबुल न जाकर (जहांकी यात्रावास्तवमें भयंकर थी) जीवनखां पठान के यहां चला गया। सचहै, दुष्ट लोग अपनी नेकनामी बदनामीका कुछभी भय न कर अपने सहायकों और शुभचिन्तकोंके भी प्राण लेनेको तैयार हो जाते हैं। जबतक वह पठान् अर्थात् जीवनखां जिसके यहां दारा गया था यह समझता रहा कि दाराके साथ बहुत बड़ी सेना आती होगी तबतक तो उसने उसके साथ बड़े सम्मानका बरताव किया, उसके साथी सिपाहियों को सादर स्थान दिया और उनके आरामके प्रबन्ध कर देनेकी अपने आदमियोंको आज्ञादी,परन्तु जब उसे मालूम होगया कि दाराके साथ दो तीन सौ आदमियोंसे अधिक नहीं हैं तब तुरन्तही उसके भाव बदलगये यह नहीं पता लगता कि औरंगजेबके कहनेसे अथवा स्वयं अपनी इच्छासे उसने ऐसा विश्वासघात किया, पर जान पड़ता है कि अशर्फियोंसे लदे हुए उन खच्चरों को देखकर उसे लालच आगया जो लूट मारसे अब तक बचे हुए थे। अस्तु उ-

मने यह दुष्टताकी कि रातके समय बहुतसे लड़ने भिड़नेवाले आदमी इकट्ठा करके पहले तो दाराके सब रुपये पैसे और स्त्रियोंके आभूषण छीनकर अपने अधिकारमें करलिये: पीछे दाराशिकोह और सिफरशिकोह पर आक्रमण किया और जिन लोगोंने उनको बचाना चाहा उन्हें मार डाला। इसके बाद दाराको बांधकर उसने एक हाथीपर बैठाया और एक बधकको इसलिये पीछे बैठा दिया कि यदि वह अथवा उसका और कोई पक्षपाती कुछ भी हाथ पांव हिलावे तो बधक उसीक्षण उसकी समाप्ति कर दे। इस प्रकार अप्रतिष्ठाके साथ उसने दाराको लाकर ठठ्ठमें मीरबाबाको सुपुर्द कर दिया। मीरबाबाने आज्ञादी कि इसे लाहौर होते हुए देहली लेजाओ।

जब भाग्यहीन दारा देहलीके निकट पहुँचा, तब औरंगजेबने अपने दरबारियोंसे इस बातकी राय ली कि ग्वालियरके दुर्गमें कैद करनेसे पहले उसे आगरेमें घुमाना चाहिये या नहीं? इसपर कुछ लोगोंने तो यह उत्तर दिया कि ऐसा करना उचित नहीं क्योंकि प्रथम तो यह बात राजकुटुम्बकी प्रतिष्ठाके विपरीत है, दूसरे इसमें बलवा हो जानेका डर है और कुछ आश्चर्य नही कि लोग उसे छुड़ालें। पर प्राय: लोगोंकी यह राय हुई कि नहीं; उसे अवश्य नगरमें एक बार घुमाना चाहिये ताकि दूसरे लोगोंको भय हो, उनपर बादशाहका रोब छाजाय, जिन लोगोंको अभीतक उसके पकड़ जानेमे सन्देह बनाहुआहै उनका सन्देह मिट जाय और उसके छिपे पक्षपातियोंकी आशाएँ भंग हो जायँ। अन्तमे औरंगजेबने भी इसी रायको उचित समझा और दाराको नगरमे घुमाने की आज्ञा दी। अभागा दारा और उसका पुत्र सिफरशिकोह दोनों एकही हाथीपर बैठाये गये और बधककी जगह बहादुरखांको बैठाकर नगर-पर्यटन कराया गया। परन्तु वह सिंहलद्वीप वा पेगूका हाथी नहीं था जिसपर दारा बहुत बढ़िया सामग्रियोंसे सजकर बैठा करता था और बहुमुल्य

झूल तथा सैनिक आभूषणोंसे ढँका रहता था; किन्तु यह एक बहुतही सड़ियल और गन्दा जानवर था। स्वयं उसके गले में भी वह बड़े बड़े मोतियोंकी माला, शरीरपर वह जरबफ्तका कवा और शिरपर वह पगड़ी नहीं थी जो भारतवर्षके बादशाह और उनके कुमार पहना करते हैं। इन वस्तुओंके स्थानमें पिता पुत्र दोनो बहुत ही मोटे वस्त्र पहने थे। इसी दशामें दोनों शहर भर बाजारोंमें फिराये गये। उनकी दशा देखकर मुझे भय होता था कि कहीं खूनखराबी न हो जाय। आश्चर्य है कि एक ऐसे राजकुमारके साथ जो लोगों को प्रिय था ऐसा बरताव करनेका दरबारियोंको कैसे साहस हुआ? यह और भी आश्चर्यकी बात है कि बचावके लिये कुछ सेना भी साथमे नही भेजी गई थी; विशेषकर ऐसी अवस्थामें जब कि औरंगजेबके अनुचित काम देखकर सब लोग कुछ दिनोंसे उससे बहुतही रुष्ट हो रहे थे; अर्थात पहले पिता (शाहजहां) और पुत्र (मुहम्मदसुलतान) और फिर भाई (मुरादबख्श) को कैदकर लेनेसे लोग उससे बहुतही असन्तुष्ट थे।

इस अविचारका तमाशा देखनेको बड़ी भीड़ जमा थी। स्थान स्थान पर खड़े होकर लोग दाराके दुर्भाग्य पर हाथ मल रहे थे। मैं भी नगरके सबसे बड़े बाजारमें एक अच्छे स्थानपर अपने दो मित्रों तथा सेवकोंके साथ बढ़िया घोड़ेपर चढ़ा खड़ा था। सब ओरसे रोने चिल्लानेके शब्द सुन पड़ते थे। स्त्री, पुरुष और बच्चे इस प्रकार चिल्लाते थे मानो उनपर बहुतही भयानक विपत्ति पड़ी हो। दुष्ट जीवनखां घोड़ेपर दाराके साथ था। चारों ओरसे उसपर गालियों की बौछाड़ पड़ रही थी; बल्कि कई एक फकीरों और गरीब आदमियों ने तो उस पाजी पठानपर पत्थर भी फेंके, परन्तु प्यारे राजकुमारके छुड़ानेका साहस किसीको नहीं हुआ!

इति प्रथम भाग।

सूचीपत्र ।



बर्नियरकी भारतयात्रा।

(दूसरा खण्ड)

जिसमें
औरंगजेब के निष्कण्टक होकर गद्दी पर बैठनेके बादकी
कुछ कुछ घटनाओं और मोगल बादशाहतका
संक्षिप्त हाल है।

काशीनिवासी—
बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त लिखित

और
गंगाप्रसाद वर्म्मा अध्यक्ष कल्पतरु प्रेस
काशी द्वारा प्रकाशित।

काशी।

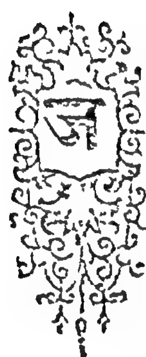
कल्पतरु यन्त्रालयमें मुद्रित।

फरवरी सन् १९०७ ई०

डाक्टर

बर्नियरकी भारतयात्रा ।

(दूसरा खण्ड)



जब यह दुर्दशाकी सवारी देहली नगरमें सर्वत्र घूम चुकी तब अभागा कैदी अपनेही एक बागमें जिसका नाम हैदराबाद था (प्राचीन नाम खिजिराबाद है) कैद किया गया परन्तु उसके नगरमें घुमाये जानेका सर्वसाधारण पर कैसा बुरा असर पड़ा, लोग जीवनखांपर कैसे क्रुद्ध हुए, किस प्रकार पत्थर मार मार कुछ लोगोंने उसे मार डालना चाहा और किस रीतिसे विद्रोह मच जानेके लक्षण दिखाई दिये, यह सब वृत्तान्त औरंगजेबने शीघ्र सुन लिया । सो फिर एक सभा की गई और राय ली गई कि पहले सोचे हुए उपायके अनुसार कैदीको ग्वालियर भेज देना चाहिये, या बध कर डालना । इसपर किसी किसीकी तो यह सम्मति हुई कि वध कर डालनेकी इस समय कुछ विशेष आवश्यकता नहीं है, यदि पहरे और रक्षाका यथेष्ट प्रबन्ध होसके तो उसे ग्वालियर भेज देनेमें हर्ज नहीं है; और दानिशमन्द-खांने भी यद्यपि दारासे उससे बनती नहीं थी बहुत जोर देकर कहा

कि वह ग्वालियर भेजा जाय; परन्तु अन्तमें अधिक लोगोंकी रायमें यही निश्चित हुआ कि इसका वध किया जाय और इसके पुत्र सिफरशिकोहको ग्वालियर भेज दिया जाय। इस अवसर पर रोशनआरा बेगमने भी अपना वह हार्दिक बैर अच्छी तरह प्रकट किया जो वह अपने इस विवश भाई के साथ रखती थी। वह बराबर दानिशमन्दखांकी रायको रोकती और औरंगजेबको यह अमानुषिक कार्य्य करनेके लिये उभारती रही। खलीलुल्लहखां और शाइस्ताखां भी जो दाराके पुराने शत्रु थे इसी बात पर विशेष जोर देते थे। और तकर्रबखां नामक ईरानीने भी, जिसका नाम पहले हकीम दाऊद था, जो किसी कारण विशेषसे भारतवर्षमें भागकर चला आया था, जो बड़ा खुशामदी था और अभी थोड़े दिनोंसे साधारण अवस्थासे उच्च अवस्थाको प्राप्त हुआ था, इन दोनोंका विकट पक्षपात किया। इसने इन सबसे बढ़कर कड़ी बातें कहीं और कठोर शब्दोंमें कड़ककर कहा कि "दाराशिकोहको जिन्दा छोड़ना हर्गिज मुनासिब नहीं है। सल्तनतकी सलामती और हिफाजत इसीमें है कि फौरन उसकी गर्दन मारी जावे। मुझे तो उसके कत्लकी सलाह देनेमें जरा भी ताम्मुल नहीं होता, क्योंकि वह बेदीन और काफिर है,— और अगर ऐसे शख्सके कत्लमें कुछ गुनाह वाजिब होता हो तो वह मेरी गर्दन पर हो।" ईश्वरेच्छा देखिये कि जैसा उसके मुंहसे निकला था हुआ भी वैसाही अर्थात् इस अविचारके रक्तपातका फल उसीको मिला, बहुत शीघ्र वह बड़ी दुर्दशाके साथ मारा गया।

निदान इस अन्याय, अविचार और निर्दयतापूर्ण रक्तपातके लिये नजीर नामक एक गुलाम जो शाहजहांके यहां पला था और किसी कारणसे दारासे असन्तुष्ट था चुना गया। एकदिन सि

खिलाये जानेके भयसे दारा और सिफरशिकोह बैठे अपने हाथसे दाल बना रहे थे कि सहसा नजीरखां चार दूसरे दुष्टोंको लिये हुए उन दोनोंके निकट जा पहुँचा। उसे देखतेही दाराने सिफरशिकोहसे कहा कि "लो बेटा, हमारे कातिल आ गये।" यह कहकर उसने रसोई-घरकी एक छोटी छुरी उठा ली, क्योंकि वहां और कोई अस्त्र शस्त्र नहीं था परन्तु उन वधकोंमेंसे एकने तो सिफरशिकोहको पकड़ लिया और शेष सब उसपर टूट पड़े, उसको भूमिपर उन्होंने पटक दिया और नजीर उसका सिर काटकर तुरन्त औरंगजेबके पास ले गया। औरंग-जेबने वह कटा हुआ सिर एक बर्तनमें रखकर उसके मुख परका रक्त धुलवाया। जब उसे निश्चय होगया कि यह दाराहीका सिर है तब उसके नेत्रोंसे आँसू निकल पड़े और एकबार "ऐ बदबख्त!" कहकर वह बोला कि "अच्छा इस दर्दङ्गेज सूरतको मेरे सामनेसे ले जाकर हुमायूँके मकबरेमें दफन कर दो।" अब दाराके कुटुम्बका हाल सुनिये कि उसकी पुत्री तो उसी रात महलमें भेज दी गई जो कुछ दिनके बाद शाहजहां और बेगमसाहब (जहानआरा बेगम) की प्रार्थनासे उनके सुपुर्द की गई, और उसकी बेगमने पहलेही यह सोचकर कि को दुःखोंका पहाड़ उठाना पड़ेगा मार्गहीमें लाहोरमें विष खाकर अपने प्राणोंका अन्त कर दिया। रहा सिफरशिकोह;—वह ग्वालियरके दुर्गमें भेज दिया गया जहां कैद किया गया। (दाराशिकोह का सिर २२ वीं अक्तूबर १६५९ को काटा गया था)

इस लोमहर्षण घटनाके बाद जीवनखां तुरन्त दरबारमें बुलाया गया और कुछ इनाम आदि देकर विदा कर दिया गया। परन्तु यह दुष्ट भी अपनी क्रूरताका फल पाये बिना न रहा; अर्थात् जिस

समय वह देहलीसे लौटकर ऐसे स्थानमें पहुंच गया था जहांसे उसका देश उससे दूसही बारह कोस रह गया था कि कुछ मनुष्योंने जो पहलेसे घात लगाये जङ्गलमें बैठे थे उसे घेरकर मार डाला।

शोक! इस मूर्खने यह नहीं सोचा कि अत्याचारी और कठोर-हृदय लोगोंसे यदि कोई कुछ पापकर्म करनेके लिये कहे तो यद्यपि अपना मतलब साधनेके लिये वे उसके करनेको तैयार हो जाते हैं, परन्तु मनमें ऐसे काम करानेवालोंसे घृणा रखते हैं और जब मतलब निकल आता है तब उनको उनकी दुष्टताका दण्ड देनेमें भी नहीं चूकते।

वध करनेसे पहले जबर्दस्ती दारासे उस ख्वाजासराके नाम जो इसकी ओरसे ठट्ठेमें लड़ रहा था इस आशयका एक पत्र लिखा लिया गया था कि तुम दुर्ग अपने प्रतिद्वन्दियोंको सौंप दो। परन्तु उस वीरने कुछ शीघ्रता न की वरन् इस बातपर वह अड़ा रहा कि दुर्ग खाली करनेसे पहले कुछ बातें तै कर ली जायें। बेईमान मीरबाबा धोखा देनेके लिये बड़ी प्रसन्नतासे उसके कहे सब नियम स्वीकार कर दुर्गके अन्दर जा पहुंचा. परन्तु जब थोड़से मित्रोंके साथ वह बेचारा (दाराका नियुक्त किया हुआ किलेदार) लाहोरमें आया, तब खलीलुल्लहखांने जो उस समय वहांका

जिनको अपने अन्यान्य शुभचिन्तकोंके साथ उसने बहुतसे इनाम दिये थे।

दाराशिकोहके कुटुम्बमें अब केवल सुलेमानशिकोह बच गया था। यदि राजा भय न खा जाता तो उसका श्रीनगरसे निकलना सहज नहीं था परन्तु जयसिंहके पत्रों, औरंगजेबकी प्रतिज्ञाओं और धमकियों, दाराके मारे जाने, तथा आसपासके राजाओंकी लड़ाईकी तैयारियोंने अन्तमें उस निर्बलहृदय पहाड़ी राजाको अपने विचारसे विचलित कर दिया। सो, जब सुलेमानशिकोहने देखा कि अब यहां भी कुछ भरोसा नहीं है तब ऊबड़खाबड़ पर्वतों और दुर्गम मार्गोंकी कुछ भी परवा न करके वह तिबतकी ओर चल दिया परन्तु इसपर राजाके पुत्रने उसका पीछा किया जिससे घायल होकर वह पकड़ा गया और सलीमगढ़में, जहां मुरादबख्श पहलेसे कैद था, कैद किया गया।

औरंगजेबने पहचानके लिये जिस प्रकार दाराशिकोहका सिर मंगवाया था उसी प्रकार सुलेमानशिकोहके लिये भी आज्ञा दी कि दरबारमें सब रईस और उमराकी उपस्थितिके समय वह बुलाया जाय। मैं भी यह अनुचित तमाशा देखनेके लिये दरबारमें गया था और जिस कौतुक और आश्चर्यसे मैंने उसे देखा उसका वर्णन नहीं हो सकता। दरबारमें लानेसे पहले कैदीकी बेड़ियां निकाल ली गई थीं; परन्तु हथकड़ियां जिनपर सोनेका मुलम्मा किया हुआ था ज्योंकी त्यों बंधी थीं। मैंने देखा कि उस सुडौल शरीरके सुन्दर स्वरूपवान् युवकको देख देखकर दरबारके प्रायः लोग आंखों से आंसू बहा रहे हैं; और वे बेगमें भी जिनको दीवारकी जालियों से झांककर देखनेकी अनुमति दी गई थी बहुत ही उदास हैं; बल्कि

स्वयं औरंगजेबने भी भतीजेकी दुरवस्था पर दुःख प्रकट किया और प्रकाशमें कृपा दिखाते हुए कहा कि "खुदापर नजर करो और इतमीनान रखो कि तुमको कुछ जरर न पहुँचाया जायगा, बल्कि तुम्हारे साथ मेहरबानी की जायगी। तुम्हारा बाप तो सिर्फ इस वजहसे कत्ल हुआ है कि वह काफिर और लामजहब हो गया था।" इसपर सुलेमानशिकोह भारतवर्षकी रीतिके अनुसार झुककर दोनों हाथ सिरतक ले आया अर्थात् उसने प्रणाम किया। इसके बाद साहसपूर्वक उसने कहा, "अगर हुजूरका यह मन्शा हो कि मुझे पोस्त पिलाये जाया करें तो बेहतर है कि मैं अभी कत्ल कर दिया जाऊं।" इसपर प्रतिज्ञा करता हुआ औरंगजेब बोला कि "नहीं, तुमको पोस्त हर्गिज नहीं पिलाये जायेंगे। बिलकुल इतमीनान रखो।" इसपर दरबारियोंके कहनेसे सुलेमानशिकोहने पहलेकी तरह पुनः झुककर प्रणाम किया। इसके बाद उस हाथीके विषयमें कुछ बातें पूछी गईं जिसपर अशर्फियां लदी हुई थीं और जो श्रीनगर जानेके समय उससे छीन लिया गया था। जब यह प्रश्न हो चुका तब लोग उसेदीवाने आमसे ले गये और दूसरे दिन वह ग्वालियरके दुर्गमें भेज दिया गया।

"पोस्त" से जिसका उल्लेख अभी ऊपर मैंने किया है यह मतलब है कि खशखासके छिलकेको जलमें भिगो और मलकर निचोड़ लिया जाता है और यही रस प्रति दिन कैदी राजकुमारोंको हाथ मुंह धुलाकर कटोरा भर पिलाया जाता है, जो इस कारण ग्वालियरके दुर्गमें कैद किये जाते हैं कि उनका खुल्लमखुल्ला सिर कटवा डालना बादशाह उचित नहीं समझता। इसको यह नियम है कि जबतक कैदी इसे पी न ले तब तक उसे भोजन नहीं दिया जाता।

यह पोस्तका रस इन बेचारे अभागे दुखियारे कैदियोंको धीरे धीरे बिलकुल निस्तेज और निर्बल कर डालता है और परिणाम यह होता है कि उनको बुद्धिहीन होकर अपने प्राणोंसे हाथ धो बैठना पड़ता है। मुझे विश्वास है कि यह पोस्तका रस ही सिफरशिकोह, मुरादबख्श और सुलेमानशिकोहको पिलाया गया था।

यद्यपि मुराद कैद था तथापि लोगोंको उससे अबतक बहुत प्रीति थी और उसके वीरत्व तथा साहसकी प्रशंसामें मुसलमान कवि प्रायः कविताएं रचते थे। अतएव औरंगजेबने उसे भी खुले-आम मरवा डालना उचित समझाः ताकि उसके पक्षपातियोंके मनमें इस बातकी आशा बाकी न रहे कि वह अभीतक जीवित है। पोस्त पिला पिला कर चुपचाप प्राण लेनेसे उसका यह मतलब नहीं निकल सकता था, इसलिये उसने यह उपाय निकाला कि कोई दोष लगा कर उसके दण्डस्वरूप वह खुलाखुली मरवा डाला जाय और यह बात कुछ कठिन भी नहीं थी। निदान एक सैयदके कई पुत्र (जिनके पिताको मुरादने उस समय उसकी धन सम्पति के लोभसे वध करा डाला था जिस समय वह अहमदाबादमें युद्धकी तैयारियां कर रहा था) दरबारमें मुरादका न्यायके लिये प्रार्थना करते और बदलेमें मुरादका सिर मांगते हुए आये। भला किसी दरबारीको उन वादियोंके हटाने का साहस क्योंकर होता? क्योंकि एक तो वह निर्दोष मनुष्य जो वध किया गया था सैयद अर्थात् मुहम्मदकी सन्तान था जो मुसलमानोंका पूज्य है, दूसरे यह बात सब लोग जानते थे कि न्यायकी ओर से औरंगजेब अपने शत्रु भाईके प्राण नाश किया चाहता है। सो, उस सैयदके पुत्रोंका दावा स्वीकृत हुआ और बिना किसी विशेष अदालती काररवाईके मुरादका सिर

काटनेकी आज्ञा दे दी गई। बादी यह आज्ञा लेकर ग्वालियरको चलते हुए।

अब इस इतिहासका रोने रुलानेवाला भाग समाप्त होने पर आया, क्योंकि राजकुटुम्बमें अब केवल सुलतान शुजाही एक ऐसा व्यक्ति रह गया था जिसकी ओरसे औरंगजेबको भय और चिन्ता लगी हुई थी। इससमय तक वह विलक्षण साहस और पुरुषत्व दिखा रहा था; परन्तु अब उसने भी देख लिया कि औरंगजेबके बल और तेजका सामना करना असाध्य है; क्योंकि मीरजुमलाके पास बराबर सैनिक सहायता भेजी जा रही थी और उसकी सेनाओंने चारों ओरसे शुजाको घेर लिया था; इसलिये जान बचानेकी इच्छासे वह ढाकेकी ओर भाग गया जो समुद्रके किनारे बङ्गालका सबसे अन्तिम नगर है। अब यहां उसके पास समुद्र पार करनेके लिये न तो कोई जहाज था और न वह यही जानता था कि प्राण-रक्षा किधर जानेसे होगी, अतएव उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र सुलतान बांकीको अराकानके राजाके पास (जिसको मग्गह लोगोंका देश भी कहते हैं) इस प्रार्थनाके साथ भेजा कि यदि कुछ दिनके लिये आप आश्रय दे सकें तो हमलोग आपके पास आ जायँ और सीधी हवाके चलनेकी रितु आजाय तब आप मुखा तक पहुंचानेके लिये अपना एक जहाज भी देवें, जिसपर सवार होकर हमलोग पहले मक्का और फिर वहांसे रूम वा ईरानको चले जायें। राजाने यह प्रार्थना स्वीकार की और इनके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया। अन्तमें सुलतान बांकी बहुतसी नावें लेकर (जिनके मल्लाह फिरंगियन अर्थात् गोवा इत्यादिसे भागे हुए थे पोर्तुगीज और दोगले ईसाई थे जिन्होंने उस राजाकी नौकरी कर ली थी और जिनका

काम बंगालके उन भागोंको लूटते रहना था जो ढाके और अराकान-की ओर समुद्रके निकट हैं) लौट गया और शुजा अपनी बेगम और तीनों पुत्रों तथा पुत्रीयोंके साथ उनपर सवार होकर अराकान पहुंचा। वहां पहुंचनेपर यद्यपि राजाने उसका आगत स्वागत बहुत बढ़कर नहीं किया, परन्तु आवश्यक चीजें उसने उपस्थित कर दीं।

अब यहां यद्यपि कई महीने बीत गये और अच्छी हवाकी ऋतु भी आगई, परन्तु मुखा जानेके लिये जहाज देनेका किसीने नाम तक नहीं लिया। शुजा केवल इतनाही चाहता था कि उसे एक जहाज भाड़ेपर मिल जाय, क्योंकि उसके पास धन सम्पत्ति बहुत थी और कदाचित् उसके मारे जानेका कारण भी यह धन सम्पत्ति ही हुई।

बात यह है कि ये जंगली बादशाह और राजे सच्ची उदारता जानतेही नहीं और अपनी प्रतिज्ञाके पूर्ण करनेका इन्हें बहुत कम ध्यान रहता है। जिस काममें इनका लाभ होता है प्रायः वही करते हैं। वे यह नहीं सोचते कि इसका परिणाम जो पीछे उन्हीको भोगना पड़ेगा है क्या होगा, और उनके हाथोंसे यातो दरिद्रता बचा सकती है या प्रबल शक्ति।

अस्तु; यद्यपि शुजाकी ओरसे मुखा जानेके लिये बहुतसी प्रार्थनाऐं हुई परन्तु उस जंगली राजाका मन तनिक भी न पिघला बल्कि उसने यहां तक धृष्टता की कि राजकुमार पर यह दोष लगाया कि अभीतक तुम हमसे मिलने क्यों नहीं आये। मुझे यह बात विदित नहीं कि शुजाने मान सम्मानके ध्यानमें उससे मुलाकात करना उचित नहीं समझा या इस कारणसे वह उससे मिलने नहीं गया कि कदाचित वह दुष्ट उसे कैद करले और उसका सब माल असबाब

काटनेकी आज्ञा दे दी गई । वादी यह आज्ञा लेकर ग्वालियरको चलते हुए ।

अब इस इतिहासका रोने रुलानेवाला भाग समाप्त होने पर आया क्योंकि राजकुटुम्बमें अब केवल सुलतान शुजाही एक ऐसा व्यक्ति रह गया था जिसकी ओरसे औरंगजेबको भय और चिन्ता लगी हुई थी । इससमय तक वह विलक्षण साहस और पुरुषत्व दिखा रहा था; परन्तु अब उसने भी देख लिया कि औरंगजेबके बल और तेजका सामना करना असाध्य है; क्योंकि मीरजुमलाके पास बराबर सैनिक सहायता भेजी जा रही थी और उसकी सेनाओंने चारों ओरसे शुजाको घेर लिया था; इसलिये जान बचानेकी इच्छासे वह ढाकेकी ओर भाग गया जो समुद्रके किनारे बङ्गालका सबसे अन्तिम नगर है । अब यहां उसके पास समुद्र पार करनेके लिये न तो कोई जहाज था और न वह यही जानता था कि प्राण-रक्षा किधर जानेसे होगी; अतएव उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र सुलतान बाकीको अराकानके राजाके पास (जिसको मग्गट लोगोंका देश भी कहते हैं) इस प्रार्थनाके साथ भेजा कि यदि कुछ दिनके लिये आप आश्रय दे सकें तो हमलोग आपके पास आ जायें और सीधी हवाके चलनेकी ऋतु आजाय तब आप मुखा तक पहुंचानेके लिये अपना एक जहाज भी देदें, जिसपर सवार होकर हमलोग पहले मक्का और फिर वहांसे रूम वा ईरानको चले जायें । राजाने यह प्रार्थना स्वीकार की और उसके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया । अन्तमें सुलतान शाहने बहुतसी नावें लेकर (जिनके मल्लाह पोर्तगी-यन अर्थात् गोवा स्थानसे भागे हुए थे पोर्तुगीज और दूसरे ईसाई थे जिन्होंने उस राजाकी नौकरी कर ली थी और जिनको

काममें बगालके उन भागोंको लूटते रहता था जो ढाके और अराकान-की ओर समुद्रके निकट हैं) लौट गया और राजा अपनी बेगम और तीनों पुत्रों तथा पुत्रियोंके साथ उनपर सवार होकर अराकान पहुंचा। वहां पहुंचनेपर यद्यपि राजाने उसका आगत स्वागत बहुत बढ़कर नहीं किया, परन्तु आवश्यक चीजें उसने उपस्थित कर दीं।

अब यहां यद्यपि कई महीने बीत गये और अच्छी हवाकी ऋतु भी आगई, परन्तु मुखा जानेके लिये जहाज देनेका किसीने नाम तक नहीं लिया। राजा केवल इतनाही चाहता था कि उसे एक जहाज भाड़ेपर मिल जाय क्योंकि उसके पास धन सम्पत्ति बहुत थी और कदाचित् उसके मारे जानेका कारण भी यह धन सम्पत्ति ही हुई।

बात यह है कि ये जंगली बादशाह और राजे सच्ची उदारता जानतेही नहीं और अपनी प्रतिज्ञाके पूर्ण करनेका इन्हें बहुत कम ध्यान रहता है। जिस काममें इनका लाभ होता है प्राय वही करते हैं। वे यह नहीं सोचते कि इसका परिणाम जो पीछे उन्हींको भोगना पड़ेगा है क्या होगा, और उनके हाथोंमें यातो दरिद्रता बचा सकती है या प्रबल शक्ति।

अस्तु; यद्यपि राजाकी ओरसे मुखा जानेके लिये बहुतसी प्रार्थनायें हुईं परन्तु उस जंगली राजाका मन तनिक भी न पिघला बल्कि उसने यहां तक धृष्टता की कि राजकुमार पर यह दोष लगाया कि अभीतक तुम हमसे मिलने क्यों नहीं आये। मुझे यह बात विदित नहीं कि राजाने मान सम्मानके ध्यानसे उससे मुलाकात करना उचित नहीं समझा या इस कारणसे वह उससे मिलने नहीं गया कि कदाचित वह दुष्ट उसे कैद करले और उसका सब माल असबाब

लूट ले। इसी समय मीरजुमलाने भी राजाको लिखा था और लोभ दिलाया था कि यदि तुम शुजाको पकड़ कर मेरे हवाले कर दो तो तुमको बहुतसे इनाम मिलेंगे। अस्तु, राजाके असन्तोषका चाहे कुछ भी कारण हो, स्वयं शुजा अब भी उससे मिलनेके लिये उसके दरबारमें नहीं गया, किन्तु सुलतान बांकीको उसने भेज दिया।

कहा जाता है कि जब यह राजकुमार राजाके महलके निकट पहुँचा तब इसने मार्गमें दीन दु:खियोंके आगे बहुतसे रुपये और अशर्फियां फेंकी और जब यह राजाके पास पहुँचा तब उसको इसने बहुतसे वस्त्र आभूषणादि बहुमूल्य सामग्री भेंटमें दी। इसके पश्चात अपने पिताके न उपस्थित होनेका कारण बतलाते हुए कहा कि वे बीमार हैं, और बहुत विनयपूर्वक कहा कि अब वह जहाज मिल जाना चाहिये जिसके लिये बहुत दिनोंसे प्रतिज्ञा हो रही है। परन्तु इस मुलाकातसे भी कुछ लाभ नहीं हुआ और पहली प्रार्थनाकी भांति यह प्रार्थना भी बिलकुल व्यर्थ गई। इसके ५—६ दिन बाद एक नया गुल खिला। अर्थात् राजाने शुजासे एक दिन स्पष्ट शब्दोंमें कहलाया कि तुम अपनी कन्याका विवाह मुझसे करदो और जब शुजाने इसमें नाहीं की तब वह ऐसा कुछ हुआ कि शुजा आदिको वहां रहनेमें अपने प्राणोंके नाश होनेका भय मालूम हुआ। अब हाथपर हाथ रख बैठे रहना मानो कालकी प्रतीक्षा करना था और यात्राकी ऋतु बीती जाती थी, अतएव इसने एक उपाय सोचा जो ठीक नहीं था। इसने देखा कि इस राजाके यहां बहुतसे हमारे सजातीय लोग तथा समुद्रके किनारेपर लूट मार करनेवाले वे पुर्तगीज हैं जो पकड़कर यहां लाये और गुलाम बनाये गये हैं। अतएव इसने निश्चय किया कि इनको किसी प्रकार अपने वशमें कर तथा अपने साथ जो दो तीन

शरणार्थी बंगालसे आये हैं उनको भी लेकर राजाके महलपर सहसा आक्रमण कर देना और उसके कुटुम्बको नष्टभ्रष्ट कर डालना चाहिये। मैंने वहांके कुछ पुर्तगीजों और डचोंसे सुना कि इस उपायमें सफलता मिलना कुछ असाध्य या असम्भव नहीं था परन्तु इस घटनाके एक दिन पहलेही सारा भेद खुलगया जिससे न केवल यही सही बात बिगड़ गई बल्कि उलटे शुजाके कुटुम्बका नाश हो गया। अस्तु, इस भेदके खुल जानेपर उसने पेगूको भाग जाना चाहा. परन्तु ऐसा करना एक प्रकार असाध्य था क्योंकि रास्तेमें ऐसे विकट पर्वत और दुर्गम वन थे कि उनमेंसे होकर कोई भी ऐसा मार्ग नहीं गया था जिधरसे लोग आते जाते हों। निदान वह पीछा किया और भागनेके आठ पहर बाद पकड़ा गया। उस समय यद्यपि वह वीरतापूर्वक लड़ा, तथापि शत्रुओंने उसे घेरकर उसके हाथ पांव बांधही लिये।

सुलतानबाकी भी जो अपने पितासे कुछ पीछे रह गया था वैसीही वीरतासे लड़ा जैसी वीरतासे वीर पुरुष लड़ते है, परन्तु आखिर शत्रुओंने उसे चारों ओरसे घेरकर उसपर इतने पत्थर मारे कि उसका सारा शरीर लहूलुहान हो गया, और लड़ाई समाप्त होनेपर वे जंगली उसकी मां तथा उसके दोनों छोटे भाइयों और बहिनोंको पकड़ ले गये।

अब इसके आगे इस विषयमें कुछ ठीक विश्वासके योग्य बात नहीं मालूम होती कि शुजा कहां गया। कुछ लोग कहते है कि वह कुशल क्षेमसे निकलकर एक पर्वतके शिखरपर जा चढ़ा था और उसके साथ एक ख्वाजासरा, एक स्त्री तथा दो पुरुष और थे, परन्तु उसके सिरमें पत्थरका एक इतना गहरा घाव लगा था कि वह पहाड़पर

पहुँचतेही चक्कर खाकर गिर पड़ा था और उस समय उसी ख्वाजा सराने अपनी पगड़ी फाड़कर उसका घाव बांध दिया था जिससे वह पुनः सचेत होकर जंगलमें जा घुसा था। इसके अतिरिक्त और भी चार तरहकी बातें उन्हीं लोगोंके मुखसे सुन पड़ी थीं जो लड़ाईके समय विद्यमान थे, परन्तु वे एक दूसरेसे मिलती नहीं। बहुतसे लोगोंने मुझे इस बातका विश्वास दिलाया कि उसका शव वहीं मैदानमें मृत पुरुषोंमें पड़ा था, परन्तु चेहरा इतना बिगड़ गया था कि पहचान नहीं पड़ता था, और डचोंके कार्यालयके एक प्रतिष्ठित अफसरकी चिट्ठी मैंने स्वयं देखी जिससे भी यही बात प्रमाणित होती थी। परन्तु फिर भी जैसा कि चाहिये एकदम विश्वास उत्पन्न करनेवाली कोई बात नहीं थी। इसी कारण देहलीमें कई बार ऐसी किम्वदन्तियां उड़ीं जिनसे व्यर्थ लोगोंके कान बारबार खड़े हो जाते थे। एकबार तो आन्दोलन मचा कि शुजा मछलीपटन पहुँच गया है और गोलकुण्डा तथा बीजापुरके नरेशोंने उससे प्रतिज्ञा की है कि हम अपनी सेनाओंसे तुम्हारी सहायता करेंगे। फिर बड़ी पक्की रीतिसे यह खबर उड़ी कि वह दो जहाजोंपर, जिनपर लाल पताकाएँ उड़ रही थीं, सूरतके सामनेसे होकर गया है और ये जहाज उसको पेगू किंवा श्यामके बादशाहने दिये हैं। कुछ दिनके बाद यह शोर सुनाई दिया कि शुजा कन्दहार पहुँच गया और वहां पहुँचकर काबुल पर आक्रमण करनेकी तैयारियां कर रहा है। एकबार औरंगजेबने कहा कि "शुजा तो हाजी होगया" अर्थात् वह मक्के पहुँच गया परन्तु उसका ऐसा कहना कदाचित् आक्षेपसे पूर्ण था। एक यह बात भी फैली थी कि शुजा बहुतसा माल लिये हुए ईरानमें पहुँचा है। परन्तु मैं इन किम्वदन्तियोंपर विश्वास नहीं करता। मैं

रायमें वह चिट्ठी विश्वासके योग्य है जो मैंने इन्होंके कार्यालयके एक बड़े अफसरके पास देखी थी और जिसमें लिखा था कि शुजा अरा-कानसे भागनेके समय पकड़ा जाकर मारा गया। उसके एक ख्वाजासरा ने जिसके साथ मैं बंगालसे मछलीपटन गया था तथा एक दूसरे व्यक्तिने भी जो उसके तोपखानेका सरदार और पीछे गोलकुण्डा-नरेश के यहां काम करता था मुझसे यही कहा था कि शुजा वास्तवमें मर चुका है परन्तु इन दोनोंमेंसे किसीने उसके मरनेका पूरा पूरा हाल मुझे बतलाना नहीं चाहा। कुछ फरांसीसी व्यापारियोंने जो सीधे इस्फहानसे (इस्फहान उस समय ईरानकी राजधानी था) आये थे और जिनसे देहलीमें मुझसे बातें हुई थी कहा कि ईरानमें हमने कभी उसका नाम भी नहीं सुना। इसके अतिरिक्त उसके मारे जानेका एक यह भी प्रमाण है कि उसके पराजयके साथही उसकी तलवार तथा उसका खञ्जर दोनों पड़े हुए मिले। ऐसी अवस्थामें यदि वह वास्तवमें जंगलमें भाग गया होता जैसा कि कुछ लोग कहते थे तोभी जीवित न बचता, क्योंकि वहां यातो चोरों और लुटेरोंने उसे मार डाला होता या शेर हाथी आदि भयानक जन्तुओंने, जो कि वहांके जंगलोंमें अधिकतासे थे।

अस्तु, सुलतान शुजाके मरने वा जीवित रहनेके विषयमें चाहे कुछ भी सन्देह हो, परन्तु उसके कुटुम्बके लोगोंपर जो आपदा पड़ी उसके सम्बधमें जो किम्वन्तियां प्रसिद्ध है उनपर अविश्वासका कोई कारण दिखाई नहीं देता। उन बेचारों (शुजाके कुटुम्बके लोगों) की आपदाओंका वृत्तान्त इस प्रकार है कि जब वे पकड़कर लाये गये तब क्या पुरुष क्या स्त्री क्या बच्चे सबके सब कैद कर दिये गये और उनके साथ बड़ीही निर्दयता की गई। परन्तु कुछ दिन

के बाद वे छोड़ दिये गये और उनपर कुछ कृपा भी हुई। शुजाकी बड़ी लड़कीसे राजाने विवाह कर लिया और ऐसा कहा जाता है कि स्वयं राजाकी माँ सुलतान बाकीसे अपना सम्बन्ध करना चाहती थी! इतनेमें सुलतान बाकीके कुछ नौकर उन्हीं मुसलमानोंसे मिलकर जिनके विषयमें ऊपर लिखा जा चुका है फिर वैसाही आक्रमण करनेका प्रबन्ध करने लगे; परन्तु उनमेंसे एक असावधान पुरुष जो कदाचित् शराब पीकर और भी बुद्धिहीन होगया था नशेके आवेशमें इस रहस्यको छिपा न सका। ठीक आक्रमणके दिन सब भेद खुल गया। यद्यपि इस विषयमें भी बहुतसी बातें प्रसिद्ध हैं परन्तु जो बात विश्वासके योग्य कही जा सकती है वह केवल इतनीही है कि इससे राजा इतना असन्तुष्ट हुआ कि उसने शुजाके कुटुम्ब भरके बध किये जानेकी आज्ञा दी, यहाँतक कि शुजाकी वह लड़की भी जिसके साथ उसने विवाह कर लिया था और जो गर्भवती थी निर्दयतापूर्वक मारी गई और सुलतान बाकी तथा उसके भाइयोंके सिर कुल्हाड़ियोंसे काटे गये! उसके कुटुम्बकी दूसरी स्त्रियां ऐसी कड़ाईसे कैद की गईं कि भूखके मारे वहीं उनके प्राण निकल गये।

निदान, युद्धकी वह आग जो एक दूसरेपर विजय प्राप्त करनेके लिये भाइयोंमें भड़क उठी थी पांच या छः वर्षके अन्दर अर्थात् प्रायः सन् १६५५ ई० से १६६० वा ६१ ई० तक समाप्तिको पहुंची और औरंगजेब इस विशाल राज्यका अकेला बादशाह बन बैठा।

भाइयोंकी लड़ाई समाप्त होने तथा औरंगजेबके निष्कण्टक होकर गद्दीपर बैठनेके बादकी मुख्य मुख्य घटनाओंका वृत्तान्त।

लड़ाई समाप्त होतेही उजबक जातिके तातारियोंने बड़ी शीघ्रतासे धन्यवाद देनेके लिये अपने अपने एलची औरंगजेबके पास भेजे। एकबार समरकन्द और बलखके खांमें परस्पर लड़ाई हुई थी उस समय समरकन्दकी सहायताके लिये शाहजहांने औरंगजेबको अपना सेनापति बनाकर भेजा था। औरंगजेबने उस अवसर पर बड़ी वीरता दिखाई थी, परन्तु जब कि यह बलखकी राजगद्दी स्वयं लेलेनेको था तब उन्होंने शत्रुता छोड़कर परस्पर मैत्री करली थी और इस कारण इसके सिपाहियोंको वहांसे निकाल देनेकी चेष्टा की थी कि आपसकी फूटके कारण कहीं यह दोनोंही राज्योंको हड़प न करले।

अस्तु भाइयोंकी लड़ाई समाप्त होने तथा औरंगजेबके निष्कण्टक होकर देहलीके सिंहासन पर बैठनेके बाद उन्होंने यातो यह सोचकर बहुत शीघ्र बधाई देनेके लिये अपने एलची उसके पास भेजे कि यद्यपि शाहजहां अभी जीवित है परन्तु सब लोगोंने उसके पुत्रको ही बादशाह मान लिया है इसलिये कदाचित् वह पिछली बातोंका बदला ले; या यह सोचकर कि भारतवर्षकी बहुत बढ़िया बढ़िया चीजें भेटमें प्राप्त होंगी। जो हो, औरंगजेब इन बातोंको भलीभांति समझता था; तौभी उसने उचित रीतिपर उनका स्वागत किया और उनके साथ उत्तम व्यवहार किया।

उस दिन मैं स्वयं दरबारमें उपस्थित था इसलिये हरेक बातका ठीक ठीक वर्णन कर सकता हूं। मैंने देखा कि उन एलचियोंने हिन्दुस्तानी दरबारकी रीतिके अनुसार कुछ दूरसे बादशाहको सलाम

किया,—अर्थात् झुककर तीन बार अपने दोनों हाथ जमीनकी ओर लेजाकर फिर तीनोंही बार हाथ सिर तक लाकर अधीनता प्रगट की। इसके बाद यद्यपि वे इतने निकट पहुँच गये थे कि औरंगजेब स्वयं उनके हाथसे पत्र ले सकता था परन्तु यह काम एक अमीरके द्वारा हुआ, अर्थात् उसने उसे लेकर खोला और फिर बादशाहको दिया। औरंगजेबने उस खरीते वा पत्रको पढ़कर आज्ञा दी कि प्रत्येक एलचीको सिरसे पैरतकके सब वस्त्र दिये जायें। आज्ञानुसार हरेक को एक एक सुनहली बहुमूल्य कबा, एक एक पगड़ी और एक एक रेशमी पटुका दिया गया। इसके उपरान्त जो भेटकी वस्तुएँ वे अपने "खान" की ओरसे लाये थे वे उपस्थित की गईं। बहुतही उत्तम लाजवर्दके बने हुए कई सन्दूक, लम्बे लम्बे बालोंवाले कई ऊंट, कुछ सुन्दर तुर्की घोड़े; कई ऊंटके बोझके ताजे मेवे जैसे सेब नाशपाती अंगूर सर्दे इत्यादि जो देहलीमें प्रायः उसी देशसे आते और जाड़े भर बिका करते हैं, और उतनेही सूखे मेवे जैसे आलूबोखारा, खूबानी, किशमिश, तरह तरह के काले और सफेद बहुत बड़े बड़े अत्यन्त स्वादिष्ट अंगूर सामने आये जिनको देखकर औरंगजेबने एलचियोंसे कहा कि "खान साहबोंके इन तुहफोंसे हम बहुत खुश हुए।" इसके पश्चात् मेवों घोड़ों तथा ऊंटोंकी प्रशंसा कर और उनके देशकी उर्वरताकी बात कहकर समरकन्दके बड़े विद्यालयके विषयमें कुछ प्रश्न किये। अन्तमें कहा कि "अच्छा अब आप आराम कीजिये और बराबर दरबारमें आते रहिये, हम आपकी मुलाकातसे खुश होंगे।"

जिस ढंगसे एलचियोंका आदर सत्कार किया गया उससे वे बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट होकर लौटे और भारतवर्षकी सलाम करने की रीतिसे जो पारस्परिक अधीनता है कुछ दुःखित नहीं दिखाई दिये

वे इसीसे कुछ रुष्ट हुए कि स्वयं बादशाह ने उनके हाथमें खरीते क्यों न लिये । मुझे तो इतना विश्वास है कि इनको साष्टाङ्ग दण्डवत करनेको कहा जाता वा इससे भी बढ़कर किसी रीतिसे सलाम करानेकी इच्छा प्रकट की जाती तो ये उसके करनेमें भी कुछ आगा पीछा न करते । परन्तु इसके साथही यह भी समझ लेना चाहिये कि यदि ये अपने देशकी प्रथाके अनुसार सलाम करने अथवा बादशाहको अपने हाथसे पत्र देनेकी प्रार्थना करते तो वह प्रार्थना स्वीकृत न होती क्योंकि इतनी अनुमति केवल ईरानके ही एलचियोंको दी गई है, बल्कि उनके लिये भी बड़ी कठिनाइयोंसे यह नियम प्रचलित हुआ है ।

ये लोग चार महीनेसे कुछ अधिक देहलीमें रहे । यद्यपि कई बार इन्होंने चाहा कि चले जानेकी अनुमति मिल जाय परन्तु ऐसा नहीं हुआ, और इतने दिनों तक यहां रहना इनके स्वास्थ्यके लिये ऐसा हानिकारक हुआ कि इनके प्रायः साथी बीमार हो गये, वरन् उनमेंसे कई मर भी गये । परन्तु मुझे सन्देह है कि इनको भारतवर्षकी गर्मीके कारण यह कष्ट हुआ जिनके ये अभ्यस्त नहीं थे या वस्त्र और भोजनकी कमीके सबबसे, क्योंकि उजबक कदाचित् संसार भरके लोगोंसे बढ़कर कञ्जूस, किफायती और सूम होते हैं । औरंगजेबकी ओरसे उनको खर्चके लिये जो कुछ मिलता था उसको वे बराबर जमा किये जाते थे और ऐसे सूमपनसे रहते थे जो किसी प्रकार उनके योग्य न था । जिस दिन इनकी बिदाई हुई उस दिन बड़ी धूमधाम थी और कई प्रकारकी रीति भांति हुई, अर्थात् एक ऐसे दरबारमें जिसमें सब उमरा उपस्थित थे दोनों एलचियोंको बहुमूल्य वस्त्र दिये गये और आज्ञा हुई कि दोनोंको आठ आठ

हजार रुपये नकद भी दिये जाये। इन दोनोंके मालिकोंके लिये भी बहुतही अधिक मूल्यकी वस्तुएँ भेटमें मिली. जैसे बढ़िया बढ़िया कारचोबीके थान, कितनेही तनजेब और मलमलके और कई इलायचिये (जो एक ऐसा कपड़ा होता है जो सुनहरी रुपहली जरी और रेशम मिलाकर बुना जाता है), अनेक कालीन और जड़ाऊ मूठके दो खञ्जर।

जितने दिन ये देहलीमें रहे इस बीचमे तीन बार मेरी इनसे मुलाकात हुई। मेरे एक मित्रने जिसका पिता उजबक देशसे मुगल साम्राज्यमें आकर बहुत धनावन् हो गया था मेरे विषयमें यह कहकर मेरा उनका परिचय कराया कि ये एक डाक्टर हैं। उनसे मिलने जुलनेमे मेरा यह अभिप्राय था कि जहांतक हो सके उनके देशका वृत्तान्त मैं जान लूं, परन्तु वे ऐसे अपढ़ उजड निकले जिनका मुझे कभी सन्देह भी नही हुआ था, यहांतक कि अपने देशकी सीमासे भी वे परिचित नहीं थे, और जिन तातारियोंने कुछही वर्ष पूर्व चीन देश पर विजय प्राप्त किया था उनका कुछ वृत्तान्त नहीं जानते थे। संक्षेप यह कि इनसे एक भी नई बात मालूम न हो सकी।

एकबार मैंने चाहा कि मैं उनके साथ भोजन करूं। जिस बात को मुसल्मान लोग 'तकल्लुफ' कहते हैं वह बात इनमें बिल्कुल नहीं थी. इससे इनके साथ भोजनमें सम्मिलित हो जानेमें कुछ कठिनता नहीं हुई। परन्तु उनका भोजन बहुतही विचित्र था अर्थात् कोईभी मांसके अतिरिक्त विशेष कुछ भी नहीं ! तो हां, मैंने अपने साथ का कुछ रस निकाल लिया क्योंकि एक स्थानमें कुछ ऐसी वस्तु भी [illegible] कि मैंने अपने साथ [illegible] और [illegible] विचारमें [illegible]

स्वादिष्ट और उत्तम भोजन था। जबतक भोजन करता रहा तबतक एक शब्द भी किसीके मुखसे नहीं निकला और मेरे ये सरलहृदय मित्र जितना समा सकता था उतना घोड़ोंका मांस मुँहमें ठूँसते चले जाते थे! जब पेट खूब भर गया तब इनके मुखसे शब्द निकला और ये मुझसे कहने लगे कि उजबक सब लोगोंसे अधिक बलवान् होते हैं और तीर चलानेकी विद्यामें तो संसारकी कोई जाति इनकी बराबरी नहीं कर सकती। यह कहकर उन्होंने अपने तीर और धनुष मंगाये जो वास्तवमें यहांके तीर धनुषोंकी अपेक्षा बहुत लम्बे थे। इसके पश्चात् वे बोले कि "हम बाजी लगाते हैं कि अपना तीर घोड़े या बैलके शरीरके पार कर सकते हैं।" फिर वे अपनी देहाती स्त्रियोंके बल और वीरताकी ऐसी प्रशंसा करने लगे की मानों अमेजनों† को भी उनकी स्त्रियोंके सामने डरपोक और निर्बल समझना चाहिये। उजबक स्त्रियोंके साहस और वीरत्वकी उन्होंने कई कहानियां मुझे

† अमेज़न Amazon—यूनानी शब्द मीजाससे इस शब्दकी उत्पत्ति हुई है जिसका अर्थ कुच है। आरम्भमें 'अ' लग जानेसे कुच-रहित (बिना छातीवाली स्त्री) हुआ। कहा जाता है कि प्राचीन कालमें योरपकी पूर्व दिशामें स्त्रियोंका एक ऐसा समूह उत्पन्न होगया था जो अपनी दाहिनी छाती इस कारण कटा डालती थीं कि तीर छोडने और भाला चलानेमें कुछ उलझाव न रहे। ये स्त्रिया पुरुषोंसे सयोग नहीं करती थीं और ऐसी बलवती तथा लड़ाकी थीं कि काले समुद्रके प्रसिद्ध किनारे यूकजिन Euxine पर एशियाई कोचकमें थर्मोडन नदीके किनारे उन्होंने एक राज्य स्थापित कर लिया था और अपनी वीरतासे आसपासके निवासियोंको अपने वशमें कर रखा था। कोई कोई इतिहासलेखक इन बातोंको केवल कहानी समझते हैं।

(गं० प्र० गुप्त)

सुनाईं। इन कहानियोंने मुझे आश्चर्य और विस्मयमें डाल दिया। मुझे दुःख है कि मैं वैसेही उत्साहसे जैसे इन्होंने कहा था इन कहानियोंका वर्णन नहीं कर सकता, तथापि एक वृत्तान्त कहता हूं.—

"जिस समय औरंगजेबकी उजबकोंके साथ लड़ाई हुई थी उस समय अचानक २५, ३० सवारोंका एक छोटा सा दल एक गांव में जा घुसा था और घरोंको लूटने तथा लोगोंको गुलाम बनानेके अभिप्रायसे पकड़ने बांधने लगा था। एक बुढ़ियाने उनसे कहा कि "बेटा, मेरी सलाह मानो और ऐसे काम न करो। अगर अपनी भलाई चाहते हो तो जल्द यहांसे चले जाओ, नहीं तो मेरी लड़की जो बाहर गई है आया ही चाहती है। वह अगर तुमपर आ पड़ेगी तो तुम्हारा किया और न किया सब बराबर हो जायगा।" परन्तु उन सभोंने उस बेचारी सीधी सादी बुढ़ियाकी बात योंही हँसीमें उड़ा दी और पहलेकी भांति वे घरोंको लूटते और लोगोंको पकड़ते बांधते रहे। परन्तु जब लूटके मालसे वे अपने घोड़े और टट्टू लाद चुके और बहुतसे मनुष्योंको बांधकर ले चले जिनमें यह बुढ़िया भी थी तो कोस डेढ़ कोस भी न गये होंगे कि यह बुढ़िया जो बारबार मुड़ मुड़कर पीछेकी ओर देख लेती थी सहसा हर्षके मारे चिल्ला उठी—"मेरी बेटी! मेरी बेटी!" यद्यपि वह अभी दृष्टिसे बाहर थी परन्तु अधिक धूल उड़ते देख और घोड़ेकी टापों के शब्द सुनकर यह बुढ़िया जो चिन्तामें डूबी हुई थी निश्चिन्त हो गई और उसे इस विषयमें तनिक भी सन्देह न रहा कि उसकी बहादुर लड़की उनको तथा उसके साथियोंको छुड़ा लेगी। अभी यह बात मुखसे बाहर निकली बात निकलही चुकी थी कि इतने में एक बढ़िया घोड़ेपर सवार गलेमें धनुष डाले कमरमें तरकस बांधे

उसकी युवती कन्या दिखाई दी। वह आतेही दूरहीसे पुकारकर बोली कि "यदि सब माल रख दो और कैदियोंको छोड़कर चुपचाप यहांसे चले जाओ तो मैं तुमसे कुछ नहीं कहूंगी और तुम्हारे प्राण छोड़ दूंगी।" परन्तु जिस प्रकार उन्होंने बेचारी बुढ़ियाके निवेदन पर ध्यान नहीं दिया था उसी प्रकार इसकी बातोंपर भी कुछ विचार नहीं किया। यह देखकर उस लड़कीने तीन चार तीर मारकर बात की बातमें इतनेही सिपाहियोंको भूमिपर गिरा दिया। तब तो वे बड़े आश्चर्यमें आये। तुरन्त ही उन्होंने भी अपने धनुष सम्हाले; परन्तु लड़की उनसे बहुत दूर थी और हँसती थी कि: वाह, ये कापुरुष अब अपने साथियोंका बदला लेना चाहते हैं! वह इस प्रकार तीर मारती थी और उसका निशाना ऐसा ठीक बैठता था कि वे हिन्दुस्तानी सिपाही हक्के बक्के रह जाते थे। आधे सिपाहियोंको तो उसने तीरसे मार लिया और बाकी सभोंको तलवारसे टुकड़े टुकड़े करके फेंक दिया।"

अभी ये तातारी एलची देहलीमेंही थे कि औरंगजेबको एक कठिन रोगने आ घेरा। उसको बारम्बार ज्वर आता था और उसकी दशा ऐसी हो गई थी कि मुखसे शब्द निकलना भी कठिन हो गया था। वैद्य हकीम निराश हो गये थे और साधारणत: यह किम्बदन्ती फैल गई थी कि "बादशाह मर गया है, परन्तु रौशनआरा बेगम किसी उद्देश्यसे इस बातको छिपाये हुए है।" यह बात भी प्रसिद्ध होगई थी कि गुजरातके अधिकारी राजा यशवन्तसिंह शाहजहांको कैदसे छुड़ानेके लिये जा रहे हैं और इसी विचारसे काबुलका सूबेदार महाबतखां भी (जिसने पीछे औरंगज़ेबकी अधीनता स्वीकार करली थी) तीन चार सहस्र सवारोंके साथ आगेरेकी ओर बढ़ा चला

आता है—वरन् वह लाहौरसे भी आगे निकल आया है। एक यह बात भी प्रसिद्ध थी कि एतवारखां ख्वाजासरा (जिसकी कैदमें शाहजहां था) की बड़ी ही इच्छा है कि वृद्ध बादशाह शाहजहांके कैदसे छुड़ानेकी वाहवाही उसीको मिले।

इधर सुलतान मुअज्जमकी यह दशा थी कि अमीरोंको प्रतिज्ञा, आशाएँ और घूस दे देकर वह अपने पक्षमें लानेका उद्योग कर रहा था यहांतक कि एक दिन रातके समय भेस बदलकर वह राजा जयसिंह के घर गया और वहां जाकर इसने स्पष्ट शब्दोंमें उनसे बहुत विनयपूर्वक कहा कि आप मेरा पक्ष ग्रहण कीजिये। इधर रोशनआरा बेगमने कई अमीरोंके मेलसे, जिनमें तोपखानेका प्रधान अधिकारी फिदाअलीखां मीरआतिश भी था, यह बन्दोबस्त कर रक्खा था कि औरंगज़ेबके तीसरे पुत्र सुलतान अकबरको जिसकी अवस्था मात्र आठ वर्षकी थी, गद्दीका अधिकारी बनाया जाय। इसके अतिरिक्त दोनों पक्षवालोंने यह प्रसिद्ध कर रक्खा था कि वास्तवमें हमारा विचार शाहजहांको कैदसे छुड़ा देनेका है, परन्तु सच तो यह है कि यह केवल सर्वसाधारणको सन्तोष करनेके लिये एक बहाना था और यह भी उद्देश्य था कि यदि कदाचित् एतबारखां या और किसी अमीरके गुप्त उद्योगसे बादशाह छूट जाय तो लोगोंकी दृष्टिमें हमारी बात बनी रहेगी तथापि जितने प्रतिष्ठित माननीय और बड़े बड़े लोग थे उनमेंसे कोई भी नहीं चाहता था कि शाहजहां पुनः गद्दीका अधिकारी हो क्योंकि यशवन्तसिंह महाबतखां तथा और कुछ लोगोंको छोड़ जिन्होंने कि प्रकट रूपमें औरङ्गज़ेबका विरोध नहीं किया था ऐसा कोई नहीं था जो इस बेचारे [illegible] बादशाहको [illegible] दरबारमें [illegible] औरंगज़ेबका [illegible] न बन गया हो। इसलिये

ये लोग भलीभांति जानते थे कि उसका कैदसे निकलना मानों एक क्रोधमें भरे हुए शेरका बाहर निकलना है, और उसके छूट जानेकी चिन्तासे दरबारके सब लोग घबरा रहे थे। सबसे अधिक एतबारखां डरता था जो उस बेचारे अभागे कैदी बादशाहसे अकारण निर्दयता और दुष्टताका बरताव करता था। परन्तु इतनी बीमारी पर भी औरंगजेब अपने पिता और राज्यके प्रबन्धकी ओरसे निश्चिन्त नहीं था। सुलतान मुअज्जमको तो उसने खूब चिता कर यह आज्ञा और उपदेश दे रखा था कि यदि मैं मरजाऊं तो शाहजहां को कैदसे छुड़ा लो, परन्तु एतबारखांको वह बराबर जो पत्र पर पत्र लिखता था उनमें यही सूचना और ताकीद थी कि खबरदार अपने काममें सुस्ती और असावधानी न करना। बीमार होनेके पांचवें दिन जब कि उसका स्वास्थ्य बहुतही बिगड़ा हुआ था उसने कहा कि हमको दरबारमें लेचलो। इससे यह अभिप्राय था कि कुछ लोगोंको जो उसके मर जानेका सन्देह हो गया था वह सन्देह मिट जाय और सर्वसाधारण कुछ गड़बड़ न मचावें जिससे शाहजहांको छूट जाने का अवसर मिले। अस्तु, योंहीं बीमारीके सातवें नवें और दसवें दिन भी वह दरबारमें गया और बड़े आश्चर्यकी बात है कि उसके मर जानेके समाचार चारों ओर फैल गये थे परन्तु तौभी ज्योंही वह कुछ अच्छा हुआ त्योंही बाहर आया और राजा यशवन्तसिंह तथा दो तीन बड़े बड़े अमीरोंको बुला भेजा, जिसमें कि लोगोंपर प्रकट हो जाय कि अभी औरंगजेब जीता जागता है। नौकरोंसे उसने कहा कि हमको जरा पलंग पर बिठा दो। फिर एतबारखांके नाम पत्र लिखनेके लिये कलम कागज मंगवाया और राज्यकी बड़ी मुहर जो रौशनआरा बेगमके पास एक छोटीसी थैलीमें थी और जिसपर बादशाही

कर।"—यद्यपि यह सच है कि जो पत्र मिस्टर एड्रिकन लाये थे उसे औरंगज़ेबने (सीधे उनके हाथसे न लेकर) एक अमीरके हाथसे लिया था, परन्तु इसे कुछ अप्रतिष्ठा न समझना चाहिये, क्योंकि उज़बकोंके एलचियोंके साथ भी ऐसाही व्यवहार किया गया था। अस्तु, इन रीतियोंके हो जानेके पश्चात् मिस्टर एड्रिकनको अपनी भेंटकी वस्तुएँ उपस्थित करनेकी आज्ञा हुई और उनको तथा उनके कुछ अंगरेज साथियोंको वस्त्रादि दिये गये। मिस्टर एड्रिकनकी भेंटकी वस्तुओंमें कुछ तो लाल और हरे रंगके बढ़िया बानातके थान थे, कुछ बड़े बड़े आईने थे और कुछ चीन तथा जापानकी बनी हुई चीजें थीं जिनमें एक पालकी तथा एक सिंहासन (जो कन्धोंपर उठा-कर ले जानेके योग्य था) बहुत ही उत्तम थे और बहुत पसन्द किये गये।

मुगल बादशाहोंकी यह नीति है कि दूसरे देशोंके एलचियों और दूतोंको जहाँतक सम्भव होता है इस कारण अपने यहाँ ठहराये रहते हैं कि उनका दरबारमें उपस्थित रहना और नित्य आकर सबके सामने प्रणामादि करना उनके राज्यका गौरव और बड़प्पन प्रगट करता है। इसीसे एड्रिकन भी जितनी जल्दी लौटना चाहता था न लौट सका, हाँ तातारी दूतोंकी अपेक्षा उसको बहुत शीघ्र छुट्टी मिल गई अर्थात् जब उसका सेक्रेटरी देहलीमें मृत्युको प्राप्त हुआ और कई लोग बीमार हो गये तब औरंगज़ेबने उसे विदा कर दिया। विदा करनेसे पहले सिरसे पाँवतकके पहनावेका एक जोड़ उसको और एक जोड़ उसके बहुतसे सरदारोंका तथा एक जड़ाऊ खंजर और दो उसके साथियोंके लिये दिये।

[illegible]

कि वह दरबार तक पहुँच कर बादशाहको प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करे और उससे अपनी जाति तथा अपने देशका वृत्तान्त कहे, ताकि उन स्थानों और बन्दरगाहोंके प्रबन्धकर्त्ताओं और हाकिमोंके चित्तपर जहां इनकी कोठियां थीं इस बातका प्रभाव पड़े। डचोंको आशा थी कि ये प्रबन्धकर्त्ता जब जान लेंगे कि डच भी एक प्रभावशाली राज्य की प्रजा है और हमारे बादशाह तक पहुँचकर उससे इच्छानुसार बात कहकर न्याय करा सकते हैं, तब हमारा विरोध और हमारे व्यापारमें अटकाव करनेका उद्योग न करेंगे। निदान इन डचोंने दरबारवालोंको इस बातका विश्वास दिलानेका कि हमारे व्यापारसे भारतवर्षका बड़ा लाभ हो रहा है बड़ी चेष्टा की और उन वस्तुओंकी जो वे यहांसे खरीदते थे एक लम्बी चौड़ी नामावली दिखलाई, जिससे कि मालूम हो कि उन वस्तुओंके खरीदनेके लिये वे बहुतसा सोना चांदी अपने देशसे यहां लाते हैं। परन्तु यह बात वे प्रकट होने देना नहीं चाहते थे कि वर्ष प्रति वर्ष तांबा, सीसा, दारचीनी, लौंग जायफल, काली मिर्च, चिकनी लकड़ी और हाथी इत्यादि बेचकर वे यहांका कितना धन अपने देशमें खींच ले जाते हैं!

इन्हीं दिनोंमें एक बड़े अमीरने औरंगजेबसे कहा कि हुजूर काममें इस कदर मसरूफियत फरमाते है कि अन्देशा है कि शायद इससे सेहते-जिसमानी बल्कि दमागी कूवतमें कुछ फर्क आ जाय और ताकतको कुछ नुकसान पहुँचे। यह सुनकर बादशाहने उस बुद्धिमान् उपदेशककी ओरसे तो मुँह फेर लिया, मानों उसकी बात सुनीही नहीं, और कुछ ठहरकर एक और बहुत बड़े अमीरकी ओर जो बड़ाही विद्वान् और बुद्धिमान् था देखकर कहा,—"आप तमाम अहलेइल्म इस बातमें मुत्तफिकुल-राय है कि मुश्किल और खौफके

व्यक्तिके कानोंतक भी यह बात पहुंच गई कि लोग उसकी बहिनकी पवित्रताके विषयमें सन्देह करते हैं उसने क्रोधमें आकर अपने मनमें इसका दृढ़ निश्चय कर लिया कि यदि यह बात सच है तो मैं दोनोंको मार डालूंगा। कुछ समय बीतनेपर एक दिन दोनों इकट्ठे सोते देख लिये गये। अतएव दीदारखांको तो इसने उसकी छातीमें खञ्जर मार कर मार डाला और बहिनको इतना घायल किया कि वह भी प्रायः मृत हो गई। इस घटनासे बादशाही महलमें बड़ी हलचल मच गई। महलके खोजों और स्त्रियोंने परस्पर पक्का कर लिया कि जैसे बने वैसे इस व्यक्तिका नाश करना चाहिये। यदि औरंगजेबकी इच्छा उसके छोड़ देनेकी न होती तो उसका मारा जाना कुछ कठिन नहीं था। औरंगजेब उसे मुसलमान करना चाहता था। परन्तु इतने पर भी लोग कहते हैं कि सब खोजे उससे नाराज हैं इसलिये वह अधिक दिन न बच सकेगा।

हिन्दुस्तानी समझते हैं कि बधिया कर देनेसे यद्यपि जानवर सीधे और सौम्य हो जाते हैं, परन्तु मनुष्यपर इसका उलटा असर पड़ता है। वे कहते हैं कि क्या कोई ख्वाजासरा ऐसा भी है जो दुष्ट, कठोर हृदय और अहंकारी न हो? हां, यह अवश्य है कि बहुतसे थोड़े अच्छे स्वभावके, सीधे, भले और वीर होते हैं।

इस घटनाके ही समयके लगभग औरंगजेब दो अपरिचित व्यक्तियोंको महलमें बुला लेनेके सन्देहपर रोशनआरा बेगमसे रुष्ट हो गया। परन्तु इस बातके केवल सन्देहही सन्देह होनेके कारण और दोनोंके बहुत शीघ्र लापता हो गई। औरंगजेबने इन दोनों व्यक्तियोंके साथ उस कठोरताका व्यवहार नहीं किया जो शाहजहांने उस अभागे व्यक्तिके साथ किया था जिसने अपनेको स्नानागारकी देगमें छिपाया था। मैं इस वृत्तान्तको ठीक उसी तरहपर यहां वर्णन करता

। ऽाही । परन्तु कुछ सन्देह करनेवाले
उन यह बात सच भी थी, कि उस हब्शी
निमित्त भेजे हैं कि उसको वे भेटकी
ाहब्दय औरंगजेबकी ओरसे मिलनेकी
जो एलची उसने भेजे थे वे भारतवर्षमें इस
शाहके इच्छानुरूप काम कर सकें। उनमें
व्यापारी था जो कई वर्ष हुए मुझे उस समय
समय मैं लाल समुद्रमें होकर मुखा बन्दरमें
अवसरपर इसके स्वामीने इसको इस अभिप्रायसे
र वहां भेजा था कि यह उनको बेचकर इस उत्तम
न पावे उससे हिन्दुस्तानी माल असबाब खरीद
लाई होकर यह बादशाह व्यापार करनेमें कैसा चतुर
! दूसरा एलची एक ईसाई अर्मनी व्यापारी था।
हलबमें हुआ था और वहीं उसने विवाह भी कर लिया
यह भी मुझे मिला था और उस समय इसने न केवल
ा मकान मेरे लिये खाली कर दिया था बल्कि वह सलाह
इसीने दी थी जिससे मैंने अपना हब्श देशका जाना रोक
और जिसका वृत्तान्त मैं इस पुस्तकके आरम्भमें लिख
यह भी मुखामें उसी ऊपर लिखे उद्देश्यसे भेजा गया था।
ा वर्ष भारतवर्षमें व्यापार करनेवाली अंगरेजों और डचोंकी
ायोंके लिये अपने बादशाहकी ओरसे भेटकी वस्तुएँ ले जाता
बदलेमें वहांकी चीजे लाता है।

एथिओपिया (हब्श)　　　　कि उसके

ः भारतवर्षमें मुगल वा॰

देहलीमें आये। इनमेंसे जो सबसे पहले आया वह मक्केका था। वह भेंटकी जो वस्तुएँ लाया था उनमें कई अरबी घोड़े और एक झाड़ू थी जो उस स्थानके झाड़ने बुहारनेके काममें आ चुकी थी जो उस प्रसिद्ध मसजिदके बीचमें बना हुआ है जो मक्केमें है और जिसे बहुत सम्मानित करके मुसलमान ईश्वरका घर कहते हैं। मुसलमानोंका विश्वास है कि यह पहला मकान है जो ईश्वरके पूजनके लिये बनाया गया था, और इसको इब्राहीमने बनाया था।

दूसरा एलची बादशाह-यमनने भेजा था और तीसरा बसोराके अधिकारीने। ये दोनों भेंटमें अरबी घोड़े लाये थे। शेष दो एलची एथिओपिया (हबश) के बादशाहके थे। इनमेंसे पहले तीन एलचियोंका आदर सम्मान इतना कम हुआ कि वह नहींके बराबर था क्योंकि उनकी सामग्री इतनी सामान्य थी कि हरेक व्यक्ति उनको देखकर यही सोचता था कि इनका आना केवल इस निमित्त हुआ है कि भेंटकी जो वस्तुएं ये लाये हैं उनके तथा उन बहुतसे घोड़ों और व्यापारकी वस्तुओंके बदलेमें जिनको वे साथ अपनी बतलाकर बिना महसूल लाये थे यहांसे बहुतसा रुपया कमा ले जायँ, वास्तवमें जो रुपये उनको भेंटकी वस्तुओंके बदले तथा घोड़ोंके बिकनेसे अच्छे दाममें मिले उनसे यहांकी व्यापारकी वस्तुएं खरीदकर वे बिना महसूल अपने देशको ले गये।

परन्तु हबशके बादशाहकी ओरसे जो एलची आये थे उनका वृत्तान्त कुछ ध्यान देने योग्य है। उनका आना इस कारणसे हुआ था कि [illegible] बादशाहको यह बात अच्छी भांति [illegible] [illegible] [illegible] परिवर्तन हुए [illegible] [illegible] [illegible] इस [illegible] [illegible]

प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि फैलानी चाही। परन्तु कुछ सन्देह करनेवाले लोग यह कहते थे, और वास्तवमें यह बात सच्ची थी, कि इस हब्शी बादशाहने अपने एलची इस निमित्त भेजे हैं कि उनको वे भेंटकी वस्तुएँ प्राप्त हों जिनके उदारहृदय औरंगजेबकी ओरसे मिलनेकी उसे पूर्ण आशा थी; और जो एलची उसने भेजे थे वे वास्तवमें इस योग्य थे कि अपने बादशाहके इच्छानुरूप काम कर सकें। उनमें एक तो एक मुसलमान व्यापारी था जो कई वर्ष हुए मुझे उस समय मिल चुका था जिस समय मैं लाल समुद्रसे होकर मुखा बन्दरमें पहुँचा था। उस अवसरपर इसके स्वामीने इसको इस अभिप्रायसे बहुतसे गुलाम देकर वहां भेजा था कि यह उनको बेचकर इस उत्तम व्यापारमें जो धन पावे उससे हिन्दुस्तानी माल असबाब खरीद लावे। आहा, ईसाई होकर यह बादशाह व्यापार करनेमें कैसा चतुर और निपुण है! दूसरा एलची एक ईसाई अर्मनी व्यापारी था। उसका जन्म हलबमें हुआ था और वहीं उसने विवाह भी कर लिया था। मुखामें यह भी मुझे मिला था और उस समय इसने न केवल अपना आधा मकान मेरे लिये खाली कर दिया था बल्कि वह सलाह भी मुझको इसीने दी थी जिससे मैंने अपना हब्श देशका जाना रोक दिया था और जिसका वृत्तान्त मैं इस पुस्तकके आरम्भमें लिख चुका हूं। यह भी मुखामें उसी ऊपर लिखे उद्देश्यसे भेजा गया था। यह प्रति वर्ष भारतवर्षमें व्यापार करनेवाली अंगरेजों और डचोंकी कम्पनियोंके लिये अपने बादशाहकी ओरसे भेंटकी वस्तुएँ ले जाता और बदलेमें वहांकी चीजें लाता है।

एथिओपिया (हब्श) का बादशाह चाहता था कि उसके एलची भारतवर्षमें मुगल बादशाहके दरबारमें ऐसी तड़क भड़कके

साथ बधाई देने जायँ जो इस अवसरके योग्य हो; अतः उसने इनके खर्चके विषयमें बड़ी उदारता दिखाई. अर्थात् दोनोंको २०—२२ युवती लौंडियां और युवा गुलाम दिये कि वे उनको मुखामें बेचकर जो रुपये मिलें उनको यात्रामें खर्च करें। यह उदारता सामान्य नहीं थी; क्योंकि मुखामें युवती लौंडियां और युवा गुलाम औसत २० या २५ क्राउन (एक क्राउन ५ शिलिंगका होता है) को बिकते हैं। इनके अतिरिक्त उस उदारहृदय बादशाहने बहुतही छांटकर २५ गुलाम खास औरंगजेबके लिये भेजे थे जिनमें नौ या दस एकदम नवयुवक और खोजे बनानेके योग्य थे। वाह वाह! एक ईसाई बादशाहने एक मुसलमान बादशाहके लिये क्याही उचित भेंटकी वस्तुएँ भेजीं जिनसे प्रकट होता है कि एथिओपियामें ख्रीष्ट धर्मकी उस समय क्या अवस्था थी। इन गुलामोंके अतिरिक्त उसने औरंगजेबको निम्नलिखित वस्तुएँ भी भेटमें भेजी थीं—(१) पंदरह हब्शी घोड़े जो अरबी घोड़ोंके समान समझे जाते हैं (२) छोटी जातिका एक खच्चर जिसका चमड़ा (जिसे मैंने भी देखा था) ऐसा सुन्दर था कि किसी शेरका भी वैसा न होगा और न भारतवर्षके किसी इलायचियेमें जो एक तरहका रेशमी कपड़ा होता है वैसी अनूठी धारियां होंगी, (३) हाथीके दो दांत जो साधारण दांतोंकी अपेक्षा इतने बड़े और भारी थे कि एक बलिष्ठ मनुष्य भी उनमेंसे एकको कठिनतासे उठाकर मैं [illegible] सकता था और (४) बैलका एक बहुत बड़ा सींग जिसमें सिवेट (एक प्रकारका अत्यन्त सुगन्धयुक्त पदार्थ) भरा था [illegible] जिसमें [illegible] आध फुटसे अधिक मेरे नापसे [illegible]

ये दोनों एलची जब [illegible] साथ [illegible]
[illegible]

तब इनको एक उजाड़ देशमे होकर निकलना पड़ा और बहलोल तक पहुँचनेमे जोकि बाबुलमन्दबके निकट मुखाके बराबर एक छोटा बन्दरगाह है इनको दो महीने लगे। इनके कारवांके मामूली मार्गसे जिसमे पहुँचनेमे ४० दिन लगते हैं आर्किकोको जानेका साहस न करनेका यह कारण था कि आर्किकोमे मसोआ द्वीपको जाना पड़ता है, जहां तुर्क राज्यकी कुछ सेना रहती है। जब ये लोग समुद्रके मार्गमे मुखा जानेवाले जहाजकी बाट बहलोलमें ठहर जोह रहे थे तब उसी अवसरमें भोजनादिकी पूरी सामग्री न होनेके कष्टमें इनके कई गुलाम मर गये। इसके अतिरिक्त मुखामें पहुँचने पर मालूम हुआ कि अबकी बार गुलाम और लौंडियां अधिकतासे बिकनेके लिये आई हैं। अतएव इनके पास जो लौंडियां और गुलाम बाकी रह गये थे उनको इन्हे आशासे कम मूल्य पर बेचना पड़ा। अस्तु जब लौंडी गुलाम बिक चुके तब इन्होंने अपनी यात्रा पुनः आरम्भ की और एक हिन्दुस्तानी जहाज पर सवार होकर जो सूरतको आता था ये २५ दिनमे यहां पहुँच गये और यह इतनी दूरकी यात्राके लिये ठीक समय था। परन्तु बहुतसे घोड़े और कई गुलाम सम्भवतः पूरा भोजन न मिलनेके कारण मर गये, क्योंकि यह तो स्वयं प्रकट है कि इन तड़क भड़कवाले एलचियोंके पास इतना रुपया कहां था जो इनके खर्चके लिये पूरा होता। वह बेचारा खच्चर भी जिसका हाल आगे कहा जा चुका है जहाजहीमें मर गया, परन्तु इन्होंने उसका सुन्दर धारीदार चमड़ा सावधानीसे रख छोड़ा था जिसे मैंने भी देहलीमें देखा था।

इनको सूरतमें आये कुछही घण्टे हुए होंगे कि बीजापुरसे इतिहास-प्रसिद्ध मरहठा वीर शिवाजीने आकर नगरको लूट लिया और आग लगा दी। इस आगकी लपेटमें यद्यपि वह मकान

भी जिसमें ये ठहरे थे भस्म हो गया, तथापि आग और शत्रुओंसे किसी प्रकार यात्राकी सनद, पत्र और कुछ गुलाम भी (जिनको कदाचित् शिवाजीने बीमार या उनके हबशी कपड़े आदि देखकर स्वयं छोड़ दिया था) बच गये। इस खच्चरके चमड़े और बैलके सींगको भी जिनका सुगन्धित पदार्थ पहलेही निकाल लिया गया था शिवाजीने नहीं लिया।

इन पलाचियोंने अपने लुट जानेके विषयमें बड़ी बड़ी बातें बनाकर कहीं, परन्तु उनको सन्देहकी दृष्टिसे देखनेवाले वे हिन्दुस्तानी जिन्होंने इनको जहाजसे उतरनेके समयही देख लिया था कि न तो इनके शरीरपर अच्छा वस्त्र ही है, न किसी महाजनके नाम वे हुण्डीही लाये हैं, वरन् पूरे भोजनके अभावसे अधमुए हो रहे हैं, कहते थे कि यह तो वास्तवमें इनका सौभाग्य था कि सूरतमें लुटने और माल असबाबके जल जानेसे ये उस अप्रतिष्ठासे बच गये जो अपनी गन्दी और तुच्छ भेंटकी वस्तुओंके देहलीमें लानेके कारण इनकी होती और शिवाजीकी कृपासे इनको सूरतके सूबेदारके सामने दरिद्रियोंके वेषमें जाने और राजधानी तक पहुंचनेके लिये खर्च मांगनेका अच्छा बहाना मिल गया। इसीसे गुलाम और सिवेट (बैलके सींगका सुगन्धित पदार्थ) बेचकर खा जानेकी बदनामीसे भी ये बच गये।

हमारे माननीय मित्र डचके कार्यालयके मैनेजर मिस्टर [illegible] [illegible] इसाई पादरी बुसाइको मेरे नामका पत्र दे-रखा था, जिसे उसने देहलीमें आकर मुझे दिखाया। अकस्मात् यह जानकर आश्चर्य हुआ कि पांच छः वर्षके बाद हम और वह [illegible] दूसरेसे फिर मिले। यह इस बातको बिलकुल भूल गया था कि मुझसे मैं उसीके घर ठहरा था। [illegible] उस गुफामें जिसमें

गले मिला और उनसे प्रतिज्ञा की कि जहां तक हो सकेगा तुम्हारी सहायता करूंगा। यद्यपि दरबारमें मेरी बहुत पहुँच थी और सबसे मेरा परिचय था, परन्तु इन दरिद्र एलचियोंकी सहायताके लिये किसीसे कुछ कहना कठिन काम था, क्योंकि उस खच्चरके चमड़े और बैलके उस सींगको छोड़ जिसमें उन्होंने अपने पीनेके लिये अपनी प्रिय चीज़ मीठी मदिरा भर रखी थी और कुछ उनके पास शेष न बचा था। भेंटकी बहुमूल्य वस्तुओंके पासमें न होनेके कारण लोग उनको तुच्छ समझते थे और उनकी विशेष तुच्छता इस बातसे प्रकट होती थी कि वे बहुत साधारण कपड़े पहने बिना पालकीके पैदल नगरमें घूमा करते थे और सात आठ गुलाम नंगेसिर नंगेपांव उनके पीछे पीछे रहते थे जिनके पास कमरमें लपेटनेकी एक छोटी धोती और फटी पुरानी चादरके सिवा जिसे वे बांये कन्धे पर डालकर दाहिनी ओर निकाले रहते थे, और कुछ न होता था। और एक टूटी फूटी भाड़ेकी बहली तथा एक घोड़ेके, जो हमारे पादरी साहब का था, और कोई घोड़ा भी उनके पास नहीं था; या कभी कभी वे मेरा घोड़ा मांग लेते थे जिसे सवारी में लालाकर उन्होंने अधमुआ कर डाला था। अतएव यद्यपि मैंने उन घृणित और गन्दे एलचियोंके लिये बहुत कुछ यत्न किया परन्तु कुछ लाभ न हुआ; कारण यह कि लोग उनको भिखमंगा समझकर उनकी ओर कुछ ध्यान नहीं देते थे। परन्तु एक दिन जबकि मैं अपने स्वामी दानिशमन्दखां के पास जोकि परराष्ट्रविभाग का मन्त्री है एकान्तमें बैठा था तब मैंने एथिओपियाके बादशाहकी इतनी बनावट और ढंगके साथ प्रशंसा की, ऐसी ऐसी बातें कहीं, कि औरंगजेब इन एलचियोंको अपने सामने बुलाने और उनके लाये हुए पत्रोंको लेनेपर प्रस्तुत हो गया,—और

जब ये इसके सामने उपस्थित हुए तब इनको सिरसे पांव तकके बढ़िया बहुमूल्य वस्त्र दिये गये और इनकी मेहमानदारीकी आज्ञा हुई। कुछ दिनके बाद जब ये विदा होने लगे तब पुन इनको वैसेही वस्त्र और छः सहस्र रूपए नकद मिले; परन्तु ये रुपये बराबर बराबर न दिये जाकर इस प्रकार दिये गये कि मुसलमान एलचीको तो चार सहस्र मिले और मुरादको ईसाई होनेके कारण केवल दो सहस्र। और उनके बादशाहके लिये भेंटकी रीतिपर निम्नलिखित वस्तुएँ दी गई:—

(१) सिरसे पांव तकके बहुमूल्य वस्त्र, (२) चांदीके मुलम्मे की दो शहनाइयां, (३) चान्दीके दो नगाड़े, (४) जड़ाऊ मूंठका एक खंजर और (५) बीस सहस्र रूपये नक़द। हबश (एबिसीनिया) देशमें सिक्के नहीं चलते, इसलिये औरंगज़ेबने बड़ा किफ़ायत समझा है कि ये नकद रुपये विशेष आदरके साथ स्वीकार किये और विचित्र वस्तु समझे जायगे; परन्तु इसबातको वह भली भांति जानता था कि इनमेंसे एक रुपया भी भारतवर्षसे बचकर बाहर न जायगा, क्योंकि ये लोग अपनी आवश्यकताके अनुसार इन रुपयों से यहांकी चीज़ें खरीद लेंगे। हुआ भी ऐसा ही। उन एलचियोंने इन रुपयोंसे कुछ तो गर्म मसाले लिये, कुछ महीन सूती कपड़े बादशाह और उनकी बेगम तथा एकमात्र पत्नीके लिये खरीदे, कुछ रेशमी और सुनहली धारीके अस्तर और जामे बनाने योग्य इलायचीके मोल लिये, बादशाहके वास्ते [illegible] लिये खास और हर [illegible] [illegible] खरीदीं, और इनके अतिरिक्त बहुत तरहके सूखे मेवे [illegible] [illegible] [illegible]

एलची होनेके कारण इन वस्तुओंका कुछ महसूल इनसे न लिया गया होगा ।

यद्यपि मुरादसे मेरी बड़ी मैत्री थी परन्तु तीन बातोंमें उसके लिये कुछ उद्योग करनेमें मुझे कुछ आगापीछा हुआ । एक यह कि यद्यपि उसने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपना पुत्र तुम्हारे हाथ पचास रुपए पर बेच डालूंगा, परन्तु पीछे कहा कि मैं तीनसौसे कमपर न दूंगा । मुझे इतना देना भी स्वीकार था । क्योंकि मैं चाहता था कि मुझे इस बातके कहनेका अवसर मिले कि एक व्यक्तिने अपने निजके पुत्रको मेरे हाथ बेच डाला था । यह लड़का बहुत मोटा ताज़ा, सुडौल शरीरका और एक दम साफ आबनूसकी तरह काला था । इसकी नाक हबशियोंकी तरह चिपटी नहीं थी और होठ भी मोटे नहीं थे, परन्तु इसके पिताने प्रतिज्ञाके विरुद्ध इसे मुझे न दिया, इस कारण मैं उससे बहुतही अप्रसन्न हुआ ।

दूसरी यह कि उसने और उसके मुसलमान साथीने औरंगजेबसे दृढ़ प्रतिज्ञा की थी कि हम अपने बादशाहसे उस मसजिदकी मरम्मत के लिये अवश्य अनुमति ले देंगे जो पुर्तगीज़ोंके समयसे उजाड़ और खण्डरके रूपमें पड़ी है । उनकी इस प्रतिज्ञा पर औरंगजेबने इस काम के लिये भी दो सहस्र रुपये उनको दिये । यह मसजिद एक शेख या फकीरकी कब्रके ढंगकी बनाई गई थी जो मक्केसे हब्श देशको केवल मुसलमानी धर्मका प्रचार करने चलागया था । इस मसजिदको उन पुर्तगीज़ोंने तोड़ फोड़ डाला था जो गोवासे सेना लेकर उस बादशाहकी सहायताको गये थे जो ईसाई होगया था और जिसको राज्यच्युत करके एक मुसलमान राजकुमार उसके आसनका अधिकारी बन बैठा था ।

तीसरी बात यह कि उसने अपने बादशाहकी ओरसे औरंगजेब से यह प्रार्थना की थी कि एक कुरान तथा आठ और पुस्तकें जिनके नाम मैं जानता हूं और जो उन पुस्तकोंमें प्रथम श्रेणीकी समझी जाती हैं जो मुसलमानी धर्म्मके पक्षमें रची गई हैं दी जावें। मेरी राय में एक ईसाई बादशाहके ईसाई एलचीका ऐसा करना एक बहुतही तुच्छ और छोटी बात है। इस समय मेरे उस अनुमानकी पुष्टि हो गई जो मुखामें यह सुनकर मुझे हुआ था कि हब्श देशमें ख्रीष्ट धर्म्मकी बहुत बुरी अवस्था है। निःसन्देह इस बादशाहकी शासनप्रणाली, रीति नीति और इसकी प्रजाके आचार व्यवहारमें मुसलमानीपनका आभास दीख पड़ता था। वास्तवमें जबसे वह बादशाह जिसको पुर्तगीज़ोंने सहायता देकर राजपद पर बैठाया था मर गया है तबसे जो लोग नाममात्रके लिये ईसाई हैं उनकी संख्या भी कम होती जाती है। बात यह है कि उस बादशाहके मरतेही उसकी मांकी कूट नीतिसे कुछ पुर्तगीज़ तो मारे गये और कुछ निकाल दिये गये और जेस्विट श्रेणीके पेट्रियार्क अर्थात् बड़े पादरीको जिसे उसके देशी पुर्तगीज़ गोवासे लाये थे प्राण बचाकर भागना पड़ा।

जितने दिन ये एलची देहलीमें रहे दानिशमन्दखां जो सदैव नई नई बातोंके जाननेकी इच्छा रखता है उनको कई बार अपने यहां बुलाकर उनके देश और उनकी शासनप्रणालीके विषयमें बहुतसी बातें पूछता रहा, परन्तु उसका असल मतलब यह था कि वह नील नदकी उत्पत्ति मालूम करे। ये लोग नील नदको आबुलमियाह (The father of waters) कहते हैं। ये कहते थे कि इसकी उत्पत्तिका हाल भली भांति मालूम है। कुरान और [illegible] [illegible]

स्थानको देखा है। उन्होंने अपनी जानकारीसे इस विषयमें जो कुछ वर्णन किया वह इतनाही था जितना मैंने मुखोंसे सुना था। अर्थात् उसके निकलनेका स्थान अगवस देशमें है। दो तेज सोते हैं जो एक दूसरेसे मिलकर ३० या ४० पदकी लम्बाईकी एक छोटी झील वन जाते हैं और जो पानी इस झीलसे निकलता है यद्यपि वह स्वयं एक नदीके समान है तथापि आगे वढ़कर स्थान स्थान पर वहुतसी नदियाँ और नाले उसमें मिलते जाते हैं जिससे उसका आकार बढ़ता जाता है। इन्होंने यह भी कहा कि यह नद इस प्रकार चक्कर देकर वहा है कि वीचमें मानो एक वड़ा टापू वन गया है और कई एक सीधी चट्टानोंसे उतरकर एक वहुतही वड़ी झीलमें जाकर गिरा है जिसमें वहुतसे हरेभरे द्वीप हैं और घड़ियाल भी अधिकतासे हैं। उन्होंने एक और भी वात कही जो यदि सच हो तो वास्तवमें विशेष ध्यान देनेके योग्य है। वह वात यह है कि इस झीलमें एक प्रकारके समुद्री वछड़े हैं जिनके मुँहके अतिरिक्त मल मूत्रादि गिरानेके लिये कोई दूसरा मार्ग नहीं है। अस्तु, उन्होंने कहा कि यह झील डम्बिया प्रान्तमें गोंडरसे तीन और नीलके उत्पत्तिस्थानसे चार पांच दिनके मार्ग पर है। जव यह नद इस झीलसे निकलकर आगे वढ़ता है तव वहुतसी नदियों और वरसाती नालोंके कारण जो इस झीलमें आकर गिरते हैं इसका पाट वहुत वढ़ जाता है, विशेषकर वर्षाऋतुमें जो भारतवर्षकी तरह यहां भी एक नियत ऋतु है और प्रायः जुलाईके अन्तसे आरम्भ होती है।—मेरी समझमें यह अन्तिम वात ध्यान देनेके योग्य है, क्योंकि इससे इस नदके खूव फैलकर वहनेका कारण मालूम होता है। अस्तु, अन्तमें यह कहा गया कि नद इस झीलसे निकलकर सोनार नगरकी ओर जाता है जोकि एथिओपियाके अधीन

राज्य फञ्जीकी राजधानी है और इसी तरह बढ़ता हुआ मिस्रके मैदानोंतक पहुंच जाता है।

इन एलचियोंने अपने बादशाहकी उदारता, शोभा, सैनिकबल आदिका वर्णन इतना बढ़ाकर किया कि मुझे और दानिशमन्दखांको अनुचित जान पड़ाः परन्तु इनका वह मुगल साथी इस बढ़बढ़कर बातें करनेमें सम्मिलित नहीं था और इनके पीछे उसने हमलोगोंसे स्पष्ट कहा कि "मैंने दो बार वहांकी सेना रणमैदान और ऐसे समयमें देखी है जब कि स्वयं बादशाह उससे काम ले रहा था। मेरी जानमें किसी सेनाकी उससे अधिक बुरी और कुप्रबन्धकी अवस्थामें होना सम्भव नहीं है।" उसने ऐसीही और कई बातें कहीं जो सब मेरी डायरीमें लिखी हैं और जिन्हें किसी अवसर पर मैं पुस्तकाकार छपवाऊंगा। यहां मैं केवल वही बातें लिखता हूं जिनको मुरादने मुझसे कहा था। ये बातें ऐसे देशसे सम्बन्ध रखती हैं जो ईसाइयोंका समझा जाता है, अतएव वे बड़ी आश्चर्यप्रद हैं। मुरादने बताया कि हब्श देशमें ऐसे पुरुष बहुतही कम होंगे जिनके कई स्त्रियां न हों—और बिना किसी प्रकारकी लज्जा या विचारके अपने विषयमें भी कह दिया कि विवाहिता पत्नीके अतिरिक्त दो स्त्रियाँ और हैं। फिर कहा कि 'जिस तरह हिन्दुस्तानकी मुसलमान और हिन्दू औरतें पर्देके अन्दर रहती हैं हब्श देशमें नहीं रहतीं। गरीब लोगोंकी स्त्रियां, चाहे ब्याही हों या क्वांरी या लौंडी या स्वतन्त्र, सब बिना पर्दे [illegible] रहती हैं। ईर्षा, द्वेष, डाह इत्यादि अवगुण जो प्रायः और जातियोंकी स्त्रियोंमें होते हैं वे जानतीं भी नहीं। [illegible] स्वभावसे [illegible] और उनकी [illegible] यदि किसी [illegible] [illegible] नहीं [illegible]

जब चाहती है निर्भय और निःशंक भावसे उसके घर चली जाती है। (इसके बाद कहा) यदि आप वहां होते तो अवश्य आपको ब्याह करना पड़ता। कई वर्ष हुए एक यूरपियन संन्यासी जिसने अपनेको ईजिप्टके बादशाहका चिकित्सक बतलाया था जबर्दस्ती ब्याह दिया गया था,—और दिल्लगी तो यह है कि जिस स्त्रीको उसने अपने लड़केके विवाहके लिये चुना था उसीके साथ वह ब्याहा गया। (इसके पश्चात् एक वृत्तान्त कहा कि) एक ८० वर्षके वृद्धने अपने २४ पुत्रोंको जो नवयुवा और शस्त्र बांधनेके योग्य थे बादशाहके सामने उपस्थित किया। बादशाहने पूछा कि क्या तेरे केवल इतनेही पुत्र हैं? जब उसने उत्तर दिया कि हां लड़के तो इतनेही हैं परन्तु कई लड़कियां भी हैं तब बादशाह झुंझलाकर बोला कि 'ओ बुड्ढे बैल, मेरे सामने दूर हो। मुझे आश्चर्य होता है कि लज्जित होनेके बदले तू अभिमान कर रहा है! क्या हमारे देशमें स्त्रियोंका काल पड़ गया है कि तेरी जैसी अवस्थाके लोग केवल दो दर्जन लड़कोंके पिता होने पर इतरायें!' (इसके उपरान्त मुरादने बतलाया कि) हमारे बादशाहके कमसे कम ८० लड़के बाले हैं जो महलमें जिधर देखो उधरही दौड़ते फिरते दिखाई देते हैं। उनकी यह पहचान है कि हरेकके पास बादशाहकी दी हुई एक गोल रंगीन छड़ी होती है जिसे पहचाने जानेका द्वार समझ कर और लड़कोंकी अपेक्षा वे सेप्टर (Sceptre असा) की रीतिपर हाथमें लिये हुए प्रसन्नतापूर्वक घूमा करते हैं।

दानिशमन्दखांकी भांति औरंगजेबने भी दो बार इस आशासे इन एलचियोंको अपने पास बुलाया कि इनसे इनके देशका कुछवृत्तान्त विदित होगा; परन्तु उसका मुख्य अभिप्राय यह जाननेका था कि

मुसलमानी धर्म्मकी वहां क्या अवस्था है। इसने कस्तूरकी भी खाल भी मंगवाकर देखी जो न जाने किस तरह दुर्गके प्रबन्धकर्त्ताओंके ही पास रहगई थी और जिसके प्राप्त करनेके लिये मैं तरसताही रहगया, क्योंकि उन्होंने मेरे कार्य्योंके बदलेमें उसे मुझे देनेकी प्रतिज्ञा की थी और मैं यह सोच सोचकर कि कभी अपने देशमें पहुंचकर अद्भुत वस्तुओंके किसी प्रेमी मित्रको इसे भेट करूंगा मनही मन प्रसन्न होरहा था। मैंने इन एलचिओंको बहुत प्रकार इस विषयमें भी चिता दिया था कि इस चमड़ेके साथ बादशाहको वह सींग भी अवश्य दिखा देना परन्तु उन्होंने इस भयसे इसे औरंगजेबके सामने उपस्थित नहीं किया कि कदाचित् पूछा जाय कि सूरतकी लूटसे जब यह बच रहा तो इसके अन्दरका सुगन्धित पदार्थ कहां गया! ऐसी अवस्थामें कुछ उत्तर देते न बन पड़ता।

इथिओपियाके बादशाहके एलची अभी देहलीहीमें थे कि औरंगजेबने अपने दरबारके मुख्य मुख्य विद्वानों और बुद्धिमानोंको इस बातका विचार करनेके लिये एकत्रित किया कि उसके तीसरे पुत्र सुलतान अकबरकी शिक्षा दीक्षाके लिये जिसको कि वह अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था, एक शिक्षक चुना जाय। इसने कहा कि "मेरी आरजू है कि इसकी तालीम व तरबियत ऐसी की जाय जिससे कामिल नतीजा इस अम्रका हो सके कि हर तरहकी लियाकत इसके मिजाजमें बदर्जा मशहूर आशकार हो।" मेरी रायमें कोई व्यक्ति औरंगजेबसे अधिक इस विषयका जानकार नहीं है कि राजकुमारोंमें हर प्रकारकी योग्यताओं और शिक्षा तथा कलाओंका ज्ञान होना आवश्यक है। क्योंकि उनसे आशा होती है कि भविष्यमें यही वे राज्यके अधिकारी और शासक होंगे। औरंगजेब

कथन है कि "जिस तरहसे बातनवार अपने मर्तबे और इख्तियारके उनको और लोगोंपर फजीलत है इसी तरह लाजिम है कि दानाई और सिफाते हमीदःमें भी वे सबसे अफजल हों।" वह भली भांति जानता है कि जो कष्ट और दुःख एशिया देशके राज्योंपर पड़ते है, और वे अनुचित बातें तथा कुप्रबन्ध जिनसे अन्तमें राज्य चौपट हो जाते है, उनका कारण यदि ढूंढा जाय तो यही निकलेगा कि राजकुमारोंकी शिक्षा आदि अपूर्ण और बुरी रीतिपर होती है, क्योंकि बाल्यावस्थासे ही वे स्त्रियां ख्वाजासराओं वा उन गुलामोंके सुपुर्द रहते हैं जो रूस, सरकेशिया, मिंगरेलिया, गुर्जिस्तान वा हब्श देशसे आते हैं। और गुलामोंकी तो सदैव यह दशा होतीही है कि अपनेसे बलवानोंके आगे हाथ पैर जोड़ना गिड़गिड़ाना और दबना और निर्बलों अधीनोंपर बेमतलब जोर जबर्दस्ती जताना। गुलाम होते ही मनुष्यकी बुद्धि और विवेक दोनों नष्ट हो जाते हैं। अतएव ये राजकुमार जब महलोंसे निकलकर राजगद्दीपर आरूढ़ होते है तब वेही अनुचित अत्याचारकी बातें अपने साथ लाते हैं और उन कर्त्तव्योंके विषयमें कुछ नहीं जानते जिनका पालन करना ऐसी अवस्थामें उनको उचित है। अपनी जीवनावस्थाके इस रंगमञ्चपर वे इस भांति आते है मानों किसी औरही संसारसे आये हों। प्रत्येक वस्तुको वे ऐसे भोलेपन और हैरानीसे देखते है कि जैसे आजही पहले पहल किसी अन्धेरी कोठरी वा तहखानेसे चले आते हों। यातो वे बच्चोंकी तरह हर बातपर विश्वास कर लेते हैं, या प्रत्येक वस्तुसे डरते और घबराते है, या ऐसे हठीले बेपरवा और निर्बुद्धिहो जाते हैं कि उचित सलाह और समझकी बात भी नही सुनते और कैसाही बुरा काम क्यो न हो उसके कर डालनेमे कुछ भी आगापीछा नही सोचते। राज्यासनपर

बैठते हैं या तो अपने स्वाभाविक दुर्गुणसे या उन विचारोंके कारण जो पहलेहीसे उनके हृदयमें बैठाये रहते हैं वे एक बनावटी गम्भीरता दिखाते हैं; परन्तु प्रत्येक व्यक्तिको यह सहजमें मालूम हो जाता है कि उनमें गम्भीरता नामको भी नहीं है और यह केवल किसी बुरी सिखावटका असर है जिसको गम्भीरता नहीं किन्तु एक प्रकारका पश्चाचरण और भद्दा दिखावा कहना चाहिये । अथवा ये अपनेको इस ढंगका प्रसन्नचित्त बना लेते हैं जो कदापि बादशाहोंके योग्य नहीं होता और बनावटी होनेके कारण धोखा मालूम होता है । अतएव एशियाके इतिहासमें जानकारी रखनेवाले व्यक्तियोंमें ऐसा कौन है जो मेरे इस कथनकी सत्यताको जोकि एशियाके राजकुमारोंकी दशाका एक ठीक चित्र है अस्वीकार कर सके ? मैं पूछता हूं कि एशियाके बादशाह आंख बन्द करके क्या जानवरोंकी तरह अत्याचार नहीं करते थे और उनके अत्याचार क्या कभी उचित रीतिपर होते थे ? क्या वे बेहिसाब मद्यपान करनेकी नीचता नहीं करते और निर्लज्ज भावसे ऐयाशीमें डूबे हुए नहीं हैं ? क्या महल की निवासिनियोंके साथ रहकर ये अपनी युवावस्था बिलकुल नष्ट भ्रष्ट नहीं करते ? और क्या इन्होंने राज्यकार्य देखनेके बदले अपना समय व्यर्थ शिकार आदिमें नहीं खोया ?—यद्यपि इन हृदयशून्य बादशाहोंको इनके शिकारी कुत्ते बहुत प्रिय हैं, परन्तु ये बेचारे

पर अंकित रहती है वैसेही ये हो जाते हैं। जैसे व्यभिचारकी शिक्षा-पानेवाले व्यभिचारी, शौकीनोंकी शिक्षा पानेवाले शौकीन इत्यादि। ऐसा बादशाह क्वचितही होता है जिसे अपने देशकी भीतरी दशा और राजनीतिक बातोंका ज्ञान हो। वह अपने राज्यकी लगाम किसी मन्त्री वा वजीरके हाथमें दे देता है जो सदा इस विचारसे कि मैं स्वतन्त्र और बिना रोकटोक शासन करनेवाला हो जाऊं बुरे कामोंमें उसको फँसाये रहता और राज्यकार्य्यमें उसका चित्त लगने नहीं देता है। इसके अतिरिक्त यदि मन्त्री राज्यके कार्योंको दृढ़ताके साथ अपने हाथमें नहीं रखता तो बादशाहकी मां,जो वास्तवमें कोई लौंडी बांदी होती है, और कुछ खोजे देशका शासन करते हैं जो लम्बे चौड़े और उच्च विचारवाले नहीं होते किन्तु सदा ऐसीही निर्दयताकी बातें सोचा करते हैं जैसे अपने साथियोंमेंसे किसीको फांसी दे देना, किसीको कैद करना, किसीको देशसे निकलवा देना इत्यादि। केवल अपने साथियोंके साथ वे ऐसे वर्ताव नहीं करते वरन् कभी कभी बड़े बड़े अमीरों यहांतक कि स्वयं राजमन्त्रीके साथ भी करते हैं। उनके समयमें कोई भलाआदमी अपने माल, धन, मान, प्रतिष्ठा और जीवकी ओरसे एक क्षण भी निश्चिन्त नहीं हो सकता,उनका शासन राज्यके लिये कलंककर होता है। अस्तु।

औरंगजेबके दरबारमें जब ऊपर लिखे एलची उपस्थितहो चुके तब समाचार आया कि एक एलची ईरानके दरबारकी ओरसे सरहद पर आया है। इसपर औरंगजेबके दरबारियोंमें जो ईरानी थे उन्होंने यह बात चलाई कि वास्तवमें किसी विशेष बड़े कामके लिये यह एलची आया है, परन्तु बुद्धिमान् मनुष्योंने यह बात स्वीकार नहीं की। यह स्पष्ट था कि बड़ी घटनाओंका समय अब नहीं था और इन ईरानी

दरबारियोंके ऐसी बात प्रसिद्ध कर देनेका कारण अपने देशका बड़प्पन प्रकट करनेके अतिरिक्त और कुछ नहीं था। इसी तरह उन्होंने एक यह खबर भी उड़ाई थी कि ईरानी एलचीको लेने और उसका स्वागत सत्कार तथा उसको देहलीमें लानेका उत्तम प्रबन्ध करनेका यह कारण है कि मालूम किया जाय कि वह किस मतलबसे भारतवर्षमें आया है। ये ईरानी यह भी कहते थे कि जो लोग इस एलचीको लेने गये हैं उनको चिता दिया गया है कि वे धीरे धीरे उसको इस बात पर प्रस्तुत करें कि दरबारमें वह भारतवर्षकी रीतिके अनुसार सलाम करे और उसको यह भी समझा दिया जाय कि ईरानके बादशाहका पत्र किसी तीसरे आदमीके हाथसे मुगल बादशाहको देनेका सदासे नियम है। परन्तु एलचीके आनेपर जो कुछ मैंने देखा उससे प्रकट हो गया कि ये सब केवल झूठी बातें थीं और औरंगजेब ऐसी बातोंकी परवा नहीं करता।

जब यह एलची राजधानी देहलीमें पहुँचा तो उसका यथोचित रीतिसे स्वागत सत्कार किया गया, अर्थात जिन जिन बाजारोंमें होकर वह गया उनपर सफेदी कराई गई थी, रास्तेके दोनों ओर [illegible]० मीलतक पंक्तिबद्ध सवार खड़े हुए और बहुतसे उमराओंने बाजे गाजे से उसका साथ किया और तोपखानेसे सलामी हुई। औरंगजेबने उसके साथ बहुत उत्तम बर्ताव किया और इस एलचीके ईरानी रीतिके अनुसार सलाम करनेपर वह अप्रसन्न नहीं हुआ, परन्तु स्वयं उसके हाथसे ईरानके शाहका परवाना बिना किसी प्रकारकी आपत्तिके ले लिया, इसमें भी [illegible] सत्कारकी रीति पर उसे वह अपने [illegible] निकट तक ले गया। इसके पश्चात वह डोलेमें उमरावोंके [illegible] दरबार बड़ी गम्भीरताके साथ [illegible]

सिरसे पांव तकके सब वस्त्र दिये जायँ। सो ऐसाही हुआ। उसे बहुमूल्य वस्त्र दिये गये। इस रसमके बाद आज्ञा हुई कि एलची अपनी भेंटकी वस्तुएँ उपस्थित करे। उसकी भेंटकी वस्तुओंका विवरण यों है,—२५ ऐसे सुन्दर घोड़े जैसे मैंने कभी नही देखे थे; २० ऐसे मजबूत और बड़े ऊंट जिनको हाथीके पट्ठे कहना चाहिये, बहुतसे सन्दूक मय बढ़िया गुलाब और एक प्रकारके जलके जिसको बेदमुश्क कहते हैं और जो बहुत उपयोगी होता तथा कम मिलता है, पांच छः बड़े बड़े और सुन्दर कालीन; कई बहुतही बढ़िया थान कारचोपीके जो ऐसे थे कि मुझे सन्देह है कि कदाचित्‌ही कभी योरपमें वैसे दिखाई दिये हों, जड़ाऊ मूँठके दमिश्क के बने हुए चार खञ्जर, चार जड़ाऊ तलवारें और पांच छः घोड़ोंके बहुतही सुन्दर और बहुमूल्य साज जिनको लोगोंने विशेषताके साथ पसन्द किया। इन साजोंपर छोटे छोटे मोती और पुरानी खानके बढ़िया फीरोजे जड़े हुए थे। औरंगजेबने इन वस्तुओंको बड़े ध्यानसे देखा और दरबारमें उपस्थित लोगोंको इस समय ऐसा जान पड़ा कि वह इन उत्तम भेंटकी वस्तुओंको देखकर बहुत अधिक प्रसन्न है। अन्तमें उसने इन पदार्थोंकी तथा इनके भेजनेवाले ईरानके बादशाहकी उदारता और कृपाकी बारम्बार प्रशंसा की, एलचीको उमरामें एक प्रतिष्ठित स्थान प्रदान किया और उसकी लम्बी यात्राके विषयमें कहकर कहा कि इस समय आप आराम करें; हम आपको प्रति दिन मुलाकातके लिये बुलाया करेंगे।

यह एलची चार पांच महीने तक देहलीमें रहा। यह बड़ी शानसे रहता और इसके खर्चका सब रुपया बादशाही खजानेसे दिया जाता। दरबारके अमीरोंने भी समय समय पर इसे निमन्त्रित

करके इसकी दावत की और विदाईके समय बादशाहने एक और बहुमूल्य वस्त्रोंका जोड़ा इसे भेटस्वरूप दिया। ईरानके बादशाहको भेट की वस्तुएँ भेजनेके विषयमें औरंगजेबने यह स्थिर किया कि जो कुछ भेजना हो अपने एक एलचीके हाथ भेजे। निदान एक अमीर इस कामके लिये चुना गया।

यद्यपि दूसरे एलचियोंकी अपेक्षा जो पहले आ चुके थे, इस एलचीका बहुत मान सम्मान किया गया परन्तु इस पर भी उन ईरानियों ने जो देहलीमें थे यह बात प्रसिद्ध करदी कि ईरानके बादशाहने अपने पत्रमें औरंगजेबको दाराके मारने और शाहजहांको कैद करनेके विषयमें बहुतही अपमानसूचक शब्द लिखे हैं और लिखा है कि जो बर्ताव तुमने उनसे किया है कोई भाई भाईके साथ और कोई बेटा बापके साथ नहीं करसकता और किसी ईमानदार आदमीसे यह बात नहीं हो सकती। देहलीमें बसनेवाले ईरानियोंने यह भी प्रसिद्ध किया कि ईरानके बादशाहके पत्रमें यह बात भी लिखी हुई है कि "तुमने अपना उपनाम "आलमगीर" (संसारविजयी) क्यों रक्खा और उसे अपने यहांके सिक्कोंपर क्यों खुदवाया?" इस बातको उन्होंने यहां तक बढ़ाया कि पत्रमें यह बात स्पष्ट लिखी है कि "यदि आप आलमगीर हैं तो यह तलवार और ये घोड़े तैयार हैं। बस चले आइये इधर से हम भी आते हैं।" मेरी रायमें यह बात यदि सच होती तो ईरानके बादशाहका पत्र मानो लड़ाईका सन्देसा था। परन्तु मैंने जैसा सुना है वैसा लिख दिया है और यद्यपि इस बातका हाल प्रत्येक व्यक्तिको जो यहांकी भाषामें जानकारी और यहांके लोगोंसे परिचय रखनेवाला तथा मेरी तरह वहां बहुत [illegible] और दरबारमें आने जानेवाला हो मालूम हो सकता है, परन्तु

मै ऊपर लिखी बातको असत्य प्रमाणित नही कर सकता । तौभी मै एकाएक ऐसी बात पर विश्वास करलेनेका कोई कारण नही देखता । हां सम्भव है कि ईरानके बादशाहने अपने पत्रमे ऐसे बुरे शब्दोंका व्यवहार किया हो. क्योंकि यद्यपि यह बात अवश्य है कि ईरानी जब कभी किसीको अपने बल और शक्तिका परिचय देना चाहते हैं तब ऐसीही बातें लिखते हैं, परन्तु ऐसे शब्दोंमे तो एक झूठीशेखीके अतिरिक्त धमकीकी झलक दिखाई देती है ।

बात यह है कि कुछ विचारवान् लोगोंकी यह राय है, और मेरी भी यही राय है, कि ईरानमें इतनी शक्ति नहीं है कि वह हिन्दुस्तान जैसे देशपर आक्रमण करसके।उसके लिये यही बहुत है कि कन्दहार जो उसकी अमलदारीमें भारतवर्षकी ओर सरहद पर है उसके अधिकारमें रहे, या यह कि अपने देशको वह रूमकी सीमाकी ओरसे सुरक्षित रख सके । ईरानकी सेना, धन, बल और शक्तिका हाल हिन्दुस्तानके बादशाही दर्बारके लोगोंको भलीभांति मालूम है । हिन्दुस्तानी भली भांति जानते है कि ईरानके राज्यासनपर सदैव शाहअब्बास नही है कि जो बात हो उसे अपनी इच्छाके अनुकूल बनाले और बड़ी बड़ी बातोंका प्रबन्ध थोड़ी सामग्रीसे कर सके । यदि ईरानकी इच्छा हिन्दुस्तान पर आक्रमण करनेकी होती, तो उस समय वह चुपचाप सुस्त क्यों बैठा रहता जब थोड़ेही दिन पहले औरंगजेब अपने भाइयोंसे लड़ रहा था, न कि इस समय औरंगजेबसे रुष्ट होता । उस समय तो दाराशिकोह, शाहजहां, सुल्तानशुजा और कदाचित् काबुलका सूबेदार भी उसकी सहायताके लिये तैयार हुए थे, परन्तु उस पर कुछ असर नहीं हुआ था। उस अवसरपर यदि वह चाहता तो थोड़ीसी सेनासे भारतवर्षके एक बहुत अच्छे भागपर, अर्थात्

काबुलसे लेकर सिन्धुनदके किनारे बल्कि उससे भी आगे तक, अधिकार पा सकता—और इस प्रकार यहांके हरएक झगड़ेमें अपनेको मध्यस्थ बना सकता।

अस्तु, या तो बादशाह ईरानके पत्रहीमें कोई ऐसी बात थी अथवा औरंगजेब उस एलचीहीकी किसी बात या कार्रवाईसे रुष्ट हो गया। इसका यह परिणाम हुआ कि एलचीके देहलीसे बिदा होनेके दोही तीन दिन बाद उसने यह कहा कि जो घोड़े ईरानके बादशाहकी ओरसे आये हैं उनके पांवोंकी नसें एलचीने कटवा दी थीं और इसलिये उसने आज्ञा दी कि वह सीमापर रोक दिया जाय और सब हिन्दुस्तानी लौंडी और गुलाम जो यहांसे वह लेगया है उससे छीनलिये जावें। इन लौंडी गुलामोंकी संख्या बहुत अधिक थी और अकालके कारण उनको उसने बहुतही सस्ते दामोंमें खरीदा था। यह भी कहा जाता है कि उसके नौकर चाकर यहांके बहुतसे बच्चोंको चुरा ले गये थे।

जब तक यह एलची देहलीमें रहा तबतक औरंगजेब अपने आचार व्यवहारमें बहुतही सावधान रहा; उसने वैसा नहीं किया जैसा शाहजहांने प्रसिद्ध शाहअब्बासके एलचीके आनेके समयमें किया था। अर्थात् उस समय शाहजहां या तो अपना बहुत बड़प्पन प्रकट करता या ऐसी हीनता दिखाता जो बादशाहोंके कभी योग्य नहीं। इन बातोंसे शाहअब्बासका एलची उससे बहुत रुष्ट हो गया था।

जब कोई ईरानी हिन्दुस्तानियोंकी हंसी उड़ाना चाहता है, तब नीचे लिखी कहानियां कहता है। प्रथम तो यह कि जब शाहजहां को कोई युक्ति न बन सकी कि ईरानी एलची हिन्दुस्तानी दरबारके अनुसार सलाम करे, तब उसने यह उपाय निकाला कि दरवाजेमें

और दरबारेखासके द्वारोंके फाटक तो बन्द करा दिये और केवल खिड़कियां खुली रहने दीं, ताकि बिना सिर झुकाये कोई अन्दर आही न सके। शाहजहांको आशा थी कि इस उपायसे उसको इस बातके कहनेका अवसर मिलेगा कि ईरानके एलचीको दरबारमें उपस्थित होनेके समय हिन्दुस्तानकी रीतिसे भी अधिक सिर झुकाना पड़ा था, परन्तु वह चतुर ईरानी एलची तुरन्त मतलब समझ गया और शाहजहांकी ओर पीठ करके खिड़कीमें घुसा ! शाहजहां यह देखकर कि इस चालमें भी वही विजयी हुआ बहुत झुंझलाया और घृणापूर्वक एलचीसे बोला "ऐ बदबख्त, क्या तू अपने जैसे गधोंका तबेला समझ कर इसमे दाखिल हुआ है ?" एलचीने उत्तर दिया "बेशक मैं यही समझता था; क्योंकि ऐसे दरवाजोंमेंसे गुजरते हुए कौन शख्स यह ख्याल कर सकता है कि गधोंसे मिलनेके सिवा वह किसी और जगह जाता है !"

दूसरी कहानी यों है कि शाहजहांने ईरानके एलचीकी किसी उद्दण्डतासे रुष्टसे होकर उससे कहा "ऐ बदबख्त, शाहअब्बासके दरबारमें क्या कोई शरीफ आदमी न था कि उसने तुझसे बेवकूफको मेरे पास भेजा ?" एलचीने उत्तर दिया "क्यों नहीं; बहुतसे मुहज्ज़िब ज़ईफ लोग मौजूद है, मगर वह जिस बादशाहके पास भेजना होता है उसीकी लियाकतके मुआफिक एलची भेजा करता है।"

तीसरी कथा इस प्रकार है कि एक दिन शाहजहांने ईरानके एलचीको अपने साथ भोजन करानेके लिये बुलाया और स्वभावानुसार वह उसके छेड़नेके लिये अवसर देखता रहा। निदान जब एलचीने मांसमेंसे हड्डियां निकाल कर चिचोड़नी आरम्भ की तब शाहजहांने चुपकेसे उससे कहा "एलची जी, कुत्ते क्या खायेंगे ?"

उसने जवाब दिया "खिचड़ी" जिसे बादशाह उस समय बड़े चावसे खा रहा था। खिचड़ी वह भोजन है जो चावल और मूंग या उड़दको एकसाथ उबालनेसे बनता है और जिसको हिन्दुस्तानके प्राय: साधारण लोग खाते हैं। फिर बादशाहने पूछा, "हमारे शहर देहलीको (जो उस समय नया तैयार हो रहा था) तुम इस्फहानके मुकाबलेमें कैसा ख्याल करते हो?" एलचीने उच्चस्वरसे उत्तरमें कहा "वल्लाह बिल्लाह, इस्फहान तो आपके शहरकी गर्दको भी नहीं पहुंचता।" इस बातको बादशाहने प्रशंसा समझा, परन्तु एलचीने इसकी हँसी उड़ाई थी, क्योंकि शाहजहानाबादकी गर्द बहुतही कष्ट पहुंचानेवाली होती है।

एक यह कहानी भी भारतके बसनेवाले ईरानी कहा करते थे कि जब शाहजहांने एलचीको इस बात पर विवश किया कि वह ठीक ठीक बतलाये कि ईरान और भारतवर्षके राज्योंकी शक्तिमें परस्पर कितना अन्तर है, तब उसने निवेदन किया कि "हिन्दुस्तान १४ वीं रातके चांदके मुवाफिक है और ईरान महज दूसरी या तीसरी रातके चांदके मुताबिक।" इससे शाहजहां अपना बड़प्पन समझ कर बहुत प्रसन्न हुआ, परन्तु जब उसने इस द्वयर्थक उत्तरका मतलब समझा, जो यह था कि हिन्दुस्तानी राज्यका अन्त अब निकट है और ईरान दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है, तब वह मनमें बहुत कुढ़ा।

तात्पर्य यह कि हिन्दुस्तानमें जो ईरानी रहते हैं वे अपनी खुशमिजाजी और हाजिरजवाबीके विषयमें इसी प्रकार बढ़ बढ़ कर बातें किया करते हैं और ऐसी कहानियां कहनेमें कभी नहीं थकते। परन्तु मेरी रायमें ऐसे लोगोंका दरबारमें होना बहुत अच्छा है जो ऐसी

करने या आक्षेपयुक्त बोलियां बोलनेवाले होनेकी अपेक्षा अदबका ध्यान रखनेवाले और गम्भीर हों।

शाहअब्बासका यह एलची यद्यपि इन गुणोंसे तो रहित थाही परन्तु आश्चर्य इस बातका है कि वह इतना भी नहीं जानता था कि अपने प्राण और मानको बचाये रखना उचित है, नकि एक स्वाधीन-चेता बादशाहको अपने ऊपर व्यर्थ रुष्ट कर लेना। एक घटनासे, जिसमें उसके प्राण जानेमें कोई बात बाकी नही रह गई थी, प्रकट होता है कि ऐसीही नासमझीके कारण उसने शाहजहांको अपनेसे नाराज कर लिया। बादशाहको उससे इतना रंज हो गया था कि साधारण बातचीतमें भी वह उसका तिरस्कार कर बैठता, बलिक यह भी कहा जाता है कि गुप्त रीतिसे उसने यह आज्ञा दे रखी थी कि जब यह एलची दरबारमें आवे तब "आम" और "खास" के रास्तेमें (जो एक लम्बी और तंग गलीके समान है) एक खूनी हाथी उस पर छोड़ दिया जाय। निदान ऐसाही हुआ। यदि यह व्यक्ति कुछ चतुर और साहसी न होता तो अवश्य मारा जाता, परन्तु अपनी पालकीसे वह ऐसी फुर्तीके साथ कूद गया और उसके साथियों ने तथा उसने स्वयं इस प्रकार तीरपर तीर मारेकि हाथी भाग गया और उसके प्राण बचगये।

जिस महीने ईरानका एलची अपने देशको वापस गया दरबार में मुल्लासालहका बड़ा स्वागत सत्कार हुआ। यह बूढ़ा औरंगजेबका गुरु था और बहुत दिनोंसे अपनी जागीरमें जो शाहजहांने उसे दे रखी थी रहता था। जब उसने सुना कि भाइयोंकी पारस्परिक लड़ाई समाप्त हो चुकी और उसके चेले औरंगजेबने अपने उद्योगमें सफलता प्राप्त की, तब वह तुरन्त देहलीमें आया। उसे पूर्ण आशा थी कि

अब वह अमीरोंकी श्रेणीमें हो जायगा । सो उसने दरबारके सभी प्रतिष्ठित और माननीय व्यक्तियोंको अपना पक्षपाती बना लिया यहां तक कि कई लोगों बल्कि रौशनआरा बेगमने भी औरंगजेबको याद दिलाया कि आपका माननीय और आदरणीय विद्वान उस्ताद आपकी ओरसे मान प्रतिष्ठा दिये जानेका अवश्य अधिकारी है । परन्तु तीन महीने तक तो औरंगजेबने यह भी नहीं जानना चाहा कि वह दरबारमें आता भी है या नहीं; परन्तु अन्तमें जब उसको देखते देखते वह तंग आगया तब उसने आज्ञादी कि मुल्लाजी एकान्त समयके दरबारमें उपस्थित हों । ऐसाही हुआ । वहां केवल दानिशमन्दखां और तीन चार दूसरे प्रसिद्ध विद्वान उपस्थित थे । यद्यपि मैं इस अवसर पर नहीं था, परन्तु यदि होता भी तो उस लम्बी चौड़ी बातचीतको याद रखना असम्भव था जो औरंगजेबने मुल्लासालहसे की थी । पर इस विषयमें जो कुछ मैंने दानिशमन्दखांके मुखसे सुना है उसका मतलब नीचे वर्णन करता हूं ।

अर्थात् औरंगजेबने कहा,—" मुल्लाजी, बराहे मेहरबानी यह तो फरमाइये कि आप हमसे चाहते क्या हैं ? क्या आपको यह दावा है कि हम आपको दरबारके अव्वल दर्जेके उमरामें दाखिल करें ? अगर आपकी यही ख्वाहिश है तो पहले इस बातका साबित करना जरूरी है कि आप किसी निशाने-इज्जतके मुस्तहक भी हैं या नहीं । हम इससे इनकार नहीं करते कि अगर आप हमारी तालीम व तरबियत शाइस्ता तौरपर करते तो जरूर किसी ऐसी इज्जतके मुस्तहक होते । आप हमको किसी तरबियतयाफ्ता नौजवान [illegible] का नाम बताइये ताकि हम आपको [illegible] उसकी तालीम व तर्बियत [illegible] दादन [illegible] खिदमतगुजारीका [illegible] मुस्तहक [illegible] है [illegible]

वाप । फरमाइये तो सही कि आपकी तालीमसे कौनसी वाकफ़ीयत मुझे हासिल हुई है? क्योंकि आपने तो मुझको यह बतलाया था कि तमाम फिरंगिस्तान (यूरोप) एक छोटे जजीरेसे ज्यादा नहीं है जिसमें सबसे बड़ा बादशाह औवल शाह पुर्तगाल था, फिर बादशाह हालेण्ड हुआ और उसके बाद शाह-इङ्गलिस्तान । फिरंगिस्तानके और बादशाहों मसलन फ़ान्स और अण्डलसकी बाबत आप यह बताया करते थे कि ये लोग हमारे यहांके छोटे छोटे राजाओंके मुवाफिक हैं, और यह कि हिन्दुस्तानके बादशाहोंमें सिर्फ हुमायूँ अकबर जहांगीर और शाहजहांही ऐसे शाहंशाह हुए है जिनके आगे तमाम दुनियाके बादशाहोंकी शान व शौकत मद्धिम है, और यह कि ईरान उजबक काशगर तातार सयाम चीन और माचीनके बादशाह सलातीन हिन्दके नामसे कांपते है । सुबहान अल्लाह ! आपकी इस जुगराफियादानी और कमाल इल्म तारीखका क्या कहना है ! क्या मुझ जैसे शख्सके उस्तादको लाज़िम न था कि दुनियाकी हरेक कौमके हालातसे मुझे मुत्तिला करता? मसलन् उनकी कूवत-जंगीसे, उनके वसायल आमदनी और तर्ज जंगसे, उनके रस्मोरिवाज मजाहिब और तर्ज़ हुकमरानी और उन खास खास उमूरसे बतफसील और जुदा जुदा मुझको आगाह करता जिनको वे-अपने हकमें ज्यादा मुफीद समझते हैं? मेरे जैसे शख्सके उस्तादको लाजिम था कि वह मुझको इल्मतारीख ऐसी सिलसिलेवार पढ़ाता कि मै हरेक सल्तनतकी जड़ बुनियाद, असबाब तरक्की व तनज्जुली और उनके साथ उन वाक़यात और गलतियोंसे वाकिफ हो जाता जिनके बायससे उनमें ऐसे ऐसे इनकलाबात होते रहे हैं । बनिस्बत इसके कि आप मुझको दुनियाकी कामिल तारीखसे आगाह करते,

आपने तो हमारे उन मशहूर व मारूफ बुजुर्गोंके नाम भी अच्छी तरह नहीं बतलाये जो हमारी सल्तनतके बानी थे । उनकी सवानेउम्री, खास तौरकी लियाकत जिनके बायस वे बड़ी बड़ी फतूहात करनेके काबिल हुए और उन फतूहातसे पहले जो वाकयात जहूरमें आये उनसे भी आपने मुझे नावाकिफ रखा। बावजूद कि बादशाहको अपनी हमसाया कौमोंकी जबानोंसे वाकिफ होना जरूरी है मगर बजाय उनके आपने मुझको अरबी लिखना पढ़ना सिखाया । इस जबानके सीखनेमें मेरी उम्रका एक बड़ा हिस्सा जाया हुआ, मगर आपने तो यह समझा कि एक ऐसी जबान सिखाकर जो बगैर दस बारह बरस मिहनत किये हासिल नहीं हो सकती गोया मुझपर बड़ा भारी एहसान किया। आपको यह सोचना था कि एक शाहजादेको ज्यादातर किन किन इल्मोंके पढ़ानेकी जरूरत है, मगर आपने मुझे ऐसे फनोंकी तालिम दी जो काजियोंके लिये मुफीद हैं और मेरी जवानीके दिन बेफायदा बच्चोंकीसी पढ़ाईमें बरबाद किये।"

जाता है?—क्या नमाज सिर्फ अरबीहीके जरिये अदा हो सकती है और बड़ी बड़ी इल्मोहुनरकी बातोंका जानना क्या अरबीहीके जरिये हो सकता है? आपने हमारे वालिद माजिदको तो यह समझा दिया था कि हम इसे फिलासफी पढ़ाते हैं, मगर मुझे खूब याद है कि बरसों तक ऐसी बेहूदा बातोंसे आप मेरा दिमाग परेशान करते रहे जो पहले तो जल्दी समझहीमें नही आते थे और समझमें आ जानेपर जल्द भूल जाते थे और ऐसे थे जिनकी दुनियावी मुआमिलातमें कुछ जरूरत नही। आपने मेरी उमरके कई साल ऐसीही तालीममें खराब कराये जो आपको पसन्द थी, मगर जब मैं आपकी तालीमसे एलाहिदा हुआ तब किसी बड़े इल्मके जाननेका दावा नही कर सकता था, बजुज इसके कि ऐसी चन्द अजीब व गरीब बातोंसे वाकिफ था जो एक अच्छी समझके नौजवान शख्सकी हिम्मतको पस्त दिमागको खराब और तबीअतको हैरान करदेती हैं। · ·· अगर आप मुझे वे बाते सिखाते जिनसे जेहन इस काबिल हो जाता है कि बगैर सही दलीलके किसी बातको तसलीम नही करता, या आप मुझको वह सबक पढ़ाते जिससे इन्सानकी तबीअत ऐसी हो जाती है कि दुनियाके इनकलाबातका उसपर कुछ भी असर नहीं होता और तरक्की या तनज्जुलीकी हालतमें वह एकहीसा रहता है, या मुझे कुदरती बातोंसे अगाह करते ········ तो मै उससे भी ज्यादा आपका एहसान मानता जितना सिकन्दरने अरस्तूका माना था और अरस्तूसे भी ज्यादा आपको इनाम अता करता। मुल्लाजी, नाकदरदानीका झूठा इलजाम ख्वाह नख्वाह मुझपर न लगाइये। क्या आप यह नहीं जानते थे कि शाहजादोंको इतनी बात तो जरूरही सिखाना चाहिये कि उनको रिआयासे और रिआयाको उनके साथ किस तरहका

बर्ताव करना लाजिम है? और क्या आपको अव्वलही यह ख्याल कर लेना लाजिम न था कि मैं किसी वक्त तख्तो ताजकी खातिर बल्कि अपनी जान बचानेके लिये तलवार पकड़कर अपने भाइयोंसे लड़नेको मजबूर होऊंगा, क्योंकि आप खूब जानते हैं कि सलातीन हिन्दकी औलादको हमेशा ऐसेही मुआमिलात पेश आते रहे हैं। पर, क्या आपने कभी लड़ाईका फन, या किसी शहरका मुहासरा करना, या फौजकी सफआराईका तरीका मुझे सिखाया था? यह मेरी खुशकिस्मती थी कि मैंने इन मुआमिलातमें ऐसे लोगोंसे कुछ सीख लिया था जो आपसे जियादा अक्लमन्द थे। पर, अपने गांवको चले जाइये और अबसे कोई न जाने कि आप कौन हैं और आपका क्या हाल है।'

इन्हीं दिनोंमें एक ऐसी घटना हो गई जो ज्योतिषियोंके लिये हानिकारक थी। बात यह है कि एशियाके अधिकांश लोग ज्योतिषके ऐसे विश्वासी हैं कि उनकी समझमें संसारकी ऐसी कोई बात नहीं है जो नक्षत्रोंकी चालपर निर्भर न करती हो और इसी कारणसे प्रत्येक काममें ज्योतिषियोंसे सलाह लिया करते हैं। यहां तक कि ठीक लड़ाईके समय भी जब कि दोनों ओरके सिपाही पंक्तिबद्ध खड़े हो गये हों, कोई सेनापति अपने ज्योतिषीसे महूर्त निकलवाये बिना

लोगोंको ऐसे कष्टमें डाल रखा है और इसके ऐसे ऐसे बुरे परिणाम हो जाते हैं कि मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि अबतक लोग कैसे पहलेहीकी तरह इस विषयमें विश्वासी बने हुए हैं; क्योंकि सरकारी वा गैरसरकारी, प्रकट वा अप्रकट, कैसाही प्रस्ताव हो उससे ज्योतिषीको सूचित करना आवश्यक होता है।

वह घटना जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूं यह है कि खास बादशाही मुसलमान ज्योतिषी (नजूमी) अकस्मात् जलमें गिर पड़ा और डूबकर मर गया। इस शोकजनक घटनासे दरबारमें बड़ा विस्मय फैला और इन नजूमियोंकी प्रसिद्धिमें जोकि भविष्यकी बातें जाननेवाले माने जाते हैं बहुत धक्का लगा। यह व्यक्ति सदैव बादशाह और उसके दरबारियोंके लिये मुहूर्त निकाला करता था; अतएव उसके इस प्रकार प्राण दे देनेसे लोगोंको बहुत आश्चर्य हुआ; क्योंकि एक ऐसा अभ्यस्त विद्वान् जो बरसों तक दूसरोंके लिये भविष्यमें होनेवाली अच्छी अच्छी बातें बतलाता हो उसी आपत्तिसे जो स्वयं उसपर आनेवाली थी परिचित न हो सका! इसपर लोग यह कहने लगे कि यूरोपमें जहां विद्याकी बहुत चर्चा है ज्योतिषीयों और भविष्यवादियोंको लोग धोखेबाज और झूठा समझते हैं और इस विद्यापर विश्वास नहीं करते, वरन् यह जानते हैं कि धूर्त्त लोगोंने बड़े आदमियोंके दरबार तक पहुँचने और उनको अपना ग्राहक बनानेके लिये यह ढंग रच रखा है।

सो लोगोंकी ऐसी समझ विशेष कर निम्नलिखित बातसे जिसकी बहुत चर्चा थी नजूमी अधिक अप्रसन्न हुए। वह बात यह है कि ईरानके प्रसिद्ध बादशाह शाह अब्बासने कहीं अपने महलमें बगीचा लगानेकी आज्ञा दी थी और इस कामके लिये वह दिन भी नियत कर चुका

था। बादशाही बागबान भी मेवेके कुछ वृक्षोंके लिये एक उचित स्थान चुन चुका था; परन्तु बादशाही ज्योतिषीने नाक भौं चढ़ाकर कह दिया कि यदि सायत निकाले बिना वृक्ष लगा दिये जायेंगे तो कदापि नहीं फूलें फलेंगे। अतएव शाह अब्बासने जो उसकी बात मानकर सायत निकालनेको कहा तो उसने कुछ पाँसा इत्यादि डाल और अपनी पुस्तकके पृष्ठ उलट पुलटकर हिसाब लगाया और कहा कि नक्षत्रोंके अमुक अमुक स्थानोंमें होनेके कारण उचित जान पड़ता है कि दूसरी घड़ीके बीतनेके पहलेही वृक्ष लगा दिये जायं। बादशाही बागबान जो नजूमियों या ज्योतिषियोंसे कुछ पूछना व्यर्थ समझता था, इस समय उपस्थित न था, अतः इसके बिना कि उसके आनेकी प्रतीक्षाकी जाय गड्ढे खुदवाये गये और बादशाहने अपने हाथोंसे वृक्षोंको स्थान स्थानमें लगा दिया, ताकि भविष्यमें पूर्वपुरुषोंकी रीतिपर कहा जाय कि ये वृक्ष स्वयं शाह अब्बासके लगाये हुए हैं। इधर बागबानने जो अपने समय पर तीसरे पहर आकर वृक्षोंको लगा हुआ देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और यह विचारकर कि वे उस क्रमसे नहीं लगाये जो उसने विचारा था, जैसे सेबकी जगह पीले आलू और बादामके स्थान में नाशपातीके पौधे लगाये हुए थे, तो उसने उनको उखाड़ और उनकी जड़ोंपर मट्टी डालकर रख दिया। रात भर वृक्ष इसी प्रकार रखे रहे। ज्योतिषीने भी आकर किसीसे यह बात तुरन्त कहदी। इसका यह परिणाम हुआ कि बादशाहके पास जाकर बागबानको इस कार्रवाईके लिये वह बहुत बुरा भला कहने लगा। अपराधी बागबान उसी समय बुलाया गया। बादशाहने अत्यन्त क्रोधके साथ उससे कहा' तूने यह क्या हरकत की कि जिन पौधों को हमने नेक सायत निकलवाकर स्वयं अपने हाथोंसे लगाया था

उनको उखाड़ डाला। अब क्या उम्मीद है कि अब इस बागका कोई दरख्त फल लायेगा· क्योंकि जो सायत नेक थी वह गुजर गई और फिर नहीं आ सकती।'' बागबान एक स्पष्टवादी गँवार मुसलमान था; नजूमीकी ओर तिरछी दृष्टिसे देखकर बोला "वाह. क्या अच्छी सायत निकाली ! अरे कमबख्त बदशगुनी, जरा ख्याल तो कर कि बस यही तेरा नजूम है कि जो दरख्त तेरे कहनेसे दोपहर को लगाये गये वे शामसे पहलेही उखड़ गये !'' शाह अब्बास यह आकस्मिक मजेदार बात सुनकर एकदम हँसपड़ा और ज्योतिषीकी ओर पीठ करके वहांसे चला गया।

अब दो कहानियां मैं और कहता हूं जो यद्यपि शाहजहांके समय की हैं तथापि यह प्रकट करती हैं कि जब कोई बादशाही कर्मचारी मरता है तब सरकार उसका माल असबाब जब्त करलेती है। उनमेंसे एक कहानी तो यह है कि दरबारियोंमें नेकनामखां नामक एक प्रसिद्ध अमीर था। चालीस पचास वर्षके समयमें बड़े बड़े पदोंपर नियुक्त होकर उसने बहुत सम्पत्ति इकट्ठी करली थी। ऊपर लिखी अत्याचारपूर्ण प्रथाको वह सदा घृणाकी दृष्टिसे देखता था; क्योंकि इस प्रथाके कारण बड़े बड़े अमीरोंके घरोंकी स्त्रियां सहसा ऐसी दरिद्रा और दयाकी पात्री हो जाती हैं कि अपना पेटपालन करनेके लिये उनको बादशाहसे थोड़ी थोड़ी बातोंकी प्रार्थना करनी पड़ती है और उनके पुत्र किसी अमीरकी अधीनतामें साधारण सिपाहियोंमें नौकरी करने के लिये विवश होते हैं। अतएव जब नेकनामखांका अन्तिम समय निकट आया तब चुपचाप उससे अपने सब रुपये पैसेतो निस्सहाया विधवा स्त्रियों और अमीरोंके ऐसे लड़कोंको जो बेचारे सवारोंमें नौकरी करके पेटपालन करते थे बाँट दिया और खाली बक्सोंको

लोहेके टुकड़ों, हड्डियों, पुरानी जूतियों और फटे पुराने कपड़ोंसे भरकर मुहरोंसे भलीभांति बन्द करा दिया । दानपत्रमें लिखा कि इनमें जो माल असबाब बन्द है वह बादशाह सलामतका है, मेरी मृत्युके पश्चात् सावधानीसे उनकी सेवामें भेज दिया जाय ।

नेकनामखांकी मृत्युके बाद जब ये बकस सरकारमें पहुंचे तब बादशाह दरबारमें ही उपस्थित था, इनको देखकर उसको भी लालच आया और भरे दरबारमें उसने इनके खोले जानेकी आज्ञा दी । जब ये बकस खुले तब उसे ऐसा दुःख हुआ और ऐसी निराशा हुई कि जिसका वर्णन करना अनावश्यक है । अत्यन्त लज्जित होकर वह तुरन्त दरबारसे उठकर चला गया ।

दूसरी घटना यों है कि नेकनामखांके मरनेके कई वर्ष बाद एक धनाढ्य बनियां जो सदासे बादशाहका कर्मचारी था और अपने देशकी रीतिके अनुसार बहुत सूद खानेवाला था, मर गया । उसके पुत्रने अपनी मांसे कुछ रुपयोंके वास्ते लड़ना झगड़ना आरम्भ किया परन्तु माताने उसका अपव्यय और बदचालियां देखकर उसे रुपये देनेसे इनकार किया, तब उस पुत्रने आलमगीरके पास जाकर कहा कि उसका पिता दो लाख क्राउन (अर्थात पांच लाख रुपये) छोड़ ग

नहीं, चोवदारोंको झिटककर बोली कि "हटो, मैं अभी बादशाहसे कुछ निवेदन करना चाहती हूं।" इसपर बादशाह बोला कि अच्छा, जो यह कहना चाहती है कहने दो। बुढ़िया बोली "सरकार, मेरा पुत्र जो अपने पिताके मालका दावा करता है सो कुछ अनुचित नहीं है, क्योंकि वह पुत्र और उत्तराधिकारी है, परन्तु मैं हाथ जोड़कर निवेदन करती हूं कि सरकारका मेरे पतिके साथ क्या सम्बन्ध है जो सरकार एक लाख रुपया मांगते हैं?" शाहजहां यह छोटा प्रश्न सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और यह सोचकर कि हिन्दुस्तानका बादशाह होकर वह एक बनियेका सम्बन्धी कहा जायगा उसे बड़ी हँसी आई। कई बार अट्टहास करनेके बाद उसने आज्ञा दी कि अच्छा इसे जाने दो और इसका माल असबाब कोई न लो।

औरंगजेब और उसके भाइयोंकी परस्परिक लड़ाई जब सन् १६६० ई० में समाप्त हो चुकी उस समयसे लेकर कोई छ वर्षों तक जब कि मैं भारतवर्षसे विदा हुआ जो जो घटनाएँ ध्यान देने योग्य हुईं उन सबको मैं यहां लिखना नहीं चाहता, यद्यपि इसमें सन्देह नहीं कि उनमेंसे कुछके लिखनेसे मेरा यह अभिप्राय सिद्ध हो जायगा कि मुगलों और भारतवासियोंकी रीति नीति और विचारकी बातें इस पुस्तकके पाठकोंको विदित हो जायँ, तथापि उन वृत्तान्तों को कहीं मैं पूर्ण रीतिसे कभी फिर लिखूंगा। इस जगह केवल उन्हीं लोगोंका हाल लिखकर सन्तोष करता हूं जिनके नाम इस पुस्तकमें आ चुके हैं। पहले शाहजहांके वृत्तान्तसे यह विषय आरम्भ करता हूं।

औरंगजेब और शाहजहां-यद्यपि औरंगजेबने शाहजहां को आगरेके किलेमें बड़ी सावधानीसे कैद कर रखा था और किसी ऐसे

प्रबन्धमें कभी नहीं चूकता था जिसके बिना उसके कैदसे निकल जानेकी कुछ शंका होः परन्तु और सब प्रकारसे उसके सन्मान और अदबका बर्ताव किया जाता था। शाहजहांको इन बादशाही महलों में रहनेकी भी अनुमति दी गई थी जिनमें वह पहले रहा करता था और उसकी पुत्री बेगमसाहब भी उससे मिलने पाती थी। महलकी इतर स्त्रियां भी जैसे रखेलोंकी और नाचने गानेवाली स्त्रियां आदि सब उपस्थित रहती थीं और ऐसे विषयोंमें उसकी कोई इच्छा रोकी नहीं जाती थी। अब शाहजहां बड़ा पवित्र और ईश्वरभक्त बन गया था, अतएव कई मुल्लाओंको भी उसके पास जाकर उसे धर्म पुस्तकें पढ़कर सुनानेकी परवानगी थी। घोड़े, बाज आदि कई प्रकारके शिकारी जानवरोंके मंगाने और हरिनों तथा मेढ़ों आदिकी लड़ाईका तमाशा देखनेकी भी अनुमति थी। तात्पर्य यह कि औरंगज़ेब का बर्ताव शाहजहांके साथ दया और श्रद्धासे खाली नहीं था और जहां तक बनता था वह अपने वृद्ध पिताका हर प्रकारसे सत्कार करता था। वह उसके पास अधिकतासे भेटकी वस्तुएं भेजता और राजनीतिक विषयोंमें उसकी सलाह बहुत उत्तम और उपयोगी समझ कर ग्रहण करता। उसके पत्रोंमें, जो वह समय समय पर लिखता

अस्तु, यद्यपि औरंगजेब कई बातोंमे अनेक बार क्षमा मांग चुका था और शाहजहां उस बातको स्वीकार नही करता था, परन्तु मेरे इस कथनसे यह न समझना चाहिये कि शाहजहांकी हरएक बात वह विना कुछ उज़्र किये मान लेता था; क्योंकि मुझे औरंगजेबके एक पत्र की लिखावटके ढंगसे विदित हुआ कि जब कभी वृद्ध बादशाह आज्ञाकी रीति पर उसको कुछ लिखता तब वह उसके उत्तरमें साहसके साथ अपनीही बात पर दृढ़ रहनेका ढंग दिखाता । मैं-ने उस पत्रका कुछ अंश पढ़ा है जो यह है,—

"क्या हुज़ूर यह चाहते हैं कि मै सख्तीके साथ पुरानी रस्मोंका पाबन्द रहूं और जो कोई नौकर चाकर मर जाय उसकी जा-यदाद जब्त करलूं ? शाहाने मुगलियाका यह दस्तूर रहा है कि अपने किसी अमीर या दौलतमंद महाजनके मरनेके बाद बल्कि बाज औकात तो दम निकल जानेसे भी पहले, उसके तमाम मालो असबाबका पता लगा लेते थे और जबतक उसके नौकर चाकर कुल मालो दौलत बल्कि अदना अदना जेवर भी न बतला दें तब तक उनपर मारपीट होती और वे कैद किये जाते । गोकि यह दस्तूर बेशक फायदामन्द है मगर जो नाइन्साफी और बेरहमी इसमें है उससे कौन इन्कार कर सकता है ? अगर हरएक अमीर नेकनाम खां जैसा मामला करे या कोई औरत उस बेवा महाजनीकी तरह अपने मालको पोशीदा करले तो उसके हक बजानिब है या नहीं । मैं हुजूरकी खफगीसे बहुत डरता हूं और यह नहीं चाहता कि हुजूर मेरे तौरो तरीककी निस्बत गलतफहमी फरमावें । हुजूर फर-माते है कि तख्तनशीन होनेने मुझे खुदराय और मगरूर बना दिया लेकिन यह खयाल गलत है । ४० बरससे जियादाके तजरबेसे हुजूर

खुदही खयाल फरमा सकते हैं कि ताजशाही किस कदर गिरांवार चीज है और वादशाह जब दरवारमें उठता है तब किस कदर फिक्रें उसके दिलको गमगीन और दर्दमन्द वनाये रहती हैं । हमारे जद्दे अमजद जलालुद्दीन मुहम्मद अकवरने इसी गरजसे कि उनकी औलाद दानाई नर्मी और तमीजके साथ सल्तनत करे अपने अहले सल्तनतकी तारीखमें अमीर तैमूरका एक जिक्र वतौर नमूना लिख कर अपनी औलादको उसकी तरफ तवज्जह दिलाई थी। वह तजकिरा यों है,—' जब तुर्की सुल्तान वैजेद गिरफ्तार होकर अमीर तैमूरके हुजूरमें लाया गया और अमीर वहुत गौरके साथ उस मगरूर कैदीकी तरफ देख कर हँस दिया तव वैजेदने इस हरकतसे नाराज होकर अमीरसे कहा कि तुमको आपनी फतहमन्दी पर इस कदर इतराना न चाहिये । दौलत और इज्ज़त वख्शना या ले लेना खुदाके हाथमें है। मुमकिन है कि जिस तरह तुम आज यह वात करते हो कल मेरी तरह पकड़े जाओ। अमीरने जवाव दियाकि दुनिया और उसके जाहो दौलतकी वेसवातीसे मैं खूव वाकिफ हूं और खुदा न करे कि मैं किसी मगलूव दुश्मनकी हँसी उड़ाऊं । मेरी हँसीका सवव यह न था कि तुम्हारा दिल दुखाऊं, वल्कि मुझे तुम्हें देखकर अपनी और तुम्हारी वदसूरतीके खयालने वेइख्तियार हँसा दिया; क्योंकि तुम तो काने हो और मैं लँगड़ा! मेरे दिलमें यह वात गुजरी कि ताज सल्तनत ऐसी क्या चीज है जिसको पाकर वादशाह अपनी हस्तीको भूल जाते हैं, हालां कि खुदाएताला उसको अपने ऐसे वन्दोंको अता करता है जो काने और लँगड़े हों।'

"मालूम होता है कि हुजूर यह खयाल फरमाते हैं कि मेरी मस-रुफियत वनिस्वत उन उमूरके जिनको मैं मुल्कदारी और सल्तनत

के अन्दरूनी इन्तजामके लिये निहायत जरूरी जानता हूं नई नई फतूहात और मुल्कगीरीकी जानिब निहायत होनी चाहिये। इस अम्रसे मैं हरगिज इन्कार नहीं कर सकता कि एक बड़े शाहंशाह का अहदे दौलत नई नई फतूहातकी वजहसे मुमताज होता और तरक्की करता है और अगर मैं ऐसा न करूं तो गोया अपने बुजुर्ग अमीर तैमूरकी नस्लको धब्बा लगाऊंगा, मगर बहरहाल यह बात करीन इन्साफ नहीं कि मुझे काहिली और खामोश बैठे रहनेका इलजाम दिया जावे। क्योंकि बंगाले और दकनमें मेरी फौजोंकी मसरूफियतको तो हुजूर अवस खयाल फरमाही नहीं सकते और मैं हुजूरको यह भी याद दिलाता हूं कि बड़ेसे बड़ा मुल्कगीर भी हमेशः सबसे बड़ा बादशाह नहीं हुआ। देखा जाता है कि कभी कभी दुनियाके अकसर हिस्से बिल्कुल वहशी और नातराबियत-याफ्ता कौमोंने फतह कर लिये हैं और निहायत वसीय सल्तनतें थोड़ेही अर्सेमें बिल्कुल टुकड़े टुकड़े हो गई हैं। पस, हकीकतमें सबसे बड़ा बादशाह वही है जो रिआयापरवरी और अदल व इन्साफ हीको अपना हासिल अम्र जाने।"

इस पत्रके शेष भागके पढ़नेका मुझे अवसर नहीं दिया गया। अब मैं कुछ बातें उस प्रसिद्ध व्यक्तिके विषयमें लिखना चाहता हूं जिसको मीरजुमला कहते हैं और उन बातोंका वर्णन करना चाहता हूं जिनसे औरंगजेब और उसके भाइयोंकी पारस्परिक लड़ाईके बाद उसका सम्बन्ध रहा—और यह भी कि इस प्रसिद्ध व्यक्तिका अन्त किस प्रकार हुआ।

मीरजुमला—बङ्गदेश पर अधिकार प्राप्त करनेमें मीरजुमलाने

शुजाके साथ वैसी निर्दयता और बेईमानी नहीं की जैसी जीवन खांने दाराके साथ वा श्रीनगरके राजाने सुलेमान शिकोहके साथ की थी; वरन् एक चतुर सेनापतिकी भांति उसने उस प्रान्तको अपने अधीन किया और इसके बिना कि किसी धोखे या कपट-व्यवहारसे शुजाको कैद करे केवल उसके राज्य छोड़कर समुद्रकी ओर भाग जानेके लिये विवश होने परही सन्तोष किया। सुल्तान शुजाकी लड़ाईका अन्त होनेके बाद मीरजुमलाने एक खोजेको एक पत्र देकर औरंगजेबके पास भेजा जिसमें लिखा था कि उसके बाल बच्चोंको उसके पास चले जानेकी अनुमति दी जावे। उक्त पत्रका एक अंश यों है—"लड़ाई वगैरो खूबी खतम हो चुकी और चूंकि मैं जईफ और बुड्ढाहो गया हूं हुजूरकी नवाजिशसे मुझे उम्मीद है कि इससे ज्यादा अहलो अयालसे मेरी जुदाईको पसन्द न फरमाएंगे।"—परन्तु औरंगजेब इस चतुर व्यक्तिका मतलब तुरन्त समझ गया; क्योंकि वह जानता था कि यदि उसके पुत्र मुहम्मद अमीनखांको बंगालमें भेज दिया जावेगा तो मीरजुमला अवश्यही उस प्रान्तका स्वतन्त्र अधिकारी बननेका विचार कर बैठेगा और सम्भव है कि इस विचित्र व्यक्तिका इतनेसे भी सन्तोष न हो। मीरजुमला चतुर, सावधान, प्रतिष्ठित, साहसी, वीर और धैर्यवान् होनेके अतिरिक्त इस समय एक विजय पाई हुई सेनाका अफसर था और उसके सैनिक उसे बहुत मानते तथा उससे बड़ी प्रीति करते थे। उसका रोब भी बहुत था। भारतवर्षका सबसे बड़ा प्रान्त उसके अधीन था और गोलकुण्डेमें जो घटना हुई थी उससे प्रमाणित हो चुका था कि वह कैसी तबीयतका आदमी है; अतएव ऐसे व्यक्तिकी प्रार्थना निस्सन्देह भयानक परिणाम लानेवाली होती। परन्तु औरंगजेब इस

अवसर पर भी अपनी अभ्यस्त बुद्धिमानी और चतुराईको काममें लाया: अर्थात् उसकी स्त्री पौत्र और पौत्रियोंको तो उसने भेज दिया और उसे "अमीरुलउमरा" की पदवी दी जो एक ऐसी पदवी है जिससे बढ़ कर हिन्दुस्तानका बादशाह दूसरी कोई पदवी नहीं दे सकता; परन्तु उसके पुत्र मुहम्मद अमीनखांके लिये उसने ऐसा प्रबन्ध किया कि उसे दूसरे या तीसरे दर्जेके "मीरबख्शी" की पदवी मिली और उसे सदैव दरबारमें उपस्थित रहना पड़ता। बादशाहसे उसका पृथक् होना यद्यपि असम्भव नहीं तथापि कठिन अवश्य था। इसके अतिरिक्त मीरजुमालाको उसने बंगालका स्थायी सूबेदार बना दिया।

मीरजुमला जब सफलमनोरथ नहीं हुआ तब उसने सोचा कि यदि अब पुत्रके बुलानेके लिये अलग प्रार्थना की जायगी तो बादशाह अवश्य नाराज हो जायगा; अतएव उसने भी यही उचित जाना कि इन सरकारी इनामोंके लिये धन्यवाद देकर चुप हो रहा जाय। इन घटनाओंको जब एक वर्ष हो चुका तब औरंगजेबने इस बातका मनमें ठीक निश्चय करके कि एक वीर सिपाही अधिक समय तक चुपचाप बैठा नहीं रह सकता और यदि उसे किसी अच्छे के साथ लड़ाई भिड़ाईमें लगाये न रखा जायगा तो वह स्वयं अपनेही राज्यके भीतर कोई न कोई बखेड़ा खड़ा करदेगा, मीरजुमलाको आसामके राजा पर जो एक बड़ा ज़बरदस्त और धनी राजा था और जिसका राज्य ढाकेके उत्तर ओर बंगालकी खाड़ीके किनारे पर था चढ़ाईकी तैयारी करनेकी आज्ञा दी।

आसाम पर चढ़ाई—मीरजुमला स्वयं इस लड़ाईकी चिन्ता

में था, क्योंकि उसको आशा थी कि इस प्रकार चीनकी सीमा तक देश जीतनेसे बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त होगी। सो जब औरंगजेबका पत्र-वाहक वहां पहुंचा तब उसने मीरजुमलाको इस लड़ाई पर जानेके लिये पहीलेहीसे प्रस्तुत पाया। तुरन्त वीर सिपाहियोंके एक दलने नावोंमें उस नदीके मार्गसे कूच किया जो आसामसे निकली है और उत्तर तथा पूर्व ओरसे होकर एक दुर्गपर जिसको आजू कहते हैं और जो ढाकेसे लगभग३००मीलके अन्तर पर है तथा जिसको आसामके राजाने बंगालके एक सूबेदारसे पहले छीन लिया था वह जा पहुंचा। वहां पहुंचने पर दसही वार दिनके अन्दर दुर्ग जीत लिया गया। तब मीरजुमला चमदाराकी ओरसे जो कि आसामका द्वार समझा जाता है बढ़ा और अट्ठाईस दिनकी लम्बी यात्रा करके वहां जा पहुंचा। वहां लड़ाई हुई और राजा हारकर करगांवकी ओर जोकि आसामकी राजधानी और चमदारासे १२० मीलके अन्तर पर है भाग गया; परन्तु मीरजुमलाने उसका पीछा किया और वहां भी उसे दम लेने नहीं दिया। बिना इसके कि जमकर लड़े अन्तमें लाचार होकर राजा पीछेको हटता हटता लासाकी पहाड़ियों में जा घुसा। करगांव-की जीतमें सेनाको बहुतसा धन प्राप्त हुआ। (करगांव एक बड़ा और सुन्दर नगर है और व्यापारकी बड़ी मण्डी है: यहांकी स्त्रियां सुन्दरताके लिये प्रसिद्ध हैं)

अब यहांसे सिपाही आगे न बढ़ सके क्योंकि वृष्टि समयसे कुछ पहलेही आरम्भ हो गई थी। उस देशमें वर्षा इस जोरोंकी होती है कि गांवोंको छोड़ जो कि छांटकर ऊंचे स्थानोंमें बसाये जाते हैं सब जगह पानीही पानी हो जाता है। इधर राजाने अवसर पाकर सेनाके आसपासके स्थानोंको गाय भैंस बकरी तथा अन्न आदिसे खाली

कर डाला था। इस कारण यद्यपि सेनाने बहुतसा धन इकट्ठा कर लिया था परन्तु रसदकी कमी होनेके सबबसे बरसात समाप्त न होने तक वह बड़े कष्टमें रही। अब मीरजुमला न आगे बढ़ सकता था न पीछे हट सकता था.क्योंकि सामने जो पहाड़ थे वे बहुतही दुर्गम थे और पीछे हटना इस कारण कठिन था कि पानी और दलदलकी अधिकताके अतिरिक्त राजाने चतुराई करके वह स्थान भी तोड़वा डाला था जिसपर से चमदाराका रास्ता था। अतएव बरसात भर लाचार होकर उसे वहीं रहना पड़ा। यदि यह सेना किसी दूसरे छोटी बुद्धिके सरदारके अधीन होती तो बंगालको वापस लौटना कठिन था, क्योंकि खाने पीनेकी चीज़ें बहुतही तंगीसे मिलती थीं और रास्तोंमें इतना अधिक पानी एकत्र था कि सैनिक शीघ्र शीघ्र रास्ता तै नहीं कर सकते थे। वे इतने सुस्त होगये थे कि मीरजुमलाको आसाम पर विजय प्राप्त करनेका विचार लाचार होकर छोड़ना पड़ा। राजा चुपचाप पीछे लगा चला आता था; परन्तु मीरजुमला अपने दलको इस ढंगसे पीछे हटा लाया कि उसके कौशलकी और भी धूम पड़ गई और धन सम्पत्ति भी वह अपने साथ बहुत लाया। लौटनेके समय आजू दुर्गको खूब दृढ़ करके योग्य सैनिकोंका एक दल वहां वह इसलिये छोड़ता आया कि आगामी वर्षके प्रारम्भमें बरसातसे पहले पहले फिर चढ़ाई की जाय। ज्योंही वह बंगालमें पहुंचा त्योंही उसके दलमें बदहजमी फैली जिससे वह भी मर गया। जैसा कि होना सम्भव था उसके मरनेमें चारो ओर एक विचित्र धूमधाम फैल गई। बहुत से लोगोंका कथन है कि वास्तवमें औरंगजेब बंगालका बादशाह अब हुआ। अस्तु यद्यपि औरंगजेबके साथ मीरजुमलाने जो उपकार किये थे उसके लिये वह कृतज्ञ था, परन्तु उसके मरनेसे वह कदाचित् इस

कारण दुःखित नहीं हुआ कि उसकी ओरसे उसे सदैव सशंक रहना पड़ता था। इसीलिये इस मृत व्यक्तिके पुत्र मुहम्मद अमीनखांको दरबार में बुलाकर उसने उससे कहा— "अफसोस है कि तुम्हारा शफीक बाप और हमारा निहायत मजबूत और खौफनाक दोस्त चल बसा।" परन्तु फिर भी अमीनखांके साथ उसने अत्यन्त कृपा और उदारता का वर्ताव किया और उसको विश्वास दिलाया कि अपने बापकी जगह अब हमको समझो। मीरजुमलाकी सम्पत्ति भी उसके मरने के बाद अपने अधिकारमें न करके उसने उसके पुत्रके ही पास रहने दी और उसकी तनख्वाह भी बन्द नहीं कराई, बल्कि स्थायी रूपमें उसे मीरबख्शीके पद पर नियुक्त कर दिया। इतनाही नहीं, यह और भी विशेषता की कि उसे एक सहस्र रुपया अधिक मासिक वेतन देना आरम्भ किया।

शाइस्ताखां—अब मैं थोड़ासा हाल औरंगजेबके मामा शाइस्ताखांका लिखता हूं जिसका कुछ वृतान्त पहले भी लिखा जा चुका है। इसी व्यक्तिकी चतुराई और कार्यकुशलताने इसके भान्जे औरंगजेबको बड़े ऊंचे पदपर पहुंचाया। आप पढ़ चुके हैं कि खजुआकी लड़ाईसे पहले जब कि औरंगजेब राजधानीसे शुजाके विरुद्ध लड़ने गया, शाइस्ताखां आगरेका सूबेदार नियुक्त हो चुका था। इसके बाद वह दक्षिणका सूबेदार नियुक्त हुआ और अब मीरजुमलाकी मृत्युके बाद बंगालका प्रबन्धकर्त्ता और अमीरुलउमराकी पदवी के साथ वहांकी सेनाओंकी अध्यक्षता भी इसीको मिली।

शाइस्ताखांने बंगाल पहुंचतेही जिस कामका भार अपने ऊपर लिया उसका वर्णन करना आवश्यक है— विशेषकर इसलिये कि

स्थानोंमें ले जाकर प्रतिज्ञानुसार पुर्त्तगीजोंके आनेकी बाट देखा करते थे जो उन सभोंको बहुतही थोड़े मूल्यपर खरीद ले जाते थे। बड़े दुःखकी बात है कि पुर्तगीजोंकी अवनतिके बाद युरोपकी दूसरी जातियोंने भी चटगांवके इन लुटेरोंके साथ जिनको घमण्ड है कि वे एक वर्षमें इतने हिन्दुओंको ईसाई बना लेते हैं जितनोंको पादरी सारे भारतवर्षमें १० वर्षमें नहीं बना सकते यह अनुचित व्यापार जारी रखा। खृीष्ट धर्मके नियमोंको इस प्रकार बराबर तोड़ते रहना और खुलाखुली धर्मपुस्तकोंकी आज्ञाके विरुद्ध काम करना!—वाह! क्याही अच्छा ढंग हमारे धर्मके प्रचारित करनेका इन दुष्टोंने निकाला है!

ये लोग हुगलीमें जहांगीरकी कृपासे बसे थे जो ईसाइयोंसे बिल्कुल बुरा नहीं मानता था और उनके वाणिज्य व्यवसायसे बहुत लाभ उठानेकी आशा रखता था। इसके अतिरिक्त इन लोगोंने उससे यह प्रतिज्ञा भी की थी कि हम बंगालकी खाड़ीको समुद्री डाकुओंसे सुरक्षित रखेंगे। परन्तु शाहजहांने जो अपने पिताकी अपेक्षा मुसल्मानी धर्म पर अधिक श्रद्धा रखता था इस कारण उनको अधिक दण्ड दिया कि वे न केवल अराकानके डाकुओंको साहस दिलाते थे वरन् स्वयं बहुतसे गुलाम जो बादशाही प्रजा थे अपने पास रखकर उनके छोड़नेसे इनकार करते थे। अतएव उसने प्रथम तो धमका फुसला कर बहुतसा रुपया वसूल किया; इसके अतिरिक्त बादशाहकी अन्तिम आज्ञाके अनुसार जो जो कार्य उनसे कराने थे जब उन्होंने उनको करना स्वीकार किया तब अन्तमें घेरा करके नगर पर अधिकार कर लिया और प्रायः सबको गुलाम बनाकर आगरे भेज दिया। निकट समयके इतिहासोंमें इन लोगोंके

गंगाकी अनगिनत शाखाओं तथा घाटियोंमें जा घुसते, बंगालके निचले भागके टापुओंको नष्ट भ्रष्ट कर डालते; प्रायः सौ डेढ़सौ मीलतक देशके भीतर चले जाते और जहां कहीं बाजार लगा होता या शादी ब्याहकी धूम होती या कोई आनन्द-महोत्सव होता वहां सहसा जा पड़ते, लोगोंको पकड़ ले जाते, अभागे कैदियों को गुलाम बनाते और जो चीज उठाई न जाती उसको जला डालते। यह इन्हीकी सदैव होनेवाली लूट मारका कारण है कि हम गंगा जीके मुख पर ऐसे अच्छे टापुओंको जो किसी समय खूब बसे बसाये और समृद्ध थे सुनसान तथा उजड़ा हुआ देखते हैं। सिवा शेरों और जंगली जानवरोंके अब वहां कोई नहीं रहता। इन कैदियोंके साथ वे बड़ी निर्दयताका व्यवहार करते थे और उनको यहां तक साहस होगया था कि बुड्ढे आदमियोंको निकम्मा तथा व्यर्थ समझ कर उन्हीं स्थानोंमें बेचनेके लिये ले जाते थे जहांसे उनको पकड़ कर लाते थे! प्राय देखा जाता था कि वे युवा पुरुष जो कल भाग्यवश भागकर उनके हाथसे बच गये थे आज अपने बुड्ढे बापको खरीदकर उनके पञ्जेसे छुड़ानेका यत्न कर रहे हैं। युवा कैदियोंकी यह दशा होती थी कि या तो उनको लूट मारका काम सिखाया जाता था—यहांतक कि वे स्वयं खून खराबी करनेके इच्छुक हो जाते थे—या गोआ सिलोन सेण्ट टामसके पुर्तगीजोंके हाथ वे बेच डाले जाते थे वरन् स्वयं बंगदेशके रहनेवाले पुर्तगीज भी इन बेचारोंके खरीद लेनेमें कुछ आगा पीछा नहीं करते थे। यह भयानक व्यापार गालिस तक होता था जो केप डाल्पालमस के निकट एक टापू है। इन डकैतोंने यह नियम कर रखा था कि येचारोंमेय गुलामोंकी नावोंको नाव भरकर भिन्न भिन्न

विचारसे जिसपर वे जापान, पेगू, एथिओपिया तथा अन्याय देशों में चले थे इस प्रार्थनाके स्वीकार करनेमें कोई नई आश्चर्यप्रद बात नही थी, परन्तु कहा जाता है कि गोवाके अधिकारीने डाह और घमण्डके मारे इसे अस्वीकार किया। उसको यह बात अनुचित मालूम हुई कि पुर्तगालका बादशाह ऐसे बड़े मामलेमें एक ऐसे छोटे मनुष्यका कृतज्ञ बने। वास्तविक बात यह है कि हिन्दुस्तानमें पुर्तगीजोंकी अवनति होनेका कारण इन्हीकी बुरी कारवाइयां थीं और जैसा कि वे स्वयं स्वीकार करते है इसको ईश्वरके कोपका एक लक्षण समझना चाहिये। प्राचीन समयके पुर्तगीजोंका भारतवर्ष मे बड़ा नाम था। इस देशके बड़े बड़े लोग उनसे मित्रता करनेकी इच्छा करते थे। उस समय वे अपने साहस, अपनी धार्मिकता, अपनी धनाढयता और बड़े बड़े कार्य करनेमे प्रसिद्ध थे। वे ऐसे नहीं थे जैसे आजकलके पुर्तगीज हैं जो प्रत्येक कुकर्मके अभ्यस्त हो रहे है और जिनका हरएक नीच तथा दुष्ट काममे जी लगता है।

इसी समयके लगभग जिसकी बात मै कह रहा हूं "सोनदीप" नामक टापू इन समुद्री डाकुओंने अपने अधिकारमें कर लिया था जो कि गंगाजीके मुखपर था और शत्रुओंको रोक रखनेके लिये बहुत उपयोगी था। फरा जोआन नामक वह प्रसिद्ध बदमाश जो अगष्टीन सम्प्रदायके महन्तोंमे से था नही मालूम किस प्रकारकी चतुराई से वहांके अधिकारीको निकालकर बहुत समय तक इस टापूका एक छोटासा राजा बना हुआ था। ये वेही डाकू थे जिनका हाल मैंने पहले लिखा है कि वे अपनी "गलीस" नामक नावोंमे बैठकर शुजा के पास ढाकेमे इसलिये गये थे कि उसको आराकान ले जायें। इस अवसर पर भी इन दुष्टोंने चतुराई करके उसके असबाबके

सन्दूकोंमेंसे बहुतसे जवाहरात निकाल लिये थे और अराकान पहुँचकर सस्ते मूल्यपर उनको चुपचाप बेचते फिरते थे जिनमेंसे डचों और युरोपियनोंने बहुतसे हीरे यह धोखा दे देकर कि ये कच्चे हैं उन मूर्खोंसे बहुत थोड़े मूल्यपर उड़ा लिये थे।

मैं समझता हूं कि जो कुछ मैंने वर्णन किया वह इस बातका अनुमान करानेके लिये यथेष्ट होगा कि मुगल बादशाहको इन निर्दय लुटेरोंके कारण कितना कष्ट तरद्दुद और व्यय उठाना पड़ता था और उनके बंगालमें घुस आनेके डरसे सेनाएँ तथा "गलीस" नावें नाकोंके रोकनेके निमित्त रखनी पड़ती थी । इतने पर भी उन दुष्टोंके कारण देशको बराबर कष्ट पहुंचता रहता था। ये डाकू इतने साहसी और अपने काममें ऐसे चतुर थे कि केवल चार पांच गलीस नावोंमें बैठकर चढ़ आते थे और बादशाही नावोंको खींच ले जाकर नष्ट कर डालते थे। अतएव बंगालकी सूबेदारी पाकर शाइस्ताखांने इन्हें दण्ड देनेका विचार किया। इसमें उसके दो मतलब थे; एक तो यह कि अपने प्रान्तको उन निर्दय लुटेरोंके बारम्बारके आक्रमणसे बचाना और दूसरा अराकानके राजापर चढ़ाई करना तथा उसको उस निर्दयताका फल चखाना जो उसने ... ... और उसके बालबच्चोंके साथ की थी; क्योंकि औ... ... प्रति... कि उनके मारे जानेका बदला ले और ... ...में

सब रंग्योंगे कि ... बादशाही ... च...

दशामें हो सकु ... सम्मानके ...

के अधिकारी हैं

अन्तु शाइस्त... चारको

धानी और चतुर ... की। ...

रास्तेमें पड़ते थे सूखे मार्गसे अराकानको सेना ले जाना बहुत कठिन था और उन डाकुओंके कारण जो समुद्री लड़ाईमें विशेष निपुण थे जलमार्गसे भी जाना नहीं हो सकता था, अतएव उसने डचोंसे सहायता लेना उचित समझा । जिस प्रकार ईरानके अधिकारी शाह अब्बासने अंगरेजोंसे मित्रता करके हुरमुज टापूपर अधिकार कर लिया था उसी प्रकार इसने डचोंकी सहायतासे अराकान पर अमल कर लेना चाहा । बटेवियाके गवर्नरके पास कुछ शर्तोंके साथ ऊपर लिखी बातका प्रबन्ध करनेके लिये अपने एलचीको भेजा और यह सन्देसा कहला दिया कि आइये हम आप मिलकर अराकान पर अधिकार करलें । बटेवियाके अधिकारीने इस कारण यह बात सहजमें स्वीकार करली कि इस उद्योगमें सफलता होनेसे भारतवर्षसे पुर्तगीजोंका अधिकार कम करनेका (जिससे डच-कम्पनीका बहुत लाभ था) अवसर हाथ आता था। निदान इसने अपनी ओरसे लड़ाईके दो जहाज बंगालको भेज दिये ताकि वे शाइस्तखांकी सेनाको सुगमतासे चटगांवमें पहुँचा दें । इस बीच में शाइस्ताखांने भी 'गलीस' आदि बड़ी बड़ी नावें बनवा ली थीं; अतएव उसने उन डाकुओंको इस प्रकार धमकाया कि यदि तुरन्त अधीनता स्वीकार नहीं करोगे तो नष्ट भ्रष्ट कर दिये जाओगे, क्योंकि औरंगजेबने अराकानके राजाको दण्ड देनेका पक्का निश्चय कर लिया है और डचोंके युद्धके जहाजोंका एक बहुत बड़ा बेड़ा भी जिसका तुम सामना न कर सकोगे बहुत शीघ्र आनेवाला है । सो यदि तुममें बुद्धि है और अपने बालबच्चोंकी भलाई चाहते हो तो राजाकी नौकरी छोड़कर बादशाही सेवामें आ जाओ । तुमको जितनी आवश्यकता होगी बंगालमें जमीन दे दी जायगी और राजाके

सन्दूकोंमसे बहुतसे जवाहरात निकाल लिये थे और अराकान पहुँचकर सस्ते मूल्यपर उनको चुपचाप बेचते फिरते थे जिनमेंसे डचों और युरोपियनोंने बहुतसे हीरे यह धोखा दे देकर कि ये कच्चे हैं उन मूर्खोंसे बहुत थोड़े मूल्यपर उड़ा लिये थे।

मैं समझता हूं कि जो कुछ मैंने वर्णन किया वह इस बातका अनुमान करानेके लिये यथेष्ट होगा कि मुगल बादशाहको इन निर्दय लुटेरोंके कारण कितना कष्ट तरद्दुद और व्यय उठाना पड़ता था और उनके बंगालमें घुस आनेके डरसे सेनाएँ तथा "गलीस" नावें नाकोंके रोकनेके निमित्त रखनी पड़ती थीं। इतने पर भी इन दुष्टोंके कारण देशको बराबर कष्ट पहुंचता रहता था। ये डाकू इतने साहसी और अपने काममें ऐसे चतुर थे कि केवल चार पांच गलीस नावोंमें बैठकर चढ़ आते थे और बादशाही नावोंको खींच ले जाकर नष्ट कर डालते थे। अतएव बंगालकी सूबेदारी पाकर शाइस्ताखांने उन्हें दण्ड देनेका विचार किया। इसमें उसके दो मतलब थे, एक तो यह कि अपने प्रान्तको उन निर्दय लुटेरोंके बारम्बारके आक्रमणसे बचाना और दूसरा अराकानके राजापर चढ़ाई करना तथा उसको उस निर्दयताका फल चखाना जो उसने सुलतान शुजा और उसके बालबच्चोंके साथ की थी; क्योंकि औरंगजेबकी दृढ़ प्रतिज्ञा थी कि उसके मारे जानेका बदला ले और इस उदाहरणसे आसपासके सब राजाओंको शिक्षा दे कि बादशाही कुलके लोग चाहे कैसी ही दशामें हों मनुष्यत्व और सम्मानके साथ बर्ताव किये जानेके अधिकारी हैं।

अस्तु शाइस्ताखांने अपने विचारकी पहली बात तो बड़ी साव-धानी और चतुराईके साथ पूरी की। नदी नालोंके कारण जो कि

रास्तेमें पड़ते थे सूखे मार्गसे अराकानको सेना ले जाना बहुत कठिन था और उन डाकुओंके कारण जो समुद्री लड़ाईमें विशेष निपुण थे जलमार्गसे भी जाना नहीं हो सकता था; अतएव उसने डचोंसे सहायता लेना उचित समझा। जिस प्रकार ईरानके अधिकारी शाह अब्बासने अंगरेजोंसे मित्रता करके हरमुज टापूपर अधिकार कर लिया था उसी प्रकार इसने डचोंकी सहायतासे अराकान पर अमल कर लेना चाहा। बटेवियाके गवर्नरके पास कुछ शर्तोंके साथ ऊपर लिखी बातका प्रबन्ध करनेके लिये अपने एलचीको भेजा और यह सन्देसा कहला दिया कि आइये हम आप मिलकर अराकान पर अधिकार करलें। बटेवियाके अधिकारीने इस कारण यह बात सहजमें स्वीकार करली कि इस उद्योगमें सफलता होनेसे भारतवर्षसे पुर्तगीजोंका अधिकार कम करनेका (जिससे डच-कम्पनीका बहुत लाभ था) अवसर हाथ आता था। निदान उसने अपनी ओरसे लड़ाईके दो जहाज बंगालको भेज दिये ताकि वे शाइस्तखांकी सेनाको सुगमतासे चटगांवमें पहुँचा दें। इस बीच में शाइस्ताखांने भी 'गलीस' आदि बड़ी बड़ी नावें बनवा ली थीं; अतएव उसने उन डाकुओंको इस प्रकार धमकाया कि यदि तुरन्त अधीनता स्वीकार नहीं करोगे तो नष्ट भ्रष्ट कर दिये जाओगे, क्योंकि औरंगजेबने अराकानके राजाको दण्ड देनेका पक्का निश्चय कर लिया है और डचोंके युद्धके जहाजोंका एक बहुत बड़ा बेड़ा भी जिसका तुम सामना न कर सकोगे बहुत शीघ्र आनेवाला है। सो यदि तुममें बुद्धि है और अपने बालबच्चोंकी भलाई चाहते हो तो राजाकी नौकरी छोड़कर बादशाही सेवामें आ जाओ। तुमको जितनी आवश्यकता होगी बंगालमें जमीन दे दी जायगी और राजाके

यहां जितना वेतन मिलता है उसका दूना मिलेगा ।

इसी समयके लगभग इन डाकुओंने अराकानके राजाके एक बड़े पदाधिकारीको मार डाला था । अब यद्यपि यह बात तो ठीक मालूम नहीं कि राजाके दण्ड देनेकी चिन्ताने इन्हे डराया या शाइस्ताखां-की धमकियां और आशाप्रद प्रतिज्ञाओंने असर किया, परन्तु यह निश्चय है कि एक दिन इन दुष्ट पुर्तगीजों पर ऐसा डर छाया कि एकदम चालीस पचास गलीसोंमें बैठकर ये बंगालको चल पड़े और ऐसी जल्दीमें भागे कि स्त्री बच्चे और माल असबाब भी कठिनतासे अपने साथ ले सके । शाइस्ताखां इन नये मुलाकातियोंसे बड़ी शिष्टताके साथ मिला; बहुतसा धन भी उसने इनको दिया और ढाकेमें इनके बाल बच्चोंके रहनेके लिये अच्छा बन्दोबस्त कर दिया । इस भांति उसके उत्तम बरतावोंका इनको ऐसा भरोसा होगया कि बादशाही सेनाके साथ लड़ाई पर जानेकी इन्होने स्वयं इच्छा प्रकट की । 'सोनदीप' नामक टापू पर चढ़ाई करने और उसे जीत लेने में (जो कुछ दिनोंसे अराकानके राजाके अधिकारमें चला गया था) वे सम्मिलित हुए और फिर वहांसे बादशाही सेनाके साथ चटगांवको गये । अब यद्यपि डचोंके वे दोनों लड़ाईके जहाज भी जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है आ पहुंचे, परन्तु शाइस्ताखां ने उनकी कृपाका धन्यवाद करके कहला भेजा कि अब आपके कष्ट करनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है ।

बंगालमें इन जहाजोंको मैंने भी देखा था और इनके अफसरोंसे मेरी मुलाकात भी हुई थी जो यह कहते थे कि इस हिन्दुस्थानी सरदारने केवल जबानी जमाखर्च और सूखा धन्यवाद देकर ही हमको टाल दिया,—अपनी प्रतिज्ञा पर कुछ ध्यान नहीं दिया ।

शाइस्ताखांका वर्ताव इन पुर्तगीजोंके साथ यद्यपि वैसा नहीं है जैसा इनके कामोंके विचारसे होना उचित था, परन्तु हां वह इनके साथ उसी ढंगका व्यवहार कर रहा है जिसके ये योग्य हैं। उसने चटगांवसे तो इनको उखेड़ही दिया है और अब ये अपने बाल बच्चों समेत उसीके अधिकारमें हैं, तिसपर अब इनकी सहयताकी भी अपेक्षा नहीं रही, अतएव शाइस्ताखांने समझ लिया है कि इनसे जो प्रतिज्ञाएँ की गई थीं उनमेंसे एकके भी पूर्ण करनेका अब प्रयोजन नहीं है। सो, कई कई महीने वीते जाते हैं और वेतनके नामसे एक फूटी कौड़ी भी इनको नहीं दी जाती है; वल्कि शाइस्ताखां इनके विषयमें खुलंआम यह कहता फिरता है कि ये ऐसे विश्वासघाती और दुष्ट हैं कि जिस राजाने इनपर बड़ी बड़ी कृपा की थी उसीके साथ इन्होंने वेईमानी की; अतः इनपर भरोसा करना मुर्खता है। इस भांति शाइस्ताखांने उन पुर्त्तगीजोंकी शक्तिका प्रदीप बुझा दिया जिन्होंने बंगालके निचले भागमें महा अन्धेर मचाकर सारे देशको सुनसान तथा उजाड़ कर दिया था। यह बात पीछे मालूम होगी कि शाइस्ताखांको ऐसीही सफलता अराकानकी चढाईमें भी होती है या नहीं।

औरंगजेबके पुत्र—(मुहम्मद सुलतान और मुहम्मद मुअज्जमका वृत्तान्त) मुहम्मद सुलतान अव तक ग्वालियरके किलेमें कैद है, परन्तु कहा जाता है कि अब उसे अफीम नहीं पिलाई जाती और मुहम्मद मुअज्जम पूर्ववत् अपनी बुद्धिमानी और चतुराईकी चालपर चला जाता है; परन्तु एक घटनासे ऐसा जान पड़ता है कि कदाचित् बादशाह उससे कुछ रुष्ट था और इस रोषका कारण

यातो यह होगा कि अपने पिताकी बीमारीके समय उसने कोई अनुचित कार्य किया होगा या कोई और अज्ञात कारण होगा। यह भी हो सकता है कि बिना किसी प्रकारके दोषके केवल उसके साहस और आज्ञाकारिताकी परीक्षा लेना इष्ट रहा हो। अस्तु, एक दिन भरे दरबारमें औरंगजेबने उसको यह आज्ञा दी कि "एक शेर जो पहाड़ोंसे उतर आया है आसपासके लोगोंको तकलीफ देता है, उसको जाकर मार आओ।" उस समय यद्यपि बादशाहके प्रधान शिकारीने साहस करके कहा भी कि श्रीमन्, वे बड़े बड़े जाल भी तो साथ जाने चाहियें जो ऐसी भयंकर शिकारके लिये बने हैं, परन्तु औरंगजेबने बड़े रूखेपनसे उत्तर दिया कि "नहीं, उनकी कोई जरूरत नहीं, क्योंकि शहजादगीकी उमरमें तो हमने इस किस्म के एहतेयातोंका कभी खयाल भी नहीं किया।" यह बात उसने इस ढंग पर कही कि सुलतान मुअज्जमको बिना कुछ आपत्ति किये उसकी आज्ञा माननी पड़ी। यद्यपि इस उद्योगमें दो तीन आदमी मारे गये और कई घोड़े घायल हुए और शेर चोट खाकर राजकुमार के हाथी पर झपटा, परन्तु मार लिया गया। जबसे सुलतान मुअज्जम का यह साहस प्रकट हुआ तबसे औरंगजेब उसके साथ बड़ी प्रीति का बर्ताव करने लगा, बल्कि दक्षिणकी सूबेदारी भी उसको देदी। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उसने उसको इतना धन या अधिकार नहीं दिया कि उसकी ओरसे कुछ शंका करनेका डर होता।

महावत खां (सूबेदार काबुल) अब मैं काबुलके सूबेदार महावत खांका जिक्र करता हूं। उसने भी अन्तमें काबुलके अधिनायकत्वसे हाथ खींचकर औरंगजेबके सन्मुख उपस्थित हो

जाना ही उचित समझा और औरंगजेबने भी इसके साहसका विचार करके इसे क्षमा कर दिया और कहा—"ऐसे सिपाहीकी जान बहुत कीमती है। अपने मालिक (शाहजहां) के साथ इसकी वफादारी तारीफके लायक है।" अपराध क्षमा करनेके अतिरिक्त औरंगजेब ने राजा यशवन्तसिंहके स्थानमें जो कि शिवाजीके विरुद्ध शाइस्ताखांकी सहायताके लिये दक्षिणको भेजे गये थे इसे दक्षिणका सूबेदार भी नियुक्त कर दिया। परन्तु हां इस जगह यह बात भी बतला देनेके योग्य है कि भेटकी उन वस्तुओंके अतिरिक्त जो महावत खांने रोशनआरा बेगमको दी थी १५—१६ सहस्र अशर्फियां और बहुतसे ईरानी ऊँट तथा घोड़े उसने स्वयं बादशाहको दिये । अतएव आश्चर्य नहीं कि इन भेटोंनेही औरंगजेबको नम्र कर दिया हो ।

महायतखांके साथ काबुलका वृतान्त आ गया है इस कारण इसके पड़ोसी कन्दहार प्रान्तका ध्यान भी आपसे आप मेरे जीमें आ जाता है; अतएव उचित है कि उसका वर्णन भी दो एक पृष्ठमें कर डालूं। यह प्रान्त वर्त्तमान समयमें ईरान राज्यको कर देता है। इसके वृत्तान्त विशेष इसकी उन राजनीतिक द्वेष और झगड़ोंकी बातोंको जो इस देशके कारण ईरान और भारतवर्षके बादशाहों में परस्पर होते रहते हैं बहुत कम लोग जानते है।

अतएव विदित हो कि यह देश और इसकी राजधानी जो इस हरे भरे सुन्दर प्रान्तमें एक मजबूत दुर्ग है दोनोंको "कन्दहार" कहते है और इसपर अधिकार करनेके लिये ईरानियो तथा मुगल बादशाहोंमें परस्पर बहुत दिनों तक भयानक लड़ाइयाँ होती रही है। अकबर बादशाहने इसको ईरानियोंसे छीन लिया था और

उसके समय तक यहां मुगलोंहीका अधिकार था, परन्तु उसके बाद ईरानी शाह अब्बासने उसके पुत्र जहांगीरसे उसे फिर ले लिया । शाहजहांके समयमें अलीमुराद खांकी विश्वासघातकता से जो यहांका प्रबन्धकर्त्ता था और शाहजहांसे मिलकर उनकी शरणमें चला गया था यह देश पुनः मुगल राज्यके अन्तर्गत हो गया। अलीमुरादके ऐसा करनेका यह कारण था कि ईरानके दरबारमें उसके बहुतसे शत्रु थे और वह भली भांति जानता था कि यदि उस आज्ञाका पालन करनेमें जो कन्दहारका हिसाब समझानेके विषयमें मिली है त्रुटि करूंगा तो बुरा परिणाम होगा। अस्तु, इसके बाद शाहअब्बासके पुत्रने घिराव डालकर उसको फिर जीत लिया। यद्यपि शाहजहांने दो बार सेना भेजी पर दोनों ही बार उसे सफलता नहीं हुई। पहली बार तो उन विश्वासघाती ईरानी अमीरोंके कारण सफलता नहीं हुई जो शाहजहां के दरबारमें उच्चतम पदोंपर आरूढ़ थे और प्रकटमें उसके हितैषी थे परन्तु वास्तवमें अपने देश (ईरान) की भलाई चाहते थे। इन्होंने घेरेके समय बिलकुल जी चुराया और राजा रूपसिंहको जिन्होंने अपना झण्डा उस दीवार पर जाकर गाड़ा था। जो पहाड़से सबसे अधिक निकट था जरा भी सहायता न पहुंचाई और दूसरी बार औरंगजेबकी डाहके कारण सफलता न हुई जिसने उस मार्गमें जो अंगरेजी पुर्तगीजी जर्मन और फरांसीसियोंकी तोपोंने दीवारके एक भागके टूट जानेसे बना था प्रवेश करना ही स्वीकार नहीं किया। बात यह थी कि इस चढ़ाईका आरम्भ दाराने किया था जो उस समय अपने पिताके साथ काबुल में था और औरंगजेबको यह बात पसन्द नहीं थी कि इस उद्योगमें सफलता होनेकी प्रशंसा उसको (अर्थात् दाराको) मिले। यद्यपि

शाहजहांने पुत्रोंकी पारस्परिक लड़ाईसे कई वर्ष पहले तीसरी बार भी कन्दहारका घेरा करना चाहा था, परन्तु मीरजुमलाने रोक दिया था और जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं वहांके बदले दक्षिणपर चढ़ाईकी सलाह दी थी। अलीमुराद खांने मीरजुमलाकी रायका बड़े गम्भीर भावसे अनुमोदन किया बल्कि यह विचित्र बात कही कि "जबतक कोई मुह्लसाही नमकहराम उसका फाटक न खोलदे या हुजूर तमाम ईरानियोंको जो हुजूरकी फौजमें हैं खारिज न करदें और इस मजमूनका इश्तहार जारी न फरमा दें कि बाजारी लोगों से जो फौजके लिये रसद लावेंगे किसी तरहका महसूल न लिया जायगा तबतक कन्दहारका किला कभी हुजूरके कब्जेमें नहीं आ सकता।"

कई वर्ष हुए औरंगजेबने भी यातो उस पत्रसे जिसको ईरानके बादशाहोंने भेजा था या उन अनुचित बरतावोंके कारणसे जो उसके दूतके प्रति ईरानके दरबारमें हुए थे उसने कन्दहार पर चढ़ाई करनेकी तैयारी की थी; परन्तु ईरानके अधिपतिकी मृत्युका सम्बाद सुनकर उसने चढ़ाई रोक दी और यह बात बनाई कि हमारा हृदय इस बातको स्वीकार नहीं करता कि एक लड़के पर जो अभी गद्दी पर बैठा है हम चढाई करें!'—पर जहां तक मैं अनुमान करता हूं पिताकी गद्दी पर बैठनेके समय शाह सुलेमानकी उमर २५ वर्षसे कम नहीं होगी।

औरंगजेबके हितैषी-अब मैं औरंगजेबके प्रधान प्रधान स्नेहियोंका जिनमेंसे प्रायः सभीको बड़े बड़े पद दिये गये थे वर्णन करना आरम्भ करता हूं।

विदित हो कि उसका मामा शाइस्ताखां तो जैसा मैं पहले कह चुका हूं दक्षिणका सूबेदार बनाया गया और जो सेना वहां काम दे रही थी उसकी अफसरी भी उसीको दी गई। अन्तमें बंगालकी सूबेदारी भी उसने प्राप्त की। इसके अलावे अमीरखांको काबुलकी, खलीलुल्लहखांको लाहौरकी और मीर बाबाको अलाहाबादकी, जुलफीकरखांको पटनेकी और लीवर्दीखांके पुत्रको जिसके पिताकी सलाहसे खजुआ स्थानमें सुलतान शुजा हारा था सिन्धकी सूबेदारी दी गई। फाजिलखां जिसकी योग्यता और सलाहोंसे औरंगजेबको बहुत कुछ सहायता मिली थी, खानसामाँ नियत हुआ। देहलीकी सूबेदारी दानिशमन्दखांको मिली और इस प्राचीन रीतिके अनुसार कार्य करनेसे कि हरएक अमीरको प्रातः और सन्ध्याके समय सलाम करनेके लिये दरबारमें जाना पड़ता है और यदि कोई इस नियमके विरुद्ध कार्य करे तो उसे जुर्माना देना पड़ता है वह इसलिये क्षमा कर दिया गया है कि उसको पुस्तकावलोकनसे बहुत प्रेम है और इसके अतिरिक्त एक और बादशाही काममें भी उसे बहुत समय लगाना पड़ता है। दियानतखांको काश्मीरकी सूबेदारी मिली जो यद्यपि दुर्गम और छोटा देश है पर ऐसा सुन्दर और हरा भरा है कि हिन्दुस्थानका स्वर्ग कहा जाता है।

काश्मीर देश अकबरने कपट उपायसे जीता था। इस देशका वहींकी भाषामें एक बहुत सुन्दर इतिहास है। उसमें वहांके प्राचीन राजाओंका बड़ा मनोहर वृत्तान्त है। वहां ऐसे बलवान राजा हो गये हैं जिनके तापसे हिन्दुस्थान तो क्या लंका टापू तक था। जहांगीर बादशाहने फारसी भाषामें इस इतिहासका संक्षिप्त अनुवाद कराया है। उसकी एक प्रति मेरे पास भी है। यह बात भी

छोड़नेके योग्य नहीं है कि निजाबतखांको अन्तमे राजाहीकी सेवामें रहजानेके कारण औरंगजेबने उसके पदसे गिरा दिया। अब इन दो दुष्ट मनुष्यों अर्थात् जीवनखां और नाजिरका हाल बाकी रहा। जीवनखांके विषयमें तो मैं आगेही लिख चुका हूं कि उसको उसके कर्मोंका फल मिलगया.पर नाजिरकी क्या दशाहुई यह नहीं मालूम।

शिवाजी--यशवन्तसिंह और जयसिंहका वृत्तान्त यद्यपि कुछ गड़बड़ है पर मैं उसके स्पष्ट करनेका प्रयत्न करूंगा। विदित हो कि बीजापुरमें एक मनुष्यने विद्रोह करके कई दुर्गों और बन्दरगाहों पर जो बीजापुरके बादशाहके अधीन थे अधिकार कर लिया था। उसका नाम शिवाजी है। शिवाजी चतुर और साहसी पुरुष है और अपने मरने जीनेकी उसको तनिक भी परवा नहीं है। जिस समय शाइस्ताखां दक्खिनमें था तो वह शिवाजीको बीजापुरके शाह से भी बढ़कर जबरदस्त पाता था यद्यपि शाहके पास बहुत बड़ी सेना थी औरवे राजे भी उसकी सहायता करते थे जो अपने बचाव के लिये उससे मिल जाते थे। शिवाजीका साहस और उद्यम इससेही समझ लेना चाहिये कि यद्यपि शाइस्ताखांके सिपाही चारों ओर उतरे हुए थे और औरंगाबाद नगर दीवारोंसे घिरा हुआ था परन्तु तिसपर भी यह वीर और साहसी पुरुष कुछ थोड़ेसे आदमी लेकर एक रात शाइस्ताखांके मकानमे जाही घुसा और यदि सावधान होनेमें कुछही और विलम्ब हो जाता तो शाइस्ताखांके सब माल असबाब पर अधिकार कर लेता क्योंकि इसी विचार से वहवहां गया था। उस समय शाइस्ताखां बहुत घायल हुआ और उसका पुत्र तो म्यानसे तलवार निकालते समय मारा गया।

इसके थोड़ेही दिन बाद शिवाजीने एक और चढ़ाई की जिसमें अधिक सफलता हुई: अर्थात् दो तीन हजार चुने हुए सिपाहियोंको लेकर उन्होंने अपने स्थानसे प्रस्थान किया और यह प्रसिद्ध किया कि एक राजा बादशाहसे मिलनेके लिये जाता है। जब सूरतका अधिकारी इनको मिला तो उससे इन्होंने कहा कि मेरा विचार नगरके भीतर जानेका नहीं है मैं बाहर बाहर जाऊंगा। परन्तु पीछे ये नगरमें गये और लड़ तथा लूट मारकर कई मीलियन (एक मीलियन दस लाखका होता है) रुपयोंका सोना, चांदी, रेशमीकपड़े, ब्यापारकी वस्तुएँ इत्यादि लेगये। जो न ले जासके उसमें आग लगा दी। इस अवसर पर किसीने इनको रोक टोक नहीं की इससे सन्देह किया गया कि राजा यशोवन्तसिंह उनसे मिल गये थे और शाइस्ताखां पर आक्रमण तथा सूरत पर चढ़ाई होना ये सब बातें इनकी सलाहसे हुई थीं। अतएव वे दक्षिणसे वापस बुलाये गये; परन्तु देहली न जाकर अपने राज्यको चले गये।

उनको वह औरंगजेबके पास ले जा रहा है उसको तीन बार नंगी तलवार मारनेके लिये उठाकर बहुत डराया धमकाया, परन्तु उसने जवाहरातका पता नहीं बताया और यहूदियोंकी इस बातका कि वे रुपयेको प्राणोंसे अधिक प्रिय समझते हैं भली भांति निर्वाह किया।

सूरतकी घटनाके बाद औरंगजेबने राजा जयसिंहको दक्षिणका सेनापति नियत किया और मुहम्मद मुअज्जमको भी उनके साथ भेजा, परन्तु इस राजकुमार (मुअज्जम) को किसी प्रकारका अधिकार नहीं दिया। सबसे प्रथम राजा जयसिंहने शिवाजीके सबसे बड़े दुर्गपर आक्रमण करना आरम्भ किया, परन्तु वे बीच बीचमें प्रतिज्ञाएँ भी करते जाते थे, जिनका यह परिणाम हुआ कि शिवाजीने स्वयं दुर्ग छोड़ दिया और यह शर्त स्वीकार कर ली कि बीजापुरकी चढ़ाईमें औरंगजेबको सहायता पहुँचाऊंगा। उस समय औरंगजेबने शिवाजीको राजाकी पदवी दी और उसके पुत्रको दरबारियोंमें प्रविष्ट करके पुरस्कार नियत कर दिया।

इसके कुछ दिन बाद फारस पर चढ़ाई करनेका विचार हुआ। उस समय औरंगजेबने शिवाजीको बड़े आदर और सम्मानका पत्र लिखा जिसमें उनकी वीरता उदाराचित्तता साहस आदिकी बड़ी प्रशंसा थी। राजा जयसिंहने भी उस समय लिखा कि हम आपके सम्मान और जीवनके जिम्मेदार हैं। अतएव शिवाजी निश्चिन्त होकर देहली गये। परन्तु शाहस्ताखांकी स्त्री उन दिनों देहलीमें थी वह शिवाजीसे बहुत द्वेष रखती थी और बराबर कहती थी कि इसने मेरे पुत्रको मारा और पतिको घायल किया है अतएव इसको कैद करना चाहिये। सो लक्षण कुलक्षण और यह देखकर कि तीन चार अमीर चुपचाप ताकमें लगे रहते हैं एक रात शिवाजी भेस

बदलकर वहांसे चले गये । इनके चले जानेका बादशाही बेगमोंको दुःख हुआ और जयसिंहके बड़े पुत्रपर उनको निकल जानेमें सहायता पहुँचानेका सन्देह किया गया; अतः उसे दरबारमें आनेमें मनाही कर दी गई ।

औरंगजेब जयसिंह और उनके पुत्र अर्थात् दोनोंहीसे यातो वास्तवमें या केवल दिखानेके लिये प्रकाशमें रुष्ट जान पड़ता था इस कारण राजा जयसिंहको यह सन्देह हुआ कि कहीं वह इसी बहानसे उनका राज्यही जब्त न करले ! अतएव बड़ी शीघ्रतासे देश को बचानेके लिये वे दक्षिणसे लौटे परन्तु रास्तेमें ही बुरहानपुरमें उनका देहान्त हो गया । यह खबर सुनकर औरंगजेबने ऐसा शोक प्रकट किया और उनके पुत्रके साथ ऐसी सहानुभूति दिखलाई और उसके पिताके राज्य पर भी उसको बहाल कर दिया कि इसपर बहुतसे लोग यह कहने लगे कि शिवाजीका चला जाना भी औरंगजेबका उस ओर विशेष ध्यान न देनेसे हुआ । ऐसा कहनेवाले लोग कहते थे कि औरंगजेबने इसी कारण शिवाजीके चले जानेसे हरज नहीं समझा कि वह ऐसा चाहताही था क्योंकि बेगमें शिवाजीसे नाराज थीं ।

दक्षिणके राज्य—अब मैं दक्षिणकी घटनाओं पर भी एक दृष्टि डालना चाहता हूं जो एक ऐसा देश है कि ४० वर्षोंसे लड़ाई झगड़ोंकी भूमि बना रहा है और जिसके निमित्त मुगल बादशाह गोलकुण्डा और बीजापुरके राजाओं तथा इनकी अपेक्षा छोटी श्रेणीके अधिकारियोंसे उलझे ही रहते हैं । जब तक दक्षिणके राज्योंके नरेशोंके वृत्तान्त और उन बड़ी बड़ी घटनाओंसे जो इस देशमें होती रहती हैं भलीभांति जानकारी न हो जाय तब तक इन लड़ाई झगड़ों की बातें अच्छी तरह समझमें नहीं आ सकतीं ।

विदित हो कि प्राय दो सौ वर्षोंमे भारतवर्षके इस भागकी जो पश्चिमकी ओर खम्भातकी खाड़ीमे आरम्भ होकर पूर्व दिशामे जगन्नाथके निकट बंगालकी खाड़ी तक और दक्षिणमें कन्याकुमारी तक फैला हुआ है और जो युरोपके नकशेमें "ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला" के नामसे लिखा हुआ है वह दशा थी कि कदाचित् कुछ पहाड़ी स्थानोको छोड़ यह सारी भूमि एक स्वतन्त्र राजाके अधिकारमे थी परन्तु उसी वंशके अन्तिम राजा रामराजकी अयोग्यताके कारण वह विशाल भूमि खण्ड विखण्डित हो गई और यही कारण है कि अब वह भिन्न भिन्न जातियोंके कई अधिकारियोंके अधीन है।

बात यह थी कि रामराजके पास गुर्जिस्तानके तीन गुलाम थे जिनको वह हर प्रकार सुखी प्रसन्न और सन्तुष्ट रखता था,यहांतक कि उसने उनको तीन बड़े बड़े प्रान्तोंका अधिकारी भी बना दियाथा। एक उन सब जिलोंका अधिकारी नियुक्त हुआ जो इस समय मुगलोंके अधीन हैं। यह प्रान्त बीजापुर पुरन्धर और सूरतसे लेकर नर्मदा तक फैला हुआ था और इसकी राजधानी दौलताबादमें थी। दूसरा गुलाम उस प्रदेशका गवर्नर बनाया गया जो इस समय बीजापुर राज्य के नामसे प्रसिद्ध है। और तीसरेको वह प्रदेश सुपुर्द हुआ जो गोलकुण्डा कहा जाता है। संक्षेप यह कि ये तीनों गुलाम बड़ेही धनवान् और बलवान् हो गये और इस कारण कि ये तीनों शीया हो गये थे जो ईरानवासियोंका साधारण धर्म्म था इस राज्यके ईरानी दरबारियोंसे इनको बड़ी सहायता मिलती थी। कोई न कहता कि ये हिन्दू क्यों न होगये, क्योंकि हिन्दू नहीं चाहते कि कोई दूसरा उनके धार्मिक भेदसे लाभ उठावे, अतएव यदि वे चाहते तौभी हिन्दू नहीं बन सकते थे।

अस्तु, पीछे यह हुआ कि तीनोंने एक राय होकर विद्रोह किया जिसका यह फल हुआ कि रामराज मारा गया और ये अपने प्रान्तोंमें जाकर स्वाधीन राजा बन गये। रामराजकी सन्तान सन्ततिमें कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो इनका सामना कर सकता अतएव जो थे वे उस प्रदेशमें चुपचाप पड़े हुए थे जिसका नाम कर्णाटक है और जिसका नाम हमारे छोटे जहाजी नकशोंमे विजयनगर लिखा है। उसके वंशधर वहां अब तक राज्य करते हैं और इस प्रायद्वीपके भाग इसी समयमें उन छोटे छोटे राज्योंमें बंट गये जो अब तक हैं और जिनके अधिकारी राजा या नायक कहे जाते हैं। इन तीनों गुलामोंके वंशजोंमें जबतक एकता रही तबतक उनपर कोई हाथ न डाल सका और तब तक वे मुगल अधिकारियोंसे खूब लड़ते भिड़ते रहे; परन्तु जबसे परस्परका द्वेष प्रारम्भ हुआ और उन्होंने चाहा कि एक दूसरेकी सहायताके बिना स्वतन्त्र होकर रहें तबसे वे अनैक्यके बुरे फल चख रहे हैं और तीस चालीस वर्ष हुए मुगल बादशाहने यह देख कर कि अब इनमें परस्पर एकता नहीं है निजामशाहके राज्य पर जो बची हुई रियासत पर पांचवीं या छठी पीढ़ीमें था चढ़ाई करके उसको जीत लिया और कुछ काल हुआ वह (अर्थात निजामशाह) अपनी पूर्व राजधानी दौलताबादमें कैद रहकर मर भी चुका है।

गोलकुण्डाके बादशाह अबतक चढ़ाइयोंसे बचे हुए हैं, परन्तु इनका बचा रहना कुछ उनकी दृढ़ता और उनके बलके कारणसे नहीं है किन्तु इस सबबसे है कि मुगल बादशाहको गोलकुण्डाके दोनो पड़ोसी राज्योंपर चढ़ाई करने और उनके बन्दर, पुरन्धर, बीदर आदि सुदृढ़ स्थानोंके ले लेनेकी अधिक आवश्यकता थी जिसमें कि पीछे गोलकुण्डापर चढ़ाई करना और भी सहज हो जाय। गोल-

कुण्डावालोंका बचा रहना कुछ उनकी इस बुद्धिमत्ता और कार्य-कौशलके सबबसे भी था कि अपने अपार धनमेंसे वे छिपी रीतिसे सदव बीजापुर-नरेशके पास सहायता भेजते रहते थे और जब कभी बीजापूर पर आक्रमण होनेकी आशंका होती थी तब अपनी सेना भी सीमा पर भेज दिया करते थे जिसमें कि मुगल बादशाह पर यह बात प्रकट हो कि गोलकुण्डा न केवल अपने बचावके लिये प्रस्तुत है वरन् यदि बीजापुरके लिये कठिन समय आवे तो वह उसकी सहायता करनेके लिये भी तैयार है। इसके अतिरिक्त यह भी जान पड़ता है कि मुगल सेनापतियोंको बहुत कुछ घूस भी दिया जाया करता है और इसी कारणसे वे गोलकुण्डाके बदले बीजापुर पर चढ़ाई करनेकी बात सदा यह कह कह कर उठाया करते हैं कि वह दौलताबादसे अधिक निकट है। और जबसे औरंगजेब और गोलकुण्डाके वर्त्तमान बादशाहसे परस्पर कुछ बात तै हुई है तबसे असलमें तो औरंगजेब हीका चढ़ाई करनेका कुछ विचार नहीं जान पड़ता। कदाचित् सन्धिके दिनसे औरंगजेब उस प्रान्तको अपना ही समझता है और इसलिये कि गोलकुण्डावाले बहुत समयसे कर देते हैं और बहुत सा धन, वहांकी बनी उत्तमोत्तम वस्तुएं, [illegible] स्वर्णद्वीप और सयामके हाथी वर्ष प्रति वर्ष करकी रीतिसे भेजते रहते हैं और अब गोलकुण्डा और दौलताबादके बीच कोई ऐसा दुर्ग भी नहीं रह गया है जो किसी शत्रुके अधिकारमें हो औरंगजेब समझता है कि एकही बारकी चढ़ाइ उस राज्य पर विजय प्राप्त कर लेनेके लिये यथेष्ट होगी। परन्तु मेरी समझमें औरंगजेब गोलकुण्डा ले लेनेमें इसके अतिरिक्त और किसी कारणसे नहीं रुका कि कदाचित् बीजापुरका बादशाह इस आशंकासे कि कलको

दिन उसके आगे भी न आवे कहीं स्वयं दक्षिण देशमें मारकाट मचाना न आरम्भ कर दे। आशा है कि ऊपर लिखे विवरणसे पाठक अनुमान कर सकेंगे कि मुगल-राज्य और गोलकुण्डामें परस्पर किस प्रकारका सम्बन्ध है और इसमें तो कुछ सन्देहही नहीं कि गोलकुण्डा की अवस्था अनिश्चित है।

मीरजुमलाकी बताई युक्तिसे औरंगजेबने जबसे काम किया है तबसे गोलकुण्डाके अधिकारीका साहस जाता रहा है और तभी से राज्यकी लगाम भी उसने ढीली छोड़दी है। देशके प्रचलित नियमके अनुसार वह न तो कभी दरबारमें जाकर बैठता है और न न्याय और शासनके काम करता है। यहां तक कि उसमें दुर्गकी दीवारके बाहर निकलनेका भी साहस नहीं रह गया है जिसका यह स्वभावसिद्ध परिणाम हुआ है कि देशमें प्रबन्ध और कुदशा फैल रही है और दरबारी तथा अफसर न तो अब बादशाह का कहा मानते हैं और न उससे कुछ प्रीतिही रखते हैं बल्कि घोर अत्याचार करते हैं। इससे प्रजा जो अत्याचारोंसे बहुत दुःखित होरही है बहुत शीघ्र औरंगजेबकी अधीनता स्वीकार करलेगी क्योंकि उसका शासन गोलकुण्डाकी अपेक्षा उत्तम और न्यायपूर्ण है।

अब मैं थोड़ासा वर्णन उन बातोंका करता हूं जिनसे इस राज्य की खराब दशाका प्रमाण प्रकट होता है। उन बातोंमें एक तो यह है कि १६६८ ई० में जब कि मैं गोलकुण्डामें था औरंगजेबकी ओरसे एक दूत यह सन्देसा लेकर पहुंचा कि या तो १८ हजार सवार बीजापुरकी लड़ाईके लिये उपस्थित करो या आप भी सामाना करनेके लिये तैयार हो जाय। इसपर यद्यपि राजाने सेना नहीं भेजी परन्तु इतने रुपये जो दस हजार सवारोंके खर्चके लिये यथेष्ट थे भेजे थे

उसने भेजदिये। इससे औरंगजेब और भी अधिक प्रसन्न हुआ। इसके अतिरिक्त दूतको उसने बहुत आदर किया और बहुतसे तोहफे स्वयं उसे दिये तथा औरंगजेबके लिये अनेक बहुमूल्य चीजें भेजी।

दूसरी बात यह है कि औरंगजेबका जो दूत गोलकुण्डामें रहता है वह आज्ञा जारी करता है, परवाना देता है और लोगों पर इच्छानुसार अत्याचार करता है,—संक्षेप यह कि वह स्वयं बादशाहके तुल्य है।

तीसरी बात यह कि मीरजुमलाका पुत्र मुहम्मद अमीनखांका, जो केवल औरंगजेबके दरबारका एक अमीर है, गोलकुण्डामें इतना अधिक रोब है कि उसका "तापता" अर्थात् उसका दलाल या गुमाश्ता जो मछलीपटनमें रहता है बन्दरगाहके हाकिमकासा अधिकार रखता है; व्यापारकी समस्त वस्तुएँ खरीदता है, बेचता है, जहाजों पर माल चढ़ाता है, उतारता है, परन्तु महसूलके नाम एक कौड़ी भी नही देता है और न उसके कामोंमें कोई हस्तक्षेप कर सकता है। विचित्र बात है कि इस देशमें मीरजुमलाका इतना रोब था कि उसके मरनेके बाद उसकी सम्पत्तिके साथ यह रोब भी उसके पुत्रको प्राप्त हुआ!

चौथी बात यह है कि कभी कभी डच लोग गोलकुण्डाके व्यापारियोंके समस्त जहाजोंको मछलीपटनकी बन्दरगाहमें रोके रखते हैं और जब तक यह बादशाह उनकी बात नही मान लेता तबतक उनको बाहर नही जाने देते है। मैने स्वयं उनको इस बादशाहके प्रति ऐसी अनुचित बात कहते सुना है—"मछलीपटनके शासनकर्त्ताने हमको अंगरेजोंके एक जहाज पर जबर्दस्ती अधिकार करनेसे क्यों रोका? लोगोंको हमारे विरुद्ध अस्त्रशस्त्रके सहित भेजकर

हमारे इस इरादेमें बाधा क्यों डाली? हमको यह धमकी क्यों दी कि तुम्हारी कोठीको जला दूंगा और तुम परदेशी बदमाशोंको मरवा डालूंगा?"

पांचवां लक्षण इस साम्राज्यकी अवनतिका यह है कि यहांकी मुद्रा अच्छी अवस्थामें नहीं है और इस कारण इस देशके व्यापार को हानि पहुँचानेवाली है।

छठी बात यह है कि यहांतक तो नौबत पहुँच गई है कि पुर्तगीज भी, जो यद्यपि अत्यन्त हीन और दरिद्र दशामें हैं, इसको लड़ाईकी धमकी देनेमें नहीं हिचकते हैं और कहते है कि यदि सेण्ट टामस नामक स्थान (जो कई वर्ष हुए इन्होंने स्वयं गोलकुण्डाके बादशाहको इस विचारसे दे दिया था कि डच, जो इनसे बलमें अधिक हैं, उसको उन्हें दे देनेकी दुर्दशा इनको न भोगनी पड़े) हमको न देंगे तो हम मछलीपटन तथा दूसरे स्थानोंपर अधिकार कर लेंगे और लूट लेंगे। परन्तु इन बातों पर भी गोलकुण्डामें ही कुछ बुद्धिमान लोग मुझसे यह कहते थे कि बादशाहकी बुद्धिमानीमें कुछ भी अन्तर नहीं आया है। अपने चित्तकी यह अव्यवस्था—यह बुद्धिहीन दशा और राज्यके मामलोंमें ऐसी बेपरवाही उसने केवल शत्रुओंको धोखेमें डालनेके लिये बना रक्खी है और उसका एक ऐसा पुत्र है जो बड़ा ही तेजमिजाज चलता पुर्जा और ऊंचे ख्यालका है, जिसको जानबूझकर उसने दूसरोंकी दृष्टिसे छिपा रक्खा है। इस पुत्रको वह समय पर राजगद्दीपर बिठा देगा और जो प्रतिज्ञाएं उसने औरंगजेबसे कर रक्खी हैं उन सबको भूल जायगा।

अब मैं इन बातोंके सत्य और असत्य होनेका निर्णय दूसरे समयके लिये छोड़कर कुछ बातें बीजापुरके विषयमें लिखना चाहता

हूं। यद्यपि इस राज्यके साथ मोगल बादशाहकी प्रायः लड़ाई भिड़ाई रहा करती है, तथापि अबतक यह स्वतन्त्र और स्वाधीन कही जाती है। परन्तु असल बात यह है कि जो सेनापति बीजापुरकी लड़ाई पर भेजे जाते हैं वे उन दूसरे सेनापतियोंकी तरह जो ऐसी ही अन्य लड़ाइयों पर भेजे जाते हैं सेनापति बने रहनेके शौकमें इस बातको अपने पक्षमें शुभ समझते हैं कि दरबारसे दूर रहकर सेना पर राजसी ढंगपर हुकूमत जताते है और इसी कारण अपने काममें वे टालमटोल करते रहते हैं तथा तरह तरहके बहानोंसे लड़ाईको जो उनके मतलबके सिद्ध होनेका कारण होनेके अतिरिक्त उनकी आमदनीका भी द्वार होती है बेमतलब बढ़ाते रहते है। यही कारण है कि भारतवर्षमें यह बात प्रसिद्धसी हो गई कि दक्षिण देश तो हिन्दुस्थानी सिपाहियोंकी रोटी और गुजारा है।

इसके अतिरिक्त बीजापुर राज्यमें पहाड़ोंके भीतर दुर्गम स्थानों में इतने दुर्ग और गाढ़ियां है कि जिनपर विजय प्राप्त करना बहुतही दुस्साध्य है; और जो देश मोगल-साम्राज्यसे मिलता हुआ है उसमें यह विशेषता है कि जल और भोजनकी सामग्री वहां मिलती ही नहीं, विशेषकर उसकी राजधानीके एक जलहीन और अन्नहीन भूमिपर अवास्थित होनेके कारण बहुतही सुदृढ़ स्थान है; यहांतक कि पीनेके योग्य जल वहा केवल शहरके भीतरही मिलता है । परन्तु इतनी बात होनेपर भी समझना चाहिये कि शीघ्रही इस राज्यका पतन होगा; क्योंकि मोगल बादशाहने पुरन्धरके दुर्गपर जो इस प्रदेशके द्वारके समान है और बीदर पर जो एक सुदृढ़ और सुन्दर शहर है तथा अन्य कई बड़े बड़े स्थानोंपर अधिकार कर लिया है। इन सबसे बढ़कर यह बात है कि बादशाह अपुत्रक मर गया है और

इसकी बेगमने जो गोलकुण्डाके बादशाहकी बहिन है एक लड़केको अपना दत्तक बनाकर उसका पालन पोषण किया था । इस दत्तक पुत्रने इस बेगमके साथ यह व्यवहार किया कि थोड़े दिन हुए जब यह राजकुमारी हज करके लौटी तो उसने इसके साथ बहुत अपमानका बर्ताव किया और यह बहाना बनाया कि डचोंके जहाजमें (जिसपर सवार होकर वह मुखाको गई थी) इसका जाना इसके पद और अवस्थाके योग्य न था वरन् यहांतक कहा कि दो तीन जहाजी खलासियोंसे (जो अपने जहाजसे अलग होकर मक्केतक इसके साथ गये थे) वह अनुचित और घृणित सम्बन्ध रखती थी ।

शिवाजीने जिनका हाल पहले लिखा जा चुका है इस राज्यकी यह अवस्था देखकर बहुतसे दुर्गोंपर जो प्रायः पहाड़ोंके अन्दर थे अधिकार कर लिया है और इनकी जो इच्छा होती है सो वे स्वतन्त्र बादशाहकी तरह कर डालते हैं और मोगल बादशाह या बीजापुरके शाह जो कभी इनको धमकी देते हैं तो ये उनकी बातोंपर हँस देते हैं । ये सूरतसे लेकर गोवाके प्रान्ततकके देशमें लूटपाट मचाते रहते हैं । यद्यपि समय समय पर बीजापुर राज्यकी इनसे बहुत हानि होती रहती है, तथापि इसमें भी सन्देह नहीं कि समय पर ये उसकी सहायता भी करते हैं, क्योंकि औरंगजेबको सदा ही इनकी ओरसे चिन्ता लगी रहती है और उसकी सेना सदैव इनके पीछे पीछे लगी रहती है । इस प्रकार बीजापुरका पीछा छुटा रहता है । सबसे मुख्य बात यह समझी जाती है कि शिवाजीकी जड़ किसी प्रकार उखाड़नी चाहिये। शिवाजीको सूरतमें जो सफलता हुई थी उसका वृत्तान्त पाठकगण पढ़ही चुके है । उसके पश्चात् इन्होंने बार्डिस द्वीपपर जो गोवाके निकट पुर्तगीजोंकी एक बस्ती है अधिकार कर लिया है ।

शाहजहांकी मृत्यु---मैं अभी गोलकुण्डाहीमें था कि शाहजहांके मरनेका सम्बाद सुन पड़ा और यह भी सुननेमें आया कि औरंगजबने पिताके मरनेका बड़ा शोक किया और वे सब चिन्ह प्रकट किये जो पुत्रको माता पिताके मरनेपर करने चाहिये। वह तुरन्त आगरे गया। वहां पहुँचने पर बेगम साहबने बड़ी धूमधामसे उनका स्वागत किया। कमख्वाबके थान लटकाकर बादशाही मसजिद सजाई गई और इसी प्रकार वह मकान भी सजाया गया जहां दुर्गमें पहुँचनेसे पहले ठहरनेका विचार था और जब औरंगजेब महलमें पहुँचा तब राजकुमारीने एक बड़ासा सोनेका थाल जवाहरातसे भरकर उसकी भेट की। इन रत्नोंमेंसे कुछ तो शाहजहांसे प्राप्त थे और कुछ उसने अपने पाससे निकाले थे। बहिनकी ओरसे इस प्रकारका उत्साह और स्नेहका व्यवहार देखकर औरंगजेबका भी मन पसीज गया। वह उसकी बीती बात एक प्रकार भूल गया और उस समयमें उसके साथ कृपा और उदारताका वर्ताव करने लगा।

अब मैं अपने इतिहासको समाप्त करता हूं। जिन जिन उपायोंसे औरंगजेबने उन्नति पाई और यह उच्चतम पद यह प्राप्त किया है निश्चय है कि पाठकगण उनको बहुत नापसन्द करेंगे, क्योंकि वे उपाय अत्याचारपूर्ण अन्यायपूर्ण और अनुचित थे। परन्तु यदि उन उपायोंको उसी दृष्टिसे जांचा जाय जिससे युरोपके राजकुमारोंके चरित्र जांचे जाते हैं, तो ऐसा करना अनुचित होगा,—क्योंकि युरोप देशमें उत्तराधिकारके नियम बँधे रहते है और बड़े पुत्रकेसिवा दूसरा कोई पिताकी गद्दी पर बैठने नही पाता, किन्तु भारतवर्षमें पिताके बाद राज्यप्राप्तिके लिये राजकुमारोंमें सदैव झगड़ा होता

है और इन दो कठोर बातोंमेंसे कोई एक बात होती है कि या तो राज्यके लिये स्वयं प्राण दे दें या भाइयोंके प्राण लें। तौभी इन लोगोंको जो देशके नियम, कुटुम्बके नियम और शिक्षापद्धतिके असरको स्वीकार करते हैं, यह तो माननाही पड़ेगा कि औरंगजेबको परमेश्वरने बड़ी बुद्धि, चिन्ताशक्ति और समझदारी दी है और वह एक बड़ाही उच्च तथा आलीशान बादशाह है।



ग्रन्थकारका पत्र फ्रान्सके वजीर मान्शियर कोलबर्टके नाम।

हिन्दुस्थानका विस्तार, सोने चांदीका इस देशमें पहुँचकर यहीं खप जाना; देशकी धनशालिता, महसूल, सैन्य, राज्यव्यवस्था और एशियाके राज्योंकी अवनतिके वास्तविक कारण।

माननीय महाशय !

एशिया देशमें अमीरों और हाकिमोंकी सेवामें कोई व्यक्ति खाली हाथ नहीं जाता। इसी नियमके अनुसार जब मैं महान् मोगल बादशाहके चरणोंकी वन्दना करने गया तो मैंने भी सम्मानित करनेकी रीतिपर आठ रुपये उनकी नजर किये और एक नाइफकेस (चाकू रखनेका केस), एक कांटा और अम्बरकीसी सुगन्धियुक्त लकड़ीकी मूठका एक चाकू—ये तीन चीजें फाजिलखांको भेंटमें दीं। क्योंकि वह प्रसिद्ध व्यक्ति राज्यके वजीरोंमेंसे था, बड़े बड़े कार्य इससे सम्बन्ध रखते थे और चिकित्सकोंकी मण्डलीमें मेरी तनख्वाह नियत

करना भी इसीकी रायपर निर्भर था। यद्यपि मेरी यह मजाल नहीं है कि फ्रान्समें कोई नई प्रथा मैं प्रचलित करूं, परन्तु जब कि मैं भारतवर्षसे बहुत मुद्दतके बाद आया हूं तो यह बात बुद्धिके विरुद्ध है कि मैं उस प्रथाको जिसका उल्लेख अभी कर चुका हूं ऐसी जल्दीसे भूल जाऊं। अतएव यदि मैं अपने बादशाह (लुई १४ वें) की सेवामें जिसका सम्मान मेरे हृदयमें औरंगेजबके सम्मानकी अपेक्षा किसी और ही प्रकार है—या उसके वजीरकी सेवामें जो फाजिलखांकी अपेक्षा बहुत अधिक मान पानेका अधिकारी है—बिना एक तुच्छ भेटके उपस्थित होऊं तो आशा है कि क्षमा किया जाऊंगा।

भारतवर्षका पिछला परिवर्तन जिसकी बातें विचित्र विचित्र घटनाओंसे भरी हैं हमारे महान् बादशाहके ध्यान देनेके योग्य हैं और इस पत्रको देखना, जिसमें ऐसी बड़ी बड़ी बातें भरी हैं, उस पदके अयोग्य नहीं कहा जायगा जो श्रीमान्‌को बादशाही दरबारसे प्राप्त है। वास्तवमें इसका ऐसेही व्यक्तिकी सेवामें उपस्थित किया जाना उचित था जिसने राज्यकी बहुत सी त्रुटियोंको, जो मेरे जानेके समय में ऐसी मालूम होती थी कि दूर नहीं होगी, अपने सुन्दर उपायोंसे दूर कर दिया; जिसने अपने उद्योग और श्रमसे हमारे बादशाहकी शानको सारे संसारमें फैला और यह प्रमाणित कर दिया कि फ्रेञ्च जाति उन साधनोंको किस योग्यतासे काममें लाती है जो उसके लाभ और उसकी प्रसिद्धिके योग्य हैं।

माननीय महोदय! मैं भारतवर्षसे १२ वर्षोंके उपरान्त अपने देशमें आया हूं। वहीं रहकर मैंने फ्रान्सकी उन्नतावस्था और उस सुनामका हाल सुन लिया था जिनकी प्राप्ति श्रीमान्‌की असीम योग्यता और श्रमसे हुई है। यद्यपि फ्रान्सकी अच्छी अवस्था

और आपके सद्गुणोंका वर्णन मैं बड़े उत्साह और चावसे करता, परन्तु सारा संसार जिन बातोंका पहले हीसे प्रशंसक और माननेवाला हो उनपर पुन मेरे कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं है। अतएव उचित है कि अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार मैं वही अप्रकट और नई बातें लिखकर भेंट करूं जिनसे भारतवर्षकी असली अवस्थाका चित्र किसी अंशमें आपके हृदय पट पर खचित हो सके। मुझे विश्वास है कि आप भी अधिकतर इसी बातको पसन्द करेंगे।

भारतवर्षका विस्तार----एशिया महादेशके नकशोंसे प्रकट है कि मोगल-साम्राज्य जो भारत-साम्राज्यके नामसे प्रसिद्ध है, कैसा लम्बा चौड़ा देश है। यद्यपि मैंने आपके नियमोंके अनुसार पूरी तरह नापा नहीं, तथापि एक साधारण यात्राका अन्दाजा करके तथा यह देखकर कि गोलकुण्डाकी सीमासे गजनी बल्कि उसके भी बाद कन्दहारके निकट तक, जो ईरान राज्यका प्रथम शहर है, तीन महीनेका मार्ग है, यह हिसाब लगाया गया है कि इन दोनों स्थानोंमें डेढ़ हजार मीलसे कमका अन्तर नहीं है। अर्थात् जितना अन्तर पेरिस और लायन्समें है उसका पँचगुना समझना चाहिये।

भारतवर्षकी प्राकृतिक और अप्राकृतिक चीजें-यह बात ध्यान देनेके योग्य है कि इस देशका एक बड़ा भाग अत्यन्त हरा भरा और फलप्रद है। जैसे एक बंगालही ऐसा है जो न केवल वहां पैदा होनेवाले गेहूं और चावल आदिके विचारसे मिस्र देशसे बढ़कर है बल्कि रेशम रूई और नील प्रभृति व्यापारिक वस्तुओंके भी हिसाब उत्पत्तिके भी विचारसे, जिनकी उत्पत्ति मिस्रमें नहीं होती, उससे कहीं बढ़कर है। इसके अतिरिक्त हिन्दुस्थानके अन्यान्य खण्ड भी अच्छी

तरह बसे हैं और खेती भी खासी होती है। यद्यपि यहांके कारीगर स्वभावतः सुस्त हैं, तोभी कुछ न कुछ करते रहते हैं, जैसे कालीन, कमख्वाब, चिकन, कारचोबी और जरदोजी आदिके काम और हर प्रकारकी सूती और रेशमी चीजें जो देशके अन्दर बरती या बाहरको भेजी जाती हैं बनाते रहते हैं।

दूसरे देशोंसे सोने चांदीका भारतवर्षमें आकर यहीं खप जानेका कारण--यह बात भी कम ध्यान देनेके योग्य नहीं है कि संसारमें घूम घाम कर चांदी सोना जब भारतवर्षमें पहुंचता है तो यहीं खप जाता है। अमेरिकासे जो रुपया आकर युरोपके देशोंमें फैलता है उसमेंसे कुछ तो उन वस्तुओंके बदलेमें जो टर्की (रूम) से आती हैं अनेक द्वारोंसे टर्कीमें चला जाता है और कुछ समरनाकी बन्दरगाहके मार्गसे ईरानमें पहुंच जाता है जहांसे रेशम युरोपमें आता है। टर्कीकी यह दशा है कि वहांके लोग कहुवके बिना जो यमनसे आता है रहही नहीं सकते, और टर्की यमन तथा ईरानको भारतवर्षकी वस्तुओंकी आवश्यकता बनी रहती है। सो, इस प्रकार, मुखा बन्दरमें जो लाल समुद्रके किनारे बाबुलमन्दबके निकट है और बसरेमें जो फारसकी खाड़ीके सिरपर है तथा अब्बास बन्दरमें जो हुरमुज टापूके पास है इन देशोंसे रुपया आता है और यहांसे उन जहाजों पर लदकर जो अच्छी ऋतुओंमें भारतवर्षका माल लेकर इन प्रसिद्ध बन्दरगाहोंमें आते हैं भारतवर्षमें पहुंच जाता है। यह भी विदित हो कि हिन्दुस्थानियों, डचों, अंगरेजों और पुर्तगीजोंके सब जहाज जो हर साल हिन्दुस्थानका माल पेगू, तेनासरीम, सिलोन, अचीन, मगासर, मलयद्वीप, मोजाम्बिक आदि

स्थानोंको ले जाते हैं वे भी इसके बदलमें चांदी सोना ही लाते हैं और यह भी उस रुपयेकी तरह जो मुखा बन्दर, बसरा और अब्बास बन्दरसे आता है यहीं रह जाता है। जो सोना चांदी डच लोग जापानकी खानियोंसे निकालते हैं उसमेंसे भी थोड़ा बहुत किसी न किसी समय यहां आ रहता है और जो रुपया सीधे मार्गसे फ्रान्स और पुर्तगालसे आता है वह भी कदाचित् ही यहांसे लौटकर बाहर जाता है।

यद्यपि मैं जानता हूं कि लोग यह कहेंगे कि भारतवर्षको तांबा, लौंग, जायफल, दारचीनी इत्यादि चीजों और हाथियोंकी आवश्यकता रहती है जिनको डच इंगलैण्ड जापान मलाका और सिलोन से लाते हैं और सीसा भी (शीशा नहीं) बाहर हीसे आता है, जिसमेंसे थोड़ासा इंगलैण्डसे अंगरेज भेजते हैं· इसके अतिरिक्त यद्यपि फ्रान्ससे बानात और अन्यान्य चीजें आती हैं और दूसरे देशोंके घोड़ोंकी भी आवश्यकता भारतमें रहा करती है—जो प्रतिवर्ष २५ सहस्रसे अधिक उजबक देश (तुर्किस्तान) से और बहुतसे कन्दहार होकर ईरानसे—और मुखा बन्दर बसरा और अब्बास बन्दर होकर एथिओपिया (हब्श) अरब और फारससे आते हैं, इसी प्रकार यद्यपि बहुतसे तर और सूखे मेवे समरकन्द बल्ख बुखारा

चीनीके वर्तन चीनसे आते हैं, मोती समुद्रों और टूटीकोरिनसे जो लंका टापूके निकट है आता है,—तो भी इन चीजोंके बदलमें भारतवर्षसे चांदी सोना वाहर नही जाता। क्योंकि जो व्यापारी ये चीजें लाते हैं वे इसमें अधिक लाभ समझते हैं कि उनके बदलेमें यहांकी वस्तुएँ ही अपने देशोंको यहांसे ले जायँ। सो, यद्यपि हिन्दुस्थानमें वाहरी देशोंसे प्राकृतिक या बनावटी चीजें आती हैं; तथापि वे संसार भरके सोने या चांदीके एक बड़े भागके यहीं रह जानेमें (जिनका अनेक द्वारोंसे यहां आगमन होता है) रुकावट नहीं डालतीं। और जो चांदी सोना एक बार यहां आता है वह कठिनतासे पुनः यहांसे वाही जाता है।

मोगल बादशाहकी धनशालिता---यह भी याद रखना चाहिये कि जब कोई दरबारी या पदाधिकारी चाहे वह छोटा हो या बड़ा हो मरता है तो उसकी सम्पत्ति बादशाही खजानेमें चली जाती है। इससे बढ़कर यह बात है कि हिन्दुस्थानकी सब जमीन, बागों और मकानोंको छोड़कर जिनके बेचने इत्यादिकी अनुमति प्रायः सर्वसाधारणको दे दी जाती है, बादशाहकी सम्पत्ति है। मैं अनुमान करता हूं कि इन बातोंसे मैंने यह प्रमाणित कर दिया कि यद्यपि सोने चांदीकी खानियां यहां नहीं हैं तौभी चांदी सोना यहां अधिकतासे है, और यह कि मोगल बादशाह जो इस देशके एक बड़े भागका स्वामी है उसकी आमदनी बहुतही अधिक है और वह बड़ा ही धनाढ्य है। परन्तु इसके अतिरिक्त बहुतसे ऐसे कारण हैं जिनसे उसकी धनशालितामें बाधा पहुँचती है। जैसे—देशके बहुतसे लम्बे चौड़े भाग, जिनको लेकर भारतीय साम्राज्य संगठित है, सूखे

पर्वतों तथा रेतीले मैदानोंसे कुछही अच्छे हैं; खेतीकी रीति भी खराब है; आबादी भी बहुतही कम है; और खतीके योग्य भूमिका एक बड़ा भाग कृषकोंके दुःखोंके कारणसे जो हुक्कामोंके अत्यचारोंसे प्रायः तबाह और बर्बादहो जाते हैं खाली पड़ा रहता है। ये बेचारे गरीब आदमी जब अपने कठोर और लालची हाकिमोंकी इच्छाओंको पूरा नहीं कर सकते तब न केवल इनके गुजारेकी वस्तु ही छीन ली जाती है बल्कि इनके बाल बच्चे भी पकड़कर लौंडी गुलाम बना लिये जाते हैं। ये बेचारे अपना घरबार छोड़कर किसी प्रकार शान्तिसे दिन काटनेके लिये नगरों या सेनाओंमें चले जाते और ऊंटवाले भिश्ती या साईस आदि बनकर अपना पेट पालन करते हैं और कुछ किसी राजाके प्रान्तमें जहां ऐसे अत्याचार कुछ कम दिखाई देते हैं और यहांकी अपेक्षा जहां उनको अधिक आराम मिलता है भाग जाते हैं।

इस साम्राज्यमें बहुतसी जातियां ऐसी भी हैं जिनपर बादशाह का पूरा दबाव नहीं है। बहुतसी ऐसी हैं जिनका शासक स्वयं उन्हीं मेंसे एक है और केवल उस समय बादशाहको कर देता है जब उस पर दबाव डाला जाता है। अनेक जातियां बहुत थोड़ा कर देती हैं और अनेक कुछ भी नहीं देतीं। कोई कोई ऐसी हैं कि देना तो क्या, उलटे लेती रहती हैं, जैसे कि ये छोटी छोटी रियासतें जो ईरानकी सीमा पर हैं ऐसेही कभी ईरान या हिन्दुस्थानको कर देती हैं। यही हाल बिलोचिस्तान तथा दूसरी पहाड़ी जातियोंका है जो मोगल बादशाह को थोड़ेके अतिरिक्त कुछ नहीं देतीं और अपनेको प्रायः स्वाधीन और स्वतन्त्र समझती हैं। इनकी स्वाधीनता स्वतन्त्रता और इनका स्वेच्छाचार इससे प्रमाणित होता है कि जब मोगल बादशाहने कन्दहारका घेरा करनेकी इच्छासे काबुल जानेके लिये अटक नामक

स्थानसे जो सिन्धु नदके किनारे है प्रस्थान किया तो इन जातियोंने पहाड़ोंसे पानीका उन मैदानोंमें पहुँचना बन्द कर दिया जो मार्गके निकट थे—और जब तक इनाम प्राप्त नहीं कर लिया जो खैरातके नामसे दिया गया तबतक सेनाको आगे बढ़नेसे इस प्रकार बिलकुल रोक रखा। पठान लोग भी बड़े उपद्रवी और मार काट मचानेवाले है। यह वह मुसलमान जाति है जो पहले बंगालकी ओर गंगाजीके किनारे बस्ती थी। मोगलोंके भारत पर आक्रमण करनेसे पहले अनेक स्थानोंमें इसका बड़ा जोर था, खासकर देहलीमें तो इसका बहुतही जोर था और उसके आसपासके राजे इसको कर देते थे। इस जातिके छोटे छोटे लोग यहांतक कि ऐसे लोग जो भिश्तीका काम करके अपना पेट पालन करते है वीर पुरुष और सिपाही हैं। जब किसी बातकी सत्यता पर वे जोर देना चाहते हैं तब साधारणतः कहा करते हैं कि "यदि मैं झूठ कहता होऊं तो देहलीका राज्य मुझको न मिले।" ये हिन्दू और मोगल दोनोंको अत्यन्त घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। अपनी पहली प्रतिष्ठा और पदको स्मरण करके मोगलोंसे (जिन्होंने इनके पूर्वजोंको उनके बड़े बड़े राज्योंसे बेदखल कर दिया और देहली तथा आगरेसे दूर पहाड़ोंकी ओर निकाल दिया था) बहुतही घृणा करते हैं और यद्यपि इनमेंसे कोई कोई पर्वतोंमें छोटे छोटे रईस बन बैठे हैं परन्तु कुछ अधिक शक्तिशाली नही हैं।

बीजापुरका शाह भी कुछ कर नही देता, वरन् अपने राज्यको बचानेके लिये हिन्दुस्थानके बादशाहसे सदैव लड़ता रहता है। परन्तु उसके देशकी रक्षाका कारण केवल उसकी सेनाही नही है किन्तु और भी बहुतसी बातें है। जैसे, उसका देश आगरा और देहलीसे जो कि मोगल बादशाहकी राजधानियां हैं बहुत दूरी पर है; बीजा-

पुर शहर स्वयं एक बहुत दृढ़ स्थान है। आसपासके देशोंमें घास और पानीकी कमी तथा खराबीके कारण आक्रमण करनेवाली सेनाका वहांतक पहुंचना दुस्तर है और अपने बचावके विचारसे शत्रुके आक्रमण करने पर बहुतसे राजे स्वयं अपनी सेनाएं ले जाकर उसकी सहायता करते हैं। अभी थोड़े ही दिन हुए सुप्रसिद्ध शिवाजीने बादशाही अमलदारीमें जाकर सूरत बन्दरको जो धनके लिये प्रसिद्ध है खूब लूटा था और इस प्रकार आवश्यकताके समयपर बादशाही सेनाओंके दबाव और जबरदस्तीसे बीजापुर राज्यको बचा लिया था। इन बातोंके अतिरिक्त गोलकुण्डाका अधिकारी भी जो एक धनवान् और शक्तिशाली बादशाह है छिपी रीतिसे उसको रुपये पैसेकी सहायता पहुंचाया करता है। वह सीमापर सदैव इस विचारसे सेना तैनात रखता है कि एक तो अपने देशकी रक्षा करे और दूसरे यदि बीजापुर पर अधिक जोर पड़े तो उसकी भी सहायता कर सके।

अस्तु तात्पर्य यह कि जो लोग मोगल बादशाहको कुछ कर नहीं देते उनमें सबसे अधिक अच्छे बलशाली हिन्दू राजे भी हैं जिनके राज्य देहली और आगरेसे कोई दूर कोई निकट सारे साम्राज्यमें स्थान स्थानमें फैले हुए हैं। इनमेंसे १५ या १६ बहुतही धनाढ्य और जबरदस्त हैं, खासकर राणा उदयपुर जो किसी समय राजाओंके राजा थे और राजा पुरूके वंशमें हैं तथा जयसिंह और यशोवन्तसिंह ऐसे हैं कि यदि तीनों एकता करले तो निस्सन्देह भयंकर और अजेय हो जायं, क्योंकि इनमेंसे प्रत्येक २० हजार सवार लड़ाई के लिये हर समय प्रस्तुत कर सकते हैं और वे भी ऐसे उत्तम कि भारतवर्षमें कोई इनके मुकाबलेका नहीं है। ये सवार राजपूत कहे

जाते हैं जिनका अर्थ हुआ राजाओंकी सन्तान। युद्धविद्याही इनकी विद्या है, रणनीति ही इनकी नीति है और समर-व्यापारही इनका व्यापार है। इस प्रतिज्ञा पर इनको जागीरें दी जाती है कि ये सदैव घोड़ों पर चढ़कर राजाके साथ रहें। ये लोग बड़े साहसी और वीर हैं और थोड़ीही शिक्षामें बड़ी योग्य सिपाही बन सकते हैं।

यह बात भी बतला देना आवश्यक है कि मोगल बादशाह मुसलमानोंके "सुन्नी" सम्प्रदायमेंसे हैं जैसे कि तुर्क लोग हैं जो मुसलमानी पैगम्बर मोहम्मदका सच्चा खलीफा या वारिस उसमान को जानते और उसमानी कहलाते हैं। बादशाह तो जैसा ऊपर कहा गया सुन्नी है परन्तु उसके दरबारके अधिकांश उमरा ईरानी हैं जो "शीया" हैं और इस बातके विश्वासी हैं कि वास्तविक खलीफा "अली" था। इन बातोंके अतिरिक्त मोगल बादशाह इस देशमें अपरिचित है, क्योंकि वह तैमूरका वंशज है जो उन मोगलोंका सरदार था जो तातार देशसे आये थे और जिसने सन् १४०१ ई० में भारतवर्षमें महा लूटपाट मारकाट मचाई थी। इस विचारसे मोगल बादशाह शत्रुओंके देशमें या कमसे कम ऐसे देशमें जहां एक मोगलके मुकाबले में सैकड़ों हिन्दू मुसलमान वर्त्तमान हैं राज्य करता है। अतएव ऐसे देशमें अपनी शक्ति दृढ़ रखने तथा सीमा पर उजबकों और ईरानियों के आक्रमणोंके रोकनेको प्रस्तुत रहनेके निमित्त उसको शान्तिके समयमें भी एक बड़ी सेना तैयार रखनी पड़ती है। इस सेनामें या तो इस देशके निवासी भरती हैं जैसे राजपूत और पठान या असल मोगल और वे लोग जो यद्यपि मोगल नहीं हैं और इसी कारणसे उनका वैसा आदर भी नहीं है तथापि परदेशी और मुसलमान तथा गोरे रंगके होनेके कारण मोगल ही कहलाते हैं परन्तु पूर्व समयकी तरह

अब दरबारके उमरा प्रायः असल मोगल नहीं हैं.—या तो उजबक (तुर्किस्तानी) ईरानी, अरब, तुर्क, (रूमी) इत्यादि लोगोंका संघट्ट है या इन सब लोगोंकी हिन्दुस्थानमें उत्पन्न हुई सन्तानें हैं। इन सब भिन्न प्रकारके लोगोंको साधारणतः मोगल ही कहा जाता है। परन्तु हां, मुझे इस बातकी सूचना दे देना आवश्यक जान पड़ता है कि ऊपर लिखे विभिन्न प्रकारके नवागन्तुक मुसलमानोंके वंशधर जो तीसरी चौथी पीढ़ीमें गेहुएँ रंगके और हिन्दुस्थानियोंकी तरह आलसी हो जाते हैं उनका आदर नये आये हुओंकी भांति नहीं किया जाता और उनको बहुत ही कम कोई पद दिया जाता है। इसीको वे अपना महद्भाग्य समझते हैं कि सवारों या पैदलोंमें उनको कोई नौकरी मिल जाय।

मोगल बादशाहकी सामरिक शक्ति—माननीय महोदय! अब इस बातका अवसर है कि मैं मोगल बादशाहकी सेना का कुछ वर्णन करूँ, जिसमें कि उस अपार व्यय पर विचार करके जो उसको अपनी सेनाके सम्बन्धमें करना पड़ता है आप अपनी राय प्रकट कर सकें कि वास्तवमें उसकी सेना कितनी है और वह किन लोगोंसे बनी है। अतएव पहले मैं उस देशी सेनाका वर्णन करता हूं जिसका वेतन चुकाते रहना बादशाहके लिये आवश्यक है।

विदित हो कि जयसिंह यशोवन्तसिंह तथा अन्यान्य राजाओंकी सेनाएं, जिनको बहुत बहुत द्रव्य इसलिये दिया जाता है कि वे स्वजातीय लोगों (राजपूतों) का दल बादशाहकी सेनाके लिये सदा तैयार रखें इसी "देशी सेना" के अन्तर्गत हैं। उनमें चाहे उस सेनाका काम लिया जाय जो सदा बादशाहके साथ रहती है, चाहे

वे किसी प्रान्तमें भेजी जायँ परन्तु उनका पद मुसलमान अमीरोंके बराबर है। जो नियम उनके लिये हैं वही इनके लिये भी हैं, हां इतना अन्तर अवश्य है कि जब बादशाह दुर्गमें रहता है तब इस देशी सेनाके लोग बाहर खेमोंमे रहते हैं और चौबीसों घण्टे दुर्गके भीतर पड़े रहना अच्छा नहीं समझते। इसके अतिरिक्त, जबतक इनके साहसी राजपूत सरदार इनके साथ न हों तबतक किसी दुर्गमें जाना ये स्वीकार नहीं करते। राजपूत सैनिकोंकी स्वजातिभक्ति प्राणाहुति और साहसका ऐसे अवसरों जब कि उनके किसी राजा अथवा सरदारको धोखा देकर कैद करनेका विचार किया गया हो पूरी तरह परिचय मिल चुका है।

बादशाह जो इन राजाओंको अपनी सेवामें रखता है इसके कई कारण हैं। प्रथम यह कि राजपूत न केवल अच्छे सिपाही हैं वरन् जैसा कि आगे लिखा जा चुका है कोई कोई राजे एक ही दिनमें २० सहस्रसे भी अधिक सिपाही लड़ाईके लिये प्रस्तुत कर सकते हैं। दूसरे यह कि जो राजे बादशाहकी सेवामें नहीं हैं और कर देने अथवा सामरिक विषयमें सहायता करनेके बदले स्वयं लड़नेको तैयार हो जाते हैं उनको शिक्षा देने और दबानेका काम इनसे लिया जाता है। तीसरे यह कि मोगल बादशाहकी यह पालिसी (नीति) है कि इन राजाओंमें परस्पर अनैक्य फूट और ईर्ष्या डाले रहे, अतएव जब वह चाहता है तब इनमेंसे किसी एक पर अधिक कृपा दिखला या किसी एकको अधिक सम्मानित कर इनमें लड़ाई लगा देता और अपना काम सिद्ध कर लेता है। चौथे यह कि राजपूत पठानों या किसी विद्रोही अमीर या प्रान्तीय अफसरके दबानेके लिये बहुत उपयुक्त हैं और इस कार्यके लिये सदैव मुस्तैद और तैयार

मिलते हैं। पांचवें यह कि जब कभी गोलकुण्डेका बादशाह कर नहीं देता अथवा अपने किसी और पड़ोसी राजाकी सहायता करनेको तैयार हो जाता है जिसको मोगल बादशाह अपने वशमें करना चाहता है तो उनसे लड़नेके लिये ये राजे अन्य अमीरोंकी अपेक्षा जो प्रायः ईरानी और गोलकुंडाके बादशाहके सजातीय होते हैं अधिक पसन्द किये जाते हैं। परन्तु सबसे अधिक ये राजे उस समय काम आते हैं जब ईरानके बादशाहके साथ युद्ध करनेका अवसर आ पड़ता है। अन्यान्य दरबारी अमीर जो ईरानके रहनेवाले हैं इस विचारसे कांपते हैं कि अपने जातीय बादशाहसे लड़ें। विशेषकर वे उसको अलीकी सन्तान और अपना इमाम तथा खलीफा समझते हैं और इस कारणसे उसके विरुद्ध शस्त्र उठाना बहुत बड़ा पाप समझते हैं।

जिन विचारोंसे राजपूतोंकी सेना रखनी पड़ती है उन्हीं विचारों और कारणोंसे मोगल बादशाहको पठानोंकी भी एक सेना प्रस्तुत रखनी पड़ती है।

मोगल सिपाहियोंको भी जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं तैयार रखना वैसा ही आवश्यक है जैसा औरोंका और इसलिये कि साम्राज्यकी मुख्य सेना इन्हीं सिपाहियोंकी है इनके लिये बहुत रुपया व्यय किया जाता है। अतएव मैं आशा करता हूं कि आपके निकट इनका हाल जरा विस्तारपूर्वक लिखना अनुचित न होगा।—इस सेना में सवार भी हैं और पैदल भी और इनके दो भाग माने जा सकते हैं जिनमेंसे एक भाग तो सदैव बादशाहके साथ रहता है और दूसरा भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें नियत रहता है। साथमें रहनेवाली सेनाओंमें पहले उमरा, फिर मनसबदार, फिर रोजीनेदार और सवार, इनमें

साधारण सवारोंका हाल लिखकर उसके बाद पैदल सेना और उसके उपरान्त बन्दूकवालों और सब पैदल सिपाहियोंका जो दोनों प्रकारके तोपखानोंमे काम करते हैं वर्णन करता हूं ।

दरबारी अमीरोंका हाल--यह न समझना चाहिये कि मोगल दरबारके अमीर भी फ्रान्सके अमीरोंकी तरह परम्परागत अमीर हैं, क्योंकि राज्यकी सब भूमि बादशाहकी समझी जाती है । इसी कारणसे यहां कोई खान्दानी रियासत नही है जैसे कि हमारे किसी ड्यूक या मारक्विसकी होती है और जो स्वयं अपने अधिकारकी भूमि और सम्पत्ति भोगकर अमीर कहा जाता हो और उसकी आमदनीसे उसके खर्च चलते हों । वरन् इसके विपरीत यहांके दरबारी तो प्राय: ऐसे है जिनके पिता भी अमीर नही थे । अमीरोंकी सब सम्पत्ति उनके मरते ही बादशाह अपने अधिकारमे कर लेता है इसलिये यह प्रकट ही है कि किसी कुटुम्बकी प्रतिष्ठा और उन्नतावस्था किस तरह बनी रह सकती है ! प्राय: तो ऐसा होता है कि किसी अमीरके मरते ही उसका सब कुछ नष्ट भ्रष्ट हो जाता है और उसके पुत्रोंकी नही तो पौत्रोंकी दशा तो अवश्य ही भिखमंगोंकी सी हो जाती है,—उनको साधारण लोगोंकी तरह किसी अमीरकी सेनाके सवारोंमे नौकरी करनेको विवश होना पड़ता है । हां इतनी कृपा अवश्य होती है कि जो अमीर मर जाता है उसकी सम्पत्ति पर अधिकार कर लेनेके बाद बादशाह उसकी विधवा पत्नीके लिये साधारणत: और उसके कुटुम्बके और लोगोंके लिये प्राय: कुछ वार्षिक नियत कर देता है । परन्तु यदि कोई अमीर बड़ी उमरका हो जाता है तो अपने जीते जी अपनी सन्तानके लिये—बशर्ते कि

बादशाहकी कृपा हो—कोई पद भी प्राप्त कर सकता है, विशेषकर इस अवस्थामें जब कि उसकी सन्तानें (पुत्र) डील डौल और चेहरे मुहरे अथवा आकार प्रकारके अच्छे और रंगके भी गोरे हों, जिससे यह ज्ञात हो सके कि वे असल मोगल हैं। परन्तु इस बादशाही कृपाके रूपमें भी पुत्र पिताके पदका अधिकारी नहीं हो सकता, क्योंकि यह साधारण बात है कि छोटे और कम वेतनके पदसे बड़े उत्तरदायित्व और बहुत अधिक वेतनके ओहदे तक क्रमक्रमसे उन्नति हो जाती है। इसीसे दरबारी अमीर भिन्न भिन्न जातियोंके हैं जो एक दूसरेकी देखा देखी अपना भाग्य आजमानेके लिये दूसरे देशोंसे यहाँ आ घुसते हैं और प्रायः नीच, गुलाम और अपढ़ हैं जिनको उच्चतम पदोंपर पहुँचा देना या बिलकुल निकृष्ट बनादेना केवल बादशाहकी इच्छा पर निर्भर करता है।

किसी अमीरका पद एकहजारी, अर्थात् एक सहस्र सवारोंका सरदार, किसीका दोहजारी, किसीका पञ्जहजारी, किसीका हफ्त-हजारी, किसीका दहहजारी और किसीका दोआजदह (बारह) हजारी भी हो जाता है, परन्तु बारह-हजारी बहुत करके बादशाहका शाहजादा होता है। अमीरोंका वेतन उनके सवारोंकी संख्याके अनुसार नहीं किन्तु घोड़ोंकी संख्याके अनुसार होता है और हरएक सवारको साधारणतः दो घोड़े रखनेकी अनुमति होती है। भारतवर्ष जैसे गर्म देशमें एक घोड़ेवाला सिपाही लंगड़ा समझा जाता है, क्योंकि एक घोड़ा यदि बीमार हो जाय या मर जाय तो दूसरेसे काम चले। इससे यह न समझना चाहिये कि बारहहजारी या सात-हजारी पदवाले अमीर इतने ही घोड़े रखते हैं, या बादशाह उनको इसी हिसाबसे खर्च देता है। ये पदवियाँ प्रायः दिखाने और

नाममात्रके लिये हैं । बादशाह स्वयं आदेश करता है कि कौन अमीर कितने घोड़े रखे और उतनेही घोड़ोंकी संख्याके अनुसार उसको वेतन दिया जाता है। सो, अमीरोंके वेतनका आधार घोड़ोंकी संख्या पर है। इस प्रकार वेतनमेंसे थोड़े घोड़े रखकर या अपने अधीन रखे हुए सिपाहियोंको किफायतसे वेतन देकर अमीर धन बचाते हैं। इस रीति पर नक्द वेतनमेंसे बचानेवालोंकी अपेक्षा जिन अमीरोंको जागीरें मिली हैं वे अधिक बचा लेते हैं। मै एक पञ्जहजारी अमीरके यहां नौकर था जिसके पास जागीरें नही थीं, केवल नक्द वेतन खजानेमे मिलता था, परन्तु तिसपर भी पाचसौ घोड़ों इत्यादिका खर्च देनेके बाद—जो उसको रखने आवश्यक थे—पांच हजार क्राउन अर्थात् बारह सहस्र रुपये उसकी मासिक आमदनी थी। इतनी अधिक आमदनी होने पर भी मैने इन अमीरोंको धनवान् बहुतही कम देखा है, वरन् बहुतसे निर्धन और ऋणग्रस्त हैं। इनका ऋणी होना इस कारणसे नहीं है कि दूसरे देशोंके अमीरों (युरोपके लार्डों इत्यादिसे मतलब है) की तरह खाने खिलानेमें बहुत कुछ व्यय कर देते है, किन्तु इनकी निर्धनता और इनके ऋणी होनेका कारण यह है कि बादशाहको समय समय पर बड़ी बड़ी नजरें गुजारते है, अपनी अमीरीके शानमें कई कई स्त्रियोंसे विवाह करते हैं, उनके नौकर चाकरोंका बड़ाखर्च होता है, और ऊंट घोड़ोंके रखनेमें उनको बहुत द्रव्य व्यय करना पड़ता है।



दूसरा भाग समाप्त।

सूचीपत्र।



बर्नियरकी भारतयात्रा।

तीसरा भाग।

इस पुस्तकके दो भाग पढ़नेके बाद अवश्य ही पाठकोंको इसके आगेका हाल पढ़ने की इच्छा होगी, अतएव उनको सूचना दी जाती है कि नीचेके पते पर वे चिट्ठियां भेजदें ताकि तीसरा भाग छपते ही वी० पी० से भेज दिया जाय। चार भागोंमें पुस्तक समाप्त होगी।

तीसरे भागमें मन्सवदारोंका हाल, बादशाहके खर्चका हाल, व्यापारका वृत्तान्त आदि—तथा देहली और आगरेका पूरा पूरा हाल, राजचिन्ह बादशाही जाननखानेका वर्णन, दरबार और मयूरासन, नजराने, खुशरोजका मेला, वेश्याएँ, चांदमारी, देहलीकी जुमामसिजद, बस्ती, मोगल राज्य में पदारी, हवोंकी कोठियां, ताजमहल, सूर्यग्रहण, जगन्नाथ की रथयात्रा, सतीलीला आदि विषय हैं। सभी विषय रोचक और जानने तथा पढ़ने योग्य हैं। चौथा भाग भी शीघ्र छप जायगा।

इन पुस्तकों को जरूर पढ़िये ।



अलबेला रसिया	|=)	वनकन्या	|=)
इन्दुमती	=)	मल्लिकादेवी	१|)
कादम्बरी	||=)	महेन्द्रकुमार ६ भाग	३|)
काजरकी कोठरी	||=)	महेन्द्रमाधुरी	||)
कटेसुककी दो दो बातें	|-)	मिस्ट्रीज आफ कोर्ट आफ लंडन	२)
कनक कुसुम	|)	याकूती तख्ती	|=)
किलेकी रानी	|||)	रजिया बेगम	२)
कथा सरित्सागर	४||)	रंभा	१)
कुसुमकुमारी	|||)	राजस्थानका इतिहास ४ भाग	-)
गुलाब	-)	राजकुमारी	|||)
गुलबहार	≡)	लवंगलता	||)
चन्द्रकिरण	|-)	लखनऊकी नवाबी	१||)
चन्द्रिका	=)	वीरपत्नी	|-)
चपला	२)	वीरजयमल	||)
चम्पा	≡)	वीरेन्द्रकुमार चार भाग	१||)
चन्द्रावली	-)||	सच्चा मित्र	|=)
जिन्दकी लाश	=)	सच्चा बहादुर ४ भाग	४)
तारा	१||)	[illegible]	-)||
तरुणतपस्विनी	||=)	स्वर्गीय कुसुम	|||)
[illegible] मोल	=)	शाहीमहलसरा	१||)
तूफान	-)||	हीरा बाई	|)
[illegible]	२|=)	हीरे का मोल	|)
[illegible]	≡)	हृदयहारिणी	||)

मिलनेका पता—

मैनेजर—[illegible] प्रेस, बनारस सिटी ।

बर्नियरकी भारतयात्रा ।

[तृतीय खण्ड]

※ जिसमें ※

बादशाही दरबार, देहली, आगरा, जुमामसजिद, ताज-महल, शाहीमहल, सूर्य्यग्रहण जगन्नाथकी रथयात्रा, सती, साधु और संन्यासियां इत्यादिका वृत्तान्त है ।



काशीनिवासी—

बाबू रामचन्द्र वर्म्मा लिखित ।

और

गङ्गाप्रसाद वर्म्मा अध्यक्ष कल्पतरु प्रेस काशी द्वारा प्रकाशित ।

॥ काशी ॥

कल्पतरु यन्त्रालयमें गंगाप्रसाद वर्म्मा द्वारा मुद्रित ।

संवत् १९६५ विक्रमी।

प्रथम वार १०००]

[मूल्य ॥) आने ।

डाक्टर

बर्नियरकी भारतयात्रा ।

(तीसरा खण्ड)



बादशाहके दरबारमें उपस्थित रहनेवाले अमीरोंके अतिरिक्त प्रान्तीय तथा सैनिक अमीर भी होते हैं जो भिन्न भिन्न स्थानोंमे रहते हैं । उनकी संख्या कितनी है यह मैं ठीक ठीक नहीं कह सकता । बादशाहके दरबारमें उपस्थित रहनेवाले अमीरोंकी संख्या २५ से ३० तक है और जैसा कि पहले लिखा जा चुका है घोड़ोंकी संख्याके अनुसार उनका वेतन है; जो एक हजारसे बारह हजार तक होते है ।

ये अमीर राज्यके स्तम्भ हैं । इनको राजधानी अथवा दूसरे नगरों वा सेनामें बड़े बड़े उच्च पद और अत्यन्त माननीय खिताब दिये जाते हैं । इनसे राजदरबारकी शान बनी रहती है । जो राजधानीमें रहते हैं वे बहुत उत्तम वस्त्र पहने बिना कभी घरके बाहर नहीं निकलते और कभी हाथी कभी घोड़े पर और कभी पालकीमें सवार होते है । इनके साथमें सवारोंके अतिरिक्त पैदल खितमतगार आदि भी होते है जो सवारीके आगे आगे दोनों और पैदल चलते हैं और न केवल रास्तोंमेंसे लोगोंको हटाते और गर्द झाड़ते है बल्कि

पीकदान, जलकी सुराही, हुक्का और कभी कभी कोई किस्से कहानी की पुस्तक अथवा कागज लेकर साथ साथ रहते हैं।

प्रत्येक अमीरके लिये यह आवश्यक है कि वह प्रतिदिन प्रातःकाल ११ बजे जब कि बादशाह दरबारमें अदालत करनेको बैठता है और फिर सन्ध्याके समय छः बजे सलाम करनेके लिये उपस्थित हो, और प्रत्येकको अपनी अपनी बारी पर दुर्गमें उपस्थित होकर सप्ताहमें एक दिन रात पहरा देना पड़ता है। उस समय ये लोग बिछानेके वस्त्र और कालीन तथा अन्य सामान अपने साथ ले आते हैं; परन्तु भोजन बादशाही भोजनालयसे दिया जाता है जिसके लेनेके समय एक विशेष प्रकारकी प्रथाके अनुसार कार्य्य किया जाता है।—अर्थात् खड़े हो और बादशाहके महलकी ओर मुख करके अमीर तीन बार झुक कर सलाम करते हैं, अपना हाथ प्रथम भूमितक ले जाकर फिर मस्तक तक उठाते हैं।

जब कभी बादशाह पालकी या हाथी या तख्त पर सवार हो कर निकलता है तो उनको छोड़ जो बीमार या वृद्ध होते हैं अथवा जो किसी विशेष कारणसे मुक्त रहते हैं सब अमीरोंको उसके साथ अवश्य ही रहना पड़ता है। हां, जब वह नगरके निकट शिकार खेलने या किसी बागमें या किसी मस्जिदमें नमाज पढ़नेके लिये जाता है तब कभी कभी केवल वही अमीर उसके साथ जाते हैं जिनकी उस दिन चौकी होती है। नियम तो यह है कि बादशाह चाहे शिकारमें हो, चाहे सेनाको साथ लेकर किसी लड़ाई पर जाय, चाहे एक नगरसे दूसरे नगरको जाता हो, सब समय अमीर उसके साथ रहते हैं और अमीरोंको चाहे कैसी ही सर्दी धूप पड़ती हो, चाहे वर्षा हो और चाहे गर्मी, [illegible] न [illegible] जाता

हो प्राय घोड़ा पर चढ़कर बिना किसी प्रकारकी छायाके साथ रहना पड़ता है।

मन्सबदारोंका वेतन--मन्सबदार एक प्रकारके सवार हैं जो मन्सबका वेतन पाते हैं। इनका वेतन एक विशेष प्रकारका और अच्छा तथा इनकी प्रतिष्ठाके योग्य है। यद्यपि वह अमीरोंके वेतनके समान नहीं है परन्तु साधारण सवारोंसे बहुत अधिक है, इसी कारण छोटी श्रेणीके अमीरोंमें इनकी गणना की जाती है। बादशाहके अतिरिक्त ये किसीके अधीन नहीं हैं और जो काम अमीरोंसे लिये जाते हैं वही इनसे भी लिये जाते हैं। यदि इनके पास भी कुछ सवार हों जैसा कि पहले नियम था तो ये भी अमीरों के बराबर हो जायँ, परन्तु आजकल इनके पास केवल दो चार घोड़े रहते हैं जिनपर बादशाही दाग लगे होते हैं। इनका वेतन कभी कभी डेढ़सौ रुपया महीना होता है, परन्तु ७००) रु० मासिकसे अधिक कभी नहीं होता। इनकी संख्या नियत नहीं है, परन्तु दरबारी अमीरोंकी अपेक्षा बहुत अधिक है। इनके अतिरिक्त जो प्रान्तोंमें या सेनामें नियुक्त हैं उनकी संख्या मैंने दो तीन सौसे कम कभी नहीं देखी।

रोजीनेदार भी एक प्रकारके सवार ही हैं जिनका वेतन प्रतिदिन मिल जाया करता है जैसा कि स्वयं "रोजीनेदार" शब्दसे प्रकट है। परन्तु इनकी आमदनी बहुत है और कभी कभी तो ये मन्सबदारोंसे भी अधिक पा जाते हैं। तथापि विशेष प्रकारका वेतन होनेके कारण अधिक वेतनसे इनकी अधिक प्रतिष्ठा नहीं है और मन्सबदारोंकी भांति ये लोग ऐसे कालीन और फर्श आदि मोल लेनेको

विवश नहीं है जो बादशाही मकानोंमें काममें आनेके बाद मन्सबदारोंको लेने पड़ते हैं तथा प्रायः जिनके लिये मन्सबदारोंको बहुत मूल्य देना पड़ता है । इन लोगोंकी संख्या बहुत अधिक है और छोटे छोटे कार्य इनके सुपुर्द हैं । इनमें बहुतसे मुत्सद्दी और नायब मुत्सद्दी हैं और बहुतसे इस कामपर नियुक्त हैं कि उन आज्ञापत्रों पर जो रुपया देनेके लिये लिखे जाते हैं सरकारी मुहरें लगावें । ये ऐसे हैं कि इन आज्ञापत्रोंका कार्य शीघ्र समाप्त कर देनेके बदले बेधड़क घूस लिया करते हैं ।

अब साधारण सवारोंका वृत्तान्त सुनिये । ये उन अमीरोंके अधीन, जिनका हाल ऊपर लिखा जा चुका है, काम करते हैं और दो प्रकारके होते हैं । एक—दो घोड़ेवाले जिनको बादशाही सेवाके लिये तैयार रखना अमीरोंके लिये आवश्यक है और जिनके घोड़ोंकी रानों पर उन अमीरोंके दाग लगे रहते हैं;—दूसरे एक घोड़ेवाले । दो घोड़ेवालोंका वेतन और सम्मान एक घोड़ेवालोंकी अपेक्षा अधिक है और यद्यपि सरकारसे एक घोड़ेवाले सवारके निमित्त पच्चीस रुपया मासिकके हिसाबसे मिलता है, परन्तु सवारोंको कम या अधिक देना बहुत कुछ उनके सरदारों अर्थात् अमीरोंकी उदारता पर निर्भर रहता है ।

पैदल सिपाहियोंका वेतन सब प्रकारके ऊपर लिखे घुड़सवारियोंसे कम है । इनकी श्रेणीमें जो लोग बन्दूकची हैं उनको आराम और शान्तिके समयमें भी बहुत बखेड़ोंमें रहना पड़ता है; अर्थात् बन्दूक चलानेके समय ऊपरसे घुटना टेककर बैठते हैं और अपनी बन्दूकको लकड़ीकी तिपाइयों पर रखकर जो बन्दूकके साथ लटकती हैं चलाते हैं तो उनको यह बैठक लगानी योग्य होती है—और

इतनी सावधानी पर भी यह डर लगा रहता है कि कहीं बन्दूक दा-गनेवालेकी लम्बी लम्बी दाढ़ी और आँख न जल जायँ, अथवा किसी भूत प्रेतके विघ्न डालनेसे बन्दूक न फट जाय !

पैदल सैनिकोंमें किसीका वेतन २०) रु० मासिक है, किसीका १५)रु० और किसीका १०), परन्तु गोलन्दाजोंका वेतन बहुत है; विशेष कर विदेशी गोलन्दाज अर्थात् पुर्तगीजों अंगरेजों डचों जर्मनों और फरॉसीसियोंका, जो गोआ और डचों तथा अंगरेजों की कम्पनियोंके कार्यालयोंसे भाग आते है । प्रारम्भमें जब मोगल लोग तोप चलाना अच्छी तरह नहीं जानते थे तब इन विदेशी गोल-न्दाजोंको अधिक वेतन मिलता था और उनमेंसे अब भी कुछ लोग है जो २००) रु० मासिक पाते हैं; परन्तु अब बादशाह इन लोगोंको बहुत कम नौकर रखता है और २०) रु० से अधिक वेतन नहीं देता।

तोपखाना दो प्रकार का है,—एक भारी दूसरा हलका । भारी तोपखानेके विषयमें मुझे स्मरण है कि जब बादशाह बीमारीके बाद सेना सहित लाहौरके मार्गसे काश्मीर गया था जिसको भारतवर्ष में द्वितीय स्वर्ग कहते हैं तो उस यात्रामें जम्बूरकों (अर्थात् ऊँटों पर एक प्रकारकी बहुत छोटी छोटी तोपें रखनेवालों) के अतिरिक्त जो दो तीनसौ तेज ऊँटों पर थे, (और ये छोटी तोपें दोहो बन्दू-कोंके बराबर थीं) सत्तर भारी तोपे जिनमें प्राय बिरञ्जी तोपें थीं, साथ थीं ।

बादशाहकी काश्मीरयात्राका वर्णन मैं आगे चलकर किसी अवसर पर करूंगा और यह भी लिखूंगा कि इस लम्बी यात्रामें बादशाह बहुधा शिकारमें अपना जी किस किस प्रकार बहलाता रहा । अर्थात् कभी शिकारी पक्षियोंको कुलंग आदि जानवरों पर

विवश नहीं हैं जो बादशाही मकानोंमें काममें आनेके बाद मन्सबदारोंको लेने पड़ते हैं तथा प्रायः जिनके लिये मन्सबदारोंको बहुत मूल्य देना पड़ता है । इन लोगोंकी संख्या बहुत अधिक है और छोटे छोटे कार्य इनके सुपुर्द हैं । इनमें बहुतसे मुत्सद्दी और नायब मुत्सद्दी हैं और बहुतसे इस कामपर नियुक्त हैं कि उन आज्ञापत्रों पर जो रुपया देनेके लिये लिखे जाते हैं सरकारी मुहरें लगावें । ये ऐसे हैं कि इन आज्ञापत्रोंका कार्य शीघ्र समाप्त कर देनेके बदले बेधड़क घूस लिया करते हैं ।

अब साधारण सवारोंका वृत्तान्त सुनिये । ये उन अमीरोंके अधीन, जिनका हाल ऊपर लिखा जा चुका है, काम करते हैं और दो प्रकारके होते हैं । एक—दो घोड़ेवाले जिनको बादशाही सेवाके लिये तैयार रखना अमीरोंके लिये आवश्यक है और जिनके घोड़ोंकी रानों पर उन अमीरोंके दाग लगे रहते हैं,—दूसरे एक घोड़ेवाले । दो घोड़ेवालोंका वेतन और सम्मान एक घोड़ेवालोंकी अपेक्षा अधिक है और यद्यपि सरकारसे एक घोड़ेवाले सवारके निमित्त पच्चीस रुपया मासिकके हिसाबसे मिलता है, परन्तु सवारोंको कम या अधिक देना बहुत कुछ उनके सरदारों अर्थात् अमीरोंकी उदारता पर निर्भर रहता है ।

पैदल सिपाहियोंका वेतन सब प्रकारके ऊपर लिखे कर्मचारियोंसे कम है । इनकी श्रेणीमें जो लोग बन्दूकची हैं उनको आराम और शान्तिके समयमें भी बहुत बखेड़ोंमें रहना पड़ता है; अर्थात् बन्दूक चलानेके समय जब ये घुटना टेककर बैठते हैं और अपनी बन्दूकको लकड़ीकी तिपाइयों पर रखकर जो बन्दूकके साथ लटकती हैं चलाते हैं तो उनकी यह बैठक देखनेही योग्य होती है—और

इतनी सावधानी पर भी यह डर लगा रहता है कि कहीं बन्दूक दागनेवालेकी लम्बी लम्बी दाढ़ी और आँख न जल जायँ, अथवा किसी भूत प्रेतके विघ्न डालनेसे बन्दूक न फट जाय!

पैदल सैनिकोंमें किसीका वेतन २०) रु० मासिक है, किसीका १५)रु० और किसीका १०), परन्तु गोलन्दाजोंका वेतन बहुत है; विशेष कर विदेशी गोलन्दाज अर्थात् पुर्तगीजों अंगरेजों डचों जर्मनों और फरांसीसियोंका, जो गोआ और डचों तथा अंगरेजों की कम्पनियोंके कार्यालयोंसे भाग आते है। प्रारम्भमें जब मोगल लोग तोप चलाना अच्छी तरह नहीं जानते थे तब इन विदेशी गोलन्दाजोंको अधिक वेतन मिलता था और उनमेंसे अब भी कुछ लोग हैं जो २००) रु० मासिक पाते हैं; परन्तु अब बादशाह इन लोगोंको बहुत कम नौकर रखता है और २०) रु० से अधिक वेतन नहीं देता।

तोपखाना दो प्रकार का है,—एक भारी दूसरा हलका। भारी तोपखानेके विषयमें मुझे स्मरण है कि जब बादशाह बीमारीके बाद सेना सहित लाहौरके मार्गसे काश्मीर गया था जिसको भारतवर्ष में द्वितीय स्वर्ग कहते हैं तो उस यात्रामें जम्बूरकों (अर्थात् ऊँटों पर एक प्रकारकी बहुत छोटी छोटी तोपें रखनेवालों) के अतिरिक्त जो दो तीनसौ तेज ऊँटों पर थे, (और ये छोटी तोपें दोहो बन्दूकोंके बराबर थीं) सत्तर भारी तोपें जिनमें प्राय बिरञ्जी तोपें थी, साथ थी।

बादशाहकी काश्मीरयात्राका वर्णन मैं आगे चलकर किसी अवसर पर करूंगा और यह भी लिखूंगा कि इस लम्बी यात्रामे बादशाह बहुधा शिकारमें अपना जी किस किस प्रकार बहलाता रहा। अर्थात् कभी शिकारी पक्षियोंको कुलंग आदि जानवरों पर

छोड़ा कभी नीलगायका आखेट किया जो "एलफ्" के प्रकारका जानवर है, किसी दिन चीतोंसे हरिनोंको पकड़वाया और कभी शेरका शिकार खेला जो वास्तवमें बादशाहके योग्य है।

हलका तोपखाना जो लाहौर और काश्मीरकी यात्रामें साथ गया था उसका क्रम मुझको बहुत अच्छा जान पड़ता था। उसमें पचास या साठ छोटी छोटी फिरंगी तोपें थीं जो सब मजबूत और सुन्दर रंगदार तख्तों पर चढ़ी हुई थीं जिनके साथ गोले बारूद के लिये एक आगे और एक पीछे दोदो बक्स थे और उनपर सजावटके लिये भिन्न भिन्न प्रकारकी लाल झण्डियां लगी हुई थीं। इनमें दोदो उत्तम घोड़े जुते थे जिनको एक एक सवार हांकता था और एक तीसरा घोड़ा तथा एक और सिपाही सहायताके वास्ते साथ लिये रहता था।

भारी तोपखाना बादशाहके साथ नहीं रहता था; क्योंकि आखेट करने या पानीके निकट रहनेके अभिप्रायसे बादशाह सीधे मार्गसे अलग होकर चलता था और ये तोपें ऐसी भारी थीं कि दुर्गम मार्गों या नावोंके पुलों परसे जो बादशाही सेनाके उतरनेके लिये बनाए गये थे जा नहीं सकती थीं। परन्तु हलका तोपखाना सदैव बादशाहके साथ रहता है। आखेटके स्थानोंमें जो बादशाहके लिये ठीक किये हुए रहते हैं और जानवरोंको रोक रखनेके लिये जिनकी नाकेबन्दी भी आखेटके समय की जाती है जब बादशाह बन्दूकसे अथवा और किसी प्रकार आखेट करना चाहता है तो यह तोपखाना जितना शीघ्र सम्भव होता है आगेके पड़ाव पर जहां बादशाह और बड़े बड़े अमीरोंके डेरे पहलेसे लगे होते हैं जा रहता है। बादशाही खेमेके सामने इन तोपोंकी लैन लगा दी जाती

है और जब बादशाह पड़ावमें पहुँचता है तो सबकी सूचनाके लिये सलामी की जाती है ।

जो सेना प्रान्तोंमें नियत रहती है उसकी और बादशाहके साथ रहनेवाली सेनाकी अवस्थामें इसके अतिरिक्त और कुछ अन्तर नहीं है कि प्रान्तोंमे रहनेवाले सैनिकोंकी संख्या अधिक है । प्रत्येक प्रान्तमें अमीर, मन्सबदार, साधारण सवार, प्यादे और तोपखाने उपस्थित रहते हैं । एक दक्षिण प्रान्तमें ही पचीस तीस सहस्र सवार रहते हैं, जो गोलकुण्डेके शक्तिसम्पन्न बादशाहके धमकाने और बादशाह बीजापुर तथा उन राजाओंसे लड़नेके लिये आवश्यक हैं जो आपसके बचावके विचारसे अपनी अपनी सेना लेकर बीजापुरके बादशाहसे मिल जाते हैं । काबुल प्रान्तमें जो सेना है और जिसका ईरान बिलूचिस्तान अफगानिस्तान तथा अन्यान्य पहाड़ी देशोंके विरोध और उपद्रवोंकी रोक थाम करनेके लिये रहना प्रयोजनीय है वह बारह अथवा पन्द्रह सहस्रसे कम नहीं हो सकती । काश्मीरमें चार सहस्रसे अधिक सैनिक हैं और बंगालमें जहां सदैव लड़ाई भिड़ाई रहा करती है बहुत अधिक सेना रहती है । कोई प्रान्त ऐसा नहीं है जहां उसकी लम्बाई चौड़ाई और अवस्थाके विचारसे कम या अधिक सेना रखना आवश्यक न हो, इसलिये समग्र सैन्यकी संख्या इतनी अधिक है कि जिसपर सहसा विश्वास नहीं हो सकता । पैदल सेनाको जिसकी संख्या कम है अलग रखकर, और घोड़ों की उस संख्याको जो नाम मात्रके लिये है और जिसको सुनकर अनजान आदमी धोखा खा सकता है छोड़कर, मैं तथा दूसरे जानकार लोग अनुमान करते है कि सवार जो बादशाहके साथ रहते है राजपूतों और पठानों समेत पैंतीस या

चालीस हजार होंगे—जो प्रान्तोंके सैनिकोंके साथ मिलकर दो लाखसे अधिक हो जाते हैं।

मैंने लिखा है कि पैदल थोड़े हैं। सो, मेरी समझमें पैदल सेना जो बादशाहके साथ रहती है बन्दूकचियों और तोपखानेके पैदल सिपाहियों तथा अन्यान्य लोगोंसे जो तोपखानेसे सम्बन्ध रखते हैं मिल जुलकर पन्द्रह हजारसे अधिक नहीं है। इसीसे प्रान्तोंकी सेनाका अन्दाजा लगाया जा सकता है। परन्तु मैं नहीं जानता कि कुछ लोग पैदल सैन्यकी संख्या क्यों अधिक बताते हैं! कदाचित् मजदूरों खिदमतगारों भठियारों और बाजारवालोंको जो साथ रहते है सैनिकोंमें ही गिन लेते होंगे। सचमुच यदि इस सब भीड़ भाड़को मिला लिया जाय तब तो केवल उसी दलकी संख्या जो बादशाहके साथ रहता है; खासकर जब लोगोंको यह मालूम हो जाय कि बादशाहका विचार कुछ समयके लिये राजधानीके बाहर रहनेका है, दो तीन लाख प्यादोंसे कम नहीं रहती। जब इस बातपर विचार किया जाय कि कितने डेरे खेमे बावरचीखाने असबाब सामान और औरतें प्रायः दलके साथ रहती हैं और इन सबके ले जानेके लिये कितने हाथी ऊंट बैल घोड़े आदि आवश्यक हैं तो उस संख्यामें जो मैंने अनुमान की है अत्युक्ति नहीं जान पड़ेगी।

माननीय महोदय! यह बात स्मरण रखनेके योग्य है कि इस देशकी अवस्था और शासनप्रणालीके विचारसे (जहां राज्यकी भूमिका केवल बादशाह ही मालिक है) इस देशकी राजधानियों (आगरा और देहली) के निवासियोंके पेटपालनका मुख्य आधार केवल सेनाका उपस्थित रहना ही है: अतएव वे विवश हैं कि जब कभी बादशाह कोई लम्बी यात्रा करे तो वे भी साथ जायें। ये नगर

फ्रान्सकी राजधानी पेरिसके समान नहीं है बल्कि इनको कम्प कहा-जा सकता है। कम्पों और इन नगरोंमे केवल इतना अन्तर है कि खेमों-के बदले इनमे मकान है और रहने सहनेके अन्यान्य सामान भी कम्पोंकी अपेक्षा कुछ अच्छे हैं।

इस बातकी वर्णना करना भी आवश्यक है कि अमीरोंसे लेकर सिपाहियों तकके वेतनका हर दूसरे महीने बाँट दिया जाना प्रयोजनीय होता है, क्योंकि वेतनके सिवा जोकि बादशाही खजानेसे मिलता है कोई और द्वार उनके पेटपालनका नहीं है।

फ्रान्समें यदि किसी कारणसे वेतनके देनेमें .गवर्नमेण्टकी ओरसे कुछ विलम्ब हो जाता है तो सरदार तो क्या सिपाही भी अपनी किसी विशेष आमदनीसे निर्वाह कर लेते है, परन्तु भारतवर्षमे यदि सैनिकोंको वेतनके मिलनेमें कभी नियत समयसे अधिक विलम्ब हो जाता है तो निश्चयही बहुत बुरा परिणाम होता है। अर्थात् सिपाही अपना तुच्छसा सामान जो उनके पास होता है बेच खोचकर चल देते और और भूखों मरने लगते है! जिस समय राजकुमारोंका पारस्परिक झगड़ा और युद्ध प्राय: समाप्त होनेको था उस समय मैंने स्वयं अपनी आंखोंसे देखा है कि सवारोंकी रुचि इस ओर बढ़ती जाती थी कि अपने घोड़े बेच डाले; और कुछ सन्देह नहीं कि यदि लड़ाई अधिक दिन चलती तो वे अवश्य ऐसा कर डालते। यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, क्योंकि मोगल बादशाहकी सेनामे कोई सिपाही कठिनतासे मिल सकता है जो जोरू बच्चे नौकर चाकर और लौंडी गुलाम न रखता हो। इसी सबबसे मैंने ऐसे बहुतसे लोगोंको देखा है जो इस अवस्थाको देखकर बड़ा आश्चर्य करते है कि सेनाके लिये इतना अगणित धन कहांसे आता है कि जिससे लाखों मनुष्योंकी

जीविका चलती है, जिसका आधार केवल बादशाहकी ओरसे मिलनेवाला वेतन ही है।

परन्तु वे लोग इस बातपर ध्यान नहीं देते कि मोगल बादशाह इस देशमें किस रीति और किस नीतिसे शासन करता है। मैंने तो उसके खर्चोंके विषयमें अभी एक प्रकार कुछ लिखा ही नहीं है। जरा विचारिये कि आगरे और देहलीके अस्तबलोंमें दो या तीन सहस्र तो केवल अच्छे घोड़ेही हैं जो आवश्यकताके समयके लिये सदा तैयार रहते हैं और आठ या नौसौ हाथी तथा बहुतसे टट्टू और खच्चरें तथा मजदूर जो उन असंख्य और बड़े लम्बे चौड़े खेमों और उनके साथके छोटे खेमों तथा बेगमों एवं महलकी अन्यान्य स्त्रियों और सामान तथा बावर्चीखानेके असबाब और गंगाजल आदि बहुतसी वस्तुओंके ढोनेके लिये जिनका यात्राके समय बादशाहके साथ रहना आवश्यक रहता है और जो युरोपमें किसीके ध्यानमें भी नहीं आते रखने पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त महलके अगणित प्रकारके खर्च हैं : अच्छी मलमलें, जरदोजी, रेशमी और जरीदार कपड़े, मोती, कस्तूरी, अम्बर और इत्र आदि इतनी अधिकतासे खर्चमें आता है कि ध्यानमें नहीं आ सकता। अतएव यद्यपि मोगल बादशाहकी आमदनी बहुत है, पर उसका खर्च भी उतनाही है और इसी कारणसे (जैसा कि बहुतसे लोग भूलसे समझते हैं उसे बहुत अधिक रुपयेकी बचत नहीं होती।

असंख्य रुपये लेता और दूसरे हाथसे दे देता है। मेरी समझमें वास्तविक धनी उस बादशाहको कहना चाहिये जिसकी आमदनी इतनी हो कि अत्याचार और जबरदस्ती करके प्रजाको कंगाल किये बिना अमीरों और दरबारियोंका एक शानदार समूह रखने, उपयोगी और बड़ी बड़ी ईमारतें बनवाने, उदारता और दानशीलता दिखाने तथा देशकी रक्षाके लिये बहुत बड़ी सेना रखनेपर भी वह इतना रुपया बचा सकता हो कि अपने पड़ोसियोंके साथ किसी आकस्मिक लड़ाई भिड़ाईके समय, जो चाहे कई वर्षोंतक जारी रहे, काममें ला सके। यद्यपि मोगल बादशाहको इनमेंसे कई बातें प्राप्त हैं, परन्तु उतनी नहीं जितनी कि लोग अनुमान करते है।

बादशाही व्यय---मोगल बादशाहके अपार और आवश्यक व्ययके विषयमें मैंने जो कुछ लिखा है उसे तथा उन दो बातोंसे जिनका मुझको अच्छी तरह निश्चय हो चुका है कदाचित् आपकी राय भी यही होगी कि मोगल बादशाहकी धनशालिताकी प्रसिद्धि अत्युक्तिसे खाली नहीं है। उन दो बातोंमेंसे एक तो यह है कि पिछली लड़ाईके समाप्त होनेके लगभग औरंगजेबको बड़ीही चिन्ता थी कि सैनिकोंका वेतन किस तरह चुकाया जाय,—ऐसी अवस्था में भी जब कि लड़ाई केवल पांच वर्ष रही थी और सैनिकोंका वेतन भी कम था तथा बंगालके अतिरिक्त जहां सुल्तान शुजा अबतक लड़ता था दूसरे सब प्रान्तोंमें बिलकुल शान्ति थी और पिताके प्रायः खजाने भी उसके अधिकारमें आ चुके थे।

दूसरी बात यह कि शाहजहां जो बहुत कम खर्च करनेवाला था और किसी बड़ी लड़ाईमें फँसे तथा उलझे बिना चालीस वर्षसे

अधिक समय तक राज्य करता था कभी छः करोड़से अधिक रुपये इकट्ठा न कर सका। परन्तु इस धनमें मैंने उन अनगिनत सोने चांदी की तरह तरहकी चीजोंको जिनपर बहुत अच्छे अच्छे काम बने हुए है तथा बड़े बड़े बहुमूल्य मोतियों और भांति भांतिके असंख्य रत्नों को सम्मिलित नहीं किया और मुझको सन्देह है कि इससे अधिक रत्न कदाचितही संसारके किसी और बादशाहके पास हों। इसका एक तख्तही (यदि मैं भूलता न होऊं तो) तीन करोड़के मूल्यका है। ये सब जवाहरात और बहुमूल्य वस्तुएँ राजपूतोंके प्राचीन राजवंशों, पठान बादशाहों और अमीरोंसे लूटी तथा एक लम्बी मुद्दतसे इकट्ठी की हुई हैं और प्रत्येक बादशाहके समयमें राज्यके अमीरोंकी मामूली वार्षिक नजरोंके रुपये जो उनको अवश्यही देने पड़ते हैं इनकी संख्या बढ़ती गई है। यह सब खजाना तख्तका माल समझा जाता है और इसको छेड़ना अनुचित है यहां तक कि स्वयं बादशाह भी चाहे कैसीही आवश्यकता क्यों न हो इसका थोड़ासा रुपया भी बड़ी कठिनतासे प्राप्त कर सकता है।

अपने इस पत्रको समाप्त करनेसे पहले मैं यह बात लिख देना चाहता हूं कि यद्यपि चांदी सोना और देशोंसे घूमघाम कर अन्तमें भारतवर्षमें आ जाता है, तोभी और देशोंकी अपेक्षा यहां अधिक दिखाई नहीं देता और भारतवासी दूसरे देशोंके निवासियोंकी तरह सन्तुष्ट मालूम नहीं होते। इसका कारण यह है कि प्रथम तो बहुतसा माल बार बार गलाये जाने और औरतोंके हाथोंकी चूड़ियों, पावोंके कड़ों, तोड़ों, कानोंकी बालियों, नाकोंकी नथों और हाथोंकी अंगूठियों आदिके बनानेमें छीज जाता है और इससे भी अधिक अंश जरदोजी और कारचोबीके कामके कपड़ों, इलायचों, पगड़ियोंके

तुरों, सुनहरे रुपहरे कपड़ों, ओढ़नियों, पटुकों, मन्दीलों और कमरखाबोंके बनानेमें खर्च हो जाता है कि सुननेवालेको विश्वास नहीं हो सकता। सब सेनाओंमें अमीरोंसे लेकर सिपाहियों तक कुछ न कुछ मुलम्मेदार और सुनहरी रुपहरी चीजें तड़क भड़कके लिये पहनते हैं और एक अदना सिपाही भी (चाहे कुटुम्ब भूखों क्यों न मर जाय, जैसा होना एक साधारण बात है) अपनी पत्नी और बच्चोंको कुछ न कुछ गहने अवश्य पहनाता है।

बादशाह जो कि भूमिका मालिक है सैनिकोंको कुछ भूमि वेतनमें दे देता है जिसको यहां "जागीर" और टर्की देशमें "तेमार" कहते हैं और जिसका यह अर्थ है कि वह स्थान जहांसे कुछ लिया जाय, अथवा वेतन वसूल करनेका स्थान। इसी प्रकारकी जागीरें उनके और उनकी सेनाके वेतनमें इस प्रतिज्ञापर दी जाती हैं कि जो आमदनी बचे उसका एक विशेष अंश प्रति वर्ष बादशाही खजानेमें देते रहें। जो भूमि जागीरमें नहीं दी जाती और स्वयं बादशाह तथा उसके कुटुम्बियोंके लिये है और कदाचित् ही कभी किसीको जागीरमें दी जाती है, वह इजारदारोंको दी जाती है जो प्रतिवर्ष नियत रुपया देते रहते हैं। इस प्रकार जो लोग भूमि पर अधिकार प्राप्त करते है, चाहे वे सूबेदार हों चाहे इजारदार चाहे तहसीलदार, उनका खेतिहरो पर बड़ा अधिकार रहता है; और खेतिहारोंही तक बात नहीं है वरन् अपने प्रान्तके गावों और कस्बोंके व्यापारियो और कारीगरों पर भी उनको वैसाही विलक्षण अधिकार प्राप्त है, पर जिस ढंगसे वे अपने अधिकारका व्यवहार करते हैं उससे अधिक कोई कष्टदायक अत्याचार विचारमें नहीं आ सकता। इसके अतिरिक्त ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके पास ये

बेचारे अत्याचारके मारे किसान कारीगर और व्यापारी जाकर अपना दुखड़ा रोयें। अर्थात् न तो फ्रान्सकी तरह यहां कोई "ग्रेट लार्ड" हैं, न पार्लीमेण्ट और न अदालतके जज, जो इन निर्दय अन्यायाचारियोंके अत्याचारोंको रोकें। जो विचारक यहां नियुक्त हैं उनको इन अभागे लोगोंका दुःख मोचन करनेका कोई अधिकार नहीं है। परन्तु इन असाध्य अधिकारोंका दुव्यवहार बड़े बड़े नगरों अर्थात् देहली आगरा और बन्दरगाहों तथा बड़े बड़े कसबोंके आसपास इतना अधिक नहीं देख पड़ता, क्योंकि ऐसे स्थानोंमें कोई बड़े अन्यायका काम बादशाही दरबारसे छिपा रहना सहज नहीं है।

प्रजाके साथ इस प्रकारका गुलामों जैसा बरताव व्यापारके लिये हानिकारी है तथा लोगोंकी रीति नीति सुधरने नहीं पाती; और व्यपार करनेका किसीको इसलिये उत्साह नहीं होता कि इसके बदले कि जो कुछ लाभ उठावे उसे वह अपने सुखके लिये खर्च करे उसको देखकर किसी अत्याचारी और शक्तिशाली पड़ोसीके मुंहमें पानी भर आता है जो सदा यह चाहता है कि किसी व्यक्तिको उसके परिश्रमके फलका स्वाद न लेने दे। यदि किसीको धन प्राप्त भी हो जाता है, जैसा कि कभी कभी होना स्वाभाविक बात है, तो उसके विपरीत कि वह पहलेकी अपेक्षा सन्तुष्ट रहे और स्वाधीनताके साथ जीवन व्यतीत करे दरिद्रोंकासा रूप बनाये रहता है, अपना मकान और असबाब बहुतही बुरा रखता है और सबसे विशेष बात यह कि खाने पीनेमें कञ्जूसी दिखाता है। ऐसी अवस्थामें अपना रुपया और अशरफी या जमीनमें किसी गहरे गड्ढेमें गाड़ रखता है। सब लोगोंसे, चाहे वे खेतिहर हों चाहे कारीगर या बाजारी व्यापारी हिन्दू

या मुसलमान, प्राय यही प्रथा है. विशेषकर हिन्दुओंमें जिनके हाथमें देशका व्यापार और धन है और जिनको यह विश्वास है कि जिस धनको हम अपनी जीवित अवस्थामें छिपाकर रखेंगे मरनेके बाद वह काम आवेगा। हां, कुछ लोग जो बादशाह या उमराके यहां नौकर हैं या जिनकी आमदनीका कोई बड़ा द्वार है उनको अपनी गरीबी दिखानेकी कुछ आवश्यकता नहीं होती, वे सुख और आनन्द से रहते हैं और इसमें कुछ सन्देह नहीं कि सोने चांदीको जमीनमें गाड़ रखने और इस प्रकार उसके एकके हाथमेंसे दूसरेके हाथमें जाने देनेसे रोकनेकी यह प्रथाही इस देशमें सोने चांदीके प्रकट मे कम दिखाई देनेका बड़ा कारण है। अब जो कुछ मैं ऊपर वर्णन कर चुका हूं उससे स्वभावतः यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि बादशाह जमीनका बिलकुल अधिकार छोड़ दे और यह अधिकार प्रजाको प्राप्त हो जाय तो ऐसा होना प्रजा और बादशाह दोनोंको लाभकारी होगा या नहीं? इसके उत्तरमें मै यह कहता हूं कि मैंने युरोपकी अवस्थाकी, जहां भूमिका अधिकार प्रजाको प्राप्त है और उन देशोंकी अवस्थाकी भी जहां यह 'अधिकार प्रजाको प्राप्त नहीं है, विचारपूर्वक भलीभांति जांचकी है और विचारके पश्चात् मेरी यह राय है कि यह बात न केवल प्रजा वरन् बादशाहके लिये भी बहुतही लाभदायक है।

मै यह लिख चुका हूं कि हिन्दुस्थानमें सोने चांदीके कम दिखाई देनेका क्या कारण है। अर्थात् जागीरदारों प्रान्तिक अधिकारियों और तहसीलदारोंका घोर अत्याचार जिसको यदि बादशाह भी रोकना चाहे तो नहीं रोक सकता, विशेष कर उन प्रान्तोंमें जो राज-धानीके निकट नहीं है। यह अत्याचार इतना बढ़ा हुआ है कि खेतिहरों और कारीगरोंके पास उनके जीवननिर्वाहके लिये कुछ भी

रहने नहीं देता और वे दरिद्रता तथा गरीबीमें पड़े मरते हैं। इसके अतिरिक्त इसी अत्याचारके कारण प्रथम तो उन बेचारोंके कोई सन्तानही नहीं होती और यदि होती भी है तो उपवासोंके मारे बाल्यावस्थाहीमें इस संसारसे दूसरे संसारको सिधार जाती है। संक्षेप यह कि इन उपद्रवों और अत्याचारोंके कारण कृषक अपनी जन्म-भूमि छोड़कर कुछ सुख मिलनेकी आशासे किसी पड़ोसी राज्यमें चले जाते हैं, या सेनामें जाकर किसी सवारके पास नौकरी कर लेते हैं। और इस कारण कि भूमिसम्बन्धी कार्य बड़ीही कठिनतासे होते हैं और कोई व्यक्ति इस योग्य पाया नहीं जाता जो अपनी इच्छासे उन नहरों और नालियोंकी मरम्मत करे जो सिंचाईके लिये बनी हुई हैं, भूमिका एक बड़ा भाग सूखा और खाली पड़ा रहता है। बात भूमिही तक नहीं है, मकान भी प्रायः उजाड़ और बुरी अवस्थामें पड़े रहते हैं। बहुतही कम ऐसे लोग हैं जो नये मकान बनाते या उनकी मरम्मत कराते हैं। एक ओर तो कृषक अपने मनमें यह सोचा करता है कि क्या हम इस वास्ते परिश्रम करें कि कोई अत्याचारी आवे और सब कुछ छीन ले जाय और यदि चाहे तो हमारे जीवननिर्वाहके लिये भी कुछ न छोड़े, दूसरी ओर जागीरदार सूबेदार और तहसीलदार यह सोचते हैं कि हम क्यों सूखी और उजाड़ भूमिकी चिन्ता करें और अपना रुपया तथा समय उसे उपयोगी बनानेमें लगावें, क्योंकि नहीं मालूम किस समय वह हमारे हाथसे निकल जाय और हमारे उद्योग तथा श्रमका फल न हमको मिले न हमारे वंशजोंको, अतएव भूमिसे जो कुछ मिल सके वह हम ले लें और जो न मिले न सही ! खेतिहर भूखे मरें या उजड़ जायें हमको क्या! जब हमको इस भूमिके छोड़ देनेकी आज्ञा मिलेगी तब हम इसे उजाड़ अवस्थामें छोड़

कर चले जायँगे।

जो वृत्तान्त मैंने ऊपर वर्णन किया उससे इस बातका पुरा प्रमाण मिलता हैं कि एशियाके राज्य किस प्रकार शीघ्र शीघ्र अध पतित होते है। इस प्रकारकी बुरी शासनप्रणालीका यह फल है कि भारतवर्षके बहुतसे शहरोंके मकान कच्चे या घास फूस आदिके बने हुए है और यहांके नगर तथा कसबे चाहे बिलकुलही गिरी अवस्थामें और उजाड़ न हों परन्तु ऐसा कोई भी नगर या कसबा नही है जिसके शीघ्र दुर्दशाग्रस्त हो जानके लक्षण न देख पड़ते हों। और भारतवर्षही पर कोई बात नहीं है;—यह राज्य तो हमसे बहुत दूर है, किन्तु हम लोग अपने निकट हीके किसी किसी एशियाई राज्यकी अवस्थाका विचार करके जान सकते हैं के एक व्यक्तिके राजा होनेसे कितना अत्याचार होताहै और उसका कैसा बुरा फलहोता है। जैसे मेसोपोटामिया, अण्टोलिया, पैलेसटाइन आदि बड़े और अच्छे राज्य, जहांकी भूमि पहले बहुत उपजाऊ थी, अब अत्याचारी राजाओंके कारण बुरी अवस्थाको पहुचे हुए है। उनके बहुतसे भाग दलदल हो गय है और वहांका जलवायु खराब हो गया है जिससे अब वे मनुष्यके रहनेके योग्य भी नही है। यही दुरवस्था ईजिप्टदेशकी भी दिखाई देती है जहांकी प्रजा गुलामोंकी दशा भोग रही है। पिछले अस्सी वर्षोंकी अवधिमें यह अद्वितीय देश दशवे हिस्सेसे अधिक उजाड़ होगया है; क्योंकि इस बीचमें किसीने वहांके नील नदकी नहरोंकी ओर कुछ ध्यान नहीं दिया, जिसका यह फल हुआ कि नद अपने मामूली पाटके अन्दर नही बहता, नीची भूमि बिलकुल डूब गई है और रेतसे इतनी भर गई है कि बिना बहुत द्रव्य और परिश्रमके साफ नही हो सकती।

ऐसी अवस्थामें क्या यह कुछ आश्चर्यकी बात है कि इन देशोंमें कारीगरीकी वैसी उन्नति नहीं है जैसी हमारे सौभाग्यसे फ्रान्स तथा उन देशोंमें है जहांकी शासनप्रणाली अच्छी है? क्योंकि कैसेही हो ऐसे लोगोंमें रहकर अपने व्यापारमें जी लगानेकी आशा नहीं की जाती जो निर्धन और दारिद्र हों या अपनेको दरिद्र प्रकट करते तथा चीजकी सुन्दरता और उत्तमताके बदले केवल उसके कम मूल्यका ध्यान रखते हों, और बड़े आदमियोंकी यह दशा हो कि अपनी इच्छाके अनुसार चीजकी हैसियतसे बहुत कम मूल्य जो चाहते हों दे देते हों, तथा कोई कारीगर या व्यापारी अनुनय विनय या प्रार्थना करे तो उसको कोड़ासे पिटवानेमें भी उनको दया न आती हो। (कोड़ा एक लम्बे और भयानक चाबुकको कहते हैं जो प्रत्येक अमीरके द्वार पर लटकता रहता है!) क्या किसी कारीगरका उत्साह भंग कर देनेके लिये यह बात कुछ कम है कि उसको किसी प्रकारकी प्रतिष्ठाके पाने या अपने बालबच्चोंके लिये किसी सरकारी पदके प्राप्त करने अथवा भूमि खरीदनेकी अनुमति मिलनेकी आशा नहीं है, और इस डरसे कि कोई धनी होनेका सन्देह न करे न कभी अच्छे वस्त्र पहन सकता है न अच्छा भोजन कर सकता है और न यह प्रकट कर सकता है कि उसके पास कुछ थोड़ासा भी रुपया है?

हिन्दुस्थानके कलाकौशल या यहांकी अत्यन्त सुन्दर कारीगरियां कभीकी नष्ट हो गई होती यदि बादशाह और बड़े बड़े अमीरोंके यहां बहुतसे कारीगर नौकर न होते जो स्वयं उन्हींके घरोंपर और बादशाही कार्यालयोंमें बैठकर काम बनाते और अपने शिष्यों तथा लड़कोंको सिखाया करते हैं। इनामकी आशा और कोड़ोंका डर उनको परिश्रमके साथ अपने अपने काममें लगाये रहता है। कुछ

यह भी कारण है कि कोई कोई धनी व्यापारी ऐसे भी हैं जिनका बड़े बड़े उमरासे सम्बन्ध और व्यवहार है तथा जो कारीगरोंको मामूलीसे कुछ अधिक मजदूरी देकर काम बनवाया करते हैं। मैंने "कुछ अधिक मजदूरी" इसलिये कहा है कि यह तो समझनाही नहीं चाहिये कि अच्छी चीजें बनानेसे कारीगरका कुछ आदर किया जाता है या उसको कुछ स्वतन्त्रता दी जाती है; क्योंकि वह तो जो कुछ करता है केवल आवश्यकता अथवा कोड़ोंके डरसे करता है। उसको सन्तोष और सुख मिलनेकी कभी आशा नहीं होती, इसलिये यदि रूखा सूखा टुकड़ा खानेको और मोटा छोटा कपड़ा पहननेको मिल जाय तो उसीको वह बहुत समझता है। और रुपया मिल भी-जाय तो उसको क्या! क्योंकि वह तो उस व्यापारीका माल है जो स्वयं सदैव इसी घबराहट और चिन्तामें रहा करता है कि यदि कोई बलवान् अत्याचार और जबरदस्ती करना चाहेगा तो उससे मैं कैसे बचूंगा।

शिक्षाका अभाव---लोगोंकी इस अवस्थाका यह परिणाम है कि सारे देशमें शिक्षाका बिलकुल अभाव है, लोग मूर्ख अपढ़ है और यह यहां सम्भव ही नहीं है कि ऐसे शिक्षालय और कालेज खुल सकें जिनके खर्चके लिये यथेष्ट रुपया बादशाही खजानेमें वर्त्तमान हो—तथा ऐसे लोग कहां जो सहायता करके कालेज खुलवावें! मान लिया जाय कि ऐसे लोग मिल भी जायँ तो पढ़नेवाले कहां और लोगोंमें इतनी शक्ति कहां कि अपने अपने बच्चोंको कालेजमें भेजकर उनके खर्चका प्रबन्ध कर सकें! यदि इस योग्य धनवान् लोग हों भी तो यह साहस कौन कर सकता है कि इस प्रकार खुलेआम

अपनी धनशालिता प्रकट करे; और कदाचित् यदि कोई व्यक्ति यह भूल कर भी बैठे तो अच्छी शिक्षासे जो सांसारिक लाभ होते हैं वे कहां और ऐसे प्रतिष्ठित पद कहां जो नवयुवक छात्रोंकी आशाओं और एक दूसरेसे बढ़ जानेकी इच्छाको उभारते रहते हैं तथा जिनके लिये विद्या और योग्यताकी आवश्यकता है।

व्यापारकी गिरी अवस्था---जिस देशमें इस प्रकारका शासन हो वहां उस उन्नति और सफलताके साथ व्यापार भी नहीं हो सकता जैसे युरोपमें होता है; क्योंकि ऐसे लोग बहुत कम हैं जो अपनी इच्छासे परिश्रम करना और किसी दूसरेके लाभके लिये कष्ट उठाना अथवा अपनी जानको जोखोंमें डालना पसन्द करे। (किसी दूसरे व्यक्तिसे मेरा मतलब ऐसे शासनकर्त्तासे है जो लोगोंकी कमाई छीन लेनेमें नहीं हिचकता।) चाहे कितनाही लाभ क्यों न हो कमानेवालेको दरिद्रीकासा वस्त्र पहनना और अपने निर्धन पड़ोसियोंसे बढ़कर खाने पीनेमें कञ्जूसी करना आवश्यक है; परन्तु हां जब किसी सैनिक सरदारसे किसी व्यापारीका सम्बन्ध हो जाता है तब अवश्यही वह बड़े बड़े व्यापारिक कार्य करने लगता है; तौभी इस अवस्थामें उसको अपने संरक्षककी गुलामीमें रहना आवश्यक है जो उसकी रक्षाके बदले जिस प्रकारकी प्रतिज्ञा उससे चाहता है करा लेता है।

बादशाहके भाग्यमें यह नहीं है कि राज्यका कर्मचारी बनानेके लिये अपनी प्रजामेंसे वह ऐसे लोगोंको चुन सके जो पुराने रईसोंके पुत्र खानदानी अमीरों और माननीय लोगोंकी सन्तानें और बड़े बड़े कारखानेदारों तथा धनाढ्य व्यापारियोंके पुत्र पौत्रादिक हों

और जिन्होंने भली भांति शिक्षा पाई हो तथा अपने आचार विचार और गाम्भीर्यसे उनमें अच्छे भाव हों, तथा जिनको अपने बादशाहसे स्नेह हो और जो वीरता और योग्यताके कामोंसे अपने कुलकी प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि बढ़ानेके लिये प्रस्तुत हों और इस योग्य हों कि आवश्यकता पड़ने पर सेनामें प्रसन्नतापूर्वक काम दे सकें, तथा किसी अच्छे समयकी आशापर केवल बादशाहके हँसकर बोलने और शाबाश कह देने पर सन्तुष्ट हों। ऐसे अच्छे लोगोंके बदले बादशाहके चारों और ऐसे अपढ़ और मूर्ख लोगोंका जमाव रहता है जो गुलाम या खुशामदी लोग होते हैं, जिन्होंने बहुतही तुच्छ और हेय अवस्था से अत्यन्त उन्नत पद प्राप्त किया है और जो शिष्टता, सभ्यता, स्वदेशप्रेम, गम्भीरता और मर्दानगीके गुणोंसे बिलकुल खाली हैं तथा जिनके मस्तिष्क असहनीय घमण्डसे भरे हुए हैं।

देशकी यह अवस्था है कि उस अपार व्ययके कारण जो दरबार की शान बनाये रखने और उस बड़ी सेनाका वेतन चुकानेमें लगता है जिसका होना प्रजाको वशमें रखनेके लिये आवश्यक है तबाह हो रहा है। लोग ऐसे कष्ट और दुःखमें हैं जिसका अनुमान नहीं किया जा सकता और केवल बेत तथा कोड़ोंके डरसे दूसरोंके लाभके लिये काममें लगे रहते है। यदि सेनाका डर उनको न होतो वे ऐसे अत्याचारों और दुर्व्यवहारोंसे निराश और तङ्ग होकर कहींको भाग जायँ या गदर मचादें। इस अभागे देशके कष्ट उस समय और भी बढ़ जाते हैं जब किसी प्रान्तका शासनकार्य बहुतसा रुपया लेकर किसीको दे दिया जाता है और जब लड़ाई भिड़ाई लगती है। संक्षेप यह कि इस अभागे देशको सदैव बड़े दुःखमें रहना पड़ता है। जो व्यक्ति रुपया देकर शासनकार्य प्राप्त करता है उसका मुख्य कार्य यह होता

है कि जो रुपया उसने बहुत भारी सूदपर ऋण लेकर अपनी इच्छाके पूर्ण करनेके लिये व्यय किया था उसको वसूल करे। असल बात तो यह है कि किसी प्रान्तका शासनकार्य चाहे नजराना देकर प्राप्त किया गया हो या योंही मिलगया हो प्रत्येक सूबेदार जागीरदार और व्यापारीको किसी न किसी प्रकार हर साल बड़े बड़े नजराने किसी वजीर, या खोजे, या महलकी किसी प्रतिष्ठित बेगम, या किसी और ऐसे व्यक्तिकी सेवामें पहुँचाते रहना आवश्यक है जिसका दरबारमें कुछ सम्मान समझा जाता हो।

यद्यपि ये लोग अर्थात् सूबेदार आदि वास्तवमें नीच और ऋणी गुलाम होते हैं तथा कुछ भी सम्पत्ति उनके पास नहीं होती, परन्तु शासनकार्य मिलतेही वे बड़ेही बुद्धिमान् और सन्तुष्ट अमीर बन जाते हैं! इस प्रकार समग्र देशमें दुर्दशा और तबाही फैली हुई है; और जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूं ये सब सूबेदार अपने अपने स्थानमें छोटे छोटे बादशाह बने हुए हैं और इनके अधिकार असीम हैं। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके पास पीड़ित प्रजा जाकर पुकार मचा सके। चाहे कोई कैसाही अत्याचार बारम्बार क्यों न मचावे परन्तु किसी प्रकारकी सुनवाईकी आशा नहीं है। यद्यपि यह बात सच है कि बादशाहने सब प्रान्तोंमें ऐसे लोग नियुक्त कर रखे हैं जिनका यह काम है कि जो घटनाएँ हों उनकी खबर भेजते रहें, परन्तु उन अयोग्य सम्वाददाताओं मेंही मेल हो जाता है; अतएव वह अत्याचार जो प्रजापर होता है उनके रहनेसे कदाचित्‌ही कभी रुकता है।

भारतवर्षमें सूबेदारोंकी ओरसे जो बहुमूल्य नजराने समय समय पर दिये जाते हैं वे यद्यपि प्रायः उनके पदोंके मूल्यका काम

देते है पर तौभी प्रान्तोंका अधिकार जिस प्रकार खुलेआम और बारम्बार तुर्किस्तानमें बिकता रहता है उस प्रकार खुलेआम और शीघ्र शीघ्र भारतवर्षमें नहीं बिकता। इसके अतिरिक्त इस कारणसे कि भारतवर्षके सूबेदार तुर्किस्तानकी अपेक्षा अपने पदों पर अधिक दिनोंतक नियुक्त रहते है उस समयसे जब कि गरीबी और लोभसे सूबेदारी पातेही प्रजापर खूब अत्याचार करने लगते हैं पीछे उनका अत्याचार धीरे धीरे बहुत कम भी हो जाता है। इनके कम अत्याचार करनेका एक यह भी कारण है कि यह खटका रहता है कि वही लोग देश छोड़कर किसी राजाके राज्यमें न चले जायँ जैसा कि भारतवर्षमे प्रायः होता रहता है। तुर्किस्तानकी भांति ईरानमें भी खुल्लमखुल्ला और शीघ्र२अधिकारियोंकी बदली नहीं होती; क्योंकि वहां प्रायः पिताकी जगह पुत्रही अधिकारी नियुक्त किया जाता है। यह वंशपरम्पराका नियम तुर्किस्तानसे अच्छा है। इसका यह भी फल देखनेमें आया है कि ईरानके लोग तुर्किस्तानकी अपेक्षा अधिक खुश हैं और शिष्टता तथा सभ्यतामें भी तुर्किस्तानवालोंसे बढ़कर है; बल्कि कुछ समय ये लोग पढ़ने लिखने और उपयोगी पुस्तकोंके देखनेमें भी लगाते हैं। परन्तु इन तीनों देशों अर्थात् तुर्किस्तान ईरान और हिन्दुस्थानमें 'म्याम एण्ड टूवाम " अर्थात् जागीरी तथा निज़ हककी चीजोंके विषयमें कोई नहीं जानता। इन बातोंका जानना ही उन्नतिकी जड़ है। ये तीनों देश नीतिमें प्रायः एकही समान हैं और एकही प्रकारकी भूलोंमें पड़े हुए हैं। इन भूलोंका परिणाम अत्याचार, बर्बादी और कष्ट है जो अवश्यही इनको भोगना पड़ेगा।

मान्यवर! हमको ईश्वरका धन्यवाद करना चाहिये कि हमारे युरोपीय देशोंमें बादशाह जमीनके मालिक नहीं होते। यदि ऐसा

होता तो इतनी बस्ती और खेती कैसे होती; ऐसे अच्छे और सन्तुष्ट लोगोंसे बसे नगर कहां होते और ऐसी सभ्य तथा फूली फली प्रजा किस प्रकार देखनेमें आती ? यदि यह नष्टकारी अधिकार हमारे बादशाहोंको भी प्राप्त होता तो उनके धन और उनकी प्रजाकी भक्ति तथा विश्वासकी कुछ और ही अवस्था होती और वे केवल उजाड़ सुनसान देशों तथा असभ्यों और टुकड़गदाइयोंके बादशाह होते।

बात यह है कि एशिया महादेशके बादशाह ऐश्वरीय और प्राकृतिक नियमोंसे बढ़कर अनुचित अधिकार प्राप्त करनेकी लालसा से ऐसे अन्धे हो जाते हैं कि हर वस्तुको अपने ही हाथमें लेना चाहते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि अन्तमें हरएक वस्तु उनके हाथसे निकल जाती है; या यदि सदा ही ऐसा न होता हो कि सब वस्तुएँ उनके हाथसे निकल जायँ परन्तु तौभी इतना तो अवश्य होता है कि जितने माल और धनके एकत्र करनेका उनको लोभ रहा करता है वह लोभ पूरा नहीं होता और उससे सदा वञ्चित रहकर वे सदैव आशा और निराशा दोनोंमें रहा करते हैं।

मैं फिर कहता हूं कि यदि हमारे देशकी भी शासनप्रणाली ऐसी ही होती तो ऐसे रईस, अमीर, विद्वान्, सन्तुष्ट नगरनिवासी, उन्नत व्यापारी, बुद्धिमान् कारीगर और कार्यपटु तथा उत्साही कारखानेदार कहां होते और ऐसे नगर जैसे फ्रान्समें पेरिस, लायन्स, टूलूस और रुयेन तथा इंगलैण्डमें लन्दन और अन्यान्य बड़े बड़े नगर कहां पाये जाते ? इतने कस्बे और गांव, "कण्ट्री हाउस", सुन्दर पर्वत और घाटियां जिनमें बड़ीही सावधानी परिश्रमशीलता और बुद्धिमानीसे खेती की जाती है किस प्रकार देख पड़ते ? और हमारी ढेरकी ढेर आमदनी की, जो इस परिश्रमका फल है और जो राजा और

प्रजा दोनोंके लिये लाभकारी है, क्या दशा होती ? बल्कि सब कुछ इस सुन्दर दृश्यसे उलटा होता। हमारे बड़े बड़े नगर खराब वायुके कारण रहनेके योग्य न रहते और ढहकर खण्डर हो जाते; किसीको उनकी मरम्मत कराने और नष्ट होनेसे उनको बचानेकी चिन्ता न होती; हरे भरे पहाड़ोंको लोग छोड़कर चले जाते, मैदान इस सिरेसे उस सिरेतक झाड़ झंखाड़ और घास फूससे भर जाते, स्वास्थ्यको नष्ट और अनेक दुष्ट रोगोंको उत्पन्न करनेवाली दलदलें जमीनको ढांकलेतीं, यात्रियोंको आराम पहुंचानेवाली विशाल सरायें जो पेरिस और लायन्सके रास्तेमें बनी हुई है, अपनी अवस्थासे गिरकर तुच्छ सराय मात्र रहजातीं और यात्रियोंको ग्रहहीनोंकी तरह हरएक चीजको अपने साथ लिये फिरना पड़ता।

एशिया महादेशकी कारवांसराय बड़े भारी "बार्न" (अनाजघर) के सदृश्य होती हैं जिसके चारों ओर हमारे "पाण्ट नियोफ" की तरह पक्की दीवारें बनी रहती हैं और भूमिपर पक्का फर्श लगा होता है—जिनमें सैकड़ों मनुष्य अपने घोड़ों, खच्चरों और ऊंटोंके सहित देख पड़ते हैं। गर्मीके दिनोंमें मकान ऐसे गर्म हो जाते हैं कि दम घुटा जाता है और जाड़ेके दिनोंमें सर्दीके मारे बहुतसे पशुओंके सांस लेनेके अतिरिक्त मरनेसे बचनेका कोई उपाय नहीं होता। कदाचित् इस अवसर पर लोग यह कहते हैं कि ऐसे कई देश हैं जैसे तुर्किस्तान जहां "म्याम एण्ड ट्राम" के विषयमें कोई नहीं जानता, परन्तु फिर भी वहांके मुसलमान गद्दीपर बैठे शासन कर रहे हैं बल्कि उनका मान और प्रभाव दिन पर दिन और अधिक बढ़ताही जाता है। इसका जवाब यह है कि यद्यपि तुर्किस्तान जैसा देश जो बहुत बड़ा है और जिसमें बहुतसी प्रदेशोंकी भूमि ऐसी उत्तम और उप-

जाऊ है कि पूरे उद्योगके बिना भी उसकी उपजाऊ शक्ति बनी रहती है, अवश्यही धनवान् और शक्तिवान् होना चाहिये; परन्तु विचार करना चाहिये कि इतनी लम्बाई चौड़ाई, और प्राकृतिक उत्तमता होने परभी उसका धन और बल कितना कम है। यही मान लिया जाय कि यह देश ऐसाही बसा हुआ है और उसमें ऐसीही सावधानीसे खेती होती है जैसी भूमिके अधिकारके विचारसे प्रजासे होनी सम्भव है, तो इस दशामें बेशक यह होना चाहिये कि यह राज्य वैसाही बड़ा और अच्छी सेनायें नौकर रख सकता है जैसी प्राचीन समयमें थीं। परन्तु आज कल तो कुस्तुनतुनियामें यह हाल है कि यदि पांच छ हजार सिपाही भरती करने हों तो तीन महीने लगजाते हैं। मैं इस देश में अच्छी तरह घूमा हूं और मैंने इसको बहुतही दुर्दशाग्रस्त तथा उजड़ा हुआ देखा है। हां, ईसाई गुलाम जो उस देशके सब भागों से यहां आते हैं उनसे इस देशको कुछ सहायता मिलती है: परन्तु यदि यहांकी शासन प्रणाली बहुत वर्षोंतक ऐसी रही तो अवश्य यह अपनी भीतरी कमजोरीके कारण बर्बाद हो जायगी। परन्तु यह प्रत्यक्ष है कि अभी यह कमजोरी इसको स्थिर रखे हुये है; क्योंकि किसी प्रान्तका कोई शासक या कोई और व्यक्ति इतना जोर नहीं रखता कि कोई छोटीसी भी लड़ाई कर सके, या इतने सिपाही एकत्र कर सके जो उसके लिये यथेष्ट हो। क्या आश्चर्य कि जो कुछ इस राज्यकी अवनतिका कारण है वही कुछ दिनके लिये उसकी स्थिरताका भी कारण हो।

बात यह है कि ऐसी अवस्थामें विद्रोह और उपद्रवके रोकने तथा इस प्रकारकी आपदाओंके टालनेके लिये वही विचित्र उपाय इस देशके योग्य जान पड़ते हैं जो पेरू देशके एक बादशाहने किये थे।

अर्थात् बहुत समय तक जमीनका जोतना बोना बन्द कर दिया, देशको जंगल और उजाड़ बना दिया और सचमुच आधी प्रजाको भूखों मारडाला, परन्तु इससे भी कुछ न हुआ।—उसकी यह आशा और सब उपाय व्यर्थ गये क्योंकि देश कई भागोंमें बँट गया और थोड़ेही दिन हुये कि उस देशकी राजधानी आवा नगरी पर थोड़ेसे चीनी जो भागकर आये थे, अधिकार करनेवाले थे।

परन्तु जो हो हमको मानना चाहिये कि हमारे जीते जी सम्भवतः रूम राज्य बिलकुलही बरबाद न हो जायगा; और हम प्रसन्न होंगे कि इससे अधिक उसकी बुरी अवस्था न देखें; क्योंकि उसके पडोसी राज्योंका तो यह हाल है कि उसपर आक्रमण करना तो क्या बाहरी सहायताके बिना अपना बचाव भी वे नहीं कर सकते; और बाहरी सहायताकी यह दशा है कि दूरकी यात्रा और आपसके द्वेषके कारण उसके पहुंचनेमें देर होती है। इसलिये उस सहायताको अपूर्ण और साथही अयोग्य समझना चाहिये।

यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि इस बातका कारण नहीं दिखाई देता कि एशियाके राज्य अच्छे कानूनोंसे लाभ क्यों नही उठा सकते और वहांके लोग वजीर या स्वयं बादशाहकी सेवामें क्यों नहीं प्रार्थनायें पहुंचा सकते तो मैं मानता हूं कि अवश्यही वहां अच्छे कानून हैं और यदि उन कानूनों पर अमल किया जाय तो एशिया भी संसारके और देशोंकी भांति सुखी हो जाय। परन्तु जबकि उनपर अमल नहो और न इस बातकी सम्भावना हो कि यह जबरदस्ती उनपर अमल कराया जाय तो ऐसे कानूनसे क्या लाभ? और जबकि प्रान्तोंके अफसर उसी वजीर या बादशाहके नियुक्त किये हुये हैं जो उनके विषयकी नालिश सुननेकी शक्ति रखता है और जबकि

वास्तवमें ऐसेही अत्याचारी लोगोंके अतिरिक्त अफसरोंका नियुक्त करना वजीर या बादशाहकी शक्तिसे भी बाहर है या अफसर वजीर या बादशाहके द्वारा नजराना देकर नियुक्त किये गये हैं तो उनकी नालिश किसके पास की जाय? या यदि मान लिया जाय कि वजीर या बादशाहकी इच्छा लोगोंकी प्रार्थना सुननेकी है भी तो यह कैसे सम्भव है कि एक गरीब किसान या सताया हुआ कारीगर चार पांचसौ मीलकी यात्राका कष्ट उठाकर राजधानी तक पहुंच सके? इसके अतिरिक्त यह आफत है कि ये जबरदस्त अत्याचारी जैसा कि प्राय: हुआ है शिकायत करनेवालेको रास्तेहीमें खपा देते हैं या उसको अपने वशमें लाकर जैसा जीमें आता है वैसा व्यवहार करते हैं। यदि किसी प्रकार कोई शिकायत करनेवाला बादशाह तक पहुंच भी जाता है तो सूबेदारके पक्षपाती असल बात को छिपाकर कुछ औरका औरही बादशाहसे कहते हैं। तात्पर्य्य यह कि सूबेदारोंको उनके प्रान्तोंका सम्पूर्ण रूपसे मालिक और स्वाधीन अधिकारी समझना चाहिये। वे आपही जज (विचारक), आपही पार्लिमेण्ट, आपही प्रेसीडेन्शल कोर्ट (प्रधान विचारालय), आपही असेसर (अपराधका निर्णय करनेवाले) और आपही राजकरके वसूल करनेवाले होते हैं। एक ईरानीने इन अत्याचारी, लोभी, सूबेदारों, जागीरदारों और तहसीलदारोंके विषयमें क्याही अच्छा कहा है कि "ये बालूमेंसे तेल निकालते हैं" पर सचतो यह है कि इनकी स्त्रियों, बच्चों, सेवकों और लुटेरे साथियोंके खर्चके लिये कोई भी आमदनी काफी नहीं हो सकती।

यदि कोई कहे कि हमारे फ्रान्सदेशके बादशाहोंकी खास जमीनें ऐसीही जोती बोई जाती हैं तो इसका उत्तर यह है कि ऐसे

राज्यकी तुलना जहांका बादशाह केवल कुछ भूमिका मालिक है ऐसे राज्यके साथ जिसकी समग्र भूमि बादशाहकी ही हो नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त फ्रान्सके कानून ऐसे ठीक हैं कि उनका पालन करना सबसे पहले बादशाह अपना कर्त्तव्य समझता है और जो जमीन उसके अधिकारमें है उनपर जो सत्व किसी जोतने बोने-वालेको प्राप्त है वह उसको नष्ट नहीं कर सकता और उसके कर्म्म-चारियों तथा उसकी ओरसे वसूलकरनेवालों पर कानूनके अनु-सार नालिश हो सकती हैं। सबसे बढ़कर बात यह है कि अत्याचार-पीड़ित किसान या कारीगर निस्सन्देह न्यायको पहुंच सकता है। परन्तु एशियामें निस्सहायों और अत्याचार-पीड़ितोंके लिये कोई आश्रय नहीं है। कानून जिससे सब झगड़ोंका निर्णय किया जाता है केवल अफसरका सोंटा या उसकी बेठिकाने और मनमानी राय है।

मुझे शंका है कि कुछ लोग यह कहेंगे कि कुछ लाभ ऐसे हैं जो वास्तवमें एक तन्त्री शासनमेंही मिल सकते हैं,—जैसे इस अवस्था में अदालती वकील बहुत कम होते हैं, मुकदमे भी अधिक दायर नहीं होते और जो दायर होते भी हैं उनका शीघ्र फैसला हो जाता है। मैं भी मानता हूं मुकदमोंके फैसलेमें देर और खिचावट होना प्रत्येक राज्यके लिये बड़ा भारी ऐब है और अवश्यही बाद-शाहको यह ऐब मिटाना उचित है; परन्तु ये लोग चाहे कुछही कहा करें हमतो ईरानकी इस पुरानी कहावतकी बहुत बढ़कर प्रशंसा नहीं कर सकते कि "जल्दीके न्यायसे अन्याय हो जाता है" यह निश्चित बात है कि इस जल्दीके दूर करनेका इससे अच्छा और कोई उपाय नहीं है कि प्रजाका मालकी हक्क मिटा दिया जाय। जब यह हक्क न रहेगा तब अनगिनत कानूनी कार्रवाईयोंकी आव-

श्यकता आपही नहीं रहेगी; विशेषकर उन कार्रवाइयोंकी जो कठिन, लम्बे चौड़े और पेचदार मुकदमोंमें होती हैं, न बहुतसे माजिष्ट्रेटों और जजोंके रखनेकी आवश्यकता होगी और न बहुतसे वकीलो और मुखतारोंकाही काम पड़ेगा जिनके पेट पालनके द्वार यही मुकद्दमे हैं।

परन्तु इसमें भी कुछ सन्देह नही कि यह औषधि रोगसे भी खराब है, अर्थात् यह उपाय सर्वथा हानिकारक है। इसका जो बुरा परिणाम होगा उसका अनुमान नहीं किया जासकता और माजिष्ट्रेटो तथा जजोंके बदले जिनकी नेकनीयती और ईमानदारी पर बादशाह भरोसा कर सकता है, प्रजा उसी प्रकारके शासकोंके अधीन जा पड़ेगी जिनका उल्लेख अभी मैंने ऊपर किया है। वास्तविक बात यह है कि एशिया महादेशमें यदि कभी न्याय होता है तो उन गरीब और छोटे दर्जेके लोगोंके साथ होता है जो काजियों को रिशवत देनेके योग्य नहीं हैं, या जो कुछ देकर झूठे गवाह नहीं बना सकती जो कि सदैव बहुत सस्ते और अधिकतासे मिल सकते हैं, और जो कभी दण्ड नहीं पाते।

मैंने ऊपर जो कुछ लिखा है वह कई वर्षोंके अनुभवसे लिखा है और मुझे अनेक द्वारोंसे इन विषयोंकी जानकारी प्राप्त हुई है, और यह उस अनुसन्धानका फल है जो हिन्दुस्तानी और युरोपियन व्यापारियोंसे जो कि बहुत दिनोंसे इस देशमें कारोबार करते हैं तथा भिन्न भिन्न राज्योंके एलचियों दूतों, इत्यादिसे बड़े यत्नके साथ मैंने किया है। मैं जानता हूं कि मेरा यह कथन मेरे देशके प्रायः यात्रियोंके कथनके विरुद्ध है, परन्तु कदाचित् उन्होंने किसी नगरमें रास्ता चलते चलते दो नीच व्यक्तियों

को देख लिया होगा कि काजीने उनमेंसे एक या दोके तलवों पर कड़ी चोट लगवाकर जल्दीसे उनको कचहरीके बाहर निकलवा दिया होगा, या दोनोंको " मे बेल बाबा " (नहीं मालुम बर्नियर साहबने यहां पर किस शब्दकी दुर्द्दशा की है ?) या कुछ और ऐसे ही शब्द कहकर जो काजी लोग उस समय कहा करते हैं जबकि उसके दोनों पक्षोंमेंसे किसी पक्षसे कुछ मिलनेकी आशा नहीं, होती उनको जल्दीसे विदा कर दिया होगा। निस्सन्देह ऐसी कार्रवाई देखकर उनको (दूसरे फरान्सीसी यात्रियोंको) आश्चर्य हुआ और इसीसे वे फ्रान्समें यह कहते हुये पहुंचे कि " वाह वाह क्या अच्छा और कैसी जल्दी न्याय होता है और हे सत्यके पुतले हिन्दुस्तानी काजियो ! फ्रान्सके मजिष्ट्रेटोंको तुम्हारा अनुकरण करना चाहिये।" पर उन बेचारोंको इसका ध्यान भी नही हुआ कि छोटे दर्जेके व्यक्तिमें यदि इतनी सामर्थ्य होती कि पांच सात रुपयोंसे वह काजी या उसके मुहर्रिरोंकी मुट्ठी गर्म कर देता अथवा दो चार रुपये खर्च करके दो झूठे गवाह खड़े कर लेता तो मुकद्दमेको जितना बढ़ाना चाहता बढ़ा सकता।

महाशय ! मैं अत्यन्त सचाईसे फिर निवेदन करता हूं कि यदि जायदादकी मालकी नष्ट कर दी जाय तो अत्याचार, अन्याय और दरिद्रता इत्यादि इसके अवश्यभावी परिणाम होंगे और जमानी की जोताई बोवाई रुककर देश सुनसान तथा उजाड़ हो जायगा। संक्षेप यह कि इससे राजा प्रजा दोनोंकी बर्वादीका रास्ता खुल जायगा, क्योंकि मनुष्य इसी आशापर परिश्रम करता है कि उसका फल उसको और उसकी सन्तानको मिले। यह आशा हरेक

अच्छी और लाभ पहुंचानेवाली चीजकी नींव है। यदि हम संसारके राज्योंकी अवस्थापर दृष्टि डालें तो हमको मालूम हो जायगा कि उनकी उन्नति या अवनति इसी बातके बिचार या अविचार पर निर्भर रहती है। सारांश यह कि इसी विचारके काम में लाने या इसकी ओरसे लापरवाई करनेका फल है कि देशोंकी अवस्था पलटती और बदलती रहती है।



ग्रन्थकारका पत्र माथोलिवेयरके नाम।

देहली और आगरा ।

महाशय !

मैं समझता हूं कि जिस समय मैं स्वदेशको लौट आऊंगा उस समय आप मुझसे यह प्रश्न अवश्य करेंगे कि यहांकी राजधानियों—देहली और आगरा—की सुन्दरता और उनके निवासियोंका क्या हाल है? और ये शहर पेरिसके मुकाबलेमें कैसे हैं। इसलिये सबसे पहले मैं इन्हींका वर्णन करता हूं। साथ साथ मैं और भी विशेष बातें लिखता जाऊंगा जिन्हें सम्भवतः आप भी मनोरञ्जक समझेंगे।

इन दोनों नगरोंका सविस्तर वर्णन करनेके पहले मैं यह उचित समझता हूं कि मुझे यह देखकर बहुतही आश्चर्य्य हुआ कि जो युरोपियन भारतमें आकर रहते हैं वे प्रायः कहा करते हैं कि यहांके शहरोंके मकान वैसे सुन्दर नहीं होते जैसे युरोपके शहरोंके होते हैं। पर वे इस बातका जरा भी ध्यान नहीं रखते कि प्रत्येक देशमें रहनेके लिये मकान आदि उस देशके जल वायुके अनुसार बनाये जाते हैं। अर्थात् जो इमारत लन्दन या अमस्टरडमवालोंके लिये अच्छी और उपयुक्त हैं वह देहली और आगरेवालोंके किसी कामकी नहीं है। और यदि ये शहर भारतमें आ जांय और भारतके शहर वहां जा रहें तो उनके मकान और इमारतोंको तोड़ फोड़कर एक बिलकुल नये ढङ्ग पर बनाना आवश्यक होगा। इसमें सन्देह नहीं कि

युरोपके शहर बहुतही सुन्दर और वहांके जल वायुके अनुकूल हैं, पर देहली भी यहांके गरम जलवायुके अनुसार कुछ कम सुन्दर नहीं है। यहां गरमी इतनी अधिक होती है कि स्वयं बादशाह भी अपने पैरोंकी रक्षाके लिये मोजे नहीं पहन सकता, केवल हलके स्लीपरोंके ढङ्गकी एक चीज पहनता है जिसे 'पापोश' कहते हैं; सिरकी रक्षाके लिये एक बहुतही सुन्दर और बारीक कपड़ेकी हलकी सी पगड़ी होती है, और बाकी कपड़े भी प्रायः ऐसेही हलके होते हैं। गरमीके दिनोंमें घरकी दीवार या सिरहानेके तकिये पर हाथ रखना कठिन होता है। छः महीने या इससे भी अधिक दिनों तक प्रत्येक व्यक्ति घरके बाहर खुली हवामें बिना किसी प्रकारके सायेके सोता है। साधारण लोगोंका यह हाल है कि वे गलियोंमें पड़े रहते हैं। बड़े बड़े धनिक व्यापारी और अमीर घरके आंगन या बागमें और कभी मकानके चौतरों पर, जिन्हें वे पहलेहीसे पानी छिड़ककर ठण्ढाकर रखते हैं, सोते हैं। अब ऐसी अवस्थामें यदि पेरिसका प्रसिद्ध महल्ला सेण्टजेक्स या सेण्टडेनिस—जिनमें चारों ओरसे बन्द और ऊंचे ऊंचे मकान हैं—यहां आजाय तो मैं आपसे पूछता हूं कि क्या कोई व्यक्ति उनमें रह सकेगा या रातके समय जब गरमीके कारण लोगों का दम घुटने लगता है उनमें कोई सो सकेगा? मान लीजिये कि एक व्यक्ति घोड़े पर सवार घूम फिरकर घरमें आया है, गरमी और गर्दके मारे अधमुआ होरहा है और साधारणतः पसीनोंसे तर है तो यदि उसे छोटी छोटी सीढ़ियोंसे होते हुए मकानके चौथे या पांचवें खण्डपर जाना पड़े और ऐसे कमरेमें ठहरना पड़े जहां गरमीके मारे दम घुटता हो तो कैसी दिल्लगी हो! भारतमें ऐसे अवसरों पर कुछ भी कष्ट नहीं होता। यहां तो सवारीसे उतरतेही थोड़ासा ठण्ढा जल

और नीबूका शरबत पीलेते हैं, कपड़े उतारकर मुंह हाथ धोकर मायेमें पलंगपर लेट जाते हैं और दो एक नौकरोंको बड़े बड़े पंखे लेकर झलनेकी आज्ञा देते है।

शहर देहलीका हाल-अब मैं आपको देहलीका पूरा पूरा हाल सुनाता हूं; तब आप स्वयं समझ सकेंगे कि यह शहर सुन्दर है या नहीं। प्राय चालीस वर्ष हुए वर्त्तमान् बादशाहके पिता शाहजहानने अपने स्मृति-चिन्हके लिये पुरानी देहलीके निकट एक नया शहर बसाया और अपने नामके अनुसार इस शहरका नाम शाहजहानाबाद या जहानाबाद रखा। इसके राजधानी बनाये जाने का कारण यह प्रकट किया गया कि गरमीकी अधिकताके कारण आगरा बादशाहके रहनेके योग्य नहीं है। पर इसके बनानेके लिये सब चीजें पुरानी देहलीके आस पासके खण्डहरोंमेसे ली गई हैं इससे विदेशी आदमियोंको पुराने और नये शहरमें कोई भेद नहीं मालूम होता। भारतमें लोग इसे जहानाबादही कहते हैं; पर सरलताके लिये मैं भी विदेशियोंकी तरह इन्हें एकही कहूंगा।

शहर देहली चौरस जमीनपर जमुनाके किनारे—जो ल्वायर नदीके समान है—चन्द्राकार बसा हुआ है। नदीको छोड़कर—जिस पर नावोंका पुल बन्धा है—बाकी तीनों ओर रक्षाके लिये पक्की शहरपनाह बनी हुई है। अगर उन बुर्जों परसे जो शहर पनाहके किनारे सौ सौ कदमों पर बने हुए हैं या उस कच्चे पुश्ते परसे, जो चार या पांच फ्रान्सीसी फुट ऊंचा है, देखा जाय तो यह शहरपनाह बिलकुलही अपूर्ण है; क्योंकि न तो इसके निकट कोई खाई है और न कोई दूसरा रक्षाका उपाय है।

युरोपके शहर बहुतही सुन्दर और वहांके जल वायुके अनुकूल हैं, पर देहली भी यहांके गरम जलवायुके अनुसार कुछ कम सुन्दर नहीं है। यहां गरमी इतनी अधिक होती है कि स्वयं बादशाह भी अपने पैरोंकी रक्षाके लिये मोजे नहीं पहन सकता, केवल हलके स्लीपरोंके ढङ्गकी एक चीज पहनता है जिसे 'पापोश' कहते हैं; सिरकी रक्षाके लिये एक बहुतही सुन्दर और बारीक कपड़ेकी हलकी सी पगड़ी होती है, और बाकी कपड़े भी प्रायः ऐसेही हलके होते हैं। गरमीके दिनोंमें घरकी दीवार या सिरहानेके तकिये पर हाथ रखना कठिन होता है। छः महीने या इससे भी अधिक दिनों तक प्रत्येक व्यक्ति घरके बाहर खुली हवामें बिना किसी प्रकारके सायेके सोता है। साधारण लोगोंका यह हाल है कि वे गलियोंमें पड़े रहते हैं। बड़े बड़े धनिक व्यापारी और अमीर घरके आंगन या बागमें और कभी मकानके चौतरो पर, जिन्हें वे पहलेहीसे पानी छिड़ककर ठण्डाकर रखते हैं, सोते हैं। अब ऐसी अवस्थामें यदि पेरिसका प्रसिद्ध महल्ला सेण्टजेकस या सेण्टडेनिस—जिनमें चारों ओरसे बन्द और ऊंचे ऊंचे मकान हैं—यहां आजाय तो मैं आपसे पूछता हूं कि क्या कोई व्यक्ति उनमें रह सकेगा या रातके समय जब गरमीके कारण लोगों का दम घुटने लगता है उनमें कोई सो सकेगा? मान लीजिये कि एक व्यक्ति घोड़े पर सवार घूम फिरकर घरमें आया है, गरमी और गर्दके मारे अधमुआ होरहा है और साधारणतः पसीनोंसे तर है तो यदि उसे छोटी छोटी सीढ़ियोंसे होते हुए मकानके चौथे या पांचवें खण्डपर जाना पड़े और ऐसे कमरेमें ठहरना पड़े जहां गरमीके मारे दम घुटता हो तो कैसी दिल्लगी हो! भारतमें ऐसे अवसरों पर कुछ भी कष्ट नहीं होता। वहांतो हवागीमे इतनेही थोड़ासा ठण्डा जल

और नींबूका शरबत पीलेते हैं, कपड़े उतारकर मुंह हाथ धोकर छायेमें पलंगपर लेट जाते हैं और दो एक नौकरोंको बड़े बड़े पंखे लेकर झलनेकी आज्ञा देते हैं।

शहर देहलीका हाल-अब मैं आपको देहलीका पूरा पूरा हाल सुनाता हूं; तब आप स्वयं समझ सकेंगे कि यह शहर सुन्दर है या नहीं। प्राय चालीस वर्ष हुए वर्त्तमान् बादशाहके पिता शाहजहानने अपने स्मृति-चिन्हके लिये पुरानी देहलीके निकट एक नया शहर बसाया और अपने नामके अनुसार इस शहरका नाम शाहजहानाबाद या जहानाबाद रखा। इसके राजधानी बनाये जानेका कारण यह प्रकट किया गया कि गरमीकी अधिकताके कारण आगरा बादशाहके रहनेके योग्य नहीं है। पर इसके बनानेके लिये सब चीजें पुरानी देहलीके आस पासके खण्डहरोंमेसे ली गई हैं इससे विदेशी आदमियोंको पुराने और नये शहरमें कोई भेद नहीं मालूम होता। भारतमें लोग इसे जहानाबादही कहते हैं; पर सरलताके लिये मैं भी विदेशियोंकी तरह इन्हें एकही कहूंगा।

शहर देहली चौरस जमीनपर जमुनाके किनारे—जो ल्वायर नदीके समान है—चन्द्राकार बसा हुआ है। नदीको छोड़कर—जिस पर नावोंका पुल बन्धा है—बाकी तीनों ओर रक्षाके लिये पक्की शहरपनाह बनी हुई है। अगर उन बुरजों परसे जो शहरपनाहके किनारे सौ सौ कदमों पर बने हुए हैं या उस कच्चे पुश्ते परसे, जो चार या पांच फ्रान्सीसी फुट ऊंचा है, देखा जाय तो यह शहरपनाह बिलकुलही अपूर्ण है; क्योंकि न तो इसके निकट कोई खाई है और न कोई दूसरा रक्षाका उपाय है।

यह शहरपनाह नगर और किले दोनोंको घेरे हुई है तथा उसकी लम्बाई इतनी अधिक नहीं है जितनी लोग समझते हैं। क्योंकि तीन घण्टोंमें मैं इसके चारो ओर फिर आया हूं; मेरे घोड़ेकी चाल एक फ्रान्सीसी लीग या तीन मील प्रति घण्टोंसे अधिक न थी। मैं इसमें शहरके आस पासकी उन बस्तियोंको नहीं मिलाता जो बहुत दूरतक लाहौरी दरवाजेकी ओर चली गई हैं और न पुरानी देहलीके उस बचे हुए बड़े भागको, और न उन तीन चार बस्तियोंको मिलाता हूं जो शहरके पास हैं; क्योंकि इन्हें भी इसीमें मिला लेनेसे शहरकी लम्बाई इतनी बढ़ जाती है कि यदि शहरके बीचो बीच एक सीधी रेखा खींची जाय तो वह साढ़े चार मीलसे भी अधिक होगी। यद्यपि बाग आदिके बीचमें आजानेके कारण मैं नहीं कह सकता कि नगरका ठीक ठीक व्यास कितना है पर फिरभी इसमें सन्देह नहीं कि वह बहुतही अधिक है।

किला जिसमें शाही महलसरा और मकान हैं और जिनका वर्णन मैं आगे चलकर करूंगा, अर्द्ध गोलाकारसा है। इसके सामने जमुना नदी बहती है। किलेकी दीवार और जमुना नदीके बीचमें एक बड़ा रेतीला मैदान है जिसमें हाथियोंकी लड़ाई दिखाई जाती है और अमीरों, सरदारों और हिन्दू राजाओंकी फौज बादशाहके देखनेके लिये खड़ीकी जाती है जिन्हें बादशाह महलके झरोखोंसे देखा करता है।

किलेकी दीवार अपने पुराने ढंगके गोल बुरजोंके कारण शहरपनाहसे मिलती जुलती है। यह ईंट और लाल पत्थरकी बनी हुई है जो संगमरमरसे मिलता जुलता होता है; इसीलिये शहरपनाहकी अपेक्षा यह अधिक सुन्दर है। यह शहरपनाहसे ऊंची और दृढ़

भी है। इसपर छोटी छोटी तोपें चढ़ी हुई हैं जिनका मुहं नगरकी ओर है; नदीकी ओरको छोड़कर किलेके सब ओर पक्की और गहरी खाई बनी हुई है। इसके बान्ध मजबूत पत्थरके बने है। यह खाई हमेशः पानीसे भरी रहती है और इसमें मछलियां बहुत अधिकता से हैं। यद्यपि यह इमारत देखनेमें बहुत दृढ़ माळूम होती है पर वास्तवमे यह दृढ़ नहीं है; और मेरी समझमें एक साधारण तोपखाना इसे गिरा सकता है।

इस खाईके निकट एक बड़ा बाग है। जिसमें बहुत सुन्दर और अच्छे फूल होते हैं। किलेकी लाल रंगकी दीवारके सामने होनेके कारण यह बाग बहुतही सुन्दर माळूम होता है। इसके सामने एक बादशाही चौक है जिसके एक ओर किलेका दरवाजा है और दूसरी ओर शहरके दो बड़े बाजार आकर समाप्त हो जाते है। जो नौकर राजे प्रति सप्ताह यहां चौकी देने आते हैं उनके खेमे आदि इसी मैदानमें लगाये जाते हैं। क्योंकि येलोग जो एक प्रकारके छोटे छोटे बादशाह होते है, किलेमें रहना अस्वीकार करते हैं और इसी लिये किलेके अन्दर उमरा और मन्सबदारोंका पहरा होता है। इस जगह सबेरे बादशाही घोड़े फिराये जाते हैं जो इसके निकटही एक बड़े अस्तबल मे रहते है। इसी स्थानपर फौजका मीरबख्शी नये सवारोंके घोड़ोंको देखता भालता है; और तुरकी या और दूसरे अच्छे मजबूत घोड़ोंकी रानपर बादशाही तथा उस अमीरका निशान लगवा देता है जिसकी फौजमे वे नौकर हों। इससे यह लाभ होता है कि पेश करनेके समय नये सवार इन्हीं घोड़ोंको लेकर पेश नहीं कर सकते। इसी स्थानपर तरह तरहकी चीजोंकी बिक्रीके लिये 'गुजरी' लगती है। इसमें पेरिसके पौण्टानियं‌फकी तरह भानमती

और हिन्दू तथा मुसलमान नजूमी आदि इकट्ठे होते हैं। ये झूठे ज्योतिषी धूपमें एक मैला कालीनका टुकड़ा बिछाये बैठे रहते हैं। इनके सामने एक बड़ीसी किताब खुली पड़ी रहती है जिसमें ग्रहोंके चित्र बने होते हैं और सामने रमल फेंकनेका पासा होता है। योंही ये लोग राह चलतोंको धोखा देते और फुसलाते हैं औरलोग उन्हें विद्वान् समझकर उनसे प्रश्न करते हैं। एक पैसा लेकर ये लोग उस बेचारे को उसका भविष्य बतला देते हैं, और उनके हाथ और मुंहको खूब अच्छी तरह देख भालकर उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि वास्तवमें ये कुछ हिसाब लगा रहे हैं। किसी कामके आरम्भ करनेके लिये समय पूछने पर ये लोग 'मुहूर्त्त' बतलाते हैं। नासमझ स्त्रियां सिरसे पैरतक सफेद चादर ओढ़कर उनके निकट खड़ी रहती हैं, प्रायः अपनी सब बातोंके सम्बन्धमें उनसे कुछ न कुछ पूछा करती हैं और अपना सारा हाल उन्हें सुना देती हैं। ठीक वैसेही जैसे फ्रान्समें कोई स्त्री पादरीके सामने क्षमा किये जानेके लिये अपने सारे दोष कह सुनाती है। इन मूर्खोंको पूर्ण रूपसे यह विश्वास होता है कि ग्रहोंके फलोंको बदल देना इन्हीं ज्योतिषियोंके हाथमें है। इनमें सबसे विचित्र एक दोगला पुर्तगीज था, जो गोआसे भाग आया था। यह भी कालीन बिछाये हुए बड़ेही शान्त भावसे बैठा रहता था। इसके पास बहुतसे लोग आया करते थे। यह व्यक्ति कुछभी लिखा पढ़ा नहीं था। इसके पास ज्योतिषके यन्त्रोंके स्थान में केवल एक पुराना जहाजी दिग्दर्शक यन्त्र या कुतुबनुमा था, और ज्योतिषकी पुस्तकोंके स्थानमें रोमन कैथलिकवालोंकी नमाज की दो पुरानी सचित्र पुस्तकें थीं। वह कहता कि युरोपमें ग्रहोंके चित्र ऐसेही होते हैं। एक दिन जेसुइट वर्गके पादरी फादर बूजीने

उसे इस प्रकार देखकर उससे प्रश्न किया कि तू यह क्या करता है। उसने निलज्जतासे उत्तर दिया—' ऐसे मूर्खोंका ज्योतिषी भी ऐसाही होना चाहिये !' यह हाल उन गरीब ज्योतिषियोंका है जो बाजारोंमें बैठे दिखाई देते हैं, पर जो ज्योतिषी अमीरोंके पास जाते हैं वे बहुतही विद्वान् समझे जाते हैं और यांहीं वे लोग धनवान बन जाते है। सारा एशिया इस व्यर्थके वहममें फंसा हुआ है। स्वयं बादशाह तथा और बड़े बड़े अमीर इन धोखेबाज भविष्यद्वक्ताओंको लम्बे चौड़े वेतन देते हैं; और बिना इनकी सलाहके साधारण काम भी आरम्भ नहीं करते। मानों यह नजूमी आकाशकी—भविष्यकी सारी बात जानते हैं, प्रत्येक कामके आरम्भ करनेके लिये उत्तम समय नियत करते और कुरानके पृष्ठ उलट पुलटकर सब प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

उन दो बड़े बाजारोंकी चौड़ाई जिनका वर्णन मैंने अभी किया है और जो चान्दनी चौकमें आकर मिलते हैं पच्चीस या तीस कदम है। जहांतक दृष्टि पहुंचती है वे सीधेही चले जाते हैं। इनमेंसे जो बाजार लाहौरी दरवाजेकी ओर गया है वह बहुतही लम्बा है। दोनों रास्तों पर मकान तथा इमारतें समानही है। पेरिसके प्रसिद्ध बाजार पैलेस रायलकी तरह इन बाजारोंके दोनों ओरकी दूकाने महराबदार है। पर इनमे भेद इतनाही है कि एक तो यह ईंटोंका बना हुआ है और दूसरे यह एकही खण्डका है। इन दूकानोंकी छतें खास चबूतरोंका काम देती है। एक भेद और है; पैलेस रायलकी दूकानोंके बरामदे ऐसे बने हैं कि इनमें प्रवेश करने पर मनुष्य बाजारके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक जा सकता है, पर यहांकी दूकानोंके बरामदे अलग अलग होते हैं और उनके बीचमें दीवारें बनी होती हैं। दिनके समय

यहीं बैठकर व्यापारी और सराफ अपना अपना काम करते हैं और ग्राहकोंको माल दिखाते हैं। इन बरामदोंके पीछे असबाब आदि रखने के लिये कोठियां बनी हुई है जिनमें रातके समय सारा असबाब रख दिया जाता है। इनके ऊपर व्यापारियोंके रहनेके लिये मकान बने हुए हैं जो बाजारमेंसे देखनेपर बहुतही सुन्दर मालूम होते हैं। ये मकान हवादार होते है और इनमें गर्द और धूल बिलकुल नहीं आती। यद्यपि शहरके भिन्न भिन्न भागोंमें भी दूकानोंके ऊपर इसी प्रकारके मकान होते हैं पर वे इतने छोटे और नीचे होते हैं कि बाजारमेंसे भली भांति दिखाई भी नहीं देते। धनिक व्यापारी दूकानों पर नहीं सोते वरन् रातको काम कर चुकनेपर अपने अपने मकानोंको जो शहरमें होते हैं चले जाते हैं।

इनके अतिरिक्त पांच और बाजार हैं। यद्यपि उनकी बनावट आदि वैसीही है पर वे इतने लम्बे और सीधे नहीं हैं। और भी बहुतसे छोटे बड़े बाजार हैं जो एक दूसरेको काटते हुए चले जाते हैं। यद्यपि उनके सामनेकी इमारत महराबके ढंगकी है तथापि, वे ऐसे लोगोंके हाथके बने हुए होनेके कारण जिन्हें इमारतके सुडौल होनेका कोई ध्यानही नहीं था, इतने सुन्दर, चौड़े और सीधे नहीं है जितने वह बाजार हैं जिनका वर्णन मैंने अभी ऊपर किया है।

शहरके गली कूचोंमें मन्सबदारों, हाकिमों और धनिक व्यापारियोंके मकान हैं और उनमेंसे भी बहुधा अच्छे और सुन्दर हैं। पर ईंट या पत्थरके बने मकान बहुतही कम और कच्चे या घास फूसके बने अधिक हैं। इतना होनेपर भी वे सुन्दर और हवादार हैं। बहुतसे मकानोंमें चौक और बाग होते हैं। इनमें सब प्रकारकी सुख सामग्री वर्तमान रहती है। जो मकान घास फूसके बने होते हैं वह भी अच्छे

सफेदी की हुई होती है। इन अनगिनत छोटे छोटे घास फूसके मकानों में—जो प्रायः बड़े बड़े मकानोंके आस पास और उनमे मिले हुए होते है,—साधारण नफर, खिदमतगार और नानबाई आदि जो पादशाहके लश्करके साथ जाया करते है,रहते हैं। इन्हीके कारण नगरमें प्राय आग लगती है। गत वर्ष तीन बार ऐसी आग लगी कि तेज हवाके कारण जो यहां गरमीके दिनोंमें चला करती है कोई साठ हजार छप्परोंपर पानी फिर गया और कुछ ऊंट, घोड़े तथा परदेदार स्त्रियां भी इसीमें जल भुनकर राख हो गई। ये स्त्रियां कुछ ऐसी लजीली होती है कि परपुरुषके सामने मुंह छिपानेके सिवा इनसे कुछ होताही नहीं। इसी लिये जो स्त्रियां आग लगनेके कारण जल मरी थीं उनमें इतना साहस नहीं था कि भागकर बच जांय। इन कच्चे और घास फूसके मकानोंके कारण ही मैं समझता हूं कि देहली मानो कुछ देहातोंका समूह या फौजकी छावनी है; पर भेद इतना है कि यहां कुछ थोड़ासा सामान आरामका भी है।

अमीरोंके मकान प्रायः नदीके किनारे और शहरके बाहर हैं। इस गरम देशमें वही मकान अधिक अच्छा समझा जाता है जिसमें सब प्रकारका आराम मिले और चारों ओरसे विशेषकर उत्तरसे अच्छी तरह हवा आती हो। यहां वही मकान अच्छे कहे जाते हैं जिनमें एक अच्छा बाग, पेड़ और हौज हो और दालानके अन्दर या दरवाजेमें छोटे छोटे फौव्वारे और तहखाने हों। इन तहखानोंमें बड़े बड़े पंखे लगे होते हैं और गरमीके दिनोंमें जब सन्ध्याको दोपहरसे चार या पांच बजेतक हवा ऐसी गरम होती है कि सांस नहीं लियां जाता, यहां बैठतेही आराम मिलता है। पर तहखानोंकी अपेक्षा लोग खसखानोंको अधिक पसन्द करते हैं। यह

यहीं बैठकर व्यापारी और सराफ अपना अपना काम करते हैं और ग्राहकोंको माल दिखाते हैं। इन बराम्दोंके पीछे असबाब आदि रखने के लिये कोठियां बनी हुई हैं जिनमें रातके समय सारा असबाब रख दिया जाता है। इनके ऊपर व्यापारियोंके रहनेके लिये मकान बने हुए हैं जो बाजारमेंसे देखनेपर बहुतही सुन्दर मालूम होते हैं। ये मकान हवादार होते हैं और इनमें गर्द और धूल बिलकुल नहीं आती। यद्यपि शहरके भिन्न भिन्न भागोंमें भी दूकानोंके ऊपर इसी प्रकारके मकान होते हैं पर वे इतने छोटे और नीचे होते हैं कि बाजारमेंसे भली भांति दिखाई भी नहीं देते। धनिक व्यापारी दूकानों पर नहीं सोते वरन् रातको काम कर चुकनेपर अपने अपने मकानोंको जो शहरमें होते हैं चले जाते हैं।

इनके अतिरिक्त पांच और बाजार हैं। यद्यपि उनकी बनावट आदि वैसीही है पर वे इतने लम्बे और सीधे नहीं हैं। और भी बहुतसे छोटे बड़े बाजार हैं जो एक दूसरेको काटते हुए चले जाते हैं। यद्यपि उनके सामनेकी इमारत महराबके ढंगकी है तथापि, वे ऐसे लोगोंके हाथके बने हुए होनेके कारण जिन्हें इमारतके सुडौल होनेका कोई ध्यानही नहीं था, इतने सुन्दर, चौड़े और सीधे नहीं हैं जितने वह बाजार हैं जिनका वर्णन मैंने अभी ऊपर किया है।

शहरके गली कूचोंमें मन्सबदारों, हाकिमों और धनिक व्यापारियोंके मकान हैं और उनमेंसे भी बहुधा अच्छे और सुन्दर हैं। पर ईंट या पत्थरके बने मकान बहुतही कम और कच्चे या घास फूसके बने अधिक हैं। इतना होनेपर भी वे सुन्दर और हवादार हैं। बहुतसे मकानोंमें चौक और बाग होते हैं। इनमें सब प्रकारकी सुख सामग्री वर्तमान रहती है। जो मकान घास फूसके बने होते हैं वह भी अच्छे

सफेदी की हुई होती है। इन अनगिनत छोटे छोटे घास फूसके मकानों में—जो प्राय: बड़े बड़े मकानोंके आस पास और उनमें मिले हुए होते हैं,—साधारण नफर, खिदमतगार और नानबाई आदि जो बादशाहके लश्करके साथ जाया करते हैं, रहते हैं। इन्हींके कारण नगरमें प्राय: आग लगती है। गत वर्ष तीन बार ऐसी आग लगी कि तेज हवाके कारण जो यहां गरमीके दिनोंमें चला करती है कोई साठ हजार छप्परोंपर पानी फिर गया और कुछ ऊंट, घोड़े तथा परदेदार स्त्रियां भी इसीमें जल भुनकर राख हो गईं। ये स्त्रियां कुछ ऐसी लजीली होती हैं कि परपुरुषके सामने मुंह छिपानेके सिवा इनसे कुछ होताही नहीं। इसी लिये जो स्त्रियां आग लगनेके कारण जल मरी थीं उनमें इतना साहस नहीं था कि भागकर बच जांय। इन कच्चे और घास फूसके मकानोंके कारण ही मैं समझता हूं कि देहली मानो कुछ देहातोंका समूह या फौजकी छावनी है; पर भेद इतना है कि यहां कुछ थोड़ासा सामान आरामका भी है।

अमीरोंके मकान प्राय: नदीके किनारे और शहरके बाहर हैं। इस गरम देशमें वही मकान अधिक अच्छा समझा जाता है जिसमें सब प्रकारका आराम मिले और चारों ओरसे विशेषकर उत्तरसे अच्छी तरह हवा आती हो। यहां वही मकान अच्छे कहे जाते हैं जिनमें एक अच्छा बाग, पेड़ और हौज हो और दालानके अन्दर या दरवाजेमें छोटे छोटे फौव्वारे और तहखाने हों। इन तहखानोंमें बड़े बड़े पंखे लगे होते हैं और गरमीके दिनोंमें जब सन्ध्याको दोपहरसे चार या पांच बजेतक हवा ऐसी गरम होती है कि सांस नहीं लिया जाता, यहां बैठनेहीसे आराम मिलता है। पर तहखानोंकी अपेक्षा लोग खसखानोंको अधिक पसन्द करते हैं। यह

छोटे छोटे साफ कमरे होते हैं जो एक प्रकारकी खुशबूदार घासकी जड़ोंसे बागमें हौजके निकट इस अभिप्रायसे बनाये जाते हैं कि नौकर चमड़ेकी डोलचियोंमें भर भरकर अच्छी तरह उनपर पानी छिड़के और उन्हें तर कर सके । जिस मकानके चारों ओर ऊंचे ऊंचे दालान हों, चारों ओरकी हवा उनमें आती हो और वे किसी बाग के अन्दर बने हों तो वे बहुत अधिक पसन्द किये जाते हैं । वास्तवमें कोई बढ़िया मकान ऐसा नहीं है जिसमें घरवालोंके सोनेके लिये आंगन न हो । वर्षा या आन्धीके समय या सवेरे जब ठण्डी हवा चलती या ओस पड़ने लगती है तो पलङ्गको खसकाकर अन्दर कर लेते हैं । यह ओस यद्यपि अधिक नहीं होती तोभी बदनमें पैठ जाती है जिससे कभी कभी हाथ पांव ऐंठ जाते हैं ।

अच्छे घरोंमें बैठनेके लिये फरशके ऊपर रूईका एक भारी और चार अंगुल मोटा गद्दा बिछा रहता है जिसपर गरमीके दिनोंमें अच्छा कपड़ा (चान्दनी) और जाड़ेके दिनोंमें रेशमी कालीन बिछाया जाता है । इस दीवानखानेमें अच्छे स्थानपर एक या दो छोटे गद्दे पड़े रहते हैं जिनपर रेशमके हलके कामकी सूजनी जिसमें सुनहरी और रुपहली जरीकी धारियां होती हैं, पड़ी रहती है । इसपर मालिक या और प्रतिष्ठित लोग जो उनसे मिलने आते हैं, बैठते हैं । प्रत्येक गद्देपर कमख्वावका एक तकिया पड़ा रहता है और इसके अतिरिक्त और लोगोंके लिये दालानमें इधर उधर कमख्वाब, मखमली और फूलदार रेशमी तकिये पड़े होते हैं । दालानमें चारों ओर जमीनसे डेढ़ या दो गज ऊंचे भांति भांतिके सुन्दर ताक बने होते हैं जिनमें अच्छे अच्छे चीनीके बरतन और गुलदान रखे जाते हैं । दालानकी छतपर बहुतसे बेल बूटे बने होते हैं और उनपर मुलम्मा किया होता

है ; पर मनुष्य या किसी और जीवित पदार्थकी तस्वीर उनपर नहीं होती क्योंकि यह बात मुसलमानी धर्ममें वर्जित है।

भारतके एक अच्छे मकानका यह प्रायः पूरा पूरा वर्णन है और देहलीमें ऐसे बहुतसे मकान हैं। मैं समझता हूं कि भारतवर्षकी राजधानीके मकान—चाहे युरोपके मकानोंसे उनकी समानता न हो—किसी प्रकार सुन्दरतासे खाली नहीं है। पर हां, जो चीजें युरोपके शहरोंकी मुख्य सुन्दरताका कारण है वह बड़ी बड़ी दूकानें हैं जो देहलीमें नहीं है। यह शहर एक बड़े और जबर्दस्त बादशाहके दरबारका स्थान है जहांपर कि बहुमूल्य चीजोंकी अच्छी दूकानों का होना एक आवश्यक बात है पर फिर भी यहां कोई ऐसा बाजार नहीं है जैसा हमारे यहा सेण्ट डेनिस है और जिसके समानका बाजार कदाचित् एशिया भरमें न होगा।

बहुमूल्य वस्तुएँ यहां प्रायः मालखानोंमें रखी रहती हैं और इङ्गलैण्डकी तरह भड़कदार और बहुमूल्य असबाबोंसे दूकाने कदाचित्‌ही कभी सजाई जाती हों। यदि किसी एक दूकानमें पश्मीना, कमखाब, जरीदार मन्दील और रेशमी कपड़े आदि हैं तो पासही कोई पचीस दूकानोंमें चावल, दाल, घी, तेल और गेहूं आदि अनेक प्रकारके अनाज जो न केवल हिन्दुओंहीके खाद्य पदार्थ हैं जो मांस कभी नहीं खाते वरन् गरीब मुसलमान और बहुतसे सिपाही भी यही खाते है, दौरियोंमे भरे हुए रखे होते हैं। हां, एक बाजार ऐसा है जिसमें केवल मेवा बिकता है। गर्मीके दिनोंमें इन दूकानोंमें ईरान, बलख, बुखारा और समरकन्दके मेवे बदाम, पिस्ता, किशमिश, बेर, शफ़ताळू और अनेक प्रकारके सूखे फल और जाड़ेके दिनोंमे रूईकी तहोंमें लपेटे हुए बढ़िया ताजे अंगूर जो इन

देशोंसे आते हैं और नाशपाती तथा कई तरहके अच्छे मेद और मेवे जो जाड़े भर बिकते रहते हैं, मरे होते हैं। ये मेवे बहुत महँगे मिलते हैं; इसका अन्दाज आप इसीसे लगा सकते हैं कि एक कड़ी पौने चार रुपयेको मिलता है और इतना महँगा होनेपर भी यहाँके लोग और मेवोंकी अपेक्षा इसे अधिक पसन्द करते हैं। अमीर लोग इसे बहुत अधिक खरीदते हैं। मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरे ' आगा " के यहाँ सवेरे भोजनके समय प्रायः ५,०) के मेवे आते थे।

गर्मीके दिनोंमें देशी खर्बूजे बहुत सस्ते मिलते हैं पर वे कुछ अधिक स्वादिष्ट नहीं होते। हां वे खर्बूजे जिनका बीज ईरानसे मँगवाया और यहाँ बोया जाता है (और प्रायः यहांके अमीर लोग ऐसाही करते हैं) बहुत अच्छे होते हैं। इतना होनेपर भी अच्छे और स्वादिष्ट खर्बूजे यहाँ बहुत कम मिलते हैं, क्योंकि यहाँकी जमीन उनके अनुकूल नहीं है और उनके बीज भी एक दो बारमें बिगड़ जाते हैं।

गर्मीके दिनोंमें आम यहाँ बहुत सस्ते और अधिकतासे मिलते हैं पर देहलीमें जो आम पैदा होता है वह न तो कुछ ऐसा अच्छा ही होता है और न बुरा। सबसे अच्छा आम बंगाल, गोलकुण्डा और गोआसे आता है जो वास्तवमें बहुत अच्छा होता है और जिस की बराबरी कोई मिठाई नहीं कर सकती। तरबूज यहां बारहों मास रहता है, पर जो तरबूज देहलीमें पैदा होता है वह नरम और फीका होता है, उसकी रंगत भी अच्छी नहीं होती। पर अमीरोंके यहां कभी कभी बहुत स्वादिष्ट तरबूज देखनेमें आते हैं जो इसके लिये बहुत धन व्यय करके और बाहरसे बीज मँगवाकर बड़ी सावधानीसे पेड़ लगवाते हैं।

शहरमें हलवाइयोंकी दूकानें अधिकतासे हैं पर मिठाई उनमें अच्छी नही बनती, उनपर गर्द पड़ी होती है और मक्खियां भिनभिनाया करती हैं। नानबाई भी बहुत हैं, पर यहांके तन्दूर हमारे यहांके तन्दूरोंसे बहुतही भिन्न और बहुत बड़े होते हैं और इसी कारण न तो रोटी अच्छी होती है और न भली भांति सेंकी हुई। पर जो रोटी किलेमें बिकती है वह कुछ अच्छी होती है। अमीर लोग तो अपने मकानों हीपर रोटियां बनवा लेते हैं। उनमें दूध, मक्खन और अण्डा डाला जाता है इससे वह और भी अधिक स्वादिष्ट हो जाती है। यद्यपि वह बहुत फूल जाती है पर स्वाद उसका जली हुई रोटीसा होता है। यह रोटी साधारण केक (विलायती चपाती) की तरह होती है और पेरिसके 'गोनेस' (एक प्रकारकी रोटी) आदि सी स्वादिष्ट नहीं होती। बाजारमें बहुत तरहका कबाब और कलिया बिकता है पर मुझे विश्वास नहीं कि वह किसी अच्छे जानवरका मांस हो, क्योंकि मैं जानता हूं कि कभी कभी यह मांस ऊंट, घोड़े या बीमार पशुओंका भी होताहै और इसी लिये जो चीजें अपने मकानपर न बनवाई जायँ वे कभी खाने और व्यवहारमें लानेके योग्य नहीं होती। देहलीकी प्रत्येक गलियोंमें मांस बिकता है, पर कभी कभी बकरीके धोखेमें भेड़का मांस भी दे देते हैं; इसी लिये इन सबोंको अच्छी तरह देख भालकर लेना और खाना चाहिये। यद्यपि बकरी वा अन्य ऐसे पशुओंके मांसका स्वाद बुरा नही होता, पर वह कुछ गर्म होता है, बादी करता और देरमें पचता है। बकरीके बच्चेका मांस सबसे अच्छा होता है, पर वह बाजारमें नहीं मिलता इससे जीवित बच्चा खरीदना पड़ता है। बड़ी कठिनता तो यहां यह है कि सुबहका मांस शामतक नहीं ठहरता; और दूसरी यह कि जानवर दुबले

मिलते हैं, जिससे उनके मांसका स्वाद बिगड़ जाता है। बाजारमें कसाइयोंकी दूकानोंपर भी दुबली बकरियोंका मांस मिलता है जो बहुधा कठोर होता है। पर मैं इन सब कष्टोंसे बचा हुआ हूं; कारण यह है कि मैं इन लोगोंके ढंगोंसे परिचित हूं और इसी लिये अपने खानेका मूल्य बादशाही बावर्चीखानेके दारोगाके पास किसी अपने नौकरके हाथ भेज देता हूं और वह मुझे खुशीसे अच्छा भोजन भेज देता है। यद्यपि इन चीजोंपर उनकी लागत बहुतही कम आती है पर मैं उन्हें मूल्य कुछ अधिक देता हूं। मैंने एक दिन अपने 'आगा' से इस चोरी और चालाकीके विषयमें कहाभी, जिसपर वह बहुत हंसा। फ्रान्समें मैं ॥) में बादशाही भोजन कर लिया करता था पर यहां यदि ऐसी चालाकी न करता तो कदाचित् १५०) में जो मुझे मेरे आगाकी सरकारसे मिलते हैं, मेरा गुजारा कभी न होता और मैं भूखों मर जाता।

इस देशके लोगोंमें दया अधिक है और इसी कारण मुर्गी बाजारमें नहीं दिखाई देती। पर नहीं मालूम यह दया उन मनुष्योंके भाग्यमें क्यों नहीं होती जो जनाने मकानोंके लिये खोजा बनाते हैं। चिड़ियां बाजारमें अनेक प्रकारकी अच्छी और सस्ती मिलती हैं, यहां एक प्रकारकी छोटी मुर्गी जिसका चमड़ा काला होता है और जिसका नाम मैंने 'हिब्शी' रक्खा है, मिलती है। कबूतर भी मिलते हैं पर बच्चे नहीं मिलते। इसका कारण यही है कि यहांके लोग बच्चोंको मारना बड़ी निष्ठुरताका कार्य समझते हैं। तीतर भी मिलते हैं पर हमारे देशके तीतरोंसे छोटे होते हैं। लेकिन जालमें फंसा कर और पिंजरोंमें बन्द करके लाये जानेके कारण वे ऐसे अच्छे नहीं होते जैसे और अनेक पशु। यही अवस्था बड़ी मुर्गाबियों और बत-

गोओंकी होती है जो जीवित पकड़े जाकर पिंजरोंमें भरे हुए शहरमें आते हैं। देहलीके मछुए अपने कार्य्यमें कुछ ऐसे चतुर नहीं हैं पर फिर भी मछलियां कभी कभी बाजारोंमें अच्छी बिकती हैं। विशेष कर राहू और सिंघाड़ी जो अपने यहांकी 'कार्प' के समान होती हैं, अच्छी होती हैं। जाड़ेके दिनोंमें मछुए कम मछलियां पकड़ते हैं, कारण यह कि यहांके लोग सर्दीसे उतनाही डरते हैं जितना हम लोग गर्मीसे। जाड़ेके दिनोंमें यदि कोई मछली बाजार में दिखलाई दे तो ख्वाजासरा उन्हें स्वयं खरीद लेते हैं; वह लोग इसे बहुत पसन्द करते हैं पर इसका कोई विशेष कारण मुझे अब तक मालूम नहीं हुआ। अमीर लोग अपने कोड़ोंके बल जो उनके दरवाजों पर इसी कार्य्यके लिये लटकते रहते हैं, जाड़ेके दिनोंमें प्रायः मछली पकड़वाया करते हैं।

अब आपही कहें कि क्या कोई पेरिसका भला आदमी अपनी इच्छा और खुशीसे यहां आयेगा; इसमें सन्देह नहीं कि यहांके धनीपात्रोंको हमेशः अच्छी चीजें मिला करती हैं पर यह केवल उनके रुपये और बहुतसे नौकरोंकेही बलसे मिलती हैं। देहलीमें साधारण स्थितिके लोग नहीं रहते; बड़े बड़े अमीर, उमरा और रईस या बिलकुलही कम हैसियतके लोग जिनका जीवन कष्टसे बीतता है, रहते हैं। यद्यपि मुझे यहां अच्छा वेतन मिलता है और मैं व्ययभी करता हूं पर बहुधा मुझे अच्छा भोजन नहीं मिलता; और जो मिलता भी है वह बहुतही रद्दी, जो अमीर लोगोंके नापसन्द होनेके कारण बच रहता है। मदिरा जो हमारे यहां भोजनका प्रधान अंश है, देहलीकी किसी दूकानमें नहीं मिलती। जो मदिरा यहां देशी अंगूरकी बन सकती है वहभी नहीं मिलती क्योंकि मुसल्मानोंके कुरान

और हिन्दुओंके शास्त्रोंमें उसका पीना वर्जित है। अहमदाबाद और गोलकुण्डामें मुझे कुछ डच और अंग्रेजोंके यहां अच्छी मदिरा पीनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मुगलराज्यमें भी जो मदिरा शीराज या कनारी टापूसे आती है, अच्छी होती है। शीराजी मदिरा ईरानसे खुश्कीके रास्ते 'बन्दर अब्बास' और वहांसे जहाजके द्वारा सूरतमें पहुँचती और वहांसे देहली आती है; शीराजसे देहलीतक मदिरा आनेमें ४६ दिन लगते हैं। किनारी टापूसे मदिरा सूरत होती हुई देहली आती है। पर यह दोनों मदिराएं इतनी महँगी होती है कि इनका मूल्यही इन्हें बदमजा कर देता है। एक शीशी जो तीन अंग्रेजी बोतलोंके बराबर होती है १५ या १६ रूपयेको आती है। जो मदिरा इस देशमें बनती है और जिसे यहांके लोग 'अर्क' कहते हैं बहुतही तेज होती है; वह गुड़से भभकेमें खींचकर बनाई जाती है और बाजारमें नहीं बिकने पाती और धर्मविरुद्ध होनेके कारण अंग्रेजों वा ईसाइयोंके अतिरिक्त इसे कोई भी नहीं पी सकता। यह अर्क ठीक वैसाही है जैसा पोलण्डके लोग अनाजसे बनाते हैं और जिसके जरासा अधिक पीनेसे मनुष्य बीमार पड़ जाता है। समझदार आदमी यहां तो सादा पानी पीयेगा या नीबूका शरबत जो यहां सहजहीमें मिल जाता है और हानिकारक भी नहीं होता। इस गर्म देशमें लोगोंको मदिराकी आवश्यकता भी नहीं होती। मदिरा न पीने और बराबर पसीने आते रहनेके कारण यहांके लोग सर्दी, छातिया बुखार, पेडूका दर्द आदिक रोगोंसे बचे रहते हैं और जो ऐसे रोगी यहां आते हैं वह शीघ्रही अच्छे भी हो जाते हैं और जिसकी परीक्षा मैं स्वयं कर चुका हूं। यहांके सहांको यह बीमारियां बहुत कम होती है जिनकी हमारे देशमें प्रधानता है।

और यदि अभाग्यवश कभी हो भी जाती है तो वह इतनी भयंकर नहीं होती जैसी हमारे यहां। इस देशके लोग प्रायःस्वस्थ्य रहनेपर भी इतने साहसी नहीं होते जैसे हमारे देशभाई । गर्मीकी अधिकताके कारण यहांके लोग बहुत सुस्त हो जाते हैं और यह गर्मी विदेश से आये हुए लोगोंपर तो औरभी बुरी तरह अपना प्रभाव डालती है।

देहलीमें शिल्पके कारखाने बिलकुल ही नहीं है, पर इससे यह न समझना चाहिये कि यहांके लोगोंको कुछ आताही नहीं, क्योंकि यहांके प्रत्येक प्रान्तमें अच्छे अच्छे कारीगरोंकी बनाई बहुतही सुन्दर चीजें दिखलाई पड़ती है और जो बिना किसी प्रकारकी मशीन वा कलके बनाई जाती हैं और कदाचित् ऐसे लोगोंके हाथकी बनी होती हैं जिन्होंने कभी किसीसे इसकी शिक्षा भी नहीं पायी । कभी कभी तो यह लोग युरोपकी बनी वस्तुओंकी ऐसी नकल करते हैं कि असल और नकलमें कुछ भी भेद नहीं मालूम होता। शिकारी और बन्दूकें बहुतही सुन्दर और अच्छी बनती हैं और सोनेके गहने तो ऐसे अच्छे बनते हैं कि कोई युरोपियन सुनार उनका मुकाबला नहीं कर सकता।

चित्र बनाने और नक्काशी करनेका काम तो यहां ऐसा उत्तम और बारीक होता है कि जिनको देखकर मैं चकित हो गया। अकबर बादशाहकी एक बड़ी लड़ाईकी तस्वीर एक चित्रकारने सात वर्षमें एक ढालपर बनाई थी, उसे देखकर मैं हैरान हो गया। पर हिन्दुस्थानी चित्रकार मुंह वा किसी और अङ्गपर उन भावोंको नहीं झलका सकते जो उस समय चित्रितके मनमें होते हैं; पर यदि इन्हें पूर्णरूपसे शिक्षा दी जाय तो यह दोष मिट सकता है; और इससे यह स्पष्ट प्रकट है कि भारतमें बहुत अच्छी चीजोंका न होना

यहांके लोगोंकी अयोग्यताके कारण नहीं वरन् शिक्षाके अभावसे हैं; और यह भी प्रकट है कि यदि इन लोगोंको उत्साह दिलाया जाय तो बहुतसे अच्छे अच्छे काम यहां हो सकते हैं। कारीगरोंको यहां उनके कामोंका उचित पुरस्कार नहीं मिलता वरन् उलटे उनसे सख्तीका वर्ताव किया जाता है। धनी लोग सब चीजें सस्ते मूल्यपर लिया चाहते हैं। जब कभी किसी अमीरको कारीगर की आवश्यकता होती है तो वह उन्हें बाजारसे पकड़वा मंगाता है और उस बेचारेसे जबरदस्तीसे काम लिया जाता है और चीज तय्यार हो जानेपर उसके योग्यतानुसार नहीं किन्तु अपने इच्छानुसार उसे मजदूरी देता है; और कारीगर कोड़ोंकी मार खानेसे बच जानेहीपर अपना अहोभाग्य समझता है। तब ऐसी अवस्थामें कब सम्भव है कि कोई कारीगर अच्छी और सुन्दर चीज बनानेकी चेष्टा करे; उन्हें तो नाम पैदा करनेकी अपेक्षा अपनी जानकी फिक्र करनी पड़ती है। वह लोग यही समझते हैं कि किसी तरह जल्दी पीछा छूटे और इतनीही मजदूरी मिल जाय जिससे उसका और उसके बाल बच्चोंका काम चल जाय; और इसी लिये वही कारीगर कुछ अधिक नाम पैदा कर सकता और अपनी योग्यता दिखला सकता है जो बादशाह या किसी और अमीरका नौकर है, और केवल अपने स्वामीहीके लिये चीज बनाता है।

किलेके अन्दरके मकानोंका वर्णन। किलेमें शाही महलसरा और अनेक और महल हैं· लेकिन इससे आप यह न समझें कि यह फ्रान्सके त्वायर या स्पेनके एस्क्युरियलकी भांति है क्योंकि यहांकी कोई वस्तु युरोपकी इमारतोंसे नहीं मिलती, और जैसा मैंने ऊपर वर्णन किया है उनसे समानता भी नहीं होनी चाहिये।

क्योंकि ये इमारतें इस देशके जल वायुके अनुसारही सुन्दर और शानदार हैं ।

हथियापोल दरवाजा । किलेके दरवाजेपर कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसका वर्णन किया जाय। हां उसके दोनों ओर दो बड़े बड़े पत्थरके हाथी बनाकर खड़े किये गये हैं जिनमेंसे एक पर चित्तौड़के सुविख्यात राजा जयमल और दूसरेपर उनके भाई फत्ताकी मूर्त्ति है। यह दोनो भाई बड़े वीर और पराक्रमी थे, इनकी माता इनसे भी अधिक बहादुर थी। यह दोनों भाई अकबरसे इतनी बहादुरीसे लड़े थे कि इनका नाम प्रलयतक संसारमें अमर रहेगा । जिस समय शाहन्शाह अकबरने इनके शहरको चारों ओरसे घेर लिया तो इन्होंने बड़ी वीरतासे उनका सामना किया, और इतने बड़े बादशाहके सामने पराजय स्वीकार करनेकी अपेक्षा उन्होंने अपनी तथा माता की जानें देदेना उत्तम समझा, और यही कारण है कि उनके दुश्मनो ने भी उनकी मूर्त्तियोंको चिन्हस्वरूप रखना उचित समझा । वह दोनों हाथी जिनपर यह दोनों वीर बैठे हैं बड़े शान्दार हैं ; उन्हें देखकर मेरे दिलमें उनका ऐसा आतंक समाया जिसका कि मैं वर्णन नहीं कर सकता ।

इस फाटकसे होकर किलेमें जानेपर आगे एक लम्बी चौड़ी सड़क मिलती है जिसके बीचोबीच पानीकी नहर बहती है और उसके दोनो ओर पांच या छ फरान्सीसी फुट ऊंचा और प्रायःचार फीट चौड़ा चबूतरा पेरिसके 'पौण्ट नीयोंफ' की भांति बना हुआ है और जिसको छोड़कर दोनो ओर बराबर महराबदार दालान बनते चले गये हैं, जिनमें भिन्न भिन्न विभागोंके दारोगा और छोटी श्रेणीके ओहदेदार बैठे हुए अपना काम करते रहते हैं, और वह

मन्सबदार भी जो रातके समय पहरा देने आते हैं, इसीपर ठहरते हैं; पर इनके नीचेसे आने जानेवाले सवारों और साधारण लोगोंको इससे कोई कष्ट नहीं होता।

किलेके दूसरे फाटकका वर्णन--किलेकी दूसरी ओर के फाटकके अन्दरकी ओर भी ऐसीही लम्बी चौड़ी सड़क है और इसके दोनों ओर वैसेही चबूतरे हैं; पर मेहराबदार दालानोंके स्थानमें वहां दुकानें बनी हुई हैं; और सच पूछिये तो यह एक बाजार है, जो लदावकी छतके कारण जिसमें ऊपरकी ओर हवा और प्रकाशके लिये रोशन्दान बने हुए हैं, गरमी और बरसातके कारण बड़े कामका है।

इन दोनों सड़कोंके अतिरिक्त इसके दाहिने और बाएं ओर भी अनेक छोटी छोटी सड़कें हैं, जो उन मकानोंकी ओर जाती हैं जहां नियमानुसार उमरा लोग सप्ताहमें एक दिन बारी बारीसे पहरा दिया करते हैं। यह मकान जहां उमरा लोग चौकी देते हैं, अच्छे हैं क्योंकि यह लोग उन्हें अपनेही व्ययसे सजाते हैं। यहां बड़े बड़े दीवानखाने हैं, और उनके सामने बाग हैं जिनमें छोटी छोटी नहरें हौज और फौव्वारे बने हुए हैं। जिस अमीरकी नौकरी होती है, उसके लिये भोजन शाही खासेमेंसे आता है जब भोजन आता है तब अमीर को धन्यवाद और सम्मानस्वरूप महलकी ओर मुंह करके तीन बार आदाब बजा लाना अर्थात् जमीनतक हाथ लेजाकर माथेतक लाना होता है। इनके अतिरिक्त भिन्न भिन्न स्थानोंमें सरकारी दफ्तरोंके लिये दीवानखाने बने हुए हैं और खेमे लगे हैं, जिनमें प्रत्येकमें किसी अच्छे कारीगरकी निगरानीमें काम हुआ करता है। किसीमें

चिकनदोज और जरदोज आदि काम करते हैं, किसीमें सुनार, किसीमें चित्रकार और नक्काश, किसीमें रङ्गसाज, बढ़ई और खरादी, किसीमें दरजी और मोची, किसीमें कमखाब और मखमल बुननेवाले और जुलाहे जो पगड़ियां बिनते, कमरके बान्धनेके फूलदार पटके और जनाने पायजामोंके लिये बारीक कपड़ा बनाते हैं, बैठते हैं, यह कपड़ा इतना महीन होता है कि केवल एकही रात व्यवहारमे लानेसे बेकाम हो जाता है, पचीस और तीस रूपये मूल्यका होता है और जब इनपर सूईसे बढ़िया जरीका काम किया जाता है तो इनका मूल्य और भी अधिक हो जाता है। यह सब कारीगर सवेरेसे आकर अपना अपना काम करते और शाम को अपने घर चले जाते है, और इन्हीं कामोंमें उनका जीवन व्यतीत हो जाता है; और जिस अवस्थामे वह जन्म लेता है उससे उन्नत अवस्थामें होनेकी चेष्टा भी नहीं करता। चिकनदोज आदि अपनी सन्तानको अपनाही काम सिखलाते हैं, सुनारका लड़का सुनारही होता है, और शहरका हकीम अपने पुत्रको हकीमी ही सिखलाता है; और यहांतक कि कोई व्यक्ति अपने लड़के वा लड़कीका विवाह अपने पेशेवालोंके अतिरिक्त और किसीके घर नहीं करता। इस नियमका पालन मुसलमान भी वैसाही करते हैं जैसा कि हिन्दू, जिनके शास्त्रोंकी यह आज्ञा है। और इसी लिये बहुतसी सुन्दर लड़कियां कुंआरीही रह जाती हैं; पर यदि उनके मां बाप चाहें तो उन लड़कियोंका विवाह बहुतही अच्छी जगह हो सकता है।

खास व आम और नक्कारेका वर्णन---अब मैं खास व आमका वर्णन करना उचित समझता हूं जो इन मकानों के आगे मिलता है; यह इमारत बहुतही सुन्दर और अच्छी है। यह

एक बड़ा सा मकान है जिसके चारों ओर महराबें हैं और 'पैलेस रायल' से मिलता है, पर भेद इतनाही है कि इसके ऊपर कुछ इमारत नहीं है। इसकी महराबें ऐसी बनी हुई हैं कि एक महराबमेंसे दूसरी महराबमें जा सकते हैं। इसके सामने एक बड़ा दरवाजा है जिसके ऊपर बालाखाना बना हुआ है। इसमें शहनाई, नफीरियां और नक्कारे रखे हुए हैं और इसी कारण लोग इसे नक्कारखाना कहते हैं, जो दिन और रातको नियत समयपर बजाये जाते हैं। यह नक्कारे नवआगन्तुक फिरंगियोंके कानोंको बहुतही बुरे मालूम होते हैं। दस बारह नफीरियां और इतनेही नक्कारे एक साथ बजायें जाते हैं; इनमें सबसे बड़ी नफीरी जिसको 'करना' कहते हैं, ९ फीट लम्बी है, और इसके नीचेका मुंह एक फरान्सीसी फुटसे कम नहीं है। लोहे या पीतलके सबसे छोटे नक्कारेकी गोलाई कमसे कम छ.फीट है। इसीसे आप समझ सकते हैं कि इस नक्कारखानेसे कितना शोर होता होगा। जब मैं पहलेपहल यहां आया तो शोरके मारे मेरे कान बहरे हो गये, पर अभ्यास हो जानेके कारण अब मैं उसे बड़े चावसे सुनता हूं; विशेषत' रातके समय जब कि मकानकी छतपर लेटे हुए उसकी आवाज दूरसे सुनाई देती है तो बहुतही सुरीली और भली मालूम होती है, और यह कोई आश्चर्य्य की बात नही है, कारण कि इसके बजानेवाले बचपनहीसे इसकी शिक्षा पाते और इन बाजोंकी आवाजके ऊंचा नीचा करने और सुरीली और लैदार बनानेमें बड़े चतुर होते हैं। यदि यह नफीरी दूरसे सुनी जाय तो बहुत अच्छी मालूम होती है। नक्कारखाना बादशाही महलसे बहुत दूर बना है जिसमें बादशाहको इसकी आवाजसे कष्ट न हो।

नक्कारखानेके दरवाजेके सामने सहनके आगे एक बड़ा दालान है, जिसकी छत सुनहरे कामकी है। यह बहुत ऊंचा हवादार और तीन ओरसे खुला हुआ है। उस दीवारके बीचोबीच जो इसके और महलसराके मध्यमें है, प्रायः छः फीट ऊंचा और एक फुट चौड़ा शहनशीन बना हुआ है, जहां नित्य दोपहरके समय बादशाह आकर बैठता है, उसके दाएं और बाएं शाहजादे खड़े होते हैं और ख्वाजः-सरा या तो मोर्छल हिलाते हैं या बड़े बड़े पंखे हिलाते हैं और या बादशाहका हुकुम बजा लानेके लिये हाथ बांधे खड़े रहते हैं। तख्त के नीचे चान्दीका जङ्गला लगा हुआ है जिसमें उमरा, राजे तथा अन्य राजाओंके प्रतिनिधि हाथ बांधे और नीची आंखे किये खड़े रहते हैं; और तख्तसे कुछ दूर हटकर मन्सबदार या छोटे छोटे उमरा खड़े रहते हैं। इसके अतिरिक्त जो स्थान खाली बचता है उसमें बड़े छोटे अमीर गरीब सब तरहके लोग भरे रहते हैं; केवल यही एक स्थान है कि जहां सर्वसाधारणको बादशाहके सामने उपस्थित होने का अवसर मिलता है और इसी लिये उसे 'आम व खास' कहते हैं। यहां डेढ़ दो घण्टातक लोगोंका सलाम और मुजरा होता रहता है। इसी समय बादशाहके मुलाहजके लिये अच्छे अच्छे सजे हुए घोड़े पेश किये जाते हैं। इनके बाद हाथियोंकी बारी आती है, जिनकी मैली खाल खूब नहला धुलाकर साफ कर दी जाती और फिर स्याहीसे रंग दी जाती है। इनके सिरसे दो लाल रङ्गकी लकीरें सूंडके नीचे तक खींच दी जाती हैं। इनपर जरीकी झूल पड़ी होती है जिसमें चान्दीके दो घण्टे एक जञ्जीरसे बांधकर उसके दोनों ओर लटका दिये जाते हैं और सफेद 'सुरागाय' की दुमें जो तिब्बतसे आती हैं और बहुमुल्य होती हैं, लटका दी जाती हैं जो बड़ी बड़ी

मोछें सी मालूम होती हैं। दो छोटे छोटे हाथी जो खूब सजे होते हैं खिदमतगारोंकी तरह इन बड़े हाथियोंके दोनों ओर चलते हैं। यह हाथी झूम झूमकर और सँभलकर पैर रखते और इतराते हुए चलते हैं और जब तख्तके निकट पहुंचते हैं तो महावत जो उनकी गर्दनपर बैठा होता है लोहेकी कुछ नोकदार चीज उसे चुभोता और जबानसे कुछ कहता है; उस समय हाथी घुटनेके बल बैठकर सूंड ऊपरकी ओर उठाकर चिग्घाड़ता है जिसे लोग उसका 'सलाम' करना समझते हैं। इसके उपरान्त और जानवर पेश होते हैं जैसे सिधाये हुए हरिन जो लड़ाये जाते हैं, नीलगाय, गैण्डे और बंगाल के बड़े बड़े भैंसे जिनके सींग इतने बड़े और तेज होते हैं, जिनसे वह शेरके साथ लड़ सकते हैं, चीते जिनसे हिरनका शिकार खेला जाता है और अनेक प्रकारके शिकारी कुत्ते जो बुखारा आदिसे आते हैं और जिनपर लाल रंगकी झूलें पड़ी होती हैं, पेश होते हैं। सबके अन्तमें शिकारी पक्षी जैसे बाज शिकरे आदि जो तीतर और खरगोश को पकड़ते हैं पेश होते हैं। कहते हैं कि यह पक्षी हरिनपर भी छोड़े जाते हैं जिनपर यह बहुत तेजीसे झपटते और पञ्जे मार मारकर उन्हें अन्धा कर देते हैं। इन सबके पेश हो जानेके बाद कभी कभी दो एक अमीरोंके सवार भी पेश किये जाते हैं जिनके कपड़े और समय की अपेक्षा अधिक बहुमूल्य और सुन्दर होते हैं। इनके घोड़ोंपर पाखर पड़ी होती हैं और तरह तरहके जेवर जैसे हैकल झुनझुने आदिसे सजे होते हैं। बहुधा बादशाहकी प्रसन्नताके लिये अनेक खेल किये जाते हैं, मरी हुई भेंड़ जिनका पेट साफ करके फिर सी दिया जाता है। बीचमें रख दी जाती है और उमरा, मन्सबदार गुर्जबर्दार और आसाबर्दार उनपर तलवारसे अपना कर्तब दिखलाते

और एकही हाथमें उन्हें काटनेकी चेष्टा करते हैं ; यह सब खेल दरबारके आरम्भमें हुआ करते हैं । इनके बाद राज्यसम्बन्धी अनेक मामले पेश होते हैं । फिर बादशाह सब सवारोंको बड़े गौरसे देखता है ; जबसे लड़ाई बन्द हुई कोई सवार या पैदल ऐसा नहीं है जिसे बादशाहने स्वयम् न देखाहो, बहुतोंका वेतन बादशाह स्वयम् बढ़ाता, अनेकोंका कम करता और कइयोंको बिल्कुलही मौकूफ कर देता है ।

इस अवसरपर सर्वसाधारण जो अर्जियां पेश करते हैं वह सब बादशाहके कानोंतक पहुँचती है, और बादशाह स्वयम् लोगोंसे उनके दुःखके विषयमें पूछता और उसके निवारणके उपाय करता है। इनमेंसे दस अर्जियाँ देनेवाले चुनकर सप्ताहमें एक दिन बादशाहके सामने पेश किये जाते हैं और उस दिन बादशाह पूरे दो घण्टा तक वह अर्जियां सुना करता है , इन अर्जी देनेवाले व्यक्तियोंके चुननेका काम एक अमीरके सुपुर्द है । इनका फैसला बादशाह शहरके दो काजियोंके साथ ' अदालत खाना ' नामक कमरेमें बैठकर करता है और इसमें कभी नागा नहीं पड़ता । इससे यह स्पष्ट प्रकट है कि यह एशियाई बादशाह जिन्हें हम फिरंगी लोग मूर्ख और तुच्छ समझते हैं अपनी प्रजाका न्याय करनेमें त्रुटि नहीं करते ।

इन 'आम व खास' दरबारमें होनेवाली बातें जिनका मैंने अभी जिक्र किया है यद्यपि सब उचित और अच्छी हैं पर तौभी मुझे उन खुशामदों आदिका उल्लेख करना आवश्यक है जो यहां देखने में आती है । यदि किसी छोटीसे छोटी बातके विषयमें बादशाहके मुँहसे कोई अच्छा शब्द निकल आता है तो दरबारके बड़े बड़े उमरा आसमानकी ओर हाथ उठाकर उस शब्दके साथ ' करामात

करामात' कहकर चिल्ला उठते है, और अर्ज़ करते है कि सुबहान अल्लाह! क्या खूब इर्शाद हुआ है। और कदाचित् ही कोई ऐसा मुगल हो जिसे यह शैर न आता हो, और वह इसे ऐसे अवसरोंपर न पढ़ता हो:—अगर शाद रोज रा गोयद शबस्त ईं। बबायद गुफ्त ईंयक माह परवी॥ अर्थात् यदि बादशाह दिनको रात कहे तो कहना चाहिए वह देखिए चन्द्रमा और सितारे हैं। यह खुशामद का रोग प्रायः सब छोटे बड़ोंमें पाया जाता है। यदि कोई मुगल मेरे पास दवा लेनेके लिये आता है तो वह सब बातोंसे पहले मुझसे यह कह लेता है कि आप अपने समयके अरस्तू, सुकरात और बो-अलीसेना हैं; पहले पहल तो मैंने उन लोगोंको इस बातसे रोकना चाहा और कहा कि जितनी प्रशंसा आप मेरी करते हैं मै कभी इस योग्य नहीं हूं और मेरी समता उन महानुभावोंसे नही हो सकती! पर जब मैने देखा कि मेरी इन बातोंसे वह और भी अधिक प्रशंसा करते चले जाते है तो मै चुपचाप उनकी बातें सुन लेता और कुछ दिनोंमें मै इन बातोंके सुननेका वैसाही अभ्यस्त हो गया जैसा यहां के शाही नक्कारखानोंके रागोंका। मैं आपको एक ऐसी बात सुनाता हूं, जिससे आपको इन बातोंका पूरा परिचय मिल जायगा। एक पण्डितने जिसे मैं ही अपने आकाके पास ले गया था, अपने बनाये एक श्लोकमें पहले तो उन्हें बड़े बड़े राजाओंसे अधिक बतलाया और फिर बहुतसी व्यर्थकी बातें बककर अन्तमें बड़ीही गम्भीरतासे कहा " जिस समय आप घोड़ेपर सवार होकर अपनी फौजके आगे आगे चलते है, उस समय वह अष्टदिग्गज जो पृथ्वीको अपने ऊपर उठाये हुए है आपका बोझ नहीं संभाल सकते और इस कारण पृथ्वी कांपने लगती है।" यह सुनतेही मुझे हँसी आई और मैंने

बड़ी गम्भीरतासे अपने आकासे कहा कि आप जरा सँभालकर घोड़ेपर सवार हुआ करें, ऐसा न हो कि कहीं भूडोल आजाय और सारी पृथ्वी उलट पुलट हो जाय। उन्होंने हँसकर उत्तर दिया कि इसीसे मैं पालकीकी सवारी अधिक पसन्द करता हूं।

आम व खासके बड़े दालानसे सटा हुआ एक खिलवतखाना है जिसे गुस्लखाना कहते हैं, यहां बहुत कम आदमियोंको जानेकी आज्ञा है। यद्यपि यह आम व खासके बराबर नहीं है पर फिर भी बहुतही बड़ा और सुन्दर सुनहरे कामका है और शहनशीनकी तरह चार या पांच फरान्सीसी फुट ऊंचा है। यहां कुरसी पर बैठ कर बादशाह वजीरोंसे जो इधर उधर खड़े होते हैं सलाह करता, बड़े बड़े अमीरों और सूबेदारोंकी अर्जियां सुनता और अनेक गूढ़ राज्यकार्य्य करता है। जिस तरह सबेरे आम व खासमें उपस्थित न होनेसे अमीरोंपर जुर्माना होता है उसी तरह सन्ध्याको यहां न हाजिर होनेसे सजा मिलती है। केवल मेरे आका दानिशमन्द खां एक ऐसे अमीर हैं जो अपनी बिद्वत्ता योग्यता और अनेक दूसरे राज्यकार्य्योंके कारण यहां आनेसे बरी हैं। हां बुधवारको जो उनकी चौकीका दिन है उन्हे भी और अमीरोंकी तरह हाजिर होना पड़ता है। इन दोनो हाजिरियोंकी चाल बहुत पुरानी है, और कोई भी अमीर इसकी शिकायत नहीं कर सकता, कारण कि स्वयं बादशाह जबतक उसे कोई बीमारी न हो दोनों वक्त दरबारमें आता है। औरंगजेबको उसकी अन्तिम बीमारीके समय यदि दोनों समय नहीं तो एक समय अवश्य लोग दरबारमें उठा लाते थे। वह दिन रातमें एक समय अवश्य लोगोंके सामने आना उचित समझता था क्योंकि इतने बीमार होनेके समय उसके एक दिन भी दरबारमें न

आनेसे सब राजकार्य्योंमे हलचल और शहरमें हड़ताल पड़ जाने की सम्भावना थी।

यद्यपि गुसलखानेके दरबारमे यही बात होती है जो मैने अभी कही है पर आम व खासकी तरह यहां भी अधिकांश जानवरों आदिका मुलाहजा होता है; हां रात हो जानेके कारण और सामने सहनके छोटे होनेके कारण अमीरोंके रिसालोंका मुलाहजा नहीं हो सकता। इस समयके दरबारमें यह विशेषता है कि वह मन्सवदार जिनकी उस दिन चौकीकी वारी होती है वड़ीही शिष्टता और अदबके साथ सलाम करते हुए सामनेसे गुजर जाते हैं; इनके आगे लोग हाथोंमें 'कौर' लिये हुए चलते है; यह कौर बहुतही सुन्दर होते है और चांदीकी छड़ियोंके सिर पर मढ़े होते हैं, इनमेंसे कुछ तो मछलियोंकी शक्लके, कुछ एक बड़े भयानक सर्पके रूपके जिसे अजदहा कहते है, कुछ शेरकी शक्लके, और हाथ और पंजे की तरह बने हुए तथा इसके अतिरिक्त अनेक प्रकारके जिनका विचित्र ही अर्थ बतलाया जाता है, होते हैं। इन लोगोंमेंसे बहुतसे बुर्ज-बरदार होते है जो शरीरके हृष्ट पुष्ट देखकर भरती किये जाते हैं और जिनका यह काम है कि दरबारके समय हुल्लड़ या गड़बड़ न होने दें और बादशाही आज्ञापत्र आदि पहुंचाएं तथा बादशाह जो आज्ञा दें बहुत जल्द उनका पालन करें।

शाही महलसराका बयान। अब मैं आपको बड़ी प्रसन्नतासे शाही महलसराकी सैर कराता हूं जैसा अभी किलेकी इमारतोंकी कराई है। पर कोई व्यक्ति आंखो देखी अवस्था नहीं बतला सकता। बादशाहके देहलीमें उपस्थित न होनेके समय यद्यपि

मुझे अनेक बार वहां जानेका अवसर प्राप्त हुआ है , और मुझे याद है कि एक बार बड़ी बेगमकी बीमारीके समय जो वहांकी रीतिके अनुसार बाहर नहीं लाई जासकती थीं बहुत दूरतक अन्दर जानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था , पर मेरे शिरपर एक लम्बी काश्मीरी शाल इस तरह डाल दी गयी थी कि एक लम्बी स्कार्फ (ओढनी) की भांति वह मेरे पैरोंतक लटकती थी और एक ख्वाजासरा मेरा हाथ इस तरह पकड़कर ले गया था जैसे कोई अन्धेको लिये जाता हो , इसलिये आपको उन्हीं वृत्तान्तोंसे सन्तुष्ट होना चाहिये जो मैंने कुछ ख्वाजसराओंके मुंहसे सुनकर लिखा है। उनका कथन है कि महलसरामें बेगमोंकी योग्यता और हैसियतके अनुसार अलग अलग बहुत सुन्दर और बड़े बड़े महल बने हुए हैं जिनके दरवाजों के सामने हौज, छोटे छोटे सुन्दर बाग और क्यारियां, नहरें, फौवारे छायादार छोटी छोटी आरामगाहें और दिनकी गरमीसे बचनेके लिये गहरे तहखाने और रातको ठण्डकमें आराम करनेके लिये ऊंचे ऊंचे चबूतरे और सहन बने हुए और ऐसे हैं कि इस देशकी कष्ट-प्रद उष्णता वहां पहुंच नहीं सकती । यह लोग एक छोटेसे बुर्जकी जो नदीकी ओर है बहुतही प्रशंसा करते हैं जिसमें आगरेके दोनों बुर्जोंकी भांति सोनेके वर्क चढ़े हुए मीनाकारीके काम और बहुत सुन्दर सुन्दर बड़े बड़े शीशे लगे हुए हैं।

दरबार और तख्त-ताऊस (मयूरासनका) बयान ।

किलेका बयान समाप्त करनेके पहले मैं कुछ बात और दरबार खास व आमकी अपेक्षा बतलाता हूं और उन वार्षिक जलसों और दरबारोंके सम्बन्धमें कुछ कहा चाहता हूं, विशेषत: उस बड़े दरबारके विषयमें जो मैंने लड़ाई समाप्त हो जानेके बाद देखा था, और जिस-

से बढ़कर मैंने कोई तमाशा अपनी सारी उमरमें नहीं देखा। उस दिन बादशाह दीवान आमखासमें एक जड़ाऊ तख्त पर बैठा था; उसके कपड़े बहुतही सुन्दर और फूलदार रेशमके बने हुए थे और उसपर बहुत अच्छा जरीका काम किया हुआ था; सिरपर एक जरीका मन्दील था, जिसपर बड़े बड़े बहुमूल्य हीरोंका तुर्रा लगा हुआ था; उसमें एक पुखराज ऐसा था जो बेजोड़ कहा जा सकता है: वह सूर्यके समान चमकता था। उसके गलेमे बड़े बड़े मोतियोंका एक कण्ठा था जो हिन्दुओंकी मालाकी तरह पेट तक लटकता था।

छः सोनेके पायोंपर यह तख्त बना है; कहते हैं कि यह बिलकुल ठोस हैं; इनमें याकूत और कई प्रकारके हीरे जड़े हुए हैं। मैं उनकी गिनती और मूल्यका निश्चय नहीं कर सकता, क्योंकि इसके निकट जानेकी किसीको आज्ञा नहीं है, इससे कोई उनकी गिनती आदि का पता नहीं लगा सकता पर विश्वास कीजिये कि उसमें हीरे और जवाहरात बहुत हैं। मुझे खूब याद है कि उसका मूल्य चार करोड़ रुपये आंका गया था। इस तख्तको औरंगजेबके पिता शाहजहांने इसलिये बनवाया था कि खजानेमें जो पुराने राजाओं और पठान बादशाहोंकी लूट और प्रत्येक अमीर उमराके समय समय पर नजर करनेसे जो जवाहरात इकट्ठे हुए थे, लोग उन्हें देखें। उसकी बनावट और कारीगरी उसके जवाहरोंके समान नहीं है। हां, दो मोर जो मोतियों और जवाहिरोंसे बिलकुल ढके हुए हैं इनको एक कारीगर ने—जिसका काम आश्चर्यकारक था और जो वास्तवमें फ्रान्स का निवासी था, और जो एक विचित्र प्रकारके नकली हीरे बना बना कर युरोपके रईसोंको ठगा करता था और जो वहांसे भागकर

मुगल सम्राटकी शरणमें आया था और यहां भी बहुत रुपये कमाये थे—बनाया था।

तख्तके नीचेकी चौकी पर जिसके चारों ओर चांदीका कठहरा लगा हुआ था और ऊपर जरीकी झालरका एक बड़ा चन्दुआ टंगा हुआ था उमरा बहुमूल्य वस्त्र पहने खड़े थे। वहांके खम्भे जरीके काम किये कपड़ोंसे मढ़े हुए थे, और रेशमी चन्दुए जिनमें रेशम और जरीके फुँदने लगे हुए थे, तने थे और बहुत बढ़िया रेशमी कालीन बिछे हुए थे। बाहर एक खेमा खड़ा था जिसे असपक (एक प्रकारका बड़ा खेमा) कहते हैं और जो इन मकानोंसे भी बड़ा था। वह सहनमें आधी दूरतक फैला हुआ था और चारो ओरसे चांदीकी पत्तियोंसे मढ़े हुए कटहरोंसे घिरा था। उसमें लकड़ीके तीन बड़े खम्भे थे, जो जहाजके मस्तूलके समान थे, और बाकी सब छोटे थे।

इस खेमेके बाहरकी ओर लाल रङ्गका कपड़ा लगा हुआ था, और भीतरकी ओर मछलीपटमकी सुन्दर छींट थी। यह छींट इसी कामके लिये बनाई गई थी; उसके बेल बूटे ऐसी उत्तमतासे बनाये गये थे और उनका रंग इतना तेज था कि वह बहुतही सुन्दर और प्राकृतिक मालूम होते थे। सब अमीरोंको आज्ञा दी गई थी कि वे आम व खासके चारों ओरकी महराबें अपने अपने खर्चसे सजाएँ, इसलिये बादशाहके विशेष कृपापात्र बननेके लिये सबोंने अपनी अपनी महराबोंके सजानेमें एक दूसरेसे बढ़ जानेका प्रयत्न किया, जिसका फल यह हुआ कि सारी दीवारें आदि कमखाब और जरीसे ढँक गई और जमीन बहुमूल्य सुन्दर कालीनोंसे भर गई।

इस जलसेके तीसरे दिन पहले बादशाह और उसके बाद बहुतसे अमीर उमरा बड़ी बड़ी तराजुओंमें जिनके पलडे और बट्टे सोनेके थे तौले गये। मुझे याद है कि औरंगजेबके तौलमें गतवर्षकी अपेक्षा एक सेर बढ़ जानेसे सारे दरबारने प्रसन्नता प्रकट की थी। इस प्रकारके जलसे हरसाल हुआ करते हैं पर ऐसा शान्दार जलसा कभी नहीं हुआ और न इतना कभी व्यय हुआ। कहा जाता है कि इस जलसेके इतनी धूमधामसे होनेका कारण यहथा कि बादशाहकी इच्छा थी कि लड़ाईके कारण वर्षोंतक जिन सौदागरोंका कमखाब आदि नहीं बिका था उनका माल बिक जाय। इस जलसेमें उमराका बहुत अधिक खर्च पड़ा और अन्तमें उसका एक भाग बेचारे फौजी सिपाहियोंके सिर थोपा गया; इन सिपाहियोंको नाचार होकर अपने अपने अमीरोंके आज्ञानुसार अपने कपने कपड़ोंके लिये कमखाब खरीदना पड़ा।

इन वार्षिक जलसोंपर एक पुरानी रसम है,जिसे अमीर लोग बहुत नापसन्द करते हैं। उनको ऐसे अवसरों पर कोई एक बहुमूल्य चीज नजर करनी पड़ती है जिसका मूल्य उनके वेतनके अनुसार कम या अधिक होता है। कुछ अमीर तो बहुतही अच्छी अच्छी चीजे पेश करते हैं। यह नजर कभी तो केवल दिखावेके लिये, कभी इसलिये कि बादशाह उनकी उन पिछली बुराइयोंको भूल जाय जो उन्होंने अपने सूबेदारीके समयमे की थी और उसके सम्बन्धमें कोई दण्ड न दे बैठे, और कभी उसकी प्रसन्नता प्राप्त करनेके लिये और इसी प्रकार अपना वेतन बढ़वा लेनेके लिये होती है। निदान बहुतसे लोग तो उमदः हीरे मोती और माणिक आदि नजर करते हैं और कुछ सोनेके जडाऊ बर्तन आदि और अशरफियां जिनका मूल्य १२)

होता है नजर करते हैं। ऐसेही जशनके अवसर पर जब बादशाह जाफरखांकी एक नवीन हवेली देखनेके बहानेसे गया, जो न केवल राजमन्त्री ही था बल्कि बादशाहका सम्बन्धी भी था, तो उसने ढाई लाख रुपयेकी अशरफियां, कुछ अच्छे मोती और एक लाल जिसका मूल्य एक लाख रुपये कहा जाता है नजर किया था। पर शाहजहांने जो जवाहरातके परखनेमें बहुत निपुण था उसका मूल्य केवल साढ़े बारहसौ रुपयेसे भी कम बतलाया जिसे सुनकर बड़े बड़े जौहरी जिन्होने उसके परखनेमे धोखा खाया था चकित होगये।

मीना बाजार—कभी कभी इन अवसरों पर महलसरामें एक कृत्रिम बाजार लगा करता है। बाजारमें बड़े बड़े अमीरों और मन्सबदारोंकी सुन्दर स्त्रियां दूकानें लगाकर बैठतीं और कमखाब और अच्छी अच्छी जरदोजीके कामकी चीजें, जरीकी मन्दीलें, सफेद बारीक कपड़े जो अमीरजादियोंके व्यवहारमें आते हैं तथा और और बहुमूल्य चीजें बिक्रीके लिये रखती हैं। बादशाह उसकी बेगमें और शाहजादियां आदि वहां माल खरीदने जाती हैं। यदि किसी अमीरकी बेटी रूपवती और नवयौवना होती है तो उसकी मां उसे अवश्य अपने साथ इस बाजारमें लेजाती है, जिसमें बादशाहकी दृष्टि उसपर पड़जाय और बेगमोंसे भी परिचय होजाय। बड़ा मजा तो यह है कि हंसी दिल्लगीके लिये स्वयं बादशाह एक एक पैसेपर झगड़ता है और कहता है कि यह बेगम साहब बहुत महँगी चीजें बेचती हैं इससे सस्ती और अच्छी चीज आगे मिलेंगी, हम इससे अधिक एक कौड़ी न देंगे, आदि आदि। इधर यह चेष्टा करती हैं कि हमारी चीजें अधिक मूल्यपर बिकें और बादशाह अधिक नहीं देता, तब बात बातमें कह बैठती है कि मालूम होता है कि आप

सौदा ही नहीं लेना है, आपके पास इतना मूल्यही नहीं है, हमारा माल आपके लिये बहुत महँगा है, आपको जहां सस्ता मिले वहीं चले जाइये। बादशाहकी अपेक्षा बेगमें और भी अधिक झगड़ा करती हैं। इनकी बातोंमें इतना अधिक गरमा गरमी होती है कि वह एक अच्छा खासा झगड़ा मालूम होता है। इतना हो चुकने पर वह माल खरीद लिया जाता है। बादशाह, बेगम, शाहजादे और शाहजादियां जो चीजें खरीदती हैं उनका मूल्य उसी समय दे दिया जाता है। मूल्य देनेमें रुपयोंके साथ साथ अशरफियां भी गिन देते हैं। यह अशरफियां मानों अनजान होकर दी जाती हैं। उस दूकानदार या उसकी सुन्दर कन्याकी नजर होती हैं। दूकानदारिनें भी उन्हें यों ही बेपरवाहीसे उठा लेती हैं। और इसी प्रकार हँसी खुशीसे बाजार समाप्त होता है।

शाहजहां बहुत बिलासी था। यद्यपि बहुतसे अमीरोंको यह बात खटकती, पर फिर भी वह प्रायः ऐसे ऐसे अवसरों पर यही स्वांग कराया करता। इसके अतिरिक्त वह रातके समय महलमें उन स्त्रियोंको भी बुला लेता और उन्हें रातभर वहीं रखता जिन्हें 'कञ्चनी' कहते हैं। ये स्त्रियां बाजारू नहीं होती थीं, बल्कि अच्छी प्रतिष्ठित होती थीं और अमीरों या मन्सबदारोंके यहां विवाह आदिके अवसर पर केवल नाचने गाने जाती थीं। यह कञ्चनियां बहुधा बहुतही सुन्दर और रूपवती होती हैं और इनके वस्त्र भी अच्छे और बहुमूल्य होते हैं। यह बहुत ही अच्छी गानेवाली होती हैं; और नाचने में अपने अंगोंको इस सुन्दरतासे लचकाती हैं कि देखकर आश्चर्य होता है। ये कञ्चनियां ताल और स्वरमें भी ठीक होती हैं, पर फिर भी कस्बियां ही होती हैं।

इन औरतोंके इस मेलेमें आनेहीसे शाहजहांका सन्तोष नहीं होता था, बल्कि बुधवारके दिन जब वह नियमानुसार सलाम करनेके लिये दरबारमें हाजिर होती तो वह प्रायः रात भरके लिये वहीं ठहरा लिया करता और रात भर नाच गाना हुआ करता। पर औरंगजेब अपने पिताकासा विलास-प्रिय नहीं है; उसने इनका आना जाना एकदम रोक दिया है। पर हां, नियमानुसार बुधवार के दिन सलाम करनेके वास्ते हाजिर होनेसे मना नहीं किया; इस दिन वह दूरहीसे सलाम करके चली जाती हैं।

इस समय जब कि मैं मीना बाजार और कञ्चनियोंका जिक्र कर रहा हूं एक घटनाका वर्णन भी आवश्यक समझता हूं जो बर्नेड नामक एक फ्रान्सीसीसे सम्बन्ध रखता है। मेरी समझमें प्लुटार्क का यह कथन बहुत ही ठीक है—'साधारण और छोटी छोटी बातों को छिपा रखना भी उचित नहीं है; क्योंकि प्रायः उनसे किसी जाति या समाजकी रीति नीति आदिके सम्बन्धमें उचित मत देने में बड़ी बड़ी बातोंकी अपेक्षा अधिक सहायता मिलती है।' इस-लिये यद्यपि यह हँसीकी बात है पर फिर भी सुनने योग्य है।

जहांगीरके अन्तिम समयमें बर्नेड नामक एक प्रसिद्ध और योग्य डाक्टर था। उसपर बादशाहकी बहुत अधिक कृपा थी। प्रायः वह बादशाहके भोजमें योग दिया करता था, और दोनों बहुत अधिक मदिरा पी लेते थे। बादशाह और डाक्टर दोनोंका स्वभाव भी एकहीसा था। बादशाह दिन रात भोग विलासमें लिप्त रहता था, और राज्यका कुल कार बार अपनी प्रसिद्ध बेगम नूरजहांको सौंप दिया था। वह कहा करता था राजकार्य्य चलानेके लिये उस-की बुद्धि और योग्यता बहुत अधिक है, उसमें मेरे हाथ लगेकाई

कोई आवश्यकता नहीं । ' बर्नईका वेतन साधारणतः पच्चीस रुपये रोज था, पर बादशाहके महलसरामें और दूसरे अमीरोंके यहां जानेके कारण, और न केवल इसलिये कि वह डाक्टर था बल्कि बादशाहका कृपापात्र होनेके कारण लोग उसकी बहुत खातिर किया करते थे, उसे बहुत कुछ मिल रहता । पर वह धनकी कुछ परवा न करता और एक ओरसे लेतेही दूसरी ओर किसीको दे देता ; इससे वह सब लोगोंका प्रिय हो गया था ; विशेषतः कञ्चनियोंका जिन्हें उसने बहुत कुछ दिया था । रात भर उसके मकान पर कञ्चनियोंका जमघट लगा रहता । एक बार यह उनमेंसे एक युवती पर जो बहुतही सुन्दर और नाचने गानेमें प्रसिद्ध थी आसक्त हो गया । इसने उसके लिये अनेक चेष्टाएँ कीं, पर उसकी मां उसे एक पलके लिये भी अपनी आंखोंसे ओट न होने देती; क्योंकि वह समझती थी कि अवस्थाके कम होनेके कारण कहीं उनके रूप या स्वास्थ्यकी कुछ हानि न हो । इसलिये बर्नई अपनी प्रेमिकासे वाञ्चित रहा । एक दिन दरबारमें जहांगीरने उसे एक उत्तम चिकित्सा करने पर कुछ इनाम देना चाहा । उसने प्रार्थना की कि मैं चाहता हूं कि हुजूर मुझे इस इनामसे माफ रखें और उसके बदले मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करें कि यह कञ्चनी जो दरबारमें इस समय सलामके लिये हाजिर हुई है मुझे मिल जाय । सब दरबार जिसे उसके ईसाई और कञ्चनीके मुसलमान होनेके कारण इस प्रार्थनाके स्वीकार होनेमें सन्देह था उसकी बात सुनकर मुसकरा दिया । पर जहांगीर जिसे धर्म्मकी कुछ परवा न थी, इसपर जोरसे हँस पड़ा और उसने आज्ञा दी कि इस कञ्चनीको अभी इसके कन्धे पर बैठा दो और यह उसे लेजाय । उसी समय भरे दरबारमें

वह कञ्चनी उसके कन्धे पर बैठा दी गई और वह बड़ी प्रसन्नतासे उसे लेकर घर चला गया।

हाथियोंकी लड़ाई । जशनकी समाप्ति एक ऐसे तमाशे पर होती है जिससे युरोपवाले बिलकुल ही अनभिज्ञ है। यह तमाशा हाथियो की लड़ाई है जो सर्वसाधारणके सामने यमुनाकी रेत मे होती है। बादशाह, बेगमे और अमीर उमरा यह तमाशा किलेके झरोखेमसे देखते है। तीन या चार फीट चौड़ी और पांच या छः फीट ऊंची एक कच्ची दीवार बनाई जाती है; और उसके दो ओर से दो बड़े बड़े हाथी जिनपर दो दो आदमी सवार होते हैं, एक दूसरेके सामने किये जाते हैं। हाथी पर दो आदमी इसलिये सवार होते है कि यदि एक आदमी उसकी गरदन परसे गिर पड़े तो दूसरा उसी समय उसके स्थान पर आ जाय और अंकुससे उसे चलादे। कभी ये लोग हाथीको बढावा देकर, कभी भला बुरा कहकर और कभी पाँवोंसे मारकर आगे बढ़ाते है। अन्तमे यह बेचारे उस दीवार के निकट पहुंचकर एक ऐसी टक्कर लगाते है कि देखकर भय मालूम होता है। सिर, सूंड और दांतोकी चोट लगनेके कारण उनके जीवित रहनेमे भी आश्चर्य मालूम होता है। लड़ाई रह रहकर होता है, जिससे अन्तमे वह दीवार गिर जाती है और बलिष्ठ हाथी दीवारको फाँदकर एक दूसरेका पीछा करता और उसे भगा देता है। और जबतक उनके बीचमे आतिशबाजीकी आवाज नहीं छोड़ी जाती तबतक उसका पीछा वह नही छोड़ता; क्योंकि यह प्रकृति हीसे डरपोक है और विशेषकर आगसे बहुत डरता है। यही कारण है जबसे आगके अस्त्रोंका व्यवहार लड़ाईमे होने लगा तबसे युद्धमे हाथियोंका कुछ उपयोग नही होता। मरन्दीपके हाथी प्रायः

सबसे अधिक साहसी होते हैं पर फिर भी चाहे कहींके हों, युद्ध-क्षेत्रमें ले जानेके पहले बरसोंतक उनका भय मिटानेके लिये उनके कानोंके पास बन्दूकें और पैरोंके पास पटाखे छोड़े जाते हैं। इनकी लड़ाईका अन्तिम भाग बड़ा ही करुणाजनक होता है। प्रायः एक हाथी अपनी सूंड़से दूसरे हाथीके महावतको पकड़कर नीचे उतार लेता और पांवोंसे कुचल डालता है। महावत जिस समय लड़ाईमें जानेके लिये अपने जोरू-बच्चोंसे इस प्रकार विदा होता है मानों मौतके मुंहमें जा रहा हो। पर एक बातसे उसे सन्तोष भी रहता है—कि बचा तो न केवल उसकी तनख्वाह ही बढ़ेगी बल्कि बादशाहकी कृपादृष्टि भी उसपर होगी और पच्चीस रुपयोंके पैसेकी एक थैली भी हाथीसे उतरतेही उसे मिल जायगी और यदि मर गया तो उसका वेतन उसकी स्त्रीको मिलता रहेगा और उसका लड़का उसके स्थानमें नौकर हो जायगा। इस लड़ाईमें केवल महावतों हीकी जान नहीं जाती बल्कि इन क्रोधी जानवरोंके सामनेसे भागनेके समय पैदल और सवार इतना दौड़ते हैं कि कभी कभी लोग आदमियों या स्वयं हाथीके पैरों तले कुचलकर मर जाते हैं। दूसरी बार जब मैं तमाशा देखने गया था तब अपने घोड़ों और दो नौकरों हीके कारण कठिनतासे बच सका था।

जुम्मा मसजिद—किलेका वर्णन छोड़कर अब मैं फिर शहरकी ओर फिरता हूं जिसकी दो इमारतोंका हाल अभीतक लिखना बाकी है। उनमेंसे एक तो बड़ी मस्जिद है जो शहरके बीचमें एक ऊंची पहाड़ी पर बनी होनेके कारण दूरसे दिखाई देती है। इसके बनानेसे पहले पहाड़ीकी जमीन बिलकुल साफ और चौरस खोदी गई थी और चारों ओर मैदान कर दिया गया था जहां मस्जिदके

चारों ओरसे चार बाजार आकर मिलते हैं। उनमेंसे एक तो सदर दरवाजेके सामने है और दूसरा पीछेको और और बाकी दो दोनों ओरके दरवाजोंके पास। अन्दर जानेके लिये तीनों ओर पत्थरकी २५—२५ सुन्दर सीढ़ियां बनी हुई हैं, और पीछेकी ओर साफ कर के पहाड़ीकी ऊंचाई तक पत्थर लगा दिये गये हैं जिनसे वह इमारत और भी सुन्दर हो गई है। इसके तीनों दरवाजे बहुत सुन्दर लाल पत्थरके बने हुए हैं, और उनके किवाड़ों पर तांबे या पीतलकी पत्तियां जड़ी हुई हैं। सुन्दर दरवाजा, जिसपर संगरमरमरकी छोटी छोटी बुर्जियां बनी हुई हैं, बहुत ही खूबसूरत है। मस्जिदके पिछले भागमें तीन बड़े २ गुंबद हैं जो संगमरमरके बने हुए हैं। बीचवाला गुंबद कुछ अधिक बड़ा और ऊंचा है। मस्जिदके केवल इसी भागके ऊपर छत बनी हुई है और इसके आगे सदर दरवाजे तक बिलकुल खुला हुआ है, जो गर्मियोंके कारण खुला रखना आवश्यक है। मस्जिदके अन्दर संगमरमर और बाहर लाल पत्थरकी सिलें जमीनमें जड़ी हुई हैं।

यद्यपि यह बात ठीक है कि यह इमारत उस ढंगसे नहीं बनाई गई है जैसी हम लोग बनाते हैं तथापि उसमें किसी प्रकारका दोष भी नहीं है। उसके भाग बहुत उचित रीतिसे किये गये हैं और उसकी बनावटसे भी मुझे पूर्ण आशा है कि यदि इसी ढंगका कोई गिरजा पेरिसमें बनवाया जाय तो वह विचित्र पर सुन्दर होनेके कारण सब लोगोंके पसन्द आ जाय। तीनों गुंबदों और छोटी बुर्जियोंके अतिरिक्त जो संगमरमरकी बनी हैं बाकी सारी मस्जिद लाल पत्थरकी बनी हुई है। यह लाल पत्थर संगमरमरकी अपेक्षा अधिक नरम होता है और समय पाकर उसमेंसे पत्थर छूटने लगते

है। भारतवासियोंका कथन है कि जिस खानिसे यह पत्थर निकलता है, कुछ दिनों बाद उसीमें वह आपसे आप और पैदा होता है। यदि यह बात वास्तवमें ठीक हो तो बहुत ही विचित्र है। इस खानिमें हरसाल पानी भर जाता है; पर इसके सम्बन्धमें मैं कोई निश्चय राय नहीं दे सकता।

प्रत्येक शुक्रवारको जो मुसलमानोंमें हमारे देशके रविवारकी तरह पवित्र समझा जाता है, बादशाह इस मस्जिदमें नमाज पढ़ने आता है। जिस रास्तेसे वह आता है गरमी और धूलसे बचावके लिये पहले उसपर छिड़काव कर देते हैं। किलेके दरवाजेसे मस्जिद तक सड़कके दोनों ओर तीन या चार सौ सिपाही पंक्तिबद्ध खड़े हो जाते हैं; जो हाथोंमें छोटी छोटी सुन्दर बन्दूकें लिये रहते हैं, जिनपर लाल रंगकी बनातकी खोल चढ़ी रहती है। पांच छः अच्छे सवार किलेके फाटकपर इसलिये उपस्थित रहते हैं कि बादशाहकी सवारीके लिये आगेसे रास्ता साफ रखें और लोगोंको हटाते रहें। ये सिपाही बादशाहकी सवारीसे इतने आगे रहते हैंकि जिससे बादशाहको उनके घोड़ोंकी गर्दसे कष्ट न पहुंचे। इतनी तय्यारियां हो चुकने पर बादशाहकी सवारी निकलती है। कभी तो बादशाह हाथी पर सवार होकर निकलता है जो बहुत सजा होता है और जिसपर सुनहरी बेल बूटोंका काम किया हुआ हौदा कसा रहता है और कभी सुनहरी या आसमानी पालकीपर सवार होता है जो कमखाब या मखमलसे मढ़े हुए डण्डोंसे बँधी होती है और जिसे आठ चुने हुए तथा भारी वर्दीवाले कहार अपने कन्धों पर उठाये रहते हैं। इसके पीछे बहुतसे अमीर होते हैं, जिनमेंसे कोई घोड़ों पर और कोई पालकियों पर सवार होते हैं। इन्हींके साथ साथ

मन्सबदार और चाँदीकी छड़ियां लिये हुए चोबदार आदि होते हैं। मैं इस सवारीकी समता रूमके सुलतानकी शानदार सवारीसे या युरोपियन बादशाहोंके जुलूसोंसे नहीं कर सकता क्योंकि इसकी शान और ठाठ कुछ औरही है पर हां फिर भी कुछ राजसी नहीं है।

यहांकी दूसरी वर्णन करने योग्य इमारत बेगम सराय या कार-वाँसराय है जो शाहजहांकी बड़ी बेटी—बेगम साहबने—गत लड़ाई के समय जिसके सम्बन्धमें मैं पहले भी लिख आया हूं—बनवाई थी; और न केवल इसी शाहजादीने बल्कि और भी अनेक अमीरोंने वृद्ध बादशाहकी प्रसन्नताके लिये शहरकी रौनक बढ़नेमें बहुत रुपये व्यय किये हैं। पैलेस रायलकी तरह यह भी एक बड़ी महराबदार चौकोर इमारत है। इसमें लगातार कोठड़ियां बनी हुई हैं और उनके आगे अलग अलग बरान्दे हैं। यह इमारत दो खण्डों की है; और नीचेके खण्डकी तरह ऊपरके खण्डमें भी अलग अलग कोठड़ियां और बरान्दे हैं। ईरानी तथा और विदेशी अमीर व्यापारी इसे सुरक्षित समझकर यहीं आकर ठहरते हैं। रातके समय फाटक बन्द कर दिया जाता है। क्या अच्छा होता यदि पैरिसमें भी दसबीस ऐसीही सराएँ होतीं ताकि विदेशियोंको पहुंचकर एक रक्षित और अच्छा मकान ढूँढ़नेमें इतना कष्ट न उठाना पड़ता जितना अब उठाना पड़ता है और जबतक अपने मित्रोंसे मिलकर रहनेका कोई उचित प्रबन्ध न कर लेते तबतक वहीं ठहरते और इसके अतिरिक्त वह सब प्रकारके विदेशी व्यापारियोंके ठहरने और भांति भांतिकी चीजोंके बिकने स्थान होते।

बस्ती—मैं समझता हूं कि आप मुझसे अवश्य यह प्रश्न करेंगे कि यहांकी जनसंख्या कितनी है और पैरिसकी अपेक्षा यहांके

धनिक कितने और कैसे हैं। इसलिये देहलीका हाल समाप्त करने के बदले मैं इसका वर्णन करना आवश्यक समझता हूं। पेरिसके सारे मकान तीन या चार खण्डके हैं, जो सबके सब प्रायः आदमियोंसे भरे रहते हैं, इससे वह शहर तीन या चार शहरोंके बराबर मालूम होता है और सड़को और गलियोंमें स्त्रियों, पुरुषों, बच्चों, पैदल और सवारोंके भरे होने तथा चौकों, बागो या बड़े बड़े मैदानोंके कम होनेके कारण वह शहर (पेरिस) मुझे मनुष्योंका वन मालूम होता है और इसलिये मैं नहीं कह सकता कि जितने आदमी पेरिस में हैं उतनेही यहां भी हैं। पर जब भारतकी लम्बाई चौड़ाई, असंख्य दूकानों तथा इस बातका ध्यान करता हूं कि अमीरोंके अतिरिक्त पैंतीस हजार सवारसे कम यहां कभी नहीं रहते और सबके सब गृहस्थ और बालबच्चेवाले हैं और सबके पास बहुतसे नौकर चाकर हैं जो अपने मालिकोंकी तरह अलग अलग मकानोंमें रहते हैं और कोई ऐसा घर नहीं है जिसमें स्त्रियां और बच्चे न हों, और सन्ध्याके समय जब गर्मी जरा कम हो जाती है और लोग बाहर निकलते हैं तो तमाम सड़कें और गलियां बड़ी होनेपर भी भरी हुई होती हैं और गाड़ियां (जिनसे अधिक स्थान रुकता है) बहुत कम दिखाई देती हैं, तब मैं नहीं कह सकता कि देहली और पैरिसकी जन संख्यामें क्या समानता है। पर फिर भी मेरी समझमें यदि देहलीमें पेरिससे अधिक आदमी नहीं है तो कुछ कम भी नहीं हैं। हां, यदि धनिकों और अमीरोंकी ओर ध्यान दिया जाय तो पेरिस और देहलीमें बहुत कुछ भेद मालूम होता है। क्योंकि पेरिसमें दसमें सात या आठ आदमी अच्छे वस्त्र पहने और सुसम्पन्न दिखाई देते हैं पर देहलीमें केवल दो या तीन आदमी ऐसे दिखाई

देते है और बाकी गरीब और फटे पुराने कपड़े पहने होते है जो केवल फौजके कारण यहां आते है। इतने पर भी मै कह सकता हूं कि मुझे प्राय: ऐसे लोगोंसे भेंट करनेका अवसर मिला है जो अच्छे और बढ़िया कपड़े पहने होते है और उनकी सवारीमें अच्छे घोड़े होते हैं और उनके साथ नौकर चाकर और नफर होते हैं।

अमीरोंकी सवारी-जिस समय अमीर राजे और मन्सबदार चौकी देने या दरबारमें हाजिर होनेके लिये आते हैं उस समय किलेके सामनेवाले चौककी शोभा अपूर्व हो जाती है। चारों ओर से मन्सबदार बहुत अच्छे कसे कसाये घोड़ोंपर सवार और चार खिद्मतगार जिनकी वर्दी अच्छी होती है साथ लिये हुए जिनमेंसे दो पीछे और दो भीड़ हटानेके लिये आगे रहते हैं, आते हैं। बड़े बड़े अमीर और राजे हाथियों पर, कुछ लोग मन्सबदारोंकी तरह घोड़ों पर और बहुतसे लोग अच्छी अच्छी पालकियों पर आते हैं; जिन्हें छ: छ: कहार अपने कन्धों पर उठाये होते हैं और जिनके पीछे सुनहरे और जरीके तकिये लगे रहते हैं, वे होठोंको लाल और मुँहको सुगन्धित रखनेके लिये पान खाते हैं; पालकीके एक ओर एक नौकर चाँदी या चीनीका उगालदान लेकर चलता है और दूसरी ओर दो नौकर मक्खियों और धूलसे बचानेके लिये मोरछल झलते रहते हैं, तीन या चार प्यादे आगे आगे लोगोंको हटाते हुए चलते हैं और उनके पीछे थोड़ेसे सवार—जो बहुतही बहादुर और चुने हुए होते है—चलते है। जिस समय ये लोग इस प्रकार आते हैं तो पेरिसकी तरह वहां भी खूब भीड़ भाड़ हो जाती है और वह दृश्य बहुतही सुहावना मालूम होता है।

देहलीके आस पासकी भूमि बहुतही उपजाऊ है ; इसमें चावल गेहूं, ऊख, नील, मूंग, और जौ आदि जो वहांके लोगोंका प्रधान भोजन है, अधिकतासे उत्पन्न होते हैं। आगरेकी ओर जो सड़क गई है उसपर, देहली प्रायः छः मीलपर, एक स्थान है जिसे मुसलमान ख्वाजा कुतुबउद्दीन कहते हैं; यहां एक बहुत पुरानी इमारत है जो कदाचित् पहले मन्दिर था—जिसपर कुछ लेख खुदा है जो बहुत प्राचीन मालूम होता है; इसकी लिपि किसीसे पढ़ी नहीं जाती और उसकी भाषा भारतकी सब प्रचलित भाषाओं से भिन्न है।

नगरकी दूसरी ओर प्रायः सात आठ मील दूर एक बहुतही सुन्दर इमारत वा महल है पर फिर भी वह 'फौण्टेन ब्ल्यू' 'सेण्ट जर्मन' वा 'वर्सेल' के समान नहीं है। और न आप यह समझें कि देहलीके आस पास 'सेण्ट क्लो' 'चौण्टली' 'म्योडनन्स' 'लिकर्स बो' वा 'रुवेल' के समान और कोई इमारतें हैं। यहां आप को वैसे छोटे छोटे बाग आदि भी न मिलेंगे जो हमारे यहांके साधारण निवासी या व्यापारी बनवाया करते हैं। इन सबका कारण यहांकी एक रीति है जिसके अनुसार प्रजाको जमीन पर किसी प्रकारका हक नहीं है।

देहलीसे आगरे तक जो डेढ़ या पौने दो सौ मील लम्बी सड़क चली गई है उसपर फ्रान्सकी तरह आपको कोई अच्छी बस्ती न मिलेगी। हां, केवल मथुरा एक पुराना नगर है जिसमें, एक बड़ा और प्राचीन मन्दिर अबतक वर्त्तमान है और इसके अतिरिक्त कुछ कारवां सराएं हैं जो रातके वक्त यात्रियोंके ठहरनेके लिये बनी हैं। इस सड़कके दोनों ओर जहांगीरकी आज्ञासे बड़े बड़े पेड़ लगाये

गये हैं और योंही यह सड़क प्रायः पांच सौ मीलतक चली गई है। रास्ता दिखानेके लिये एक एक मीलकी दूरी पर छोटी छोटी बुर्जियां और आदमियोंके पानी पीने तथा खेतोंको सींचनेके लिये पक्के कूएँ बने हैं।

आगरा। देहलीका पूरा पूरा हाल जान लेने पर आगरेके सम्बन्धमें भी आप कुछ न कुछ अवश्य अनुमान कर सकेंगे। यह शहर भी जमुनाके किनारे बसा हुआ है, और किले तथा बादशाही महलों और इमारतोंके कारण देहलीसे इसकी बहुतसे अंशोंमें समानता है। बहुतसी बातोंमें यह देहलीसे बढ़ा चढ़ा भी है। अकबरके समयसे—जिसने इसे बसाया था और जिसके कारण इसका नाम अकबराबाद हुआ—अबतक यह नगर सारे बादशाहोंका निवास-स्थान था, देहलीकी अपेक्षा यह बहुत बड़ा है, राजाओं और अमीरोंके बड़े बड़े मकान अच्छी अच्छी सराएँ और सर्वसाधारणके बनवाये हुए बड़े, सुन्दर तथा पक्के मकान भी यहां अधिक हैं। इसके सिवा यहां दो प्रसिद्ध मक़बरे हैं जिनका वर्णन मैं आगे चलकर करूंगा। कुछ बातोंमें यह देहलीसे घटा हुआ भी है।—इसके चारों ओर शहरपनाह नहीं है और न इसमें देहलीकी सी साफ, लम्बी, चौड़ी, खूबसूरत सड़केंही हैं। चार या पांच बाजारोंको छोड़कर जिनमें व्यापारीही अधिकतासे रहते हैं, बाकी सब छोटी छोटी गलियों और मोड़ोंके सिवा और कुछ नहीं है और जिनमें बादशाहके यहां उपस्थित रहनेके समय खूबही धक्कम धक्का रहती है। इन सब बातोंके सिवा, जिनका वर्णन मैंने अभी किया है, मैं देहली और आगरेमें एक भेद और पाता हूं; वह यह कि यदि किसी ऊँचे स्थान पर चढ़कर देखा जाय तो आगरा

देहलीकी अपेक्षा अधिक देहाती शहर मालूम होता है लेकिन उसका यह देहातीपन भद्दा नहीं बल्कि बहुतही सुहावना मालूम होता है: क्योंकि अमीर, राजे तथा और और लोग अपने बागो और मकानो के आंगनोमें सायेके लिये बड़े बड़े वृक्ष लगवाते हैं। इनके बागो और मकानोंके बीचमें बनियोंकी बड़ी बड़ी हवेलियां जंगलोंकी पुरानी गढ़ियोंके समान दिखाई देती हैं। इन सब मकानोंके कारण नगरका दृश्य बहुतही भला मालूम होता है और विशेषकर एक ऐसे गर्म देशमें जहांके निवासियोंकी आँखे सदा हरियाली और छांहकी ओरही लगी रहती हैं।

पर फिर भी संसारका सबसे सुन्दर और सबसे सुहावना दृश्य देखनेके लिये आपको पेरिससे बाहर नहीं जाना पड़ेगा। किसी रोज पौण्टानिआफ पर दिनके समय चले जाइये, और अपने चारों ओर नजर दौड़ाकर वहांकी भीड़भाड़ और जमघटको देखिये।रातके समय चारों ओरके ऊंचे ऊंचे मकानोंकी खिड़कियोंसे बाहर आने-वाली रोशनीको देखिये:ऐसे समयमे भी आपको आधीराततक वही भीड़ भाड़ और रौनक दिखाई देगी।प्रतिष्ठित पुरुष और स्त्रियां चोर उचक्कोंके किसी प्रकारके भयके बिना (पर यह बात आप एशिया के किसी भागमें न पावेंगे) या कीचड़ और गर्दसे कष्ट पाये बगैर चलती फिरती तथा जहांतक दृष्टि काम देती है चारो ओर जलती हुई लालटेनोंकी पंक्तियां दिखाई देंगी। बस, एक बार योंही घूम फिरकर आप यह दृश्य देख लीजिये, और फिर आप मेरी बातपर विश्वास रखकर दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि सारे संसारमें इससे सुन्दर मनुष्यका बनवाया कोई दृश्य हैही नहीं। पर चीन और जापानके सम्बन्धमें जिन्हें मैंने अबतक नही देखा मैं कुछ नहीं कह सकता।

और उस समय उसकी शोभा सुन्दरता एवं छटा कितनी अधिक हो जायगी जब लूवरकी इमारत जिसके सम्बन्धमें लोग शंका करते थे कि वह कभी बनेगीही नहीं, और उसका नकशा केवल कागजही पर दिखाई देगा—बनकर तैयार हो जायगी। ऊपर 'मनुष्यका बनाया हुआ' मैंने इसलिये कहा कि संसारके सबसे अच्छे दृश्योंका वर्णन करते समय हमको कुस्तुनतुनियांका वह दृश्य छोड़ देना होगा जो महलके ठीक नीचे उस बड़ी खाड़ीमें एक छोटी किश्ती पर बैठनेसे दिखाई देता है; क्योंकि उसे देखतेही आप आश्चर्य-सागरमें गोते खाने लगेंगे और आप अपनेको जादूके बन एम्फी थियेटरमें बैठा पावेंगे। कुस्तुनतुनियांमें प्राकृतिक दृश्य अपूर्व है और पेरिसमें मनुष्यके हाथका बनाया हुआ; और इसी लिये वह और भी अधिक सुन्दर मलूम होता है। पेरिसकी शोभा देखनेसे विदित होता है कि वह किसी बड़े बादशाहका निवासस्थान है और किसी बड़े राज्यकी राजधानी है। देहली, आगरा और कुस्तुनतुनियांकी शोभाका ध्यान रखते हुए और सबका मुकाबला करते हुए मैं बिना किसी प्रकारका पक्षपात किये कह सकता हूं कि पेरिस सबसे अधिक सुन्दर और अमीर तथा सारे संसारमें मुख्य नगर है।

मोगल राज्यमें पादरी—आगरेमें जेस्विट वर्गके पादरियोंका एक गिरजा और एक कालेज बना है, जहां वे २५ या ३० ईसाई घरानोंके लड़कोंको धार्मिक शिक्षा देते हैं। मैं नहीं कह सकता कि ये ईसाई यहां क्योंकर आये, पर जहांतक मैं समझता हूं जेस्विट लोगोंकी कृपाके कारणही ये यहां रहते हैं। जिस समय भारतमें पुर्तगीजोंका बहुत जोर था उस समय अकबरने उन्हें यहां बुला

लिया था। वह उनके भरण पोषणके लिये राज्यसे कुछ रुपये देता था और प्रधान नगरों, आगरा और लाहोरमें गिर्जे बनानेकी आज्ञा भी उन्हें दे दी गई थी। इसके पुत्र जहांगीरने उनपर और भी अधिक कृपा की। पर जहांगीरके पुत्र और औरंगजेबके पिता शाहजहांने उन्हें सहायतार्थ धन देना बन्द कर दिया, लाहोरका गिरजा तोड़वा डाला और आगरेके गिरजेका वह बड़ा भाग भी गिरवा दिया जिसपर बड़ा घण्टा बना हुआ था और जिसकी आवाज सारे शहरमें सुनाई देती थी। जहांगीर बादशाहके समयमें जेस्विट बर्गके पादरियोंको अपने धर्मके अच्छी तरह प्रचार होनेकी बहुत कुछ आशा थी; क्योंकि वह मुसलमानी धर्मकी कुछ परवा न करता और और ईसाई धर्म पर अपना अनुराग प्रगट करता था। यहांतक कि उसने एक बार अपने दो भाञ्जों या भतीजों और एक व्यक्ति मिरजा जुलकर्नैमको खुल्लमखुल्ला हो जानेकी आज्ञा दे दी थी। मिरजा एक धनिक आर्मोनियमकी स्त्रीका पुत्र था जिसे बादशाहने अपने महलमें रख लिया था। मिरजाको ईसाई करनेके लिये उसने यह बहाना किया था कि उसका जन्म ईसाइयोंके घर हुआ।

यही पादरी कहते हैं कि बादशाहकी ईसाई हो जानेकी इतनी प्रबल इच्छा हो गई थी कि उसने सारे दरबारको फिरंगियोंकेसे कपड़े पहननेकी आज्ञा दे दी। यह सब कह चुकने पर उसने स्वयं वैसे कपड़े पहन लिये और एक अमीरको बुलाकर उन कपड़ोंके विषयमें उसकी सम्मति मांगी; पर उसने ऐसा कड़ा उत्तर दिया कि जहांगीर डर गया और विवश होकर उसने अपना वह विचार बदल दिया और उस बातको दिल्लगीमें उड़ा दिया।

ये पादरी यह भी कहते हैं कि जहांगीरने मरनेके समय ईसाई होनेकी इच्छा प्रकट की थी और इसके लिये उसने पादरियोंको बुलानेकी आज्ञा भी दी थी पर ये समाचार हम लोगोंतक न पहुँचाये गये। बहुतसे लोग उनकी इस बातका विरोध करते हैं और कहते है कि जहांगीर मरनेके समय भी वैसाही नास्तिक और अधर्मी था जैसा अपने जीवनकालमें; उसकी भी इच्छा थी कि अकबरकी तरह अपनेको पैगम्बर प्रसिद्ध करे और स्वयं एक नवीन स्वतन्त्र धर्मकी नीव डाले। मैंने एक मुसलमानसे जिसका पिता जहांगीरका नौकर था यह भी सुना है कि एक दिन नावरङ्गके समय जहांगीरने फ्लोरेन्सके एक पादरीको बुलाया जिसका नाम उसने (उसके स्वभावानुकूल) 'पादरी आतिश' रखा था। बादशाहके आज्ञानुसार जब वह बड़े बड़े मुसलमान मुल्लाओंके सामने उनके धर्मकी पूर्ण रूपसे निन्दा और अपने धर्मकी प्रशंसा कर चुका तो बादशाहने कहा कि दोनों धर्मोंके झगड़ेका फैसला करनेका यह बहुत अच्छा अवसर है और आज्ञा दी कि एक गढ़ा खोदकर उसमें आग जलाई जाय और पादरी आतिश अपने हाथमें इञ्जील लेकर और मुल्ला कुरान लेकर उसमे कूद पड़े, उनमेंसे जो व्यक्ति बिना जले बाहर निकल आवेगा उसीका धर्म स्वीकार किया जायगा। पादरी आतिशने इस बातको स्वीकार कर लिया पर मुल्ला डर गये और बादशाहने इस परीक्षाका न होना ही उत्तम समझा।

चाहे इन कहानियोंमे कुछ सत्यता हो या न हो पर इसमें सन्देह नहीं कि जहांगीरके समयमें दरबारमे इन पादरियोंकी प्रतिष्ठा होती थी और उन्हें अपने धर्मकी बहुत कुछ आशा थी; पर इसके बाद फादर बुजे

और दाराकी घनिष्ठताके अतिरिक्त इन लोगोंको इस प्रकारकी और कोई आशा न थी। इन मिशनरियोंके सम्बन्धमें एक अलग पत्र लिखनेकी मेरी इच्छा थी. उनमेंसे कुछ बातें मैं यहां लिखता हूं।

इन मिशनरियों, विशेषकर कैप्यूशियन और जेसिवट वर्गों तथा कुछ दूसरे वर्गवालोंका यह काम प्रशंसाके योग्य है। ये लोग बहुत ही नम्रतासे उपदेश करते हैं और दूसरोंकी तरह अशिष्टता वा असभ्यताका व्यवहार नहीं करते। अपने देशके ईसाइयोंके साथ—चाहे वे कैथलिक, ग्रीक, आर्मीनियन, जैकोविट्स या किसी अन्य वर्गका हो—बहुत ही सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हैं। विदेशियों को ये लोग अपने यहां ठहरा लेते हैं और उन्हें किसी प्रकारका कष्ट नहीं होने देते; और अपनी विद्वत्ता, योग्यता तथा आदर्श चरित्रके कारण विधर्मी अयोग्य और दुश्चरित्रोंको लज्जित करते हैं। धर्मके कामोंमें हाथ डालनेकी अपेक्षा ऐसे लोगोंको अपने घरों या गिरजों हीमें पड़ा रहना अधिक उत्तम है; ऐसे लोगोंका धर्म ऊपरी और दिखौवा होता है: और ऐसे लोगोंके दुष्कर्मों एवं दुश्चरित्रोंके कारण खृष्टीय धर्म पर बहुत बुरा धब्बा लगता है। पर किसी बातमें सर्वसाधारण पर आक्षेप नहीं हो सकता। मैं इन बातोंको बहुत नापसन्द करता हूं और मेरी समझमें विद्वान् और सुयोग्य पादरी इस कामके लिये बहुत ही उपयुक्त हैं। ऐसे ऐसे धर्माधिकारियोंका सब स्थानोंमें होना ईसाई धर्मके लिये बड़े ही घमण्डकी बात है। यहांके काजियोंके साथ रहने और उनसे सम्बन्ध रखनेके कारण मैं कह सकता हूं कि और और स्थानोंकी तरह एक बारके उपदेश करनेमें दो तीन हजार आदमियोंको ईसाई बना लेना बिलकुल ही असम्भव है; मैं इन सब स्थानोंमें हो

आया हूं जहां मिशनरी स्थित हैं और मैं निजके अनुभवसे कह सकता हूं कि केवल भारत ही नहीं बल्कि सारे मुसलमानी राज्योंमे दान आदिके कारण कुछ अन्य विधर्मियो पर वे अवश्य अपना प्रभाव डाल सकते हैं पर दस वर्षमे भी वे एक मुसलमानको ईसाई नही कर सकते । इसमे सन्देह नही कि मुसलमान हमारे धर्मका मान करते है ख्रीष्टका नाम हमेशः बड़ी प्रतिष्ठासे लेते है और कभी केवल 'ईसा' शब्दका उपयोग नही करते बल्कि उसके पहले शब्द'हजरत'लगा लेते हैं। हम लोगोंकी तरह वे भी विश्वास रखते हैं कि ख्रीष्ट किसी दैवी शक्तिके कारण कुंवारी माताके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, और वह परमेश्वरकी आत्मा थे । उनसे कभी यह आशा न रखना चाहिये कि वे अपने उस धर्मको त्याग कर देंगे जिसमे उनका जन्म हुआ है और चाहे उन्हे कितने ही प्रमाण क्यों न दिये जायँ पर वे अपने पैगम्बरको न तो कभी झूठा मानेंगे और न हमारा मत स्वीकार करेंगे। हमारे युरोपियन ईसाइयोको उचित है कि वे यथाशक्ति तन मन धनसे इनकी सहायता करे और ऐसे ऐसे देशोंमें इन लोगोंके भेजनेका प्रयत्न करें। मुसलमानी धर्म अत्याचार और अस्त्र शस्त्रके बलसे स्थापित हुआ है और अब भी उसका प्रचार इसी प्रकार होता है। और जहांतक मै समझता हूं इसके रोकनेका कोई दूसरा उपाय भी नही है। चीन और जापानके उदाहरणसे और उन कामोंसे जो जहांगीरके समयमें हुए है हम लोगोंको बहुत कुछ आशा रखनी चाहिये। इसके अतिरिक्त अपने धर्मके प्रचार करनेमे ईसाइयोंको एक और कष्टका सामना करना पड़ेगा—अर्थात् ईसाई अपने गिरजोंमे ईश्वरको प्रत्यक्ष मानकर भी बहुतसी असभ्य और ईश्वरी नियमके

प्रतिकूल बातें करते हैं; पर मुसलमानोंमें ये बातें बिलकुल नहीं है; मसजिदोंमें मुसलमानों पर ईश्वरी भय छाया हुआ मालूम होता है जिसके कारण बोलना तो दूर रहा वे अपना सिर भी नहीं हिला सकते।

डचोंकी कोठी—आगरेमें एक कोठी डचोंकी भी है जिसमें साधारणतः चार या पांच आदमी रहते हैं। पहले वे लोग बानात, छोटे बड़े शीशे, सादी, सुनहरी और रूपहरी लैस तथा छोटे मोटे लोहेके सामानका व्यापार करतेथे;नील खरीदा करतेथे जो कि आगरे के आसपास पैदा होता है विशेषतः बयानामें जो आगरेसे प्रायःछः मील दूर है। बयानामें वे हरसाल जाते हैं और वहां उन्होंने इसी कामके लिये एक कोठी भी बनवा रखी है। जलालपुर और लखनऊ से भी वे लोग नील खरीदते हैं जो आगरेसे सात या आठ दिनके रास्ते पर है और जहां उनकी कोठियां हैं जिनमें हरसाल उनके एजेण्ट जाया करते हैं। पर अब वे लोग कहते हैं कि उनमें अधिक लाभ नहीं है,क्योंकि एक तो आर्मीनियन लोग यह काम अधिकतासे करने लग गये हैं और दूसरे सूरतसे आगरा आते समय ग्वालियर तथा बहरामपुरवाली सीधी सड़कको रास्तेमें पहाड़ होनेके कारण छोड़ देने और अहमदाबाद तथा अन्य राज्योंसे होकर आनेके कारण रास्ता बहुत बढ़ जाता है और उन्हें बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। पर मेरी समझमें अंगरेजोंकी तरह ये लोग भी अपनी कोठी आगरे से कभी न उठायेंगे क्योंकि गरम मसालों आदिके बेचनेसे बहुत कुछ लाभ हो जाता है। एक लाभ उन्हें यह भी है कि उनमें आदमी बादशाही दरबारके निकट रहते हैं और यदि बंगाल पटना, सूरत या अहमदाबादमें—जहां इनकी कोठियां हैं—कोई हाकिम इनपर

किसी प्रकारका अत्याचार करे या इनके साथ कोइ अन्याय करे तो ये उसी समय उसके समाचार बादशाहके कानोंतक पहुँचा सकते हैं।

ताज महल-अब मैं अपने इस पत्रको उन दो मकबरोंका वर्णन करके समाप्त करता हूं जिनके कारण आगरा देहलीसे बहुत बढ़ा चढ़ा है। पहला मकबरा जहांगीरने अपने पिता अकबरके लिये बनाया था और दूसरा शाहजहांने अपनी स्त्री ताजमहलके लिये। मुमताजमहल अपनी अपूर्व सुन्दरताके कारण बहुत ही प्रसिद्ध थी; बादशाह उसे इतना चाहता था कि जबतक वह जीती रही उसने किसी दूसरी स्त्रीका मुँह न देखा और उसके मरने के समय दुःख और चिन्ताके कारण इतना व्याकुल हुआ कि स्वयं भी मरनेके निकट हो गया।

मैं अकबरके मकबरेके सम्बन्धमें कुछ न कहूंगा क्योंकि उसके सारे गुण और सारी सुन्दरता ताज महलमें—जिसका वर्णन मैं अभी करूंगा—पूर्ण रूपसे वर्तमान है। यदि आप आगरेसे निकलकर पूरबकी ओर चलें तो आपको एक लम्बा चौड़ा पथरीला रास्ता मिलेगा जो धीरे धीरे ऊंचा होता जायगा। उसके एक ओर एक बड़े बागकी (जो हमारे पैलेस रायलसे भी अधिक बड़ा है) ऊंची और लम्बी दीवार चली गई है दूसरी ओर नये बने हुए मकानोंकी एक पंक्ति चली गई है जिनमें देहलीके बाजारोंकी तरह जिनका कि वर्णन ऊपर किया जा चुका है महरावें बनी हुई हैं। इस दीवारके आधी दूरतक पहुँचने पर दाहनी ओर (अर्थात् इन मकानोंकी ओर) आपको एक बड़ा फाटक मिलेगा जो बहुत

अच्छा बनाया हुआ है और वास्तवमें वह एक सरायका फाटक है। और इसके सामने उस दीवारमें एक दूसरे बड़े फाटककी इमारत है जिसमेंसे होकर बागमें जाना होता है और जिसके दोनों ओर पत्थरके दो बड़े हौज बने हुए हैं। चौड़ाईकी अपेक्षा इस इमारतकी लम्बाई अधिक है और एक प्रकारके लाल रंगके पत्थरकी बनी हुई है जो बहुत मुलायम होता है। इसका अगला भाग सेण्टलूइस के अगले भागके समान है जो हमारे यहां सेण्ट एण्टनी (पेरिस के एक बाजार) में है; और लम्बाई तथा सुन्दरतामें उससे अधिक तथा ऊंचाईमें उसीके समान है। हमारे देशकी तरह आप यहां खम्भे और कार्निसें वैसी सुन्दरतासे बनी हुई न पावेंगे। ये बहुतही विचित्र सुन्दर और निराले ढंगके बने होते हैं और मेरी समझमें इस योग्य होते हैं कि उनका वर्णन हमारे यहांकी इमारत सम्बन्धी पुस्तकोंमें किया जाय। सैकड़ों तरहके दालानों और महरावों पर जो एक दूसरे पर बने हुए हैं, यह इमारत बनी है। देखनेमें यह बहुत ही सुन्दर है और इसकी बनावट भी बहुत अच्छी है। इसमें कोई स्थान ऐसा नहीं है जो देखनेमें भद्दा मालूम हो बल्कि सारी इमारत ही सुन्दर बनी है और उसके देखनेसे कभी जी नहीं भरता। अन्तिम बार जब मैंने उसे देखा उस समय मेरे साथ फ्रान्सीसी व्यापारी था। मुझे भय था कि बहुत दिनोंतक भारतमें रहनेके कारण कदाचित् मेरी समझ कुछ बदल गई हो और इसी कारणसे मैंने अपनी सम्मति उससे प्रकट न की। पर एक ऐसे व्यक्ति जो हाल हीमें फ्रान्ससे आया था मैं यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुआ कि सारे युरोपमें उसने ऐसी सुन्दर और शानदार इमारत कभी नहीं देखी।

बड़े फाटकमें प्रवेश करते ही आप एक बड़े गुम्बदके नीचे पहुंचेंगे, जिसमें नीचे और ऊपर चारों ओर गैलरियां बनी हुई है और आपकी दाहनी तथा बाईं ओर दो दालान होंगे जो आठ या दस फुट ऊंचे है । आपको सामने एक और बड़ी महराब दिखाई देगी जिसके नीचे होते हुए आगे जाने पर एक रविश मिलेगी जो बागको दो भागोंमें करती हुई उसके अन्तिम भागतक चली गई है । यह रविश इतनी बड़ी है कि इसपर छः गाड़ियां बराबर चल सकती है । यह रविश या पहली प्राय. आठ फुट ऊंची है और इसके किनारों पर पत्थर जड़े हुए है और इसके बीचमें एक नहर है जिसमें स्थान स्थान पर फौव्वारे लगे हुए है । इस रविश पर बीस या पचीस कदम चलकर यदि आप पीछे फिरकर देखें तो आपको उस इमारतका दूसरा भाग दिखाई देगा । यद्यपि यह भाग बाहरवाले भागके समान नहीं तथापि बहुत ऊंचा है और उसकी बनावट भी बाहरी भागकीसी है । इस इमारतके दोनों ओर उस बागकी दीवार में छोटे छोटे खम्भों पर जो एक दूसरेके निकट है एक दालान बना है । वर्षाकालमें,—सप्ताहमें तीन दिन यहां भिखमंगे आते हैं जिन्हें शाहजहांकी नियत की हुई खैरात दी जाती है ।

इसी रविश पर और आगे जाने पर आपको एक बड़ा गुम्बद मिलेगा जिसके नीचे कब्र है और उसके नीचे दाहिनी और बाईं ओर रविशे हैं जो पेड़ोंसे ढंकी है और हरा भरा बाग है । उस बड़े गुम्बदके अतिरिक्त इस रविशके सिरे पर दोनों ओर दो इमारते हैं जो फाटकवाली इमारतकी तरह लाल पत्थरकी बनी है । पीछेकी ओरसे ये दोनों इमारत बागकी दीवारसे मिली हुई है और उनमें प्रवेश करनेके लिये तीन महरावदार फाटक हैं । इन महरावोंके

नीचे जाने पर अनुमान होता है कि ये बड़ी बड़ी और ऊंची गैलरियां हैं।

इन इमारतोंके अन्दरकी छतों, फरशों और दीवारों पर बहुत अच्छा काम किया हुआ है; पर यहां उनका वर्णन करना मैं अनावश्यक समझता हूं। क्योंकि इनमें जो काम किया हुआ है वह प्रायः वैसा है जैसा अन्दरकी इमारतका, और जिसका वर्णन मैं अभी करूंगा। इस बड़ी राविश (जिसका वर्णन अभी किया गया है) और मकबरेके बीचमें एक बड़ा एवं सुन्दर मैदान है; जिसे मैं 'वाटर पार्टेयर' कहूंगा, क्योंकि उसके फर्शमें पत्थर इस प्रकारसे लगे हुए हैं कि उनपर चलने पर आपको अनुमान होगा कि वे हमारे यहांके 'पार्टियर' में 'बाक्स' की भांति लगे हुए हैं। इस 'पार्टियर' के मध्यमें खड़े होने पर आपको इस इमारतका वह भाग दिखाई देगा जिसमें मकबरा है और जिसका वर्णन मैं अभी करूंगा।

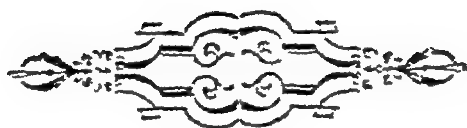
संगमरमरका बना हुआ एक बहुत बड़ा गुम्बद है, जो ऊंचाईमें पेरिसके 'वाल डी ग्रेस' के लगभग है और इसके चारों ओर संगमरमरकी बनी हुई बहुत सी बुर्जियां हैं जिनके अन्दर सीढ़ियां बनी हुई हैं। सारी इमारत चार बड़ी महराबों पर बनी हुई है। सारी इमारत चार बड़ी महराबों पर बनी हुई है, जिनमें तीन खुली हुई हैं और चौथी एक दीवारमें बनी हुई है जहां मुल्लाओं के बैठनेके लिये स्थान बने हुए हैं यहां बैठकर कुछ मुल्ला जो इसीलिये नियत होते ताज महलकी सुख शान्तिके लिये कुरान पढ़ा करते हैं। ये चारों महराबें संगमरमरकी बनी हैं और इनपर संग मूसा (काले पत्थर) से बड़े बड़े अक्षरोंमें अरबी लिपिमें लेख लिखा है जो देखनेमें बहुत ही सुन्दर मालूम होता है। इस गुम्बद

का भीतरी भाग और सारी दीवारपर—एक दूसरे सिरेतक—संग-मरमर जड़ा हुआ है, और इनमें कोई स्थान ऐसा नहीं है जिनमें कला-कौशल न दर्साया गया हो और कोई विशेष सुन्दरता न हो। डूयक आफ फलोरेन्सके गिरजोंकी भांति यहां अनेक प्रकार के अकीक तथा और और पत्थर लगे हुए हैं और दीवारमें संग-मरमरके ऊपर बहुमूल्य एवं सुन्दर पत्थर सैकड़ों ढंगोंसे जड़े हुए हैं। फर्श पर संगमरमर और संग मूसाकी सिलें बहुतही सुन्दरतासे लगाई गई हैं।

इस गुम्बदके नीचे एक छोटा सा कमरा है, जिसे मैंने अन्दरसे नहीं देखा है, वह सालमें एकही बार बड़े ठाट बाटसे खुलता है; उस स्थानकी पवित्रताके कारण (जैसा कि वे लोग कहते हैं) किसी ईसाईको अन्दर नहीं जाने देते, पर जहांतक मैंने सुना है उसके अन्दर कोई ऐसी विशेषता या सुन्दरता नहीं है।

अब एक चबूतरेके अतिरिक्त और कोई स्थान ऐसा नहीं है जो वर्णन करनेके योग्य हो; यह चबूतरा प्रायः बीस या पचीस कदम चौड़ा और उतना ही या उससे कुछ अधिक ऊंचा है और गुम्बदसे बागकी सीमातक बना हुआ है। इस स्थानपर खड़े होनेसे बहुतसे बाग, आगरा नगर तथा किलेका एक भाग और अनेक बड़े बड़े अमीरोंके मकान जो जमुनाके किनारे किनारे बने हुए हैं दिखाई देते हैं। अब इस चबूतरेको देखते हुए जो इस बागका एक एक भाग है आप ही निर्णय कीजिये कि मेरा यह कथन कि—'ताज महल' प्रशंसा करनेके योग्य स्थान है—ठीक है या नहीं। सम्भव है कि भारतमें रहनेके कारण मेरी रुचि कुछ बदल

गई हो; पर फिर भी मैं जोर देकर कह सकता हूं कि यह इमारत संसारकी विचित्र चीजोंमें मिश्रके उन 'पिरापिडों' की अपेक्षा गिने जानेके लिये अधिक योग्य है जो केवल अनगढ़ पत्थरोंके ढेर मात्र हैं, जिन्हें दोबारा देखनेपर मेरा जी ऊबता गया, जिनको देखनेसे यही अनुमान होता है कि एक पर एक पत्थर लाद दिये गये हैं और जिनमें कारीगरी या कला-कौशलका बहुतही कम समावेश है।



ग्रन्थकारका पत्र मि० चैप्लेनके नाम ।

मूर्त्तिपूजक हिन्दू ।

सूर्य्य-ग्रहण-महाशय ! यदि मेरी स्मरणशक्ति ठीक है तो मै कह सकता हूं कि सूर्य्यग्रहणके वे दो दृश्यजो सन् १६५४ में फ्रान्समें तथा सन् १६६६ में हिन्दुस्थानमें मैने देखे थे कभी न भूलूंगा। पहले ग्रहणके याद होनेका कारण यह है कि उस समय मैने अपने देशके सर्वसाधारणके मूर्खता और लड़कपनके कृत्य देखे थे। बहुतसे लोगोको तो भयने इतना आ दबाया था कि उन्होने ग्रहणसे बचनेके लिये बहुत सी दवाइयां और जड़ी बूटियां मोल ली थी। बहुतेरे अन्धेरे कमरे और कोठड़ियोमें छिप गये थे, और ठठके ठठ लोग गिरजाघरोंमे रक्षाके लिये पहुंच गये थे। बहुतसे बुद्धिमानोंपर तो इतना भय छागया था कि वे लोग समझने लगे कि अब शीघ्र ही प्रलय होनेवाला है और यह ग्रहण सारे संसारको नष्ट कर देगा। यद्यपि गेसेण्डीखर्वल तथा और प्रसिद्ध विद्वानों तथा ज्यौतिषियोने पहले ही प्रसिद्ध कर दिया था यह ग्रहण प्रकृति के विरुद्ध नही था, इससे पहले भी अनेक ऐसे ग्रहण बीत गये और उनसे संसारकी किसी प्रकारकी हानि नही हुई, इस ग्रहणमे कोई विचित्रता या विशेषता न थी और मूर्ख नजूमियोकी बतलाई हुई झूठी बातोसे भय न करना चाहिये, तथापि हमारे देशके लोगो को सन्तोष न हुआ और वे उन मूर्खोंकी बातोंमे फँसही गये।

जो ग्रहण मैने देहलीमे देखा था उसके याद रहनेका कारण यह है कि उस समय भी मैने भारतवासियोंके बहुतसे ऐसे ही विचित्र

कृत्य देखे थे। जिस समय यह ग्रहण लगनेको था उस समय मैं अपने घरकी छत पर चढ़ गया, यह घर जमुना किनारे ही था। यहांसे मैं जमुनाके दोनों किनारोंका दृश्य—जो एक दूसरेसे प्रायः तीन मील थे—भलीभांति देख सकता था। मैंने देखा कि जमुना नदीमें दोनों किनारे हिन्दू कमरतक पानीमें खड़े इस अभिप्रायसे आकाशकी ओर देख रहे थे कि ज्योंही ग्रहण आरम्भ हो त्योंही वे लोग चटपट स्नान कर लें। छोटे छोटे बालक बिलकुल नंगे थे, मर्द भी प्रायः नंगेके समान थे, क्योंकि वे केवल एक धोती बांधे हुए थे, और स्त्रियां या छोटी छोटी लड़कियां जिनकी अवस्था छः या सात वर्षकी थी, केवल एक एक कपड़ा पहने हुए थी। बड़े बड़े राजा और रईस (जो प्रायः बादशाहके दरबारी थे) सराफ, कोठीवाल, जौहरी और अन्य अच्छे अच्छे व्यापारी सपरिवार जमुनाके पार दूसरे किनारे पर चले गये थे, वहां उन लोगोंने बहुतसे खेमे लगा रखे थे और स्त्रियों सहित नहाने, पूजा पाठ करने और परदा करनेके लिये नदीमें कनात लगा दी थी। ग्रहणके लगते ही इन लोगोंने बहुत शोर मचाया और सबके सब पानीमें गोते लगाने लगे। मैं नहीं कह सकता कि उन्होंने सब कितने गोते लगाये, इसके बाद वे लोग पानीमें खड़े होकर आकाशकी ओर मुंह और हाथ किये पूजा और जप करने लगे। कभी वे जल उठाकर सूर्यकी ओर फेंकते और सिर झुकाते तथा अपने हाथ कभी इधर कभी उधर हिलाते, योंही ग्रहणके मोक्षतक ये लोग नहाते और पूजा करते रहे। जब वे जलमें बाहर निकलने लगे उस समय उन्होंने बहुत सी दुअन्नियां और चवन्नियां इधर उधर फेंकीं और ब्राह्मणोंको—जो इस अवसरपर आनेसे नहीं चूके थे—बहुत कुछ दान देते

लगे । मैने देखा कि पानीसे निकलने पर सबोंने नये वस्त्र जो पहले हीमे रेत पर रखे हुए थे पहने और बहुतोने अपने पुराने वस्त्र वहीं छोड़ दिये । इस प्रकार मैने अपने मकानकी छत परसे ग्रहण देखा और गंगा सिन्ध तथा भारतकी और और नदियों यहांतक कि तालाबोंमें भी उस समय प्रायः ऐसा ही हुआ । भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तोंसे थानेश्वरमें इस समय कोई डेढ़ लाख आदमी गये थे, क्योंकि ग्रहणके अवसर पर वहांका जल और दिनोंकी अपेक्षा अधिक पवित्र समझा जाता है ।

मोगल सम्राट् मुसलमान होने पर भी हिन्दुओंकी इन पुरानी बातोंमें हाथ नहीं डालता । या तो वह इसमें हाथ डाला ही नहीं चाहता और या हाथ डालनेका साहस ही नहीं करता । पर फिर भी ऐसे अवसरो पर पहले ब्राह्मण एक लाख रुपये बादशाकी नजर करते हैं और बादशाहकी ओरसे उन्हें केवल कुछ थोड़ेसे वस्त्र और एक बूढ़ा हाथी मिलता है । अब मैं यह बतलाता हूं कि वे इस पूजा पाठ आदिका क्या कारण बतलाते है ।

वे कहते हैं कि ईश्वरने ब्रह्माके द्वारा हमें चार वेद दिये हैं । उनमे लिखा है कि एक राक्षस जो अपवित्र दुष्ट, मैला है (यह बात वे स्वयं अपने मुँहसे कहते हैं) सूर्य्यको ग्रस लेता है, याने उसे छूने दौड़ता है और परछाहींमे सूर्य्यको काला कर देता है । यद्यपि सूर्य्य स्वयं देवता है पर वह संसारका हितकारक और दयाल है इसलिये इस काले दुष्टके हाथों बहुत दुःख और कष्ट भोगता है । इसलिये सब लोगोंको उसे इस कष्टसे मुक्त करनेके लिये चेष्टा करना चाहिये, और उसके लिये जप, तप , पुण्य ,

दान और स्नान आदि ही योग्य है। वे यह कहते हैं कि ऐसे अवसर पर दान पुण्यका बड़ा माहात्म्य है और इस समयके दानका सौगुना फल होता है। फिर कौन व्यक्ति ऐसा है जो इस सौगुने लाभवाले अवसरपर चूके।

महाशय! यही वे दोनो ग्रहण हैं जिनके सम्बन्धमें मैंने कहा था कि मैं इन्हे कभी न भूलूंगा। प्रसङ्गवश मैं आपको इन लोगोंके और भी ऐसेही हाल सुनाया चाहता हूं; जिन्हें सुनकर आप जो उचित समझें इन लोगोंके सम्बन्धमें अपने विचार निश्चित करें।

रथयात्रा-बङ्गालकी खाड़ीके किनारे पर जगन्नाथ नामक एक नगर है जहां पर जगन्नाथजीका प्रसिद्ध मन्दिर है। जहांतक मुझे याद है प्रति वर्ष आठ या नौ दिनो तक वहा एक उत्सव हुआ करता है। जिस प्रकार प्राचीन समयमें हम्मन [यूनानियों और रूमियोंके सबसे बड़े प्राचीन देवता ज्यूपिटरका नाम हम्मन है] मन्दिरमें या आजकल मक्कामे भीड़ होती है उसी प्रकार यहां भी होती है। कहा जाता है कि कभी कभी यहां डेढ़ लाख तक आदमी आया करते हैं। वे लोग लकड़ीका एक बड़ा रथ बनाते है जो भारतके और और स्थानोंमे देखा है, इसपर बहुत सी विचित्र मूर्त्तियां बनी या रंगी होती हैं; किसीके दो सिर, किसीके दो धड़, किसीका आधा धड़ मनुष्यका और आधा पशुका अथवा और और ऐसेही विचित्र आकारकी मूर्त्तियां बनी होती हैं, इस रथमें १४ या १६ पहिये होते हैं और लगभग पचास या साठ आदमी इसे ढकेलते या खींचते हैं। सबके बीचमें जगन्नाथ जीकी मूर्त्ति रखी हुई होती है जिसे बहुमूल्य वस्त्र पहनाकर लोग

अच्छी तरह सजा देते है और इस रथको एक स्थानसे दूसरे स्थानतक ले जाते हैं।

पहले दिन जिस समय मन्दिरमें दर्शन होता है उस समय वहां भीड़ इतनी अधिक होती है कि कोई वर्ष ऐसा नही बीतता जबकि दूर दूरसे चलकर थके माँदे किसी न किसी यात्रीका वहीं प्राणान्त न हो जाता हो। सब लोग उस समय उस व्यक्तिकी बहुतही प्रशंसा करते हैं और कहते हैं कि यह बड़ा भाग्यवान् था जो इतनी दूरसे चलकर और यहां आकर मरा। जिस समय रथ गड़गड़ाता हुआ चलता है उस समय बहुतसे ऐसे व्यक्ति होते है जो धर्मपर विश्वास रखकर इसके भारी भारी पहियोंके आगे स्वयं गिर पड़ते और उसी समय मर जाते है। इन्हे विश्वास होता है कि यह कार्य्य बहुत ही अच्छा और बीरताका है, इस प्रकार मरतेही जगन्नाथ जी उन्हें अपने निकट बुला लेंगे और दूसरे जन्मसे उन्हें खूब वैभव और सुख मिलेगा।

ऐसे अवसरों पर ब्राह्मण अपने स्वार्थके लिये (अर्थात् पुण्य दानकी चीजें पानेके लिये) लोगोंको ऐसे कामोंके लिये और भी उत्तेजना देते है और प्राय ऐसी धूर्त्तता किया करते है कि यदि मैं स्वयं पुर्ण रीतिसे उनसे परिचित न हो जाता तो मुझे कभी उनपर विश्वास न होता। वे लोग किसी एक सुन्दर कुँवारी कन्याका जगन्नाथ जीसे व्याह करा देते हैं और रातको मन्दिरमें जगन्नाथकी मूर्त्तिके पास बैठाकर उसे विश्वास दिलाते हैं कि रातको स्वयं जगन्नाथ जी उसके पास आवेगे और उससे यह भी कह देते हैं कि इस वर्षके शुभाशुभ अपनी पुजा,सवारी,रथ और दान आदिके सम्बन्धमे जो कुछ जगन्नाथजीको आवश्यक हो वह उनसे(जगन्नाथ जोसे)पूछ

ले। रातके समय चोर दरवाजेसे एक पुजारी उस मन्दिरमें चला जाता है और उस कुँवारी कन्याके साथ सम्भोग करता है और जो चाहता है वही उस बेचारीको विश्वास करा देता है!!! दूसरे दिन वह फिर रथपर उसी ठाट बाटके साथ जैसा पहले दिन बैठाई गई थी जगन्नाथजीकी सहधर्म्मिणी बनाकर उनके साथ बैठा दी जाती है और रथ एक मन्दिरसे दूसरे मन्दिरकी ओर प्रस्थान करता है। वहां पहुंचने पर ये ब्राह्मण उससे कहते हैं जो कुछ रातको उसने जगन्नाथ जीसे सुना हो वह जोरसे सब लोगोंको कह सुनावे। (शायद यह बात बर्नियर साहबके समयमें होती रही हो या उन्होंने किसीसे सुनकर लिख दिया हो, परन्तु अब इन बातोंका कहीं वहां जिक्र तक नहीं है। - अनुवादक।)

उत्सवके दिन रथके आगे—और मन्दिरोंमें भी—कसबियोंका नाच होता है और वे सैकड़ों प्रकारके भद्दे अश्लील इशारे करती हैं, और ब्राह्मण उन सब बातोंको भी धर्म्मका एक अंग बनाते हैं। मैंने बहुतसी ऐसी स्त्रियाँ(वेश्याओं)को देखा है जो सुन्दरतामें बहुत प्रसिद्ध हैं पर वे सर्व साधारणके पास नहीं जाती, उन्होंने बहुतसे मुसलमानों, ईसाइयों और हिन्दुओंके साथ रहना और बहुत कुछ द्रव्य लेना अस्वीकार कर दिया क्योंकि उन्होंने अपने आपको देवताओं, मन्दिरोंके पुजारियों और उन साधुओंके अर्पण कर दिया है जो धूनी रमाये और जटा धारण किये मन्दिरोंमें नंगे बैठे रहते हैं और जिनके सम्बन्धकी विशेष बातें मैं आगे चलकर कहूंगा।

सती—भारतवर्षीय स्त्रियोंके अपने मृत पतिके साथ जीवित जल मरनेका हाल बहुतसे विदेशी यात्रियोंने लिखा है और मैं समझता हूं कि उसपर कुछ न कुछ अवश्य विश्वास किया जाता

होगा। मैं स्वयं भी अब कुछ इस विषयमे लिखा चाहता हूं। पर हां, इसमें सन्देह नही कि जो कुछ इसके सम्बन्धमे कहा गया है वह सर्वथैव सत्य नहीं है और न अब सती होनेवाली स्त्रियोंकी संख्या पहलेकी तरह अधिक होती है; क्योंकि मुसलमान जो आजकल भारतवर्षके शासनकर्त्ता है इन रस्मोंके बिरोधी हैं और जहांतक हो सकता है वे ऐसी बातोंके रोकनेकी चेष्टा करते हैं।पर वे इन बातोंका पूर्ण रूपसे बिरोध नही करते,क्योंकि बलवेके भयसे वे अपनी मूर्तिपुजक प्रजाको जो संख्यामें उनसे कही बढ़कर है अपने धर्मका पालन स्वतन्त्र रीतिसे करने देते है। वे इन बातोंका बिरोध अस्पष्ट रूपसे करते हैं। मुसलमान हाकिमकी आज्ञा पाये बिना सती नही हो सकती। हाकिम उस स्त्रीको अपने घरकी स्त्रियोंके पास भेज देता है जो उसे अनेक प्रकारसे समझाती है। उसके साथ अनेक प्रकारकी प्रतिज्ञाएँ की जाती हैं और उसे सती होनेकी आज्ञा नहीं दी जाती। पर इतनी चेष्टाएँ करने पर भी वह अपनी इच्छा पर दृढ़ रहती है, और इतना होने पर भी सतियोंकी संख्या कुछ कम नहीं होती; विशेषत. उन राज्योंकी सीमाके अन्दर सतियां अधिक होती है जहां कोई मुसलमान हाकिम नहीं होता। मै उन सतियोंका पुरा हाल नही लिखूंगा जिन्हें मैने स्वयं जलते देखा है, क्योंकि इस से यह प्रकरण बहुत ही बढ़ जायगा और आप घबरा जायेंगे। मैं यहां केवल दो या तीन सतियोंका हाल लिखूंगा और इसीसे आप बाकी सतियोंके सम्बन्धमें सब कुछ निश्चय कर सकेंगे। सबसे पहले मैं उस स्त्रीका हाल लिखूंगा जिसे समझानेके लिये मैं स्वयं भेजा गया था।

हमारे आगा दानिशमन्दखांका मुख्य मुनीब और मेरा मित्र बेनीदास जिसका इलाज मैने दो वर्ष तक किया तपेदिककी बीमारी से मर गया। उसकी स्त्रीने उसी समय अपने पतिके शवके साथ जल जानेकी इच्छा प्रकट की। इसपर उसके सम्बन्धियोंने—जो आगाके नौकर थे,—आगाकी आज्ञासे उसे बहुत समझाया और कहा कि यद्यपि उसका सती होना बहुत ही उचित और योग्य है और सती होनेसे उसके सम्बन्धियोंका बहुत मान होगा तथापि उसे अपने इन बच्चोंका भी ध्यान करना चाहिये जो अभी छोटे थे और इन बच्चोंको योंही न छोड़ देना चाहिये; इन छोटे बच्चोंकी भलाईका अधिक ध्यान रखना चाहिये। उसके सम्बधी जब इन सब उपायोंसे सती होनेसे उसे रोकनेमें असमर्थ हुए तो उन्होंने मुझसे यह इच्छा प्रकट की कि मै आगाकी ओरसे और अपनी पुरानी मित्रताके सम्बन्धसे जाकर उसे समझाऊं। मै गया और जब उसके मकानपर पहुंचा तो मैंने सात या आठ भयानक आकृतिवाली बुढ़ियों और चार या पांच बुड्ढे ब्राह्मणोंको शवके निकट रोते पीटते देखा; और वह विधवा स्त्री बाल खोले शवके पैरोंकी ओर बैठी हुई रो पीट रही थी; उस समय उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी आंखोंमें आंसू न थे। जब रोना पीटना समाप्त हुआ तो मैं इन लोगोंके और निकट चला गया और उस विधवाको धीरेसे समझाने लगा कि मैं दानिशमन्द खांकी ओरसे आया हूं, यदि तुम सती न हो और इन दोनों बच्चोंका लालन पालन करो तो आगा इन दोनों बच्चोंके लिये पांच पांच रुपये प्रतिमास देंगे। और यदि तुम्हारी सती होनेकी इच्छा इतनीही अधिक प्रबल है तो हम और

और उपायोंसे तुम्हें सती होनेसे रोक लेंगे और साथ ही उन लोगों को दण्ड भी दिया जायगा जो तुम्हें सती होनेके लिये उत्तेजित करते या भड़काते हैं । इस समय सती होनेसे तुम्हारे सम्बन्धी सन्तुष्ट नहीं है, और उन स्त्रियोंकी अपेक्षा तुम्हारी अधिक बदनामी नहीं होगी जो पतिके मरजाने और किसी सन्ततिके न होने पर भी सती नहीं होतीं । मैंने इन्हीं बातोंको कई बार उसके सामने दोहराया पर उसने कोई उत्तर न दिया, अन्तमें उसने कहा कि यदि मैं सती न होने पाऊंगी तो अपना सिर दीवार पर पटक दूंगी । मैंने मनमें कहा कि क्या इसपर कोई भूत सवार है और इसके उपरान्त जोरसे चिल्लाकर उससे कहने लगा कि—' अच्छा, तो ले पहले इन दोनों बच्चोंका गला काट ले और फिर सती हो जा; मैं अभी दानिशमन्द खांके पास जाता हूं और वह रुपये जो मासिक मिलनेको थे बन्द कराता हूं। ' मैंने ये बातें बहुत जोरसे और धमकाते हुए कही थीं जिससे उस स्त्री तथा और लोगों पर जो उस समय उसके पास थे अच्छा प्रभाव पड़ा। उसने चुपचाप अपनी गर्दन नीचे झुका ली और वृद्धा स्त्रियां तथा ब्राह्मणोंका वह झुण्ड धीरे धीरे वहांसे चला गया । मैंने उस स्त्रीको उसके उन सम्बन्धियोंके साथ सुपुर्द कर दिया जो मेरे साथ आये थे। अब मैं समझ गया कि मेरा कर्त्तव्य पूरा हो चुका और अपने घोड़े पर सवार होकर घर चला आया । सन्ध्याके समय जब मैं आगाको सब वृत्तान्त सुनाने जा रहा था तो रास्तेमें मुझे उसके सम्बन्धी मिले जिन्होंने मुझे धन्यवाद दिया और कहा कि मृतककी क्रिया दाह कर दी गई और विधवा उसकी साथ सती नहीं हुई।

स्त्रियोंके सती हो जानेके भयंकर दृश्य मैंने इतनी बार देखे हैं कि अब फिर देखनेकी इच्छा बिलकुल नहीं है और जब मैं उन दृश्योंका ध्यान करता हूं तो अब भी मुझे बहुत भय मालूम होता है। तोभी मैं उनमेंसे कुछ घटनाओंका वर्णन करूंगा। पर मैं उनके उस उत्साह और धैर्य्यको पूर्ण रूपसे वर्णन नहीं कर सकता कि जिससे वे इस भयानक कृत्यके लिये उद्यत होती। इनका पूरा हाल देखने हीसे विदित हो सकता है।

जब मैं अहमदाबादसे—राज्योंमेंसे होता हुआ—आगरेकी ओर जा रहा था तो एक दिन साथियोंके सहित आराम करनेके लिये छांह में गया। मैंने सुना कि एक स्त्री अभी अपने मृत पतिके साथ सती हुआ चाहती है। मैं उसी समय दौड़ता हुआ वहां पहुँचा। देखा कि एक बड़ा गढ़ा खोदा हुआ है जिसमें बहुत सी लकड़ियां चुनी रखी हैं, लकड़ियोंके ऊपर एक मृत देह पड़ी है जिसके पास एक सुन्दरी—लकड़ियोंके उसी ढेर पर—बैठी हुई है। चारों ओरसे चार पांच ब्राह्मण उस चितामें आग दे रहे थे, पांच अधेड़ स्त्रियां जो अच्छे अच्छे वस्त्र पहने थीं एक दूसरेका हाथ पकड़कर चिताके चारों ओर नाच रही थी और उन्हें देखनेके लिये बहुत सी स्त्रियों और पुरुषोंकी भीड़ लगी थी। इस समय चितामें आग अच्छी तरह जल रही थी क्योंकि उसपर बहुत सा तेल और घी डाल दिया गया था। मैंने देखा कि आग उस स्त्रीके कपड़ों तक—जिनमें सुगन्धित तेल, चन्दन कस्तूरी आदि मली हुई थी—भली भांति पहुंच गई। मैंने यह सब देखा, पर मुझे उस स्त्रीमें किसी प्रकारके दुःख या कष्टके चिन्ह नहीं दिखाई दिये. हां कहा जाता है कि उसने बड़े जोर से 'पॉच दो' का उच्चारण किया जिसका अर्थ पुनर्जन्मके

माननेवालोंके कथनानुसार यह होता है कि अबकी पांचवीं बार यह स्त्री इसी पतिके साथ सती हुई है और अब केवल दो बार सती होना बाकी है, और या तो यह बात उसे उस समय याद आ जाती है या उसमें किसी देवताका अंश आ जाता है । लेकिन इतने हीसे इसकी समाप्ति नहीं हुई, मैंने अनुमान किया कि ये पांचो स्त्रियां योंही नाच गा रही हैं, पर मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि जब उनमेंसे एक स्त्रीके कपड़ों तक आग पहुंची तो वह भी उसी जलती चितामें कूद पड़ी और इसी तरह जब दूसरीके कपड़ेमें आग लगी तो वह भी उसीमें कूद पड़ी। मुझे यह देखकर और भी अधिक आश्चर्य हुआ। बाकी तीनों स्त्रियां बिना किसी प्रकारके भयके फिर उसी तरह एक दूसरेका हाथ पकड़कर नाचने लगीं और अन्तमें उन्होंने पहली दोनों स्त्रियोंका अनुकरण करते हुए उस चितामें अपने प्राण दे दिये। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ और मैं इसका कुछ मतलब न समझ सका; पर मुझे शीघ्र ही मालूम हो गया कि ये पांचो दासियां थीं और जब उन्होंने देखा कि उनकी स्वामिनी अपने पतिके बीमार होनेसे बहुत दुःखित और चिन्तित है और पतिके साथ सती होगी तब उन्होंने भी उसके साथ सती होना निश्चय कर लिया । बहुतसे लोगोंने जिनसे मैंने सतीके सम्बन्धमें बातचीत की थी, मुझे यह विश्वास दिलाना चाहा कि सती होनेका कारण पतिका प्रेम ही है । पर अन्तमें मैं समझ गया कि इसका कारण रीति और विश्वास है। माताएँ इन्हें बचपन हीसे यह शिक्षा देती हैं कि अपने पतिके साथ सती हो जाना प्रशंसा और पुण्यका काम है और पतिव्रता स्त्रियां सदा सती हो जाती हैं। इस प्रकारकी शिक्षाका बीज उनके हृदयमें अज्ञानावस्था हीसे बो

दिये जाते हैं। पर वास्तवमें यह सब मर्दोंकी धूर्त्तता है जो इसी प्रकार स्त्रियोंको अपने वशमें कर लेते हैं और फिर इन्हें यह भय भी नहीं रहता कि बीमारी के समयमें स्त्री अच्छी तरह उनकी सेवा शुश्रूषा न करेगी अथवा उन्हें जहर दे देगी।

अब मैं आपको एक और सतीका वृत्तान्त सुनाता हूं जिसमें औरोंकी अपेक्षा कुछ अधिक विशेषता है। उस समय मैं स्वयं वहां उपस्थित नहीं था इससे आप कदाचित् उसपर विश्वास न करें;लेकिन मैंने भी इसी प्रकारकी ऐसी घटनाएँ देखी हैं जो प्रायः मुझे असम्भव मालूम होती थीं। यह घटना भारतमें इतनी अधिक प्रसिद्ध हो गई है कि अब यहां उसके सम्बन्धमें किसीको कुछ सन्देह न रह गया. और सम्भव है कि आपने इसका हाल युरोपमें भी सुना हो।

एक स्त्रीका अपने पड़ोसी मुसलमान युवकके साथ जो दरजी था और तम्बूरा भी अच्छा बजाया करता था, अनुचित प्रेम था। स्त्रीने उस युवकसे विवाह हो जानेकी आशा पर अपने पतिको विष दे दिया और उस दरजीके पास जाकर उसने कहीं भाग चलनेकी इच्छा प्रकट की और यह भी कहा कि यदि हम लोग इस समय भाग न चलेंगे तो मुझे अपने मृत पतिके साथ सती होना पड़ेगा। पर उस युवकने—इस कामको बुरा और अनुचित समझकर—उस-की प्रार्थना अस्वीकार की। उस स्त्रीको इसपर कुछ आश्चर्य न हुआ वरन् उसने अपने सम्बन्धियोंसे अपने मृत पतिकी अचानक मृत्युका हाल कहा और पतिके साथ सती होनेकी दृढ़ इच्छा प्रकट की। वे लोग उसके इस कृत्यसे—जिससे उनके कुलकी प्रतिष्ठा थी-बहुत ही सन्तुष्ट हुए; उसी समय उन्होंने एक गढ़ा खोदा, उसमें लकड़ियां चुनकर तैयार कीं और उसपर शव रखकर नीचेसे आग

लगा दी। सब चीजें तैयार हो गईं और वह स्त्री अपने सम्बन्धियोंसे जो उस समय पासही खड़े थे गले मिलने और उनसे बिदा होनेके लिये चली। इस देशकी रीतिके अनुसार बहुतसे बाजेवाले भी उस समय बुलाये गये थे और उनमें वह मुसलमान तम्बूरे-वाला युवक भी था। उसे देखते ही वह स्त्री क्रोधसे आग बबूला हो गई और उसकी ओर इस तरह बढ़ी मानो उससे बिदा होने जा रही हो। पर साधारण रीतिसे गले लगनेके बदले उसने उसका गला जोरसे पकड़ लिया, उसे घसीटती हुई चिताकी ओर ले गई और उसे साथ लिए ही जलती आगमें कूद पड़ी जिससे वह दोनों जलकर राख हो गये।

सूरतसे फारसकी ओर जाते हुए मैंने एक अधेड़ सुन्दरीको सती होते देखा था, उस समय वहां पेरिसके मान्शियर चार्डिन तथा और कई अंगरेज और डच उपस्थित थे। उसकी गम्भीरता और प्रसन्नता—जो उस समय उसके मुख पर झलक रही थी—वि-चित्रतासे स्नान करना और सम्बान्धियासे बात करना, हम लोगोंकी ओर देखना, अपनी कुटिपर दृष्टिपात करना जो घास फूस और छोटी छोटी लकड़ियोंसे चिता पर बनी हुई थी, अपने पतिका सिर गोदमें रखकर चितापर बैठना, अपने हाथोंसे एक मशालसे चिता में आग लगाना, चारो ओरसे ब्राह्मणोंका उस चिताको जलाना आदि आदि बातें ऐसी थीं कि जिनका पूरा वर्णन करना मेरे लिये बिलकुल ही असम्भव है; और यद्यपि इस घटनाको देखे मुझे थोड़े ही दिन हुए तोभी अब मुझे उसपर कठिनतासे विश्वास होता है।

मैंने कुछ ऐसी स्त्रियोंको भी देखा है जो चिता और अग्निको देखतेही भयभीत हो जाती हैं और जो कदाचित् अवसर पाकर

भाग भी जाती। वे ब्राह्मण जो उस समय बड़े बड़े लठ लिये उनके पास खड़े होते हैं केवल उन्हें उत्तेजित ही नहीं करते वरन् कभी कभी चितामें ढकेल भी देते हैं। मैंने स्वयं देखा है कि एक बार ब्राह्मणोंने एक स्त्रीको जो चि ासे पांच छः कदम दूर हीसे हिचकने लगी थी, ढकेल दिया और एक बार जब एक स्त्रीके कपड़े तक आग लगी और उसने भागना चाहा तो इन ब्राह्मणोंने लम्बे लम्बे बांसोंकी सहायतासे उसे फिर चितामें ढकेल दिया। मैंने प्रायः ऐसी सुन्दर स्त्रियोंको देखा है जो ब्राह्मणोंके हाथसे बचकर निकल जाती हैं और उन नीच जातिके लोगोंमें मिल जाती हैं जो यह जानकर कि सती होनेवाली युवती सुन्दर है और उसके साथ अधिक सम्बन्धी नहीं होंगे तो उस स्थानपर अधिकतासे एकत्र होजाते हैं। जो स्त्रियां चिता देखकर डरती और इस प्रकार भाग जाती हैं वे अपने जातिवालोंसे मिलने या उनके साथ रहनेकी आशा कभी नहीं कर सकतीं, क्योंकि वे लोग उसे बहुत बदनाम कर देते हैं और उसके इस अनुचित कार्यसे अपने धर्मकी अप्रतिष्ठा समझते हैं। जिन लोगोंके साथ ये स्त्रियां अपना बचा हुआ जीवन व्यतीत करती हैं भारतमें उनकी गणना भी बहुतही नीची जातियोंमें की जाती है। विपत्तिमें पड़नेके भयसे कोई मोगल ऐसी स्त्रीकी रक्षा नहीं करता। हां, कभी कभी कुछ पुर्त्तगीजोंने जो समुद्र-तट पर रहते हैं और जहां उनकी विशेष प्रबलता है ऐसी स्त्रियोंको बचा लिया है। इन ब्राह्मणोंके कृत्योंको देखकर कभी कभी मुझे इतना अधिक दुःख और क्रोध हुआ है कि यदि मेरा वश चलता तो मैं उनका गला घोंट देता। मुझे याद है कि लाहौरमें एक बहुत ही सुन्दरी लड़कीको मैंने जलते हुए देखा, मैं समझता हूं कि उसकी अवस्था बारह

वर्ष से अधिक होगी । वह लड़की उसी तरह चिताके निकट लाई गई। भयके कारण अधमरीसी मालूम होने लगी। वह कांपती और बिलक बिलक कर रोती थी। इतनेमे तीन चार ब्राह्मण जिनके साथ एक बुढ़िया भी थी और जो उस लड़कीको अपनी गोदमें लिये हुए थी, आये और उसे चितापर बैठा दिया, उसके हाथ और पैर बांध दिये और इस प्रकार उसे जीवित ही जला दिया। यद्यपि दुःख और क्रोधके कारण उस समय मैं आपेसे बाहर हो गया था तथापि मैंने अपनेआपको बड़ी कठिनतासे—विवश होकर रोका और केवल उन्ही बातोंको स्मरण करके मैंने सन्तोष किया जो कि कविने उस अवसरपर कहे थे जब कि एगेमेमनने ग्रीसवालोंके स्वार्थके लिये जिनका कि वह नेता था अपनी कन्या इफीजीनियाको डायना देवीके आगे बलिदान दिया था। यथाः—
" धर्म्म मनुष्योंसे कैसे कैसे बुरे और अनुचित कार्य्य करा सकता है। "

इसके अतिरिक्त, यहां और भी बहुत सी अनुचित रस्में हैं जो यहांके ब्राह्मण देशके और और भागोंमें कराया करते हैं। अर्थात् जब कोई स्त्री विधवा हो जाती है तब वे उसे नही जलाते वरन् जीवित ही गले तक जमीनमें गाड़ देते है और फिर दो या तीन ब्राह्मण आकर उसका गला मरोड़ या दबा देते हैं, और इसके उपरान्त उसके ऊपर थोड़ी सी मट्टी डालकर पैरोंसे रौंद डालते है। अस्तु अब मैं इस देशकी और दूसरी रस्मोंका वर्णन करता हूं।

शवदाह—हिन्दू प्रायः अपने मुरदोंको जला देते हैं। पर कोई कोई ऐसे भी होते हैं जो उनके किसी अंगको घाससे जलाकर और शवको नदीके किनारे किसी ऊंचे स्थानसे नीचे

की ओर ढकेल देते है । मैने कईबार गंगा जीके किनारेपर लोगों को ऐसा करते देखा है ।

कभी कभी जब ये लोग किसी व्यक्ति वा मृत्युके निकट देखते हैं तो उसे नदीके तटपर ले जाते हैं, (एक बार ऐसे अवसरपर मैं स्वयं उपस्थित था) वे पहले उसके पैरोंको जलमें डाल देते हैं और फिर धीरे धीरे खिसकाकर गलेतक पानीमें डुबा देते हैं । जब उसका सांस निकलने लगता है तब वे उसे अच्छी तरह पानी में डुबाकर वहीं छोड़ देते हैं और फिर रोते पीटते हैं । वे कहते हैं कि ऐसा करनेसे आत्माके सारे पाप जो उसने जीवित अवस्था में किये थे, छूट जाते हैं । केवल अपढ़ लोगों हीका यह कथन नहीं है किन्तु बड़े बड़े सुशिक्षित भी इसका समर्थन करते हैं ।

साधु और संन्यासी-भारत के साधु, सन्यासी और जोगियोंके अनगिनत भेद हैं; उनमेंसे अधिकांशके पास एक एक मठ होता है जिसका पूरा अधिकार वहांके महन्त या गुरुके हाथमें होता है । यह लोग अपनी सारा जीवन ईश्वर आराधना आदिमें इस प्रकार व्यतीत करते हैं कि मुझे सन्देह होता है कि यदि मैं उसका वर्णन आपसे करूं तो आप उसपर विश्वास करेंगे या नहीं । साधारणतः यह लोग योगी कहे जाते हैं जिसका अर्थ है ईश्वर तक पहुंचा हुआ । यह लोग सदा यातो नंगे रहते हैं और या दिन रात राखपर पड़े रहते हैं । प्रायः यह योगी किसी तालाबके किनारे एक बड़े वृक्षकी छांहमें अथवा किसी देव मन्दिरके दालानोंमें पड़े रहते हैं । किसीके बाल उलझे हुए उसके घुटनों तक लटकते रहते हैं, और कोई कोई अपना एक वा दोनों हाथ

ऊपरको उठाये रहते है। उनके नाखून प्रायः बढ़कर मुड़ जाते हैं और नापमें वह छोटी उंगलीसे आधे होते है। उनके हाथ छोटे और दुबले होते है, क्योंकि सदा ऊपर हीकी ओर उठे रहने के कारण घे बढ़ नहीं सकते, और जोड़ोंके सूख जानेके कारण वे नीचेकी ओर नही झुक सकते। जिससे ये जोगी और साधु कुछ खा पी नही सकते। इनके साथ साथ शिष्य या चेले भी हुआ करते है जो इनको पूज्य मानकर इनकी सेवा किया करते है।

देशी राजोंके राज्यमें मैने प्राय ऐसे ऐसे साधुओंके झुण्डके झुण्ड देखे हैं। कोई ऊपरकी ओर हाथ उठाये रहते है, कोई अपने लम्बे लम्बे बाल खोले या सिरमें लपेटे रहते है. किसीके हाथमें सोटा होता है और किसीके कन्धेपर शेरकी खाल पड़ी होती है। यह लोग गलियो और बाजारोंमे नंगे घूमा करते हैं। मुझे आश्चर्य होता है कि स्त्रियां, पुरुष और लड़के किस तरह उन्हें देख सकते है और उनके निकट जाकर उन्हे भिक्षा देते है।

देहलीके बाजारमें मैने सरमद (यह पहले यहूदी था पीछे मुसलमान होगया) नामक एक व्यक्तिको बहुधा देखा है। वह सदा नंगा फिरा करता था, एकबार औरङ्गजेबने उसे कपड़े पहनानेकी आज्ञा दी पर उसने अस्वीकार किया और इसीलिये इसका सिर काट लिया गया।

बहुतसे साधु संन्यासी बड़ी दूर दूरकी यात्रा करते हैं बल्कि ऐसे अवसरपर नंगे रहनेके अतिरिक्त लोहेकी बड़ी बड़ी सिकड़ियोंसे भी लदे फँदे रहते है। बहुतसे साधुओंको मैंने किसी विशेष तपस्याके वास्ते बिना बैठे या पड़े सात सात और आठ आठ दिन खड़े खड़े विताते देखा है, रातके समय केवल कुछ घंटोंके लिये किसी वस्तुके सहारे झुकजानेके सिवाय दूसरा कोई सहा-

रा नही लेते । इससे प्रायः उनकी पिंडलियां सूजकर जांघोंके बराबर हो जाती है। कोई कोई साधु फकीर घंटो हाथोंके बल सिर नीचे और पांव ऊपर किये बड़े उत्साहके साथ खड़े रहते है। बहुतसी अवस्थाओंमें ये लोग अपने नेत्रोंको दुःख देते हैं।

मैंने सुना है कि ये साधु फकीर बड़ी बड़ी कठिन तपस्याएं इस आशापर करते हैं कि अगले जीवनमें हम राजा होंगे और यदि राजा न भी हुए तौभी हमारा जीवन राजाओंसे अधिक सुखमय होगा।

कुछ साधुओंके सम्बन्धमें लोगोंको यह विश्वास होता है कि वे पूर्ण ज्ञानी और महात्मा होते है। वे लोग नगरसे दूर किसी एकान्त स्थानमें निवास करते हैं और अपने स्थानसे कहीं नहीं जाते। यदि कोई इन्हे भोजनकी सामाग्री आदि लाकर दे दें तो वे खालेते हैं और नही तो वे महात्मा बिना भोजन हीके रहजाते हैं।

एक प्रतिष्ठित योगीने एकबार मुझसे कहा था कि हम लोग घंटो तक ईश्वरका ध्यान करते है और ऐसी अवस्थामें हमारी सब इन्द्रियां निर्जीव हो जाती हैं और हमें साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर के दर्शन होते है।

इन साधुओंकी ईश्वरकी ओर ध्यान लगानेकी भिन्न भिन्न परिपाटियां हैं जैसे कोई कोई साधु पहले बहुत दिनोंतक बिना कुछ खाये पीये एकान्तमें रहते हैं और फिर आकाशकी ओर निगाह जमाकर देखते रहते हैं। और जब इस प्रकार वे पूरे अभ्यस्त हो जाते हैं तो दोनों आंखें इस प्रकार नीचे करते हैं कि एकही समय में नाकका ऊपरी भाग तथा दोनों नथने दिखलाई दें। इसी प्रकार कुछ दिनोंतक अभ्यास करनेमें उन्हें एक दिव्य ज्योतिके दर्शन होते है।

जादूगर आदि–अब मैं कुछ ऐसे फकीरोंका हाल लिखता हूं जो ऊपर्युक्त साधुओंसे बिलकुल ही भिन्न और विचित्र हैं। वे लोग प्रायः देशभरमें घूमा करते हैं और प्रत्येक वस्तुओं को व्यर्थ बतलाते हैं। सर्व साधारणका विश्वास है कि वे सोना बनाना जानते हैं और पारेको ऐसी उत्तमतासे शुद्ध कर देते है कि यदि कोई बीमार दो चावल के बराबर खाय तो सीघ्रही नीरोग और हृष्ट पुष्ट होजाय । उसके खानेसे पाचन शक्ति इतनी प्रबल हो जाती हैं कि भारी और अधिक भोजन करनेपर भी वह शीघ्र पच जाता है। जब कभी ऐसे दो फकीर मिल जाते हैं तो वे बहुत सी विचित्र बातें दिखलाते है। वे किसी व्यक्तिके आन्तरिक भावों को बतला देते हैं । एक घंटेमें किसी पेड़के एक डालीको जमीन में गाड़कर उसमें फल फूल और पत्ते लगा देते है और पन्द्रह मिनट में अंडेको बगलमें रखकर जो जानवर आप कहें पैदा कर देते है। जो उसी समय इधर उधर कमरेमें उड़ने लगता है। पर मुझे दुःख है कि इसके अतिरिक्त और जोकुछ मैंने इन जादूगरोंकी प्रशंसा सुनी है उसके सत्य होनेके मुझे कोई प्रमाण नहीं मिले। एकबार मेरे आकाने एक बाजीगरको बुलाया और उससे कहा कि यदि तुम कल मेरे मनकी बात बतला दोगे तो मैं तुम्हें तीन सौ रुपये दूंगा। उसी समय मैंने भी कहा कि यदि मेरे मनकी बात बतला दी जायगी तो मैंभी पचीस रुपये दूंगा । पर फिर वह कभी लौटकर हमलोगोंके मकानकी ओर न आया । एकबार और भी मैंने एक जादूगरको किसी बातपर बीस रुपये देनेको कहा था। पर फिर भी मुझे निराशही होनापड़ा। इसके अतिरिक्त मैंने आजतक कोई ऐसा विचित्र तमाशा नही देखा जिसे मै न समझ सकता। जब कभी मैं

रा नहीं लेते। इससे प्रायः उनकी पिंडलियां सूजकर जांघोंके बराबर हो जाती हैं। कोई कोई साधु फकीर घंटों हाथोंके बल सिर नीचे और पांव ऊपर किये बड़े उत्साहके साथ खड़े रहते हैं। बहुतसी अवस्थाओंमें ये लोग अपने नेत्रोंको दुःख देते हैं।

मैंने सुना है कि ये साधु फकीर बड़ी बड़ी कठिन तपस्याएं इस आशापर करते हैं कि अगले जीवनमें हम राजा होंगे और यदि राजा न भी हुए तौभी हमारा जीवन राजाओंसे अधिक सुखमय होगा।

कुछ साधुओंके सम्बन्धमें लोगोंको यह विश्वास होता है कि वे पूर्ण ज्ञानी और महात्मा होते हैं। वे लोग नगरसे दूर किसी एकान्त स्थानमें निवास करते हैं और अपने स्थानसे कहीं नहीं जाते। यदि कोई इन्हें भोजनकी सामग्री आदि लाकर दे दे तो वे खालेते हैं और नहीं तो वे महात्मा बिना भोजन हीके रहजाते हैं।

एक प्रतिष्ठित योगीने एकबार मुझसे कहा था कि हम लोग घंटों तक ईश्वरका ध्यान करते हैं और ऐसी अवस्थामें हमारी सब इन्द्रियां निर्जीव हो जाती हैं और हमें साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर के दर्शन होते हैं।

इन साधुओंकी ईश्वरकी ओर ध्यान लगानेकी भिन्न भिन्न परिपाटियां हैं जैसे कोई कोई साधु पहले बहुत दिनोंतक बिना कुछ खाये पीये एकान्तमें रहते हैं और फिर आकाशकी ओर निगाह जमाकर देखते रहते हैं। और जब इस प्रकार वे पूरे अभ्यस्त हो जाते हैं तो दोनों आंखें इस प्रकार नीचे करते हैं कि एकही समय में नाकका ऊपरी भाग तथा दोनों नथने दिखलाई दें। इसी प्रकार कुछ दिनोंतक अभ्यास करनेमें इन्हें एक दिव्य ज्योतिके दर्शन होते हैं।

जादूगर आदि-अब मैं कुछ ऐसे फकीरोंका हाल लिखता हूं जो ऊपर्युक्त साधुओंसे बिलकुल ही भिन्न और विचित्र है। वे लोग प्राय: देशभरमें घूमा करते हैं और प्रत्येक वस्तुओं को व्यर्थ बतलाते है। सर्व साधारणका विश्वास है कि वे सोना बनाना जानते है और पारेको ऐसी उत्तमतासे शुद्ध कर देते हैं कि यदि कोई बीमार दो चावल के बराबर खाय तो सीघ्रही नीरोग और हृष्ट पुष्ट होजाय । उसके खानेसे पाचन शक्ति इतनी प्रबल हो जाती हैं कि भारी और अधिक भोजन करनेपर भी वह शीघ्र पच जाता है। जब कभी ऐसे दो फकीर मिल जाते हैं तो वे बहुत सी विचित्र बातें दिखलाते हैं। वे किसी व्यक्तिके आन्तारिक भावो को बतला देते हैं । एक घंटेमें किसी पेड़के एक डालीको जमीन में गाड़कर उसमें फल फूल और पत्ते लगा देते है और पन्द्रह मिनट में अंडेको बगलमें रखकर जो जानवर आप कहे पैदा कर देते है। जो उसी समय इधर उधर कमरेमें उड़ने लगता है। पर मुझे दुःख है कि इसके अतिरिक्त और जोकुछ मैंने इन जादूगरोंकी प्रशंसा सुनी है उसके सत्य होनेके मुझे कोई प्रमाण नहीं मिले। एकबार मेरे आकाने एक बाजीगरको बुलाया और उससे कहा कि यदि तुम कल मेरे मनकी बात बतला दोगे तो मैं तुम्हे तीन सौ रुपये दूंगा। उसी समय मैंने भी कहा कि यदि मेरे मनकी बात बतला दी जायगी तो मैंभी पचीस रुपये दूंगा । पर फिर वह कभी लौटकर हमलोगोंके मकानकी ओर न आया । एकबार और भी मैंने एक जादूगरको किसी बातपर बीस रुपये देनेको कहा था। पर फिर भी मुझे निराशही होनापड़ा। इसके अतिरिक्त मैंने आजतक कोई ऐसा विचित्र तमाशा नही देखा जिसे मैं न समझ सकता। जब कभी मैं

ऐसे तमाशेके स्थानपर जा निकलता जिसे देखकर लोग चकित होते थे तो मैं उस बाजीगरसे बहुतसे प्रश्न करता और जबतक मुझे उसकी चालाकीका पूरा पता न लग जाता तबतक मैं उसी प्रकार प्रश्न करता रहता था। मुझे स्मरण है कि मैंने एकबार एक व्यक्ति की चालाकी ताड़ली थी जिसने कहा था कि मै कटोरा दौड़ाकर चोर को पकड़ लूंगा।

कुछ फकीर केवल एक धोती पहने हुए एक सफेद चादर ओढ़े हुए नङ्गे पैर बाजारों और गलियोंमे घूमा करते हैं। ऐसे फकीर दो दो होकर फिरते हैं और हाथमें एक छोटा सा मट्टीका पात्र लिये रहते हैं। ये लोग गली गली भीख न मांगकर हिन्दुओंके घरोंमे चले जाते हैं जहां इनका बहुत आदर सत्कार होता है और घरवाले उनके आगमनसे अपनेको कृतार्थ समझते हैं।



तीसरा भाग समाप्त।

॥ सूचीपत्र ॥



ऐसे तमाशेके स्थानपर जा निकलता जिसे देखकर लोग चकित होते थे तो मैं उस बाजीगरसे बहुतसे प्रश्न करता और जबतक मुझे उसकी चालाकीका पूरा पता न लग जाता तबतक मैं उसी प्रकार प्रश्न करता रहता था। मुझे स्मरण है कि मैंने एकबार एक व्यक्ति की चालाकी ताड़ली थी जिसने कहा था कि मैं कटोरा दौड़ाकर चोर को पकड़ लूंगा।

कुछ फकीर केवल एक धोती पहने हुए एक सफेद चादर ओढ़े हुए नङ्गे पैर बाजारों और गलियोंमें घूमा करते हैं। ऐसे फकीर दो दो होकर फिरते हैं और हाथमें एक छोटा सा मट्टीका पात्र लिये रहते हैं। ये लोग गली गली भीख न मांगकर हिन्दुओंके घरोंमें चले जाते हैं जहां इनका बहुत आदर सत्कार होता है और घरवाले इनके आगमनसे अपनेको कृतार्थ समझते हैं।



तीसरा भाग समाप्त।

॥ सूचीपत्र ॥



※ पढ़ने योग्य पुस्तकें ※

राजस्थान का इतिहास	१)
मैसूर का नवाब हैदर अली	॥)
पंजाब पतन	॥)
काश्मीर पतन	॥=)
भारत का इतिहास	≡)
मयंक मोहिनी—माया महल	॥)
पुतली महल	॥)
महेन्द्रकुमार	३।)
पद्मकुमारी	१॥)
किस्मत का खेल	॥)
काली नागिन दो भाग में	१)
सिखों का साहस	=)
पूना का इतिहास	–)
चाँदी का महल	≡)
रणजीत सिंह	।)
कामिनी	–)
चन्द्रलोक की यात्रा	=)

बर्नियरकी भारतयात्रा।

(चतुर्थ खण्ड)

जिसमें
हिन्दुओंके धार्मिक विचार, भारतका स्वर्ग काशमीर,
फौज तथा तोपखाने, बादशाही खेमे, तथा
सवारी, बेगमोंकी सवारियां शिकार, लाहौर,
काशमीरके निवासी मान्शियर थेविनाटके
पांच प्रश्न और उनके उत्तर
इत्यादिका वृत्तान्त।

काशी निवासी—
बाबू रामचन्द्र वर्म्मा लिखित।

और
गंगाप्रसाद अरोड़ा अध्यक्ष कल्पतरु प्रेस
काशी द्वारा प्रकाशित।

काशी
कल्पतरु प्रेसमें सिर्फ टाविछ
गंगाप्रसाद अरोड़ा द्वारा छपा।
दिसम्बर १९१२ ई०

प्रथमवार १०००]   मूल्य आठ आना।

बर्नियरकी भारतयात्रा।

(चौथा खण्ड)

हिन्दुओंके धार्मिक विचार-भारतवर्षके साधु महात्माओं तथा फकीरोंका हाल लिखनेके उपरान्त अब मै उचित समझता हूं कि थोड़ा सा हाल हिन्दुओंके धर्म शास्त्र आदिका भी लिखूँ। यद्यपि मै संस्कृत भाषासे, जो इस समय यहां के विद्वान् पण्डितही जानते हैं और जो पहले किसी समय यहांके साधारण ब्राह्मणोंकी भाषा थी, बिलकुल अनभिज्ञ हूं, तौभी यदि मैं उन पुस्तकोंके सम्बन्धमें कुछ लिखूं तो कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है; क्योंकि कुछ तो मेरी प्रार्थनापर और कुछ अपनी इच्छासे मेरे आका दानिशमन्दखांने एक प्रसिद्ध पण्डितको अपने पास रख लिया था जो पहले शाहजहाने के बड़े बेटे दाराशिकोहके पास नौकर था। वह स्वयं तीन वर्षतक मेरे साथ रहा और उसके अतिरिक्त उसने मुझे अनेक विद्वान् पण्डितोंसे मिलाया जिन्हें वह अपने साथ ले आया करता था।

हिन्दुओंका कथन है कि ईश्वरने उनके लिये चार वेद बनाये। प्रथम अथर्व वेद, द्वितीय यजुर्वेद, तृतीय ऋग्वेद और चतुर्थ साम वेद। वेदोंके कथनानुसार हिन्दुओंकी चार जातियां हैं। पहले ब्राह्मण जो वेदादि पढ़ते या पढ़ाते हैं और अन्य धार्मिक कार्य करते हैं, दूसरे क्षत्रिय जो अवसर पड़नेपर रणक्षेत्रमें जाते हैं; तीसरे वैश्य अथवा व्यापारी जिन्हें साधारण बोलचालमें बनिया कहते हैं और

चौथे शूद्र जो उन तीनों वर्णोंकी सेवा करते हैं। इन चारों वर्णोंके लोगोंको आपसमें विवाह करनेकी आज्ञा नहीं है। हिन्दू जीवहत्या नहीं करते और न मांस खाते हैं, पर क्षत्रियोंको मांस खानेका अधिकार है। हिन्दू गऊको बहुत पवित्र समझते हैं क्योंकि उन्हें विश्वास है कि मरनेके उपरान्त स्वर्गतक पहुंचनेके लिये वैतरणी नामक नदीको गौकी दुम पकड़कर पार करना होगा। मेरी समझमें तो गऊ इसलिये पवित्र तथा पूज्य समझी जाती है कि उससे सर्व साधारणका बहुत उपकार होता है और घी तथा दूध जो हिन्दुओंके भोजनका प्रधान अङ्ग है इसीसे मिलता है। इसके अतिरिक्त बैलोंसे यहां खेतीमें बहुत सहायता ली जाती है। एक बात यह भी कह देना उचित है कि भारतवर्षमें गौओं तथा अन्य जानवरोंका पालना बहुत कठिन है क्योंकि आठ मासतक यहां अधिक गर्मी पड़ती है और भूमि इतनी कड़ी रहती है कि उसमें एक तिनका भी उत्पन्न नहीं होता। इसी लिये एक बार जहांगीरने ब्राह्मणोंकी प्रार्थनापर कुछ वर्षोंके लिये अपने राज्यकी गौहत्या बन्द करा दी थी। थोड़े दिन हुए एक बार उन्होंने यही प्रार्थना औरङ्गजेबसे भी की थी और कहा था कि गत पचास साठ वर्षोंसे इनके अधिकांश भागोंके बिना बोये जोते रह जानेका कारण यह है कि बैल कम तथा महंगे मिला करते हैं। सम्भवतः भारतवर्षके प्राचीन विद्वानोंने जिन्होंने गौहत्या न करने तथा अन्य पशुओंको न मारनेका उपदेश किया था, यह आशा की होगी कि मांस न खानेसे लोगोंकी प्रकृतिमें एक प्रकारका विशेष सुधार हो जायगा और जब वे कभी जीवहत्या न करेंगे तो आपसमें भी उनके आचरण अच्छे रहेंगे और वे कभी हत्या अथवा और दूसरे दुष्कर्मोंकी ओर प्रवृत्त न होंगे। इसी लिये उन्होंने जीवहत्याको बहुत बड़ा पाप माना है। प्रत्येक हिन्दूका धर्म है कि वह प्रातःकाल

दोपहर और सन्ध्याको नित्य स्नान और पूजा करे। ठहरे हुए पानी की अपेक्षा नदीके बहते हुए पानीमें स्नान तथा पूजा करना विशेष फल दायक समझा जाता है। निस्सन्देह भारतवर्ष जैसे गर्म देशमें इस प्रकार नहाना आवश्यक और लाभदायक है, पर जो लोग ठण्ढे देश में रहते हैं वे इस प्रकार नहानेसे हानि उठा सकते हैं।

वेदोंमें लिखा है कि ईश्वरने सृष्टिको रचने, स्थित रखने और नाश करनेके लिये तीन देवता उत्पन्न किये। प्रथम ब्रह्मा, जिसके द्वारा सृष्टि उत्पन्न हुई, द्वितीय विष्णु जो उसका पालन करता है और तृतीय महादेव अथवा संहारकर्त्ता। ईश्वरकी आज्ञासेही ब्रह्माने चारो वेदोंकी रचना की थी इसलिये ब्रह्माकी मूर्त्ति चतुर्मुखी बनाई जाती है।

मैंने बहुधा पण्डितोंको इस विषयमें वादाविवाद करते हुए सुना है, पर उनकी बात इतनी पेचीली होती है कि मेरी समझमें बिलकुल नहीं आती। कुछ पण्डितोंका कथनहैकि ईश्वर एकहीहै और उसमे तीन गुण होनेके कारण उसके तीन नाम रखे गये हैं। फादर रोआने जो जेस्विट मिशनरी थे और संस्कृतके अच्छे ज्ञाता थे मुझसे कहा था, कि हिन्दुओंकी धर्म्म—पुस्तकोंमे केवल यही नहीं लिखा कि सृष्टि सम्बन्धी तीन देवता हैं,बलकि यह भी लिखा हैकि दूसरे देवता अर्थात् विष्णुने नौ बार अवतार लिया है। उन्होंने यह भी कहा था कि जब मैं रोमको लौटते समय शीराज में ठहरा था तो वहां एक पादरीने कहा कि मैंने खूब छानबीन कर यह निश्चय किया है कि विष्णुके नौ बार अवतार लेनेका मुख्य कारण यह था कि संसारमें झेले हुए पापोंकी न्यूनता हो और लोग उससे बचें। इन अवतारोंमें आठवां अवतार बहुत प्रसिद्ध है। हिन्दू कहते हैं कि जब दैत्योंने सारे संसारको अपने अधिकारमें करके घोर पाप करना आरम्भ किया तो विष्णुने एक क्वारी कन्या

के उदरसे आधी रातके समय जन्म ग्रहण किया। उस दिन सारी रात आकाशसे फूलोंकी वर्षा होती रही । यहांतक तो यह कथा ईसाइयोंके मसीहकी जन्मकथासे मिलती हुई है पर आगे चल कर इसमें बहुत भेद पड़ जाता है। क्योंकि साथही यह भी कहा जाता है कि विष्णुने अवतार लेकर उस दैत्यको मारा जो आकाश की तरफ उड़ गया। उसकी देह इतनी बड़ी थी कि उससे सूर्य्य बिलकुल छिप गया और जब वह नीचे गिरा तो सारी पृथ्वी कांपने लगी। और वह अपनेही बोझके कारण इतना दबा कि अन्तमें रसातलतक पहुंचकर नष्ट हो गया। इस दैत्यके साथ युद्ध करने से विष्णु की जांघमें भारी चोट आई और वह गिर पड़े । उनके गिरतेही सारे दैत्य भाग गये और फिर वह उठकर स्वर्गकी ओर चले गये। हिन्दू तो कहते हैं पर वेदोंमें इस बातकी पुष्टि नहीं होती कि मुसलमानोंके अत्याचारसे हिन्दुओंको बचानेके लिये यह अवतार हुआ होगा। पण्डितोंका कथन है कि महादेव भी इस संसारमें आये हैं। वे कहते हैं कि एक राजाकी कन्या जब जवान हुई तो उसने किसी देवता से विवाह करनेकी इच्छा प्रकट की। उस समय महादेव जी अग्निका रूप धारणकर उस राजाके नगरमें पहुंचे । जब राजाको खबर लगी तो उसने यह सुसम्वाद अपनी कन्याको भेजा और महादेवजीको उसी रूपमें अपने दरबारमें बुलाया, पर मन्त्रियों तथा दरबारियोंने राजाको कन्याका विवाह न करने का परामर्श दिया । इसपर महादेवजीने उन सबोंकी दाढ़ियां जला दीं और अन्तमें उन सबोंको सपरिवार भस्म कर दिया । और स्वयं उस कन्यासे विवाह कर लिया। विष्णु जीके सम्बन्धमें हिन्दुओंका कथन है कि उनका पहला अवतार शेरका दूसरा सूअर का, तीसरा कछुएका, चौथा सांपका, पांचवां एक बौना ब्राह्मणका, छठा नृसिंहका, सातवां मच्छका, आठवां श्री कृष्ण जिनका जादू कहे

और नवां बिना दुमके बन्दरका हुआ है और दसवां एक वीर पुरुषका, होगा। इसमें सन्देह नहीं कि फादर रोआने यह सब बात वेदोंहीसे जानी थीं और जो कुछ उन्होंने मुझसे कहा वही हिन्दू भी मानते हैं।

थोड़े दिन हुए मैंने हिन्दू धर्म सम्बन्धी एक छोटी सी पुस्तक लिखी थी और उसमें हिन्दुओंकी मूर्त्तियोंके चित्र तथा उनके नाम संस्कृत अक्षरोंमें दिये थे। पर अब मैं देखता हूं कि वह सब बात फादर किरकरकी चाइना इलस्टेटा नामक पुस्तकमे दी हुई है। फादर किरकरको बहुत सी बातें उन्हें फादर रोआसे मालुम हुई थीं। इसलिये मैं आपको भी उस पुस्तकके पढ़नेकी सलाह देता हूं।

मि० हेनरी लाट और इब्राहाम रेजर का भी मैं उतनाही अनुगृहीत हूं जितना फादर रोआ और फादर किरकरका। क्योंकि बादमें मैंने उनकी लिखी हुई पुस्तकोंको भी देखा जिसमे उन्होंने हिन्दुओं सम्बन्धी सब बातोंको बड़ी ही योग्यतासे लिखा है। आगे और और बातोंको मैं उतनी सुन्दरतासे न लिख सकनेके कारण साधाणर रीतिसे लिखता हूं।

काशी--काशी अथवा बनारस एक बहुत प्रसिद्ध और सुन्दर नगर गंगाके बाएं किनारेपर बसा हुआ है। यह हिन्दुओं का बहुत पवित्र तीर्थस्थान है। भारतवर्षमे यह स्थान वैसाही समझा जाता है जैसा यूनानमें एथिन्स। यहां प्राय सारे भारतवर्ष के ब्राह्मण और पण्डित पढ़ने आते हैं। मेरी समझमें केवल यही लोग ऐसे हैं जो अपना सारा समय पठन पाठनमें व्यतीत करते हैं। युरोपके समान इस नगरमे यूनिवर्सिटिया अथवा कालिज नही है बल्कि यहां पुराने ढर्रेपर विद्यार्थियोंको शिक्षा दी जाती है। गुरु अथवा पण्डित नगरके भिन्न भिन्न भागोंमे अपने घरों पर अथवा शहरके बाहर बड़े बड़े बागोंमे जिनके लिये उन्हें उनके अध्यक्ष साहूकारोंसे आज्ञा मिल जाती है रहते हैं। प्राय, प्रत्येक

पण्डितोंके पास ४ अथवा ६ विद्यार्थी हुआ करते हैं और जो पण्डित बहुत अधिक विद्वान हो उसके पास बारह अथवा पन्द्रह विद्यार्थी तक होते हैं। पर इससे अधिक संख्या विद्यार्थियों की कहीं देखने में नहीं आती। प्रायः ब्राह्मण दश अथवा बारह वर्षतक पढ़ते हैं पर उनकी पढ़ाईमें बहुत शिथिलता हुआ करती है। क्योंकि हिन्दुस्थानमें अधिक गरमी पड़नेके कारण यहांके लोग कुछ सुस्त होते हैं और साथही उन्हें यह आशा भी नहीं होती कि यदि वे कुछ अधिक परिश्रम करें तो उन्हें किसी उपाधि अथवा सम्मानकी प्राप्ति होगी। विद्यार्थियोंको भोजन आदिका प्रबन्ध वहांके बड़े बड़े साहूकार कर दिया करते हैं।

विद्यार्थियोंको सबसे पहले संस्कृत भाषाकी शिक्षा दी जाती है। यह एक ऐसी भाषा है जो केवल यहांके बड़े बड़े पण्डितही जानते हैं। यहांकी साधारण भाषायें बहुत भिन्न हैं। फादर किरकरने जो एक वर्णमाला छपवाकर प्रकाशित की है वह संस्कृतहीकी है। यह वर्णमाला उन्हें फादर रोआसे मिली थी। ईश्वरने चारों वेदों को ब्रह्माके मुखसे इसी भाषामें कहलाया था; इसलिए हिन्दू इसे देवभाषा अथवा देववाणी कहते हैं। ब्रह्माके मुखसे निकली हुई होने के कारण वे इस भाषाको लाखों वर्षकी पुरानी मानते हैं। उनके धर्मग्रन्थ बहुत प्राचीन हैं। इसलिए किसीको उसकी प्राचीनता में सन्देह भी नहीं हो सकता। संस्कृत भाषाकी प्रायः सारी पुस्तकें पद्यमें हैं और इस भाषामें पुस्तकें भी इतनी अधिक हैं कि जिनसे बनारस में एक बड़ा कमरा बिलकुल भरा हुआ है।

जब विद्यार्थियोंको इस प्राचीन कठिन भाषाका पूरा ज्ञान हो जाता है तो वे प्रायः पुराण तथा वेदोंका अध्ययन प्रारम्भ करते हैं। एक बार काशीमें मुझे कुछ स्थल दिखलाई गई थीं; जो यदि वास्तवमें वेदही थे तो इसमें सन्देह नहीं कि वे ग्रन्थ बहुत मोटे हैं। मुझे भेंट करते आश्चर्य है कि मैं आपके शतक, चेष्टा

करनेपर भी उन्हें इसकी एक प्रति न मिली। प्राय. हिन्दू उन्हें इस डरसे छिपाके रखते है कि कही वे मुसलमानोंके हाथ न पड़ जांय और वे उन्हें जला न दें।

पुराणोंका अध्ययन कर चुकनेपर विद्यार्थी शास्त्र पढ़ते हैं। भारतवर्षमें आजतक जो बड़े बड़े आचार्य्य हो गये है उनमेसे छः बहुत प्रसिद्ध है। इन्ही छ. महात्माओ के रचे हुए तत्वज्ञानके छ ग्रन्थ (षट शास्त्र) है। इन शास्त्रोंके पढ़नेवालोंमें प्रायः आपसमें विवाद हुआ करता है। इसके अतिरिक्त एक नया सातवां शास्त्र बौद्धो मे निकला है जिसकी बारह शाखाए हैं। हिन्दुओंके इन शास्त्रमें सृष्टिकी उत्पत्तिका हाल लिखा है। कोई कहते हैं कि बहुतसे सूक्ष्म पदार्थोंके संयोगसे प्रत्येक वस्तु उत्पन्न होती है। और इसी विचारपर वे अपने और अनेक अनुमान बान्ध लेते है, जो डीमाक्रेटीस और एपीक्योरसके विचारोंसे किसी अशमें मिलते जुलते है। पर वे लोग अपने विचारोंको ऐसे उलझे हुए शब्दोंमें प्रकट करते हैं कि उनका समझना कठिन हो जाता है। कोई कहते है वस्तु की उत्पत्ति द्रव्य (Matter) और रूप (Form) सेहै और कोई कहते है कि आकाश (Nothing) से। जो लोग कहते है कि द्रव्य और रूपही मुख्य है वे अपने विद्यार्थियोंको समझाते कुम्हार समय और मट्टीके खिलौने का उदाहरण देते हैं और कहते है कि मट्टी द्रव्य है और कुम्हार उसे उलट पुलट कर उसके अनेक रूप बना देता है इसी प्रकार सब लोग भिन्न भिन्न प्रकारोंसे अपने कथनकी पुष्टि करते है।

वैद्यक शास्त्रोंके सम्बन्धमे हिन्दुओंके पास बहुतसी छोटी छोटी पुस्तके (गद्यमे) हैं और जो पुस्तके बड़ी अथवा बहुत पुरानी हैं वे पद्यमें है। मैं अभी उन्ही बातो का वर्णन किया चाहता हूं जिसमे उनका मत हमारे ग्रन्थोंसे भिन्न है। हिन्दू वैद्य कहते हैं कि

ज्वरके रोगीको भोजन देनेकी कोई आवश्यकता नहीं है और उसके लिए भूखा रहनाही अच्छा है। ज्वरके रोगीको शोरबा देना बहुतही हानिकारक है क्योंकि वह पेटमें जातेही विष हो जाता है। उनका मत है कि कुछ विशेष अवसरोंको छोड़कर जैसे सरसामका भय होनेपर अथवा छातीमे दरद पैदा होनेपर,—कभी फसद न लेना चाहिए। हमारे यहांके डाक्टर स्वयं समझ सकते हैं कि यह उपाय ठीक है या नहीं; पर हां इतना कह देना उचित समझता हूं कि भारतवर्षमे इन उपायसे लाभ अवश्य होता है। मुसलमान हकीम जो बूअली सेना और अबनरशद के मतानुसार है, वे भी हिन्दुओं के समान अपने रोगियोंको शोरबा नहीं देते। पर हिन्दुओंकी अपेक्षा मुसलमनोंमें फसद लेनेकी चाल अधिक है और आवश्यकता पड़नेपर वे एक या दो बार खून निकलवा देते हैं। पर गोआ और पेरिसके खून निकालनेकी आधुनिक रीति से यहांके लोग फसद नहीं लते बल्कि पुराने ढङ्गसे फसद ली जाती है। वे अठारह या बीस औंसतक रक्त निकलवा डालते हैं जिससे कभी कभी मूर्छा आ जाती है। और इस प्रकार वे गेलियस के आदेशानुसार जैसा मैंने प्रायः देखा है रोगको आरम्भहीमें रोक देते हैं।

यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है कि हिन्दुओंको चीर फाड़ का कुछ ज्ञान नहीं। क्योंकि वे कभी किसी मृत व्यक्ति अथवा पशुके शरीरको नहीं चीरते। जब मैं कभी अपने आकाको रक्त सञ्चालनकी रीति दिखलानेके लिये किसी भेड़ या बकरीको चीरता तो हिन्दू भयभीत होकर हमारे घरसे चले जाते थे। हिन्दू इन बातों से बिलकुलही अनभिज्ञ होनेपर भी कहा करते हैं कि मनुष्यके शरीरमें सब मिलाकर पांच हजार नसें हैं, मानो इन्होंने कभी बड़ी सावधानीसे उन्हें गिना हो।

हिन्दू अपने ज्योतिष ग्रन्थोंकी सहायतासे ...

ग्रहणका हाल पहलेही बता देते हैं और यद्यपि युरोपियन ज्यौतिषियोंके समान उनका बतलाया हुआ समय बिलकुल ठीक नहीं होता तथापि वह प्रायः ठीक उतरा करता है।

सूर्य्यग्रहणके समान चन्द्रग्रहणके सम्बन्धमें भी हिन्दुओंका विश्वास है कि एक काला राक्षस जिसका नाम राहू है, चन्द्रमाको पकड़ लेता है। हिन्दू यह भी कहते हैं कि चन्द्रमा पृथ्वीसे चार लाख कोस दूर है अर्थात् सूर्य्यसे डेढ़ लाख मील ऊंचा है। चन्द्रमा स्वयं प्रज्वलित है, और उसके द्वारा मनुष्यके शरीरमें अमृत प्रविष्ट होता है, जिससे मनुष्य सांसारिक कार्य्य करनेके योग्य हो जाता है। उनका यह भी विश्वास है कि चन्द्र, सूर्य्य और सितारे आदि भी सब देवता है। इनके कथनानुसार सूर्य्य जब सुमेरु पर्वतकी आड़मे चला जाता है तो रात होती है। वे कहते है कि सुमेरु मिस्रीके उलटे कूजेके समान पृथिवीपर स्थित है और कई हजार कोस ऊंचा है और जबतक सूर्य्य उस पर्वतके पीछेसे हटकर नही आता तबतक दिन नहीं निकलता।

पृथ्वीको हिन्दू चिपटी और त्रिकोण मानते है और कहते है कि उसमें सात द्वीप हैं। उन साता द्वीपोंके निवासी एक दूसरेसे बहुत भिन्न है और प्रत्येक द्वीप चारो ओर समुद्रसे घिरा हुआ है। उन समुद्रोंमेसे एक दूधका, दूसरा मधुका, तीसरा घीका और इसी प्रकार सब समुद्र एक दूसरेसे भिन्न है। सबसे अन्तिम अर्थात् सातवां द्वीप सुमेरु पर्वतके नीचे है, सुमेरुके निकटवाले द्वीपमे देवता बस्ते है। हिन्दू यह भी कहते हैं कि पृथ्वी बहुतसे हाथियोंके सिरोपर रखी हुई है जिनके अचानक हिलनेसे भूकम्प होता है।

जब मैं गङ्गा नदीसे होता हुआ पूरबकी ओर जा रहा था तो मैं काशीमे एक बहुत बड़े पण्डितसे मिला था जो विद्वान और प्रसिद्ध होनेके कारण शाहजहानसे दो हजार रुपये वार्षिक पेन्शन स्वरूप पाता था। वह शरीरसे खूब हृष्ट पुष्ट था और एक रेशमी धोती और लाल चादर पहना करता था। मैंने देहलीमे बादशाह तथा और अमीरोंके दरबारोंमे भी उस व्यक्तिको यही कपड़े पहने हुए

देखा है। दिल्लीके बाजारोंमें वह कभी पैदल और कभी पालकीपर घूमा करता था। एक वर्षतक वह बराबर मेरे आकाके पास इस आशासे आया करता था कि वह सिफारिश करके औरङ्गजेबसे उसकी पेन्शन फिर जारी करा दे जो औरङ्गजेबने अपना धार्मिकपन दिखलाने तथा हिन्दुओंसे द्वेष रखनेके कारण गद्दीपर बैठतेही बन्द कर दी थी। मैंने उस प्रसिद्ध पण्डितसे मित्रता करली थी और मैं उससे प्रायः बातें किया करता था। जब मैं काशीमें उससे मिला तो उसने मेरा बहुत आदर सत्कार किया और मुझे अपना पुस्तकालय दिखलाया जहां उसने और भी छः प्रसिद्ध पण्डितोंको बुला लिया था। ऐसा अच्छा अवसर पाकर मैंने विचार किया कि मूर्त्तिपूजाके सम्बन्धमें उनके विचारोंका पता लगाऊं। मैंने उनसे कहा कि मैं शीघ्रही भारतवर्षसे जानेवाला हूं। पर मुझे दुःख है कि भारतवासी मूर्त्तिपूजाके लिये बहुत बदनाम हैं जो एक साधारण बुद्धिवाला मनुष्य भी अनुचित समझता है। उन्होंने उत्तर दिया कि निस्सन्देह हमारे मन्दिरोंमें ब्रह्मा, महादेव, गणेश और गौरी आदि देवी देवताओंकी मूर्त्तियां हैं और इनके अतिरिक्त और भी अनेक देवता हैं जिनकी हम लोग पूजा करते हैं, उनपर जल अक्षत आदि चढ़ाते और उनकी आरती करते हैं पर हमारा यह विश्वास नहीं है कि वह मूर्त्तियां स्वयं ब्रह्मा या विष्णु हैं और हमलोग देवताओंकी पूजा करते हैं न कि मूर्त्तियोंकी। हमारे मन्दिरोंमें मूर्त्तियां इसलिये रखी जाती हैं कि जिसमें लोग एकाग्रचित्त होकर ईश्वराराधन करें। क्योंकि जबतक दृष्टि किसी वस्तु विशेषपर जमाकर न रखी जाय तबतक मन इधर उधर घूमा करता है। पर वास्तवमें हमारा विश्वास यही है कि संसारका उत्पत्तिकर्त्ता केवल एक ईश्वरही है। जो कुछ मेरे प्रश्नका उत्तर पण्डितोंने दिया वह मैंने ठीक ठीक लिख दिया है। पर मुझे सन्देह है कि उन्होंने जान बूझकर रोमन कैथलिकवालोंके मतसे मिलता जुलता ही अपना मत भी प्रकट किया था क्योंकि अन्य पण्डितोंके विचार उनसे बहुत भिन्न हैं। इसके उपरान्त मैंने सृष्टिके

सम्बन्धमें कुछ चर्चा छेड़ दी। सृष्टिकी उत्पत्तिका जो समय उन्होने बतलाया उससे प्रगट होता था कि वे उसे बहुत प्राचीन समझते हैं। उनका कथन था कि सृष्टिको उत्पन्न हुए चार युग हुए। उनके युग करोड़ों वर्षोंके होते है। प्रत्येक युगके वर्षोंकी ठीक संख्या जो उन्होंने मुझे बतलाई थी वह यद्यपि इस समय मुझे ठीक स्मरण तो नहीं है पर फिर भी याद पड़ता है कि पहला युग अर्थात् सतयुग पचीस लाख वर्षतक रहा और फिर बारह लाखसे अधिक वर्षतक त्रेतायुग रहा और (यदि मेरी भूल न हो तो) आठ लाख चौसठ हजार वर्षतक द्वापरयुग रहा। और यह मैं भूल गया कि वर्तमान युग अथवा कलियुग कितने लाख वर्षोंतक रहेगा। पण्डितोने कहा था कि पहले तीन युग तथा चौथे युगका कुछ भाग बीत चुका है और जिस प्रकार इन तीन युगोंके समाप्त होनेपर पृथ्वी बनी रही उस प्रकार चौथे युग की समाप्तिपर न रहेगा। चौथे युगके अन्तमे महाप्रलय होगा और सारे संसारका नाश हो जायगा। जब मैंने पण्डितोसे संसारकी उत्पत्ति होनेका ठीक ठीक समय पूछा तो उन्होंने अनेक बार कुछ हिसाब किये और जब मैने देखा कि वे उस हिसाबमें बिलकुल उलझे हुए हैं तो मैने इसी बातपर सन्तोष किया कि इनके कथनानुसार संसार बहुत पुराना है और उसकी प्राचीनता बहुतही आश्चर्य्य जनक है।

इसके उपरान्त मैंने देवताओंके सम्बन्धमें उनसे कुछ प्रश्न किये पर कुछ ठीक उत्तर न मिला। उन्होने बहुतसी बाते कहीं जिनसे मैं कुछ ठीक न कर सका; पर हां मैंने यही निश्चय कर लिया कि देवता ईश्वरका कोई अंश है। और साथही सर्व व्यापक भी है। मुझे याद पड़ता है कि मैंने उनसे लिङ्ग शरीरके सम्बन्धमें भी कुछ प्रश्न किये थे पर मुझे वही उत्तर मिला जो मैं पहले अन्य पण्डितोंसे पा चुका था और इसके अतिरिक्त और कुछ पता न लग सका कि प्रत्येक वस्तुका लिङ्ग संसारमे भिन्न भिन्न स्वरूप में व्याप्त है। जिस प्रकार एक छोटे बीजसे एक बड़ा पेड़ उत्पन्न होता है उसी प्रकार लिङ्ग शरीरसे प्रकृति और कर्मके योगसे स्थूल शरीर उत्पन्न होता

है। मनुष्य, घोड़ा, हाथी, गौ, वृक्ष, लता आदिका लिङ्ग शरीर ब्रह्माण्डमें भ्रमण करता है और अवसर पड़ने पर अन्य पदार्थोंके संयोगसे बढ़कर दृष्टिगोचर होता है। लिङ्ग शरीर अदृश्य है और स्थूल कलेवर दृश्य है।

अब मैं आपको एक और बात बतलाता हूं। थोड़े दिन हुए इसके सम्बन्धमें भारतवर्षमें बहुत हलचल मची थी। यहांतक कि पण्डितोंने इस विवादको शाहजहानके बेटे दाराशिकोह और सुलतान शुजाके सामने भी पेश किया था। आप जानते हैं कि प्रायः प्राचीन विद्वानोंका कथन है कि जीव नाम किसी वस्तु विशेषके परमाणुका समूह है। और यदि हम अरस्तू और अफलातूनके ग्रन्थों को देखें तो इस तत्वकी और भी पुष्टि हो जायगी और भारतवर्षके प्रायः सभी पण्डितोंका यही मत है और यह वही विषय है जिसके सम्बन्धमें ईरानी विद्वानों और सूफियोंमें प्रायः झगड़ा रहा करते हैं और जिसके सम्बन्धमें फारसीकी गुलशने राज नामक कविताकी पुस्तकमें बहुत कुछ लिखा हुआ है। इस सम्बन्धमें रावर्टफ्लडकी भी यही सम्मति है जिसका खण्डन मि॰ गेसेण्डीने बड़ीही योग्यतासे किया है। यह एक ऐसा विषय है जिसके सम्बन्धमें प्रायः सभी स्थानोंके विद्वान् आपसमें वादाविवाद करते हैं पर भारतीय पण्डितों ने इसकी चर्चा और भी अधिक है। वे कहते हैं कि अक्षर ब्रह्ममेंसे जीवकी उत्पत्ति हुई है। जिस प्रकार मकड़ी अपने शरीरमेंसे जाला तन देती है और जब चाहती है उसे समेट लेती है उसी प्रकार इन पण्डितोंका कथन है कि संसार एक मकड़ीके तारका जाला है और महाप्रलय होनेपर ईश्वर उस जालेको समेट लेगा। उनका विश्वास है कि महाप्रलय होनेपर सारा संसार नष्ट हो जायगा। इसी लिये वे कहते हैं कि संसार स्वप्नके समान है। यदि आप उनसे यह प्रश्न करें कि ईश्वर जो सर्वव्यापक है वह किस प्रकार इतने जीवोंमें मिले और फिर उनसे अलग हो जाता है तो वे कहते हैं कि ईश्वर सागर के समान है जिसमें बुलबुले उठते हैं। चाहे वह बुलबुले बहुत बड़े

कर कहीं चले जायं पर उसी समुद्रमें रहते हैं और यदि वह नष्टहो जाय तो फिर भी उसी समुद्रमे ही मिल जाते हैं।

इसके साथ मैं एक और पत्र भेजता हूं। यदि आप कृपाकर उसे मि० चैपेलको देदेगे तो मैं बहुत अनुगृहीत होऊंगा। इस दूर देशमें जहां कि मै शौकसे आया हूं, आप मुझे बराबर पत्र आदि लिखते रहे हैं उसके लिये भी मैं बहुत उपकृत हूं।

ग्रन्थकारका पत्र मान्शियर दी मारवेलसके नाम।

भारतका स्वर्ग काश्मीर।

महाशय,

जबसे औरङ्गजेबका स्वास्थ्य कुछ अच्छा होने लगा है तबसे यह खबर बहुत गरम थी कि आगामी ग्रीष्मकालमे गरमीसे बचनेके लिये जिसके कारण रोगके फिर बढ़ जानेका डर था, बादशाह लाहौर तथा काश्मीरकी ओर जायगा। कुछ बुद्धिमानोंको इस बात का विश्वास नहीं होता था कि ऐसी अवस्थामें जबकि उसका बाप आगरेके किलेमे कैद है, वह किस प्रकार इतने बड़े प्रवासकी तैयारी करेगा। लेकिन राज्यप्रबन्ध की अपेक्षा बादशाहको अपने स्वास्थ्यका अधिक ध्यान था। साथही रोशनआरा बेगमकी भी बहुत प्रबल इच्छा थी कि महलोको छोड़कर उससे उत्तमतर वायु सेवन की जाय और इस समय वह वैसीही शानसे फौजके साथ जाय जैसे एक बार शाहजहानके समयमे उसकी बहन बेगमसाहब गई थी।

इस लम्बी यात्राके आरम्भके लिये बड़े २ ज्यौतिपियोंने दिसम्बर (सन् १६६४) की छठी तारीखको सन्ध्याके तीन बजेका समय नियत किया था। उसी दिन बादशाहने ठीक समयपर देहलीसे अपने महलसे कूच किया और राजधानीसे छः मीलकी दूरीपर शालामार बागमें जाकर डेरा डाला और वहां पहुंचकर छः दिनोंतक इसलिये ठहरा रहा कि इस बड़ी यात्राके लिये जो डेढ़ वर्षमें समाप्त

होनेवाली थी, लोग तैयार हो जायं और आज हम सुनते हैं कि वादशाहने आज्ञा दी है कि वादशाही खेमें लाहौरकी सड़कपर लगाये जायं और दो स्थानोंपर ठहर चुकनेके उपरान्त फिर और कूचोंमें अधिक विलम्ब न लगाया जायगा।

फौज तथा तोपखाना—इस यात्रामें वादशाहके साथ केवल वही ३५००० सवार नहीं हैं जो सदा उसके साथ रहा करते हैं और न केवल वही प्यारे सिपाही हैं जिनकी संख्या १०००० से अधिक है वल्कि एक भारी तोपखाना और एक साधारण तोपखाना भी है। यह तोपखाना सदैव वादशाहके साथ रहा करता है और कभी अलग नहीं होता, क्योंकि भारी तोपखाना ऊंची नीची भूमि पड़नेपर पीछे रह जाता है और धीरे धीरे आता है। भारी तोपखाने मे सत्तर तोपें रहती हैं जिनमें अधिकांश पीतलकी हैं। ये तोपें इतनी भारी होती हैं, कि इनके खींचनेके लिये वीस वीस जोड़ी वैलोंकी आवश्यकता होती है और जब चढ़ाई जाती हैं तो इन वैलोंकी सहायताके लिये हाथीभी लगाने पड़ते हैं जो अपनी सूड़ों और सिरकी सहायतासे तोपोंके पहियोंको ढकलते हैं। साधारण तोपखानेमें पचास या साठ छोटी पीतलकी तोपें होती हैं और प्रत्येक तोप एक छोटे रङ्गे हुए तख्तेपर जड़ी होती है और सुन्दरताके लिये उनपर छोटी छोटी रङ्ग विरङ्गी झण्डियां लगी होती हैं। प्रत्येक तोपके आगे दो सुन्दर घोड़े जुते हुए होते हैं जिन्हें एक गोलन्दाज हांकता है। इसके अतिरिक्त एक २ खाली घोड़ेभी सब तोपोंके साथ चलता है। यह तोपें वहुत तेज हांकी जाती हैं और वादशाहके ठहरनेके स्थानपर इतने पहले पहुंचाई जाती हैं कि वादशाहके पहुंचतेही उसकी सलामी उतार सकें।

इतने वड़े लशकर और तोपखानेके साथ होनेके कारण लोगोंको धोखा होता है कि हम लोग कन्धारकी ओर युद्धके लिये जा रहे हैं। जो भारतवर्ष और ईरानकी सीमाके वीचमें एक अच्छा स्थान है। कन्धार वहुत सुन्दर और उपजाऊ प्रदेश है। भारत तथा ईरानके राजाओंमें इसके लिये प्रायः झगड़े तथा लड़ाइयां हुआ करती

हैं। इस यात्रासे बादशाहका चाहे जो कुछ अभिप्राय हो, पर बादशाहकी आज्ञा है कि जो लोग इस यात्रामें उसके साथ जानेवाले है अथवा जो उससे सम्बन्ध रखते हैं। शीघ्रही चलनेकी तैयारी करे; इसलिये यदि मै शीघ्रता न करूं और जानेमें देर हो जाय तो कदाचित् मेरे लिये लशकरमें सम्मिलित होना कठिन हो जायगा।

इसके अतिरिक्त मेराआका दानिशमन्दखां आजकल मेरी बहुत प्रतीक्षा किया करता है क्योकि कामोंकी अधिकतासे आजकल प्रातःकाल समय नहीं मिलता और सन्ध्याका समय जो उनसे डाक्टरी पढ़नेके लिये निकाला हुआ है, व्यर्थ नष्ट नहीं किया चाहता। उसे डाक्टरी तथा भूगोल पढ़नेका बहुत शौक है और वह गेसण्डी तथा डिस्कॉर्टस कृत ग्रन्थों को बड़े चावसे पढ़ता है।

इसलिये मैं अपनी यात्राका उचित प्रबन्धकर लेनेपर आजही रातको यहांसे प्रस्थानित हो जाऊंगा। चलनेसे पहले मुझे इतना सामान तैयार कर लेना चाहिये जितना एक प्रतिष्ठित ओहदेदारको अपने साथ रखना चाहिये। मै ३००) मासिक वेतन पाता हूं इसलिये मुझे दो अच्छे तुर्की घोड़े और एक साईसको अपने साथ रखना होगा। और साथही एक अच्छा ईरानी ऊंटभी होना आवश्यक है। एक रसोइया और खिदमतगार भी साथ जायगा जो नियमानुसार पानीकी सुराही लेकर घोड़के आगे आगे चलेगा। इसके अतिरिक्त मैने और भी आवश्यक चीजें अपने साथ रख ली हैं जैसे एक छोटा खेमा, एक कालीन, एक हलकी चारापई, एक लिहाफ, दो तकिये, कुछ रूमाल, तीन छोटे थैले जिनमें भोजन बनानेके मट्टी के बरतन तथा अन्य आवश्यक चीजे रखी जाती हैं, और एक छोटे थैलेमे आटा दाल तथा अन्य भोजनकी सामग्री इत्यादि पांच छः दिनके लिये मैने अच्छा चावल और कुछ बिस्कुट भी रख लिये हैं। इसके अतिरिक्त कपड़ेकी एक महीन थैली जिसमें लोहा लगा हुआ होता है और जो दही छाननेके काम आती है, स्मरण करके अपने साथ रख ली है क्योंकि इस देशमे कभी कभी नीबूका रस और दही छान-

होनेवाली थी, लोग तैयार हो जायं और आज हम सुनते हैं कि बादशाहने आज्ञा दी है कि बादशाही खेमें लाहौरकी सड़कपर लगाये जायं और दो स्थानोंपर ठहर चुकनेके उपरान्त फिर और कूचोंमे अधिक विलम्ब न लगाया जायगा।

फौज तथा तोपखाना—इस यात्रामें बादशाहके साथ केवल वही ३५००० सवार नहीं हैं जो सदा उसके साथ रहा करते हैं और न केवल वही प्यारे सिपाही हैं जिनकी संख्या १०००० से अधिक है बल्कि एक भारी तोपखाना और एक साधारण तोपखाना भी है। यह तोपखाना सदैव बादशाहके साथ रहा करता है और कभी अलग नहीं होता, क्योंकि भारी तोपखाना ऊंची नीची भूमि पड़नेपर पीछे रह जाता है और धीरे धीरे आता है। भारी तोपखाने मे सत्तर तोपें रहती हैं जिनमें अधिकांश पीतलकी हैं। ये तोपें इतनी भारी होती हैं, कि इनके खीचनेके लिये बीस बीस जोड़ी बैलोंकी आवश्यकता होती है और जब चढ़ाई जाती हैं तो इन बैलोंकी सहायताके लिये हाथीभी लगाने पड़ते हैं जो अपनी सूड़ों और सिरकी सहायतामे तोपोंके पहियोंको ढकलते हैं। साधारण तोपखानेमें पचास या साठ छोटी पीतलकी तोपे होती हैं और प्रत्येक तोप एक छोटे रङ्गे हुए तख्तेपर जड़ी होती है और सुन्दरताके लिये उनपर छोटी छोटी रङ्ग विरङ्गी झण्डियां लगी होती हैं। प्रत्येक तोपके आगे दो सुन्दर घोड़े जुते हुए होते हैं जिन्हें एक गोलन्दाज हांकता है। इसके अतिरिक्त एक २ खाली घोड़ेभी सब तोपोंके साथ चलता है। यह तोपे बहुत तेज हांकी जाती है और बादशाहके ठहरनेके स्थानपर इतने पहले पहुंचाई जाती हैं कि बादशाहके पहुंचतेही उसको सलामी उतार सकें।

इतने बड़े लशकर और तोपखानेके साथ होनेके कारण लोगोंको धोखा होता है कि हम लोग कन्धारकी ओर युद्धके लिये जा रहे हैं। जो भारतवर्ष और ईरानकी सीमाके बीचमे एक अच्छा स्थान है। कन्धार बहुत सुन्दर और उपजाऊ प्रदेश है। भारत तथा ईरानके राजाओंमें उसके लिये प्रायः झगड़े तथा लड़ाइयां हुआ करती

हैं। इस यात्रासे बादशाहका चाहे जो कुछ अभिप्राय हो, पर बादशाहकी आज्ञा है कि जो लोग इस यात्रामें उसके साथ जानेवाले है अथवा जो उससे सम्बन्ध रखते है। शीघ्रही चलनेकी तैयारी करें; इसलिये यदि मै शीघ्रता न करूं और जानेमें देर हो जाय तो कदाचित् मेरे लिये लशकरमें सम्मिलित होना कठिन हो जायगा।

इसके अतिरिक्त मेराआका दानिशमन्दखां आजकल मेरी बहुत प्रतीक्षा किया करता है क्योंकि कामोंकी अधिकतासे आजकल प्रातःकाल समय नही मिलता और सन्ध्याका समय जो उनसे डाक्टरी पढ़नेके लिये निकाला हुआ है, व्यर्थ नष्ट नहीं किया चाहता। उसे डाक्टरी तथा भूगोल पढ़नेका बहुत शौक है और वह गेसेण्डी तथा डिस्कार्टेस कृत ग्रन्थों को बड़े चावसे पढ़ता है।

इसलिये मैं अपनी यात्राका उचित प्रबन्धकर लेनेपर आजही रातको यहांसे प्रस्थानित हो जाऊगा। चलनेसे पहले मुझे इतना सामान तैयार कर लेना चाहिये जितना एक प्रतिष्ठित ओहदेदारको अपने साथ रखना चाहिये। मै ३००) मासिक वेतन पाता हूं इसलिये मुझे दो अच्छे तुर्की घोड़े और एक साईसको अपने साथ रखना होगा। और साथही एक अच्छा ईरानी ऊंटभी होना आवश्यक है। एक रसोइया और खिदमतगार भी साथ जायगा जो नियमानुसार पानीकी सुराही लेकर घोड़के आगे आगे चलेगा। इसके अतिरिक्त मैने और भी आवश्यक चीजें अपने साथ रख ली हैं जैसे एक छोटा खेमा, एक कालीन, एक हलकी चारापई, एक लिहाफ, दो तकिये, कुछ रूमाल, तीन छोटे थैले जिनमें भोजन बनानेके मट्टी के बरतन तथा अन्य आवश्यक चीजें रखी जाती है, और एक छोटे थैलेमे आटा दाल तथा अन्य भोजनकी सामग्री इत्यादि पांच छः दिनके लिये मैने अच्छा चावल और कुछ बिस्कुट भी रख लिये है। इसके अतिरिक्त कपड़ेकी एक महीन थैली जिसमें लोहा लगा हुआ होता है और जो दही छाननेके काम आती है, स्मरण करके अपने साथ रख ली है क्योंकि इस देशमें कभी कभी नीबूका रस और दही छान-

कर पीना पड़ता है जिससे वहुत लाभ होता है। यह सब चीजे एक बड़े थैलेमें इस प्रकार वेढङ्गी वान्धकर रखी गई हैं कि चार आदमी बड़ी कठिनतासे उसे उठाकर निकटही बैठे हुए ऊंटपर लाद सकते हैं। इतनी बड़ी यात्रा आनन्दपूर्वक समाप्त करनेके लिये उपयुक्त चीजोंमेसे एकभी व्यर्थ नहीं है। क्योंकि इस देशमें हमको फ्रान्स की सराएं अथवा उनमें मिलनेवाले सामानोके दर्शनभी नहीं हो सकते। ठहरनेके लियेभी हमें वही डेरा मिलता है जो हमे नित्य अरबनिवासियोंकी तरह एक स्थानसे उखाड़कर दूसरे स्थानपर लगाना पड़ता है और हम अपनी आवश्यकताओंको पूरा करनेके लिये लूट खसोट भी नहीं कर सकते क्योंकि भारतवर्षमे प्रजाके धनपर हाथ चलाना मानों बादशाहका धन लूटना है।

इस लम्बी यात्राका ध्यान करके मुझे इसीलिये प्रसन्नता होती है कि एक तो मैं उत्तरकी ओर यात्रा कर रहा हूं और दूसरे यह कि कुछ साधारण वर्षा भी हो चुकी है और शरद ऋतु आरम्भ हो रही है और वास्तवमें हिन्दुस्थानमें यात्रा करनेके लिये यही ऋतु अधिक उपयुक्त है। क्योंकि वर्षा हो जानेके उपरान्त गरमी और गर्द भी इतनी अधिक नहीं रहती कि जो सहन न हो सके। मेरी प्रसन्नताका एक और कारण यह है कि अब मुझे देहलीके बाजारोंकी पकी हुई खराब रोटी खानेको न मिलेगी और पीनेके लिये जलभी अधिक उत्तम मिलेगा क्योंकि इहां जिस तालाब अथवा नदीमें पीनेका जल होता है उसमे मनुष्य और पशु सदा नहाया करते हैं जिसमे वह पानी सदा गन्दा बना रहता है जिसके पीनेसे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। सबसे बड़ा रोग यह होता है कि पिण्डलीमें कीड़े पड़ जाते हैं जिसे नहरुआ कहते हैं जिससे बहुत कष्ट होता है। इसका उपाय केवल यही है कि देहलीका रहना छोड़ दिया जाय। लेकिन फिरभी रोगी वर्षोंतक कष्ट पाते रहते हैं। यह कीड़े चिकारेकी तांतके समान लम्बे होते हैं और इन्हे देखकर नसका धोखा होता है। इन कीड़ोंको बड़ी सावधानीसे निकालना चाहिये जिसमें ये टूट न जायं; और सबसे सरल उपाय निकालनेका यह है कि एक तिनकेपर

लपेटकर रोज थोड़ा थोड़ा निकालते जायं।

पर अब मुझे निश्चय हो गया है कि भविष्यमें मुझे इस प्रकार कष्ट न उठाना पड़ेगा; क्योंकि मेरे आकाने आज्ञा दी है कि एक अच्छी ताजी रोटी और गङ्गाजलकी एक सुराही रोज प्रातःकाल मुझे मिला करे क्योंकि और अमीरोंकी तरह मेरे आकाने भी बहुतसे ऊँट गङ्गाजलके लदवा लिये है।

सुराही टीनके बने हुए एक प्रकारके बर्तनको कहते हैं जिसके ऊपर लाल कपड़ा मढ़ा हुआ होता है और जिसे एक खिदमतगार अपने हाथमें लेकर घोड़ेके आगे २ चलता है। साधारणतः एक सुराहीमें एक सेर पानी आता है, पर मैंने अपने लिये एक बड़ी सुराही बनवाई है जिसमें दो सेर पानी आ सकता है। आशा है कि इस प्रकार मुझे और भी सरलता होगी; यदि उसके ऊपर मढ़ा हुआ कपड़ा तर रहे और खिदमतगार उसे हवामें हिलाता रहे अथवा वह सुराही किसी हवादार स्थानमें रखी जाय जिसमें जमीनकी गरमी उसे न लगसके तो उसमेका जल बहुत ही ठन्ढा हो जाता है। कपड़ेका गीला होना और सुराहीका ऊंचे स्थान पर रखा जाना बहुत आवश्यक है; क्योंकि कपड़ेके तर रहनेसे वह गरम वाष्प पानी तक नहीं पहुंच सकती जो उसे गरम कर देती है। जिस प्रकार शीशेमेंसे प्रकाश तो आ सकता है लेकिन पानी नहीं आ सकता उसी प्रकार उस सुराहीमें कपड़ेके कारण गरमी न पहुंच कर केवल ठण्ढकही पहुंचती है। यह सुराहियां विदेशमें अधिक उपयोगी होती हैं। पर जब हम लोग अपने घरपर रहते हैं तो पानी बड़े बड़े मटकोंमें जो मट्टीके बने होते हैं, रखा जाता है और उनपर तर कपड़ा रखा जाता है। यदि इन मटकोंको हवामें रख दिया जाय तो इनका पानी और भी अधिक ठण्डा रहता है।

बड़े बड़े अमीर चाहे वह शहरमें रहें अथवा विदेशमें, सदा पानी ठण्ढा करनेके लिये शोरेका उपयोग करते हैं। जस्तेकी सुराहीमें पानी डालकर ऐसे पानीमे उसे हिलाते हैं जिसमें तीन चार मुट्ठी शोरा

डाला होता है । इस प्रकार सुराहीके अन्दरका पानी ठण्डा हो जाता है । पहले मैं समझता था कि इस उपायसे पानी खारा और हानिकारक हो जायगा; पर पीछे मालूम हुआ कि इससे पानीके स्वाद अथवा गुणमें किसी प्रकारका भेद नहीं पड़ता । पर अब मैं सोचता हूं कि ऐसी अवस्थामें जब कि ऐसे गरम देशमें मुझे एक बड़ी यात्रा शीघ्रही करनी है और मुझे नित्यका असबाब उतारने चढ़ाने और खेमा लगानेकी चिन्ता लगी हुई है, मैं यह सब झगड़े क्यों ले बैठा ।

अस्तु, अब मैं चलनेकी तैयारी करता हूं । आशा है कि मैं भविष्यमें अपनी यात्राका पूरा हाल समय समयपर आपको लिखता रहूंगा ऐसे अवसरपर जबकि किसी शत्रुका भय नहीं है बलिक शानके साथ यात्रा होगी और फौज धीरे धीरे कूच करेगी, मैं सब वृत्तान्त लिखता रहूंगा जिसमें लाहौर पहुंचतेही आपकी सेवामें भेज सकूं ।

ग्रन्थकारका दूसरा पत्र मान्शियर दी मारवेलसके नाम ।

महाशय,

अब मैं इस राजसी कूच और यात्राका हाल लिखता हूं । लाहौरसे देहली अनुमान सवा सौ लीग (३७५ मील) है । पर हम को लाहौर पहुंचनेमें दो मास लगे । कारण यह है कि बादशाह फौज का एक बड़ा भाग लेकर शिकार खेलनेके लिये सड़कसे अलग हो गया । इसलिये हम लोग सीधी सड़कको छोड़कर दाएं हाथके जङ्गलमें घुसे और बादशाहके इच्छानुसार धीरे धीरे कूच होता रहा । इतनी लम्बी लम्बी घासमें जिसमें सवारभी छिप सकते हैं सब प्रकार के जङ्गली पशुओंका शिकार होता रहा और सब प्रकारका शिकार अधिकतासे मिलता रहा । अब हम लोग एक सुन्दर नगरमें ठहरे हुए हैं और इस समय मुझे अपना समय बितानेके लिये इससे अच्छा कोई काम नहीं दिखलाई देता कि मैं उन सब बातोंको लिखूं जो

मुझे उचित मालूम होती हैं । मुझे आशा है कि मैं शीघ्रही आपको काशमीरकी सैर कराऊंगा और आपको एक ऐसा देश दिखाऊंगा जो संसारमें सबसे अधिक सुन्दर है।

बादशाही खेमे—जिस समय बादशाह लशकर सहित यात्रा करता है तो उसके साथ डबल खेमे होते हैं । एक खेमा अन्य आवश्यक वस्तुओं सहित आगे जाता हैं ओर दूसरा बादशाहके साथ रहता है। पेशखाना जो बादशाहके आगे जाता है, एक दिन पहलेहीसे तैयार रहता है जिसमें बादशाहको आगे पहुंचतेही सब सामान तैयार मिले । एक पेशखानको उठाकर एक स्थानसे दूसरे स्थानतक ले जानेके लिये साठ या सत्तर हाथी, दो सौ ऊंट, सौ खच्चर, और सौ मजदूरे आवश्यक होते है। भारी सामान जैसे बड़े बड़े डेरे और बड़ी अड़ी लकाड़ियां आदि हाथियोपर, छोटे डेरे ऊंटोपर तथा बावर्चीखानेका सामान खच्चरोपर लादा जाता है। बहुमूल्य हलकी चीजे जैसे चीनीके बर्तन जिनमें बादशाह भोजन करता है, और अन्य बहुमूल्य वस्तुएं मजदूरोंपर लादी जाती हैं।

पेशखानेके नियत स्थानपर पहुंचतेही दारोगा एक उत्तम स्थान बादशाही खेमा लगानेके लिये ठीक करता है और इस बातकी चेष्टा करता है कि जहांतक हो सके बाकी सब खेमे भी क्रमसे वहां लग सकें। तीन सौ हाथ लम्बा और उतनाही चौड़ा एक चौरस स्थान नियत करके घेर लिया जाता है और सौ बेलदार उसे साफ करके कुछ ऊंचा कर देते है । इसके उपरान्त उसके चारो ओर ७ या ८ फरान्सीसी फीट लम्बी कनाते गाड़ दी जाती हैं । इन कनातोंकी रस्सियां खूंटियोमे बान्ध दी जाती हैं और प्रत्येक दस कदमकी दूरी पर दो दो लकाड़ियां इस प्रकार गाड़ दी जाती हैं कि उनका ऊपरी सिरा एक दूसरेसे मिल जाता है । यह कनाते कपड़ोंकी बनी होती है जिनपर बहुत सुन्दर बेल बूटे बने होते है। बादशाही ड्योढ़ी जो इस चौरस चबूतरेके एक ओर बीचमे बनाई जाती है बहुतही सुन्दर और बड़ी होती है; और उसकी कनाते उन कनातोंकी अपेक्षा अधिक

सुन्दर और बहुमूल्य होती हैं जो बड़े चबूतरेके चारों ओर होती है । सबसे बड़ा डेरा जो पहले लगाया जाता है आम व खास कहलाता है । इस स्थानमे बादशाह अमीरों सहित नित्य प्रातःकाल नौ बजे बैठकर राजकार्य्य किया करता है । भारतीय राजे चाहे राजधानीमें रहे अथवा विदेशमें, नित्य दिनमें दो बार दरबार करते हैं । यह दरबार यहां बहुतही आवश्यक समझा जाता है और इसमे कभी त्रुटि नहीं होती । दूसरा डेरा जो कुछ छोटा और कुछ अन्दरकी ओर बढ़ा हुआ होता है, गुस्लखाना कहलाता है। देहलीकी तरह यहां भी नित्य सन्ध्याके समय सब अमीर बादशाहको सलाम करने जाते है। इस सन्ध्याके दरबारसे अमीरोंको बहुतही कठिनता होती है पर जब वे बादशाही खेमेकी ओर साथमें जलती मसालें लिये हुए जाते अथवा वहांसे आते हैं तो बड़ाही सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। यद्यपि फ्रान्सकी तरह यहांकी मशालें मोमबत्तीसे नहीं बनाई जातीं तथापि उनमें प्रकाश अधिक होता है और वे देरतक जलती हैं । पहले एक लकड़ीपर लोहा जड़ा जाता है और फिर उसपर गूदड़ लपेटा जाता है जो तेलसे तर कर दिया होता है। मशालची हाथमें एक पीतलके बर्तनमें जिसका मुँह पतला होता है तेल लिये रहते हैं और आवश्यकता पड़नेपर वह तेल मशालपर डालते रहते हैं।

इन दोनोंसे छोटा तथा और अन्दर बढ़कर एक तीसरा खेमा होता है, जिसे खिलवतखाना कहते हैं । इस खेमेमें बड़े बड़े प्रसिद्ध अमीरों और मन्त्रियोंके अतिरिक्त और कोई नहीं जाने पाता और वहां राज्यके गूढ़ विषयोंपर विचार किया जाता है । खिलवतखानेके उपरान्त स्वयं बादशाहके खेमे होते हैं जिनके चारों ओर छोटी छोटी कनातें जिनकी ऊँचाई चार हाथसे अधिक नहीं होती, लगी रहती हैं। उन कनातोंमेंसे किसी किसीपर तो मछलीपट्टनकी बढ़िया छींट, होती है . जिसपर भांति भांतिके बेल बूटे बने होते हैं और किसी किसी पर रेशमी झालर लगी हुई जाली टंकी होती हैं । बादशाही खेमोंके सामने बेगमोंकी चाकरानियों तथा बड़ी बड़ी बान्दियोंके डेरे

लगाये जाते है। यह डेरे भी सुन्दर कनातोंसे घिरे होते हैं । इनके सामने साधारण लौंडियों तथा अन्य टहलनियोंके खेमे होते हैं । ये डेरे क्रमसे उन लौंडियोंके योग्यतानुसार लगाये जाते हैं।

आम व खास तथा अन्य पांच छः खेमे बहुत ऊंचे होते हैं । इसके दो कारण हैं; एक तो यह कि गरमीका प्रभाव कम पड़े और दूसरा यह कि दूरसे पहचाने जा सके । इनके बाहरकी ओरका कपड़ा खूब मजबूत और लाल रङ्गका होता है जिसपर सजावटके लिये बड़ी बड़ी रङ्गीन पट्टियां लगी होती हैं । इसके अन्दरकी ओर सुन्दर मछलीपट्टनकी छींटे होती हैं जो इसी कामके लिये बनाई जाती हैं और उसपर रेशम अथवा लाल और सफेद जरीकी कारचोबी अथवा चिकन लगी होती है । इसमें तीन चार मोटे रूईके गद्दोंका फर्श होता है और उसपर बहुमूल्य कालीन और जरबफ्तके आराम तकिये पड़े होते हैं।

यह दोनों डेरे जहां बैठकर बादशाह राजकार्य्य करता है, बड़े सुन्दर होते हैं; यहीं एक मखमली या रेशमी चन्दुएके नीचे बैठकर वह लोगोंका मुजरा लिया करता है। और डेरोंमे भी ऐसेही खेमे बने होते हैं पर उनमे छोटी कोठरियां बनी होती है जिनमे चांदीके ताले बन्द किये जाते हैं । इन कोठरियोंके चारो ओर हलके पतले तख्ते लगे होते हैं, जिनपर बाहरकी ओर रङ्ग अथवा मुलम्मा किया होता है और उसकी छत गुम्बदकी सी होती है और सजावट के लिये इसपर रेशमी अथवा जरीकी झालर लगे हुए परदे लगे होते हैं। इन सब बातोंके लिख चुकनेपर मुझे विश्वास होता है कि अब इस चौकोर जमीनपर बना हुआ कोई ऐसा खेमा अथवा स्थान नहीं बचा जो वर्णन करनेके योग्य हो।

अब इस चौकोर चबूतरेके बाहरकी ओर देखनेसे पहले दो सुन्दर डेरे दिखाई देते हैं जो बादशाही ड्योढ़ीके दोनों ओर बने होते है । यहां कुछ अच्छे सजे हुए कोतल घोड़े खड़े रहते हैं जो अचानक कोई आवश्यक कार्य्य आ पड़नेपर काम आते हैं । पर

सबसे अधिक इन घोड़ोंके रखनेका अभिप्राय शान दिखलानाही है।

शाही ड्योढ़ीके दोनों ओर साधारण तोपखानेकी पचास साठ तोपें लगी हुई होती हैं। जिस समय बादशाह खेमेमे पहुंचता है उस समय लश्करवालोंको सूचित करनेके लिये इन्हीं तोपोंसे सलामी उतारी जाती है। बादशाही ड्योढ़ीके सामने थोड़ा सा स्थान खाली छोड दिया जाता है और उसमें कोई खेमा आदि नहीं लगाया जाता। उसके एक कोनेमें एक बड़ा डेरा खड़ा किया जाता है जिसे नक्कार-खाना कहते हैं; क्योंकि उसमे नक्कारे तथा शहनाइयां रहती हैं। इस डेरेके निकट एक और डेरा होता है जिसे चौकीखाना कहते हैं। यहां नियमानुसार सब अमीर चौबीस घण्टेतक पहरा देते हैं; पर प्रायः अमीर अपने सुख तथा सरलताके लिये एक और डेरा चौकी-खानेके निकट खड़ा कर लेते है।

इस बड़े चौकोर चबूतरेके बाकी तीनों ओर थोडी थोड़ी दूरीपर कुछ अमीरों तथा आवश्यक सामान रखनेके खेमे होते हैं। यदि स्थान सङ्कीर्ण न हो तो यह खेमे बिलकुल सीधे लगाये जाते हैं। इन सामान रखनेके खेमोंके भिन्न भिन्न नाम होते हैं; पर मै आपको हिन्दी भाषा सिखलाने नहीं बैठा हूं इसलिये उनका नाम न बतला कर केवल उन खेमोंका हालही बतलाना उचित समझता हूं। इन डेरोंमेसे किसीमे बादशाही हथियार, किसीमें बहुमूल्य जीन तथा साज, किसीमे कमख्वाब और जरीकी कबाएं, जो बादशाहकी ओर से इनाममें दी जाती हैं, रखी रहती है। इसके अतिरिक्त चार और खेमे होते है जिनमें गङ्गाजल रखा जाता है और अनेक प्रकारके मेवे तथा मिठाइयां, हलुवे तथा पान आदि रखे जाते हैं। पान एक प्रकार का पत्ता है जो कई प्रकारके मसाले लगाकर तैयार किया जाता है। यह पान उन लोगोंको मिला करता है जिनपर बादशाहकी अधिक कृपा हुआ करती है। इसके खानेसे मुँह सुगन्धित और होंठ लाल हो जाते हैं। इसके साथ पन्द्रह सोलह डेरे और होते हैं जिनमें भोजन बनता है और स्वाजेमरा आदि रहते हैं। सबके अन्तमें छः डेरे और

होते है जो वहुत लम्बे होते हैं और जिनमे घोड़े रखे जाते हैं। इसके वाद और अनेक डेरे होते है जिनमें शाही सवारीके हाथी और शिकारी जानवर जो सदा वादशाहके साथ रहते है, रखे जाते है! इसके अतिरिक्त और खेमोमे शिकारी कुत्ते और चीते जो हरिन और नीलगायको पकड़ते हैं, शेर और गेण्डे जो दिखानेके लिये होते हैं और जङ्गली भैसे जो शेरोका मुकावला करते है, रखे जाते है।

वादशाही खेमेसे केवल उन्ही खेमोका तात्पर्य्य नहीं है जो वादशाहसे सम्बन्ध रखते है बल्कि वह सब खेमे जिनका वर्णन मैने अभी किया है, उसीमे सम्मिलित है। इस वादशाही खेमेके लिये यह वहुत ही आवश्यक वात है कि फौजी सिपाहियोका खेमा सदा इसके चारो ओर रहे।

अव आप स्वयं समझ लेगे कि यह वादशाही खेमा कितना शानदार है। इन लाल खेमोका एक समूह जव चारो ओर फौजसे घिरा हुआ दूरसे दिखाई देता है तो वहुत ही सुहावना मालूम होता है; विशेषकर ऐसी अवस्थामे जवकि स्थानकी अधिकताके कारण फौजी सिपाही आपने इच्छानुसार खूव फैल फैलकर डेरे डाला करते है।

जैसा कि मैने अभी लिखा है सबसे पहले दारोगा एक उत्तम स्थान नियत करके सवसे पहले आम व खासका खेमा किसी ऊंचे स्थानपर लगाता है। इसके उपरान्त वह वाजार वनवाता है जहांसे सव लोगोको रसद मिलती है। वड़ा वाजार एक लम्बी सड़कके समान कभी शाही खेमेके दाहिने ओर और कभी वाएं ओर इस प्रकार वनाया जाता है कि सारे लशकरके अन्तिम भागतक चला जाता है। जहातक सम्भव होता है वाजार उसी ओर लगाया जाता है जिधर लशकरको कूच करना होता है। इससे छोटे छोटे वाजार जो लम्वाई और चौड़ाईमे इस वाजारसे कम होते हैं और जिनका रास्ता इसी वड़े वाजारसे होता है शाही खेमेके निकट ही वनाये जाते हैं। प्रत्येक वाजारमे पहचाननेके लिये एक वहुत ऊंचा लाल झण्डा जिसके सिरपर सुरागायकी दुम लगी होती है, खड़ा किया

जाता है। इसके उपरान्त अमीरोंके खेमोंके लिये स्थान बनाया जाता है। अमीरोंके खेमे बादशाही खेमेके चाहे दाहिनी ओर हो और चाहे बांई ओर, पर प्रत्येक खेमा वहांसे कुछ नियत दूरीपर खड़ा किया जाता है।

और और अमीरों तथा राजाओंके डेरे भी ठीक इसी प्रकार बनाये जाते हैं। यह लोग भी इसी तरह पेशखाना रखते हैं और उनके खेमे भी उसी प्रकार कनातोंसे घेरे जाते हैं। इन कनातोंके बाहर और सवारों तथा सरदारोंके खेमे होते हैं। सब राजाओं-के साथ बाजार होते हैं जिनमें उनकी फौजके दूकानदार छोटी छोटी पाले लगाकर घी चावल आदि बेचा करते हैं। इन बाजारोंमें प्रायः वह सब चीजे मिल सकती हैं जो किसी बड़े शहरमें बिकती हैं। प्रत्येक बाजारके दोनों सिरोंपर एक एक झण्डा होता है जिसमें,प्रत्येक अमीरका खेमा दूरहीसे पहचाना जा सकता है। यद्यपि बड़े बड़े अमीर और राजे अपने डेरे ऊंचे रखते हैं मगर वह डेरे इतने ऊंचे नहीं होते कि उन पर बादशाहकी दृष्टि पड़ जाय और वह उनके गिरा देनेकी आज्ञा दे जैसा कि हालहीमें इसी यात्रामें उसने किया था। साथही यह भी आवश्यक है कि उनकी कनातोंके बाहरी कपड़ोंका रङ्ग लाल न हो क्योंकि यह रङ्ग केवल बादशाही खेमोंहीके लिये है। इन खेमोंका मुंह भी सदा बादशाही खेमे और आम व खासकी ओर रखना होता है।

बादशाही तथा अमीरोंके खेमे और बाजारके बीचमें जो स्थान बचता है उसमें छोटी श्रेणीके अमीर, मन्सबदार, व्यापारी और दूकानदार आदि जो अनेक कारणोंसे लश्करके साथ होते हैं अपने खेमे खड़े करते हैं। यह खेमे अनगिनत होते हैं और इनके खड़े होनेके लिये जमीनका बहुत बड़ा भाग आवश्यक होता है।

कुछ युरोपियन यात्रियोंने इन लश्करके आदमियोंकी संख्या और खेमोंकी जमीनकी लम्बाई बतलानेमें अत्युक्तिसे काम लिया है। पर मेरी समझमें जब किसी खुले स्थानमें डेरा पड़ता है और सब

लश्करके खेमे सुभीतेसे गाड़े जाते है तो उसकी लम्बाई छः या सात मीलसे अधिक नहीं होती। इसमें भी कहीं कहीं बहुतसा स्थान योंही खाली रह जाता है। हां ऐसे अवसरपर मैं यह कह देना आवश्यक समझता हूं कि भारी तोपखाना जिसके लिये अधिक स्थान की आवश्यता होती है, सदा आगे चलाया जाता है। नव-आगन्तुक को इस खेमेमें आतेही जितना शोर सुनाई देता है और उसको जिस प्रकार चकित होना पड़ता है उसके वर्णन करनेमे अत्युक्ति की गई है। पर यदि आपको इस लशकरके सम्बन्धमे थोडा भी ज्ञान हो जाय तो आपका आश्चर्य्य मिट जायगा और फिर आप शीघ्रही आवश्यकता पड़नेपर जहां चाहे पहुंच सकते हैं।

वादशाही तथा अन्य अमीरोंके खेमे और सुरागायकी दुमके निशानवाले झण्डे जो बाजारोंमें लगते है और जो दूरसे दिखाई देते है, कुछ दिनोके बाद इतने परिचित हो जाते है कि कभी विस्मृत नहीं हो सकते। पर इतने निशान आदि होनेपर भी कभी कभी डेरे तथा खेमे पहचाननेमें बड़ी कठिनता होती है। विशेषकर प्रातःकाल के समय जबकि फौज अपने स्थानपर आती है, प्रत्येक व्यक्ति, चारों ओर अपने डेरे ढूंढनेके लिये इधर उधर दौड़ता है और गर्दके कारण यह सब निशान छिप जाते है तो वादशाही खेमे, बाजार तथा अमीरोंके खेमोका ठीक पहचानना असम्भव हो जाता है। इसके अतिरिक्त उन खेमोंके कारण और भी अधिक कठिनता होती है जो खड़े किये जानेके लिये जमीनपर फैलाय होते हैं; और उन रस्सियोंके कारण भी रास्ता नहीं मिलता जो अमीर लोग अपना स्थान घेरने और लोगोको वहां आनेसे रोकने के लिये बाधा देते हैं। उन अमीरोंके नौकर चाकर हाथोमें डण्डे लिये खड़े रहते हैं और न तो उन रस्सियोको सरकानेही देते हैं और न नीची करने देते हैं और फिर पीछे लौटना पड़ता है और यदि उधरसे लौटनेमें कभी कुछ विलम्ब हो जाय तो फिर दूसरी ओरका रास्ता भी उसी प्रकार वन्द हो जाता है।

ऐसी अवस्थामें जबकि मार्गमें आपके ऊंट लदे हुए खड़े हों, उनके निकलनेका इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है कि आप उनके नौकरो को धमकाइये और उनकी खुशामद भी कीजिये। समझाने बुझानेके साथही इस प्रकार उनपर बिगड़ना भी पड़ता है कि मानो अभी उन्हें आप मार बैठेंगे। पर हां, मारनेकी इच्छासे कभी उनपर हाथ न उठाना चाहिये। इस प्रकार उन्हें केवल डरा धमकाकर यह समझा दीजिये कि इसका परिणाम बुरा होगा और फिर उन्हे मिलाकर अपना काम निकालिये और ऊंटोंको ले जाइये। सन्ध्याके समय जब कहीं किसी कामके लिये बाहर जाना पड़ता है तो उस समय भी बहुत कठिनता होती है। क्योंकि उस समय सब लोग भोजन बनाते हैं और उसके लिये उपले, ऊंटोंकी मेंगनियां और गीली लकड़ियां जलाते हैं। इन अनगिनत चूल्होंका धुआं विशेषकर ऐसी अवस्थामें जबकि हवा बहुत कम हो, असह्य हो जाता है। मैं भी तीन चार बार इस धूएंमें फँस गया था और अनेक चेष्टाएँ करने पर भी रास्ता न पा सका था; चारों ओर बहुत देरतक मैं घूमता रहा पर कुछ पता न लगता था कि किधर जाना चाहिये। एक बार तो ऐसा हुआ था कि धूएंके शान्त होजाने और चन्द्रमाके निकलने तक मुझे एक स्थानपर ठहर जाना पड़ा और दूसरी बार बड़ी कठिनतासे 'आकाश दीप' तक पहुंचा और रातभर घोड़े और साईस सहित उसीके नीचे पड़ा रहा। यह 'आकाश दीप' जहाजके बड़े मस्तूलके समान ऊंचा होता है और उतारनेपर उसके तीन टुकड़े हो जाते हैं। यह बादशाही खेमेकी ओर नक्कारखानेके निकट लगाया जाता है। रातके समय इसपर एक लालटेन लटका दी जाती है। इसके लटकानेसे सर्वसाधारणको बहुत लाभ होता है क्योंकि इस धूएं और अन्धकारमें जब कुछ दिखलाई नहीं देता और लोग रास्ता भूल जाते हैं तो चोरोंसे बचनेके लिये यहीं रात बिताते हैं अथवा यहां आकर अपने डेरोंका पता लगा लेते हैं।

चोरोंसे बचनेके लिये सब अमीर अपने अपने डेरोंपर चौकीदारों

का पहरा रखते हैं जो रातको डेरोंके पास गश्त लगाते और 'खबरदार, खबरदार' कहकर पुकारते हैं। इसके अतिरिक्त सारे लश्कर के चारो ओर पांच पांच सौ कदमकी दूरीपर पहरेदार खड़े रहते हैं और अपने पास आग जलाये रहते और 'खबरदार, खबरदार' कहकर पुकारते हैं। कोतवाल भी चारों ओर अपने सिपाही भेजता है जो विशेषकर बाजारोंकी रक्षा करते हैं और शोर करते तथा नरसिंघा बजाते रहते हैं। इतना सावधान रहनेपर भी यहां प्रायः चोरी हुआ करती है इसलिये अधिक सचेष्ट रहना चाहिये; और नौकरो तथा पहेरदारोका अधिक विश्वास न करना चाहिये; और रातके पहले भागमे सोना चाहिये, जिसमें पिछली रातमे जागते रहें और अपना माल न खो बैठें।

बादशाही सवारी—अब मैं उन सवारियोंका वर्णन करना उचित समझता हूं जिनपर बादशाह इस यात्रामे चढ़ता है। प्रायः बादशाह एक तख्तपर सवार हुआ करता है जिसे कहार उठाते है। यह तख्त एक प्रकारका लकड़ीका बंगला होता है जिसमे रोगन और मुलम्मा किये हुए खम्भे तथा शीशेकी खिड़कियां होती हैं जो आंधी पानीके समय बन्द कर दी जाती हैं। उसके चारो डण्डे जो कहारोंके कन्धोपर होते हैं, लाल रङ्गकी बानात या कमख्वाबसे मंढे होते है और उसमें जरी या रेशमकी कामदार झालर लगी होती है। प्रत्येक डण्डेको दो कहार उठाये रहते हैं जिनकी बदली और सहायताके लिये आठ और कहार साथ चलते हैं। कभी कभी बादशाह घोड़ेपर भी सवार होता है। विशेषकर ऐसी अवस्थामें जबकि समय सुहावना और शिकार खेलनेके योग्य हो और कभी हाथीपर मेघडम्बर या हौदेमें सवार होता है जो बहुतही सुन्दर और शानदार होता है। मेघडम्बर मुलम्मा किया हुआ लकड़ीका एक चौकोर बङ्गला होता है और हौदा भी प्रायः वैसाही बना होता है जिसके सुनहरे खम्भोपर एक बहुमूल्य शामियाना होता है।

कूचके समय बादशाहके साथ बहुतसे अमीर और राजे होते हैं

जो उसके पीछे पीछे घोड़ोंपर चलते हैं, यह लोग इस वेढङ्गे तौरसे चलते हैं कि विलकुल भीड़ सी हो जाती है। कूचके दिन प्रातःकाल प्रायः सभी अमीर वादशाहके सामने आम व खासमें हाजिर होते हैं। कूचके दिन और विशेपकर जिसमें शिकार भी हो, सब अमीर वहुत थक जाते हैं क्योंकि उस दिन उन्हें दिनभर धूपमें साधारण सिपाहियोंकी तरह दौड़ना पड़ता है। पर जव इन अमीरोंको वादशाहके साथ नहीं जाना पड़ता तो वेलोग वड़े आनन्दसे यात्रा करते हैं। न तो उन्हें धूपही सताती है और न गरद। वे लोग खुली या वन्द पालकीमें इस प्रकार जाते हैं मानो किसी पलङ्गपर लेटे हो। इस प्रकार वह अपने खेमोंमे आनन्दसे पहुंच जाते हैं जहाँ उन्हे उत्तम भोजन और सव आवश्यक पदार्थ तैयार मिलता है; क्योंकि यह सव सामान रातहीको भोजनोपरान्त आगे भेज दिया जाता है। सवारीके समय इन अमीरोंके आगे पीछे वहुतसे सवार जिनको गुर्जवरदार कहते हैं और जिनके पास चांदीका गुर्ज होता है, चलते हैं। वादशाहके साथ भी वहुतसे गुर्जवरदार आगे, दाएँ और वाएँ पैदल चलते है। चुने हुए सिपाहीही गुर्जवरदार वनाये जाते हैं और वादशाह अपने आज्ञापत्र आदि इन्हींके हाथ भेजा करता है। इनके हाथोंमें वड़े वड़े लट्ठ होते हैं और वे आगेसे लोगोंको हटाते और रास्ता साफ करते चलते हैं।

राजाओंकी सवारियोंके वाद शहनाइयां और नक्कारे चलते हैं और उनके वाद एक वड़ा झुण्ड मन्सवदारोंका चलता है। यह मन्सवदार सजे हुए घोड़ोंपर चलते हैं। इनकी संख्या उन अमीरोंमे कहीं अधिक होती है जो वादशाहके साथ चलते हैं। क्योंकि उन मन्सवदारोंके अतिरिक्त जिन्हें अपने पहरेके कारण वादशाहके साथ जाना पड़ता है और भी मन्सवदार इसलिये इनमें मिल जाते हैं कि वादशाहकी दृष्टि उनपर पड़े और उनकी उन्नति हो।

वेगमोंकी सवारियाँ—शाहजादियाँ और शाहकी वड़ी वड़ी वेगमें भी अनेक प्रकारकी सवारियोंमें चलती हैं।

कोई तो चौडोलपर चलती है जिसे कहार उठाते हैं और जिसपर रोगन तथा मुलम्मेका बहुत अच्छा काम किया होता है और रेशमी सुन्दर परदे पड़े होते है। कोई कोई पालकियोंमें जो चौडोलोकी, तरह सजी होती हैं चलती है। कोई कोई शाहजादियाँ मोहमिलोमें भी चढ़ती हैं जो दो ऊँटो अथवा दो छोटे हाथियोपर कसी होती है। मैने कई बार रोशनआरा बेगमको मोहमिलमें सवार देखा है। उसके आगे जो थोड़ा सा खुला हुआ स्थान होता है वहां एक सुन्दर युवति बैठी हुई गरद और मक्खियोसे रक्षा करनेके लिये उसे मोछल झलती है। प्रायः बेगमें हाथियोंपर सवार होती है जिनके गलेमें चान्दीके घण्टे पड़े होते हैं और वे बहुमूल्य सामानसे सजाये होते हैं। उन हाथियोकी झूले जरदोजीकी बनी होती हैं और बहुतही बहुमूल्य होती हैं। यह सुन्दर बेगमें अपने मेघडम्बरोमें इस प्रकार बैठी हुई दिखाई देती हैं कि मानों हवामें परियाँ उड़ी चली जाती हैं। एक मेघडम्बरमें आठ स्त्रियां बैठ सकती है। उसके चारों ओर रेशमी जाली लगी होती है। इन बेगमोकी सवारियां इतनी सुन्दर होती हैं कि रास्तेमें प्रायः मैं उन्हींसे दिल बहलाता रहा हूँ और उसे स्मरण करके अब भी मुझे एक प्रकारकी प्रसन्नता होती है। मैं अनुमान करता हूँ कि चाहे आप कितनेही जलूसों तथा सवारियोंका हाल सुनें पर रोशनआरा बेगमकी सवारीसे बढ़कर आपको और कोई सवारी अच्छी न मालूम होगी। यह बेगम पेगूके एक बड़े और ऊंचे हाथीपर ऐसे मेघडम्बरमे सवार होती है जिसका सुनहरा और आसमानी रङ्ग देखनेही योग्य होता है। उसके पीछे पांच छः और हाथी होते हैं जिनपर उसके महलकी प्रतिष्टित स्त्रियाँ सवार होती हैं। इन हाथियोके मेघडम्बर भी प्रायः उसी मेघडम्बरके समान सुन्दर और मूल्यवान होते हैं। बेगमके हाथीके साथ बड़े बड़े ख्वाजःसरा हाथोंमे छड़ियां लिये घोड़ोंपर सवार चलते है। हाथीके साथ साथ एक झुण्ड काश्मीरी और तातारी बांदियोंका

भी होता है, जो खूब बनाव सिंगार किये सुन्दर घोड़ोंपर चलती हैं । इसके अतिरिक्त और भी बहुतसे सवार ख्वाजःसरा और नौकर चाकर जो पैदल होते हैं हाथीके साथ चलते हैं । इन नौकरोंके हाथोमे बड़ी बड़ी छड़ियां होती हैं, और ये रास्ता दिखाने और लोगोको हटानेके लिये हाथीके आगे चलते है । रोशनआरा बेगमकी सवारीके साथही महलकी बड़ी बेगमकी भी सवारी होती है और प्राय: यही सब बाते उन सवारियोंमें भी होती है । इसी प्रकार पन्द्रह सोलह बड़ी बड़ी बेगमे बड़ी धूमधाम के साथ क्रमसे एक दूसरेके पीछे चलती हैं ।

इन साठ सत्तर हाथियोका झूमते हुए चलना, मेघडम्बरकी चमक दमक और अनगिनत नौकरों तथा ख्वाजःसराओंका झुण्ड आदि ऐसी बाते हैं कि जिनका देखनेवालोपर विचित्र प्रभाव पड़ता है । हिन्दुस्थानी कवीश्वर इन बेगमोंको सर्व साधारणकी दृष्टिसे बचकर आकाशमें उड़नेवाली देवियां बतलाते हैं और वास्तवमें यह उपमा ठीक है । इन बेगमोके निकट जाना अथवा उन्हे देख लेना बिलकुलही असम्भव है । यदि दुर्भाग्यवश कोई सवार इस सवारीके निकट पहुँच जाय तो फिर चाहे कितनाही प्रतिष्ठित क्यों न हो ख्वाजःसराओंके हाथसे बिना मार खाये बाहर नहीं निकल सकता । और यह लोग ऐसे अवसरपर बड़ी ही प्रसन्नतासे उसकी दुर्गति करते हैं । मै वह घटना शीघ्र भूल न सकूंगा जबकि मैं स्वयं भी एक बार फँस गया था और बड़ी कठिनतासे बच सका जिसमें पहले बहुतसे सवार फंसकर पिट चुके थे । मैंने निश्चय कर लिया था कि चाहे कुछ ही क्यों न हो मैं बिना उन लोगोंसे लड़े मार न खाऊँगा । इसलिये मैंने अपनी तलवार खींच ली । भाग्यवश मेरा घोड़ा भी बहुत अच्छा और तेज था । इसलिये मैं इस योग्य हो गया कि नंगी तलवार लिये हुए भीड़को चीरता हुआ बाहर निकल आया और एक नदीमें जो सामने थी घोड़ा डाल-कर बच गया । सारी फौजमें यह बात प्रसिद्ध है कि तीन स्थानोंसे

बहुत सावधान रहना और बचना चाहिये । एक तो खासे और कोतल घोड़ोंमें जा घुसनेसे जहाँ कि चारों ओरसे खूब दुलत्तियाँ खानी पड़ती हैं, दूसरे जिस स्थानपर शिकार होता हो; और तीसरे बेगमोंकी सवारीके निकट जानेसे । ईरानमें तो बेगमोंके निकट जाना और भी अधिक विपत्तिजनक है; क्योंकि मैंने सुना है कि यदि वहां कोई व्यक्ति बेगमोंके चारों ओर एक मीलतक भी पहुंच जाय तो उसका बचना कठिन है और जिस गांवमेंसे होकर बेगमों की सवारी निकलती है उस गांवके मरदोंको अपना घर छोड़कर बहुत दूर चला जाना होता है ।

शिकार—अब मैं बादशाही शिकारका थोड़ासा वर्णन करता हूं। पहले यह बात मेरी समझमे न आती थी कि मोगल सम्राट् एक लाख आदमियोंके सहित किस प्रकार शिकार खेलता है । पर अब मुझे निश्चय हो गया कि एक विशेष अवस्थामें दो लाख आदमियोंके सहित भी शिकार खेला जा सकता है । बात यह है कि आगरा और देहलीके चारों ओर यमुना नदीके किनारे किनारे तथा उस सड़कपरके दोनो ओर जो लाहौरको जाती है बहुतसी ऊसर जमीन है, जो जङ्गली पेड़ो, झाड़ियो और अनेक प्रकारकी घासोंसे जो दो दो गज ऊंची होती है ढकी रहती है । इस जमीनकी खूब रक्षा की जाती है और कोई व्यक्ति चीता, बटेर और खरगोशके अतिरिक्त जिसे हिन्दुस्थानी जालसे पकड़ते हैं और किसी जानवरका शिकार इसकी सीमाके अन्दर नहीं कर सकता । इन स्थानोंमे रक्षाके कारण सब प्रकारके शिकारके जानवर बहुत अधिकतासे होते हैं। जब बादशाह उस ओर जा निकलता है तो उस जिलेका अफसर हाजिर होकर बादशाहको उस स्थानकी सूचना देता है जहां शिकार अधिक हो । इसके उपरान्त चारों ओर विशेष विशेष स्थानों और नाकोंपर पहरे खड़े कर दिये जाते हैं जिससे वह स्थान जहां बादशाह शिकार खेलता है भली भांति रक्षित रहे और शिकार भाग न जाय । यह घेरे कभी कभी लम्बाईमें दस मीलतक होते हैं।

लशकरके सब लोग उस-स्थानसे जहां वादशाह शिकार खेलता है, दाएं ओर वाएं खूब वचकर चलते है और वादशाह केवल उन्हीं अमीरोंको अपने साथ लेकर जिन्हे आज्ञा मिली हो शिकारके स्थान मे पहुंचता है और भांति भांतिके शिकारोंसे अपना जी वहलाता है।

अव मैं आपको यह वतलाना चाहता हूं कि सिखाये हुए चीतों से किस प्रकार हरिनका शिकार किया जाता है। मुझे स्मरण है कि मैं पहले आपको लिख चुका हूं कि भारतमें सींगवाले हरिन जो हमारे यहांके (फॉन) से मिलते जुलते हैं, अधिकतासे पाये जाते हैं। यह हरिन पांच अथवा छः एक साथ होकर चलते है और एक नर हरिन उन सबोंके पीछे चलता है जो अपने रङ्गके कारण पह-चाना जाता है। जव यह हरिन दिखलाई देते हैं तो वे एक चीतेको दिखला दिये जाते हैं जो एक छोटीसी गाड़ीपर जञ्जीरसे वन्धा होता है। सिखाये हुए होनेके कारण वह चीता एक वार ही उनपर नहीं झपट पड़ता वाल्कि उनकी दृष्टिसे वचता हुआ इधर उधर छिप कर उनका पीछा करता है। इस प्रकार छिपकर उनके इतने निकट जा पहुंचता है कि पांच छः छलांग मे उन्हे पकड़ सके। यदि पहली ही वारमे वह किसी हरिनको पकड़ लेता है तो उसी समय वह स्वयं उसे खा जाता है और यदि वे उसकी झपटसे वचकर निकल भागे जैसा कि प्रायः हुआ करता है तो फिर वह दूसरा वार नहीं करता वल्कि चुपचाप खड़ा हो जाता है। और वास्तवमें इस वात की आशा करना कि एक वार अथवा सीधी दौड़मे चीता हरिनको पकड़ लेगा विलकुल व्यर्थ है क्योंकि हिरन चीतेकी अपेक्षा वहुत तेज दौड़ सकता है। इसके उपरान्त चीतेवान जाकर उसे धीरे धीरे चुमकारता और उसके आगे मांसके टुकड़े फेंकता है; और फिर उसकी आंखें वन्द करके उसे गाड़ीपर वान्ध देता है। इस यात्रामें एक चीतेने हम लोगों को विचित्र तमाशा दिखलाया। एक दिन कुछ हरिन फौजके वीचमें से होकर निकल भागे; (ऐसा प्रायः हुआ करता है) और वह ये दो चीतोंकी गाड़ियोंके वीचमेंसे होकर निकले जिनमें एक चीतेने

आंखे खुली हुई थीं । वह चीता बहुत जोरसे उन हरिनोंपर झपटा और जञ्जीर तोड़कर उनके पीछे लगा पर किसीको पकड़ न सका। लोगोंके दौड़ानेसे जब वह हरिन पीछेको लौटे तो बहुतसे ऊंट और घोड़े बीचमे होनेपर भी इस चीतेने झपटकर उनमेंसे एकको पकड़ लिया। और उस दिन उसने लोगोंकी इस उक्तिको असत्य प्रमाणित कर दिया कि " यदि पहली वारमे शिकार बचकर निकल भागे तो फिर चीता उनका पीछा नही करता "

नीलगायके शिकारका कुछ नियम नहीं है। पहले इनको चारों ओरसे जालसे घेर लेते हैं और फिर बादशाह सब अमीरों और शिकारियो सहित उसमे प्रवेश करता है और उनको तीर, बरछी, तलवार और भालोंसे मार डालता है। कभी कभी यह जानवर इतनी अधिकतासे मारे जाते है कि बादशाह थोड़ा २ मांस सब अमीरोंके पास भेज देता है।

कूंजोंके पकड़नेकी रीति बहुतही विचित्र और देखने योग्य होती है। अपने बचाव और रक्षाके लिये वे जितनी चेष्टाए करती है उसके देखनेमे बहुत मजा आता है। कभी कभी (शिकारी पक्षियोंके विरुद्ध) वे अपने आक्रमणकारीको मार डालती है। पर उड़नेकी शक्ति कम होने तथा शिकारी पक्षियोंकी सख्या बढ़ जानेके कारण वे शीघ्रही परास्त हो जाती है। लेकिन इन सब शिकारोंमेंसे शेरका शिकार केवल भयानकही नहीं बल्कि बादशाही शिकार है। इस शिकारमे बादशाह, शाहजादे तथा उन अमीरोके अतिरिक्त जिन्हे विशेष आज्ञा मिलती है, और कोई जाने नहीं पाता। इसके शिकार का यह नियम है कि जहां शेरका पता लगता है वहां पहले एक गधा बान्ध दिया जाता है। उसका चिल्लाना सुनकर शेर निकलता है और उस बेचारेको फाडकर खा जाता है। गधा खा लेनेपर उसका पेट भर जाता है, और फिर उसे किसी और शिकारकी आवश्यकता नहीं होती। फिर वह किसी बैल, भेड या बकरीको नहीं सताता और सीधा पानीकी खोजमे जाता है और फिर पानी पीकर उसी

स्थानपर आकर सो रहता है और दूसरे दिन सवेरेतक नहीं उठता। शिकारी उसे एकही स्थानपर रखनेके लिये कई दिनोंतक यही उपाय करते रहते हैं और जब बादशाहके निकट पहुंचने की सूचना मिलती है तो वे एक और गधा वहीं बान्ध देते हैं जिसके गलेमें बहुतसी अफीम भर दी जाती है, शेरका यह अन्तिम भोज इस लक्ष्यसे दिया जाता है कि वह उसे खा पीकर आनन्दसे सो जाय। इसके उपरान्त आसपासके बहुतसे गंवारोंको बुलवाकर बड़े बड़े जाल जो इसी कार्य्यके लिये बनाये जाते हैं तनवा दिये जाते हैं। फिर नीलगायको जालोंके समान इन जालोंको खींच खींचकर उनका घेरा कम करदेते हैं और जब इस प्रकार सब समान तैयार हो जाता है तो बादशाह एक हाथीपर बैठकर जिसपर लोहेकी पाखर पड़ी होती है और अमीरों, गुर्जबरदारों सवारों और पैदल शिकारियों सहित जिनके हाथमें छोटी छोटी बरछियां होती हैं जालके बाहर आकर खड़ा होता है और बादसाह शेर पर बन्दूकका एक फैर करता है। जब शेर अपनी प्रकृतिके अनुसार घायल होनेपर हाथीकी ओर झपटता है तो जालमें उलझकर रह जाता है और फिर बादशाह उसे लगातार गोलियां छोड़कर मार डालता है।

इस यात्राके एक शिकारमें एक बार अचानक एक बखेड़ा हुआ शेर जालपरसे कूदकर एक सवारपर झपटा जिसमें उसका घोड़ा मर गया। इस प्रकार वह शेर कुछ समयके लिये जान बचाकर भाग गया पर अन्तमें शिकारियोंने उसे ढूँढही लिया और वह फिर उसी जालमें फंस गया। शेरके भाग जानेके कारण सारी फौजमें हुल्लड़ मच गया। यहांतक कि तीन चार दिनोंतक हम लोगोंको एक ऐसे स्थानमें मारे मारे फिरना पड़ा जहां पहाड़परसे आकर नदियां और नाले गिरा करते थे और सारा मैदान बड़ी बड़ी झाड़ियों और उतनी लम्बी लम्बी घासोंसे छिपा हुआ था कि जिनमें ऊंटभी छिप सकता था। न तो उस समय अभी कोई बाजारोंहीका प्रबन्ध हुआ था और न कोई शहर या गांवही निकट था; इससे वे लोग बड़ी

भाग्यवान् समझे गये जो किसी प्रकार अपने भोजन आदिका प्रबन्ध कर सके। इस उजाड़ जङ्गलमे ठहरनेका कारणभी बहुत विचित्र था। जब बादशाह कोई शेर मारता है तो वहांके निवासी उसे अच्छा शकुन समझते है पर जब कभी कोई शेर बच निकलता है तो लोग उसे बुरा शकुन मानते हैं। इसलिये जब शेर मारा जाता है तो बादशाह एक दरबार करता है और मारा हुआ शेर बादशाहके सामने उपस्थित किया जाता है। वह मृत शरीर बड़ीही सावधानीसे नापा और देखा जाता है और फिर दफ्तरकी किताबोमे लिखा जाता है कि अमुक बादशाहने अमुक तिथिको एक शेर इतना लम्बा और चौड़ा मारा। साथही उसकी आकृति और दांतोका पञ्जोकी लम्बाई आदिभी लिखी जाती है। शिकारका वर्णन करते हुए उस अफीमके सम्बन्धमे भी मै कुछ लिख देना चाहता हूं जो उस गधेको खिलाई जाती है। क्योंकि एक बार एक शिकारी अफसरने मुझसे कहा था कि शेरको अफीम खिलाना बिलकुलही व्यर्थ होता है। वास्तवमे जब शेरका पेट भर जाता है तो फिर वह किसी चीजकी परवा नही करता और बहुत देरतक गहरी नींदमे सोया रहता है।

मैनें देखा है कि प्रायः नदियोंपर पुल नहीं हैं और इन नदियो को फौजने दोहरे पुलोसे किसी कारणवशही नावसे बनाये हो पार किया। दोनो पुल एक दूसरेसे दो तीन सौ कदमकी दूरीपर होते हैं और उनपर मिट्टी तथा घास इसलिये डाल दी जाती है कि जिसमे पशुओके पैर न फिसलें, इन दोनो पुलोके सिरेपर बड़ीही भीड़ और घबराहट होती है। क्योंकि इन पुलोंके दोनो सिरे गीली चिकनी मिट्टीसे बनाये जाते है और उसमें इतने गढ़े पड़ जाते हैं जिनसे घोड़े और जुटे हुए बैल एक दूसरेपर गिरे पड़ते हैं और लशकरके लोग उन्ही गिरे और फंसे हुए जानवरोके ऊपरसे गुजरते है। यदि सारे लशकरको एकही दिनमे पुलके पार होना पड़े तो यह कठिनता और भी बढ़ जाती है। लेकिन बादशाह इसका यह उपाय करता है कि नदीसे एक मील इधरही डेरा डालता है और वहीं दो एक दिनतक

ठहरा रहता है और फिर इसी प्रकार दूसरे पार जाकर ठहरता है। जिससे दो तीन दिनमे सारी फौज धीरे धीरे नदीको पारकर लेती है।

इस लशकरमे जितने आदमी हैं उनकी ठीक संख्याका पता लगाना वहुत ही कठिन है क्योंकि कोई कुछ कहता है और कोई कुछ। पर मैं जहांतक निश्चयपूर्वक कह सकता हूं इस यात्रामे एक लाख सवार, डेढ लाखसे अधिक घोड़े, खच्चर और हाथी और पचास हजार ऊँट होंगे, और प्रायः इतने ही वैल और टट्टू होंगे जिनपर गरीब दूकानदार जो वाल वच्चो सहित होते है अपना माल असवाव लादकर लशकरके साथ चलते है। अव आप समझ सकते है कि इतनी फौजके साथ नौकर भी कितने होगे; क्योंकि मैं एक साधारण व्यक्ति हूं, तिसपर भी तीन नौकरोंसे कममे मेरा काम नहीं चलता। प्रायः लोग कहते है कि इस लशकरमे सव मिलाकर तीन या चार लाख आदमी होगे। कोई इस संख्याको वहुत कम वतलाते है और कोई इसे वहुत अधिक मानते है। पर वास्तवमें इसकी ठीक संख्या विना गणनाके मालूम नहीं हो सकती। पर इतना मैं अवश्य कहूंगा कि यह लशकर वहुत भारी है और देहलीके प्रायः सभी निवासी इसके साथ हैं क्योंकि उनका सव कार्य्य वादशाही लशकर परही निर्भर है और इन लोगोंके लिये इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है कि या तो लशकरके साथ जाय और या देहलीमे रह कर भूखो मरे। इसमे सन्देह नहीं कि यह सव हाल पढ़कर आप प्रश्न करेंगे कि इतने मनुष्यों और पशुओंके भोजनका प्रवन्ध किस प्रकार होता होगा। पर इसका सीधा उत्तर यह है कि भारतवासियों का भोजन विलकुलही साधारण है। एक लाख सवारोंमेंसे केवल दस हजार वल्कि पांच या छः हजार सवारही ऐसे होगे जो मांसाहारी हों; और वाकी सव लोग खिचड़ीही पर सन्तोष करते हैं जो चावलोंमे मूंग अथवा उड़दकी दाल मिलाकर वनाई जाती है और उपरसे उसमे थोड़ासा घी डाल देते हैं। साथही यह वात भी ध्यान

देने योग्य है कि ऊंट भूख प्यासकी कुछ परवा नहीं करते और थोड़ा बहुत भोजन पाकर ही सन्तुष्ट हो जाते है । नित्य वे इधर उधरके जङ्गलोमे छोड़ दिये जाते है जहां वे घास फूस और झाड़ियो की पत्तियां खाकर ही अपना काम चलाते है ।

जो लोग देहलीके बाजारोमें सब चीजे बेचा करते है उन्हींपर विदेशमे भी रसद पहुँचानेका भार होता है । इन बेचारोंको घास और चारेका प्रबन्ध करनेके लिये बहुत कष्ट उठाना पड़ता है और वे इसके लिये गांव गांव फिरा करते है । पर जो चीज वे लशकरमे लाते है उसे अधिक मूल्यपर बेचते है । प्रायः यह लोग विशेष प्रकारकी घास जो सब मैदानो और जङ्गलोमे होती है, काट लाते है और उसीको धोकर कभी तो बहुत अधिक और कभी बहुतही कम मूल्यपर बेचते है ।

बादशाहके सम्बन्धमे एक विचित्र बात लिखना मै बिलकुलही भूल गया । बादशाह कभी तो लशकरमे एक ओरसे और कभी दूसरी ओरसे प्रवेश करता है । अर्थात् एक दिन तो एक ओरके अमीरोके खेमोंकी ओरसे होकर प्रवेश करता है और दूसरे दिन दूसरे दिन दूसरी ओरके खेमोके निकटसे होकर ! आप यह न समझे कि संयोगवश यह बात होती है; बल्कि जिन अमीरोके डेरोके निकट होकर वह निकलता है वे हाथोंमे एक थैली लिये हुए जिसमे उनके योग्यतानुसार बीससे पचासतक अशरफियां होती है बादशाहके सामने हाजिर होते है । मै उन गांवो तथा शहरोंको कुछ वर्णन नहीं करना चाहता क्योंकि मैने कदाचित् ही उनमेसे किसीको देखा हो क्योकि मेरे आकाका डेरा फौजके बीचमे नहीं बल्कि दाई ओर खड़ा होता था जहांसे सड़क दूर पड़ती थी । इसीलिये हमलोग रातहीको तारे देखकर कूचकर देते थे और खेतो तथा पगडण्डियोंसे होकर चल पड़ते थे जिससे प्रायः रास्ता भूल जाते थे और पौफटने तक बड़ी कठिनाइयां उठाया करते थे और इस प्रकार दस अथवा बारह मील चलनेके बदले एक स्थानसे दूसरे स्थानतक पहुंचनेके लिये हमे पन्द्रह या अट्ठारह मील चलना पड़ता था ।

ग्रन्थकारका तीसरा पत्र ।

लाहौर ।

महाशय !

वह देश जिसकी राजधानी लाहौर है, पञ्जाव कहलाता है; क्योंकि पांच नदियां उन वड़े वड़े पहाड़ोंसे निकलकर जो काश्मीर को घेरे हुए हैं, इश देशके वीचसे होकर वहती है और फिर सिन्ध नदीमे मिल जाती है जो सिन्ध देशसे होकर फारसकी खाड़ीके मुहानेके निकट समुद्रमें जा मिलती हैं ।

मैं निश्चय नहीं कह सकता कि यह लाहौर वही शहर है जिसे यूनाना वुसेफूलोस* कहते है अथवा दूसरा क्योंकि यहांके लोग एलेगजेण्डरको तो भलीभांति जानते हैं और उसे सिकन्दर कहते हैं पर उसके घोड़ेका हाल यहां कोई नहीं जानता ।

वह नदी जिसके किनारे लाहौर नगर वसा हुआ है, पञ्जावकी पांच नदियोंमेंसे एक वड़ी नदी है । यह नदी फ्रान्सकी ल्वायर नदी के समान है । इस नदीके किनारे वैसेही दृढ़ पत्थरके पुश्तेकी आवश्यकता है जैसा ल्वायर नदीके किनारे वना हुआ है क्योंकि इस नदीमें प्राय: वाढ़ आया करती है जिससे वड़ी हानि होती है । यह नदी प्रायः अपना स्थान वदलती रहती है । इसी कारण थोड़ेही वर्षोंमें वह लाहौरसे आध मील दूर हट गई है जिससे वहांके निवासियोंको वहुतही कष्ट होता है ।

लाहौरकी इमारतें देहली और आगराकी इमारतोंसे विपरीत और वहुत ही ऊंची होती हैं । वीस वर्षोंसे अधिक हुए कि वादशाह अव देहली या आगरेमें रहता है इसलिये लाहौरकी अधिकांश इमारतें उजड़ी हुई हैं वल्कि वहुत सी तो एक दम गिर गई हैं ।

* सिकन्दरका एक घोड़ा था जिसपर वैलके सिरका दाग था । वह घोड़ा लाहौरहीमें मरा और गाड़ा गया । इसीलिये उसके नामपर वह शहर वसा था ।

रा० च० वर्म्मा ।

और गत कई वर्षोंकी लगातार वर्षासे बहुतसे मकान गिर पड़े जिससे बहुतेरे आदमी भी दबकर मर गये । पर अबतक भी चार पांच बाजार बहुत बड़े और सुन्दर वर्तमान हैं । जिनमेंसे दो तीन तो दो मीलसे भी अधिक लम्बे हैं; लेकिन इनके मकानोंमेंसे प्रायः अधिकांश गिरे पड़े है । नदीके हट जानेके कारण बादशाही महल नदीतटसे दूर हो गये हैं। यद्यपि ये महल बहुत अच्छे बने हुए हैं तथापि देहली और आगरेके महलोंसे वे सब बातोंमे कम हैं।

गत दो माससे हमलोग यहीं लाहौरमे इसलिये ठहरे हुए है कि काश्मीरके पहाड़ोंकी बरफ पिघल जाय और रास्ता साफ हो जाय । पर अब निश्चय हो गया है कि कल यहांसे कूच हो जाय। दो दिन हुए बादशाह यहांसे प्रस्थानित हो गया है । कल रातको मैंने काश्मीरके लिये एक सुन्दर छोटा खेमा खरीदा है । क्योंकि मेरे मित्रोंने मुझे सलाह दी थी कि मैं अपना पहला खेमा जो बहुत बड़ा है आगे न ले जाऊं। उनका कथन है कि काश्मीरके पहाड़ोंपर जहां ऊंट नहीं जा सकते, इन बड़े खेमोंके लिये स्थान न मिलेगा यदि मैं अपने पहले खेमे भी अपने साथ लेजाऊं तो मुझे उनके लिये कुली दरकार होंगे जिससे मेरा खरच बहुत बढ़ जायगा।

ग्रन्थकारका चौथा पत्र ।

महाशय !

मुझे आशा थी कि बाबुलमन्दबके निकट मुखा नामक स्थानमें मुझे जितना कष्ट गरमीके कारण उठाना पड़ा था उतना कष्ट संसारके और किसी भागमे मुझे फिर न उठाना पड़ेगा । लेकिन चार दिन अर्थात् जबसे मैंने लाहोर छोड़ा है, मेरी वह आशा बिलकुल ही नष्ट हो गई है। हिन्दुस्थानी जो इसी गरम देशके निवासी हैं, लाहोरसे चलते समय कहते थे कि भिभट पहुंचतेतक—जिसे काश्मीरका फाटक कहना चाहिये और जो वहांसे ग्यारह बारह दिनका रास्ता है—बड़ी ही कठिनाई होगी। पर मुझे उनकी इस बातपर बहुत ही आश्चर्य्य होता था। लेकिन अब मेरा सारा आश्चर्य्य जाता रहा और

मैं कह सकता हूं कि एक वार गरमीकी अधिकताके कारण मैं एक प्रकार वेहोश सा हो गया था; और कदाचित् आपको विश्वास न होगा कि आज प्रात.काल जव मै सोकर उठा तो मुझे यह आशा नही थी कि आजकी गरमी और धूप सहकर भी मै जीवित रहूंगा।

काश्मीरके ऊंचे ऊंचे पहाड़ो हीके कारण गरमीकी इतनी प्रवलता है। यह पहाड़ उत्तरकी ओर है इसलिये उधरसे जो ठण्ढी हवा आती है उसे यह पहाड़ रोक लेते है। और इन्हीं पहाड़ोंके कारण सूर्य्यकी किरणे इस देशमे इस प्रकार पडती हैं कि सारी भूमि एकदम सूख जाती है और मनुष्योका दम घुटने लगता है। पर मै नही समझ सकता कि ऐसी कड़ी गरमीके सम्वन्धमे मै फिलासफीका उपयोग क्यो करूं जिसके कारण मुझे कलतक जीवित रहनेकी भी आशा नहीं है।

ग्रन्थकारका पांचवां पत्र।

महाशय !

कल मैने भारतवर्षकी एक वड़ी नदीको पार किया है जिसे लोग चुनाव कहते है। इस नदीका जल वहुतही स्वच्छ और उत्तम है इसलिये वड़े वड़े अमीर उसे रास्तेके लिये भरवा रहे है। मुझे आशा है कि अव मैं शीघ्र ही काश्मीर पहुंच जाऊंगा और मेरे मित्रगण मुझे विश्वास दिला रहे हैं कि वहांकी वरफ तथा मनोहारी दृश्य देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे। गरमी दिनोदिन अधिक होती जाती है और ज्यो ज्यों हम आगे वढ़ते जाते हैं त्यो त्यों गरमी भी वढ़ती जाती है। यद्यपि यह वात ठीक है कि मैंने दोपहरको जवकि सव-लोग अपने अपने खेमोमे वैठे दिन ढलनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे, नावका पुल पार किया; पर यदि मै उस समय अपने ही डेरेमे वैठा रहता तो भी मुझे आशा न थी कि मै उस कष्टसे वच जाता जो मुझे आज झेलना पड़ा था। पर दोपहरको मैंने जिस इच्छासे पुल पार किया था वह इच्छा पूरी हो गई और हम लोग विना किसी प्रकारके कष्टके इस पार उतर आये।

जबसे मै देहलीसे प्रस्थित हुआ तबसे मैंने ऐसी गड़बड़ किसी घाटके पुलपर नहीं देखी । पर मै समझता हूं कि यह मेरी ही बुद्धिमत्ताका कारण है कि इस पुलके पार करनेमे मुझे भीड़में न घुसना पड़ा । पुलके दोनो सिरे नरम मिट्टी और रेतसे बने होनेके कारण वहुत कुछ वह गये थे और उसमे बहुतसे गढ़े पड़ गये थे; जिनमे वहुतसे ऊंट बैल और घोड़े गिरत और लोगोके पैरो तले कुचले जाते थे; और तिसपर मजा यह कि चारो ओर धक्कमधक्का होता था । साथही अमीरोके नौकर चाकर अपने मालिकोके लिये रास्ता बनाने और उनका असबाब पहुंचानेके लिये लोगोंपर खूब डण्डे वरसाते है । इसी नदीके पुलपर हमारा एक ऊंट जिसपर लोहे का तन्दूर (एक प्रकारका वड़ा चूल्हा) लदा हुआ था नष्ट होगया ; और इसलिये अब यह चिन्ता है कि भविष्यमें मुझे वाजारकी रोटी खानी पड़ेगी ।

ग्रन्थकारका छठां पत्र ।

महाशय !

एक युरोपियनके ऐसी कड़ी गरमी सहने तथा इतनी भारी यात्रा करनेपर उद्यत हो जानेसे स्वयं यह प्रश्न उठता है कि उसके इस प्रकार कष्ट सहने और विपत्तिमे पड़नेका क्या कारण है । पर मुझे दुःख है कि इसका उत्तर इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है कि मुझमें संसारकी विचित्र वातोके देखनेका शौक जो उचित सीमासे भी बढ़ गया है, इन सब कष्टोका कारण है । पर यह शौक नहीं वलिक मूर्खता और अदूरदर्शिता है । इस यात्रामें मुझे अचानक कष्टोका सामना करना पड़ा है और मेरी जान विपत्तिमे पड़ी हुई है और यदि कुछ फायदा है तो यही कि इसमे भी कदाचित् कोई भलाई अथवा लाभ निकल आवे ।

जब मैं लाहौरमे था तो रातको खुली हवामें सोनेके कारण मुझे सरदी होगई थी और शरीरमे पीड़ा भी होने लगी थी । लेकिन

देहलीमे इस प्रकार सोनेसे मुझे कोई कष्ट नहीं होता । उस समय मेरा स्वास्थ्य भी कुछ खराब हो गया था । पर गत एक सप्ताहसे जबसे यात्रा आरम्भ हुई है मुझे पसीना बहुत अधिकतासे आने लगी है जिसके कारण मेरे शरीरसे कुछ दूषित पदार्थ निकल गये और मेरा जला भुना शरीर पानीकी चलनीके समान हो गया है । सेर भर पानी जो मै एकही वारमें पीजाता हूं मेरे शरीरके रोएं रोएं वल्कि उङ्गलियोंके पोरोंसे निकल जाता है । मैं समझता हूं कि मैंने आज, दस या ग्यारह सेरसे कम पानी नहीं पीया । पर इन सब विपत्तियोंमें यह वात बड़ी ही सन्तोषजनक है कि हम स्वच्छ और उत्तम जल जितना चाहे विना किसी प्रकारके कष्टके पी सकते है ।

ग्रन्थकारका सातवां पत्र ।

महाशय ।

यद्यपि अभीतक सूर्य्य भी भली भांति नहीं निकला तौ भी असह्य गरमी पड़ रही है । वादलका कहीं नाम नहीं है और हवाके न होनेसे कहीं पत्ता तक नही हिलता । मेरे घोड़े विलकुल थक गये हैं । जबसे मै लाहौरसे चला हूं तबसे उनको हरी घासके दर्शन भी न हुए । मेरे हिन्दुस्थानी नौकर भी आगे पैर वढ़ानेका साहस नहीं करते । हमारे मुंह, पैर और हाथोका चमड़ा विलकुल फट गया है और सारे शरीरमें छोटे छोटे लाल दाने निकल आये हैं जो सूईके समान चुभते है । कल एक ग़रीव सवार जिसके पास डेरा नहीं था और जो धूपसे वचनेके लिये पेड़की छाँहमे ठहरा था मर गया । मुझे स्वयं ऐसा अनुमान होता है कि मैं आज न वचूँगा; और मुझे अब उन्हीं चार पांच कागजी नीबूओंकी आशा है जो वचे हुए हैं अथवा थोड़ेसे दहीकी जिसे मैं अभी पानी और मीठा मिलाकर पीऊँगा । अच्छा, अब मुझे आज्ञा दीजिये क्योंकि कलमकी स्याही सूख गई ।

ग्रन्थकारका आठवां पत्र ।

महाशय !

अब हमलोग भिंभट पहुँच गये जो बड़े पहाड़के नीचे बसा है । हमारा खेमा एक सूखी पहाड़ी बस्तीमे पत्थरों और जलती हुई रेतपर जिसे आगकी भट्ठी कहना चाहिये लगा हुआ है । यदि आज सौभाग्यवश ठीक समयपर कुछ थोड़ासा जल न बरस जाता और भोजनके लिये पहाड़परसे नीबू, दही और मुरगे आदि न आ जाते तो न जाने आपके इस सम्बाददाताकी क्या दशा होती । पर मैं ईश्वरको धन्यवाद देता हूं कि इस समय हवा कुछ ठण्ढी हो गई है । मेरी भूख भी खुल गई है और शरीरमे कुछ शक्ति सी आगई है । यदि सच पूछिये तो इस शक्तिसे मैने पहले कोई काम लिया है तो वह इसी पत्रका लिखना है ।

कल रातको बादशाह इस स्थानसे जहां दम घुटा जाता है, प्रस्थित होगया । उसके साथ रौशनआरा बेगम तथा अन्य सब बेगमे, राजा रघुनाथ जो मन्त्रीका काम करता है, और फाजिलखां गये है । साथ ही शिकारका दारोगा भी कई बड़े बड़े पदाधिकारियों सहित चला गया है । अब यहां हमारे आका दानिशमन्दखांके सम्बन्धी, मीरजुमला और मेरा मित्र दयानतखां, उसके दो पुत्र कई अमीर और राजे आदि ठहरे हुए है । सब अमीर जिन्हे काश-मीर चलनेकी आज्ञा मिली है यहांसे धीरे धीरे प्रस्थित होगे जिसमे इन पांच दिनोमे जो भिभटसे काशमीर जानेमे लगेगे लोगों को भीड़के कारण कष्ट न उठाना पडे ।

फिदाईखां, मीर आतिश (तोपखानेके अफसर) तीन चार बड़े राजे और बहुतसे अमीर तीन चार मासतक अर्थात् जबतक ग्रीष्म ऋतु समाप्त न होजाय और बादशाह कशमीरसे लौट न आवे, रक्षा के लिये यहीं रहेगे । जिनमेंसे कोई तो चनाव नदीके किनारे अपने डेरे मे लगा लेगे और कोई आसपासके शहरों और देहातोंमें चले

जायंगे और बाकी लोगोंको भिभटकी जलती हुई भूमिपर रहना पड़ेगा। बादशाहके साथ काशमीरमे बहुतही कम और चुने हुए लोग जायंगे जिसमे काशमीर जैसे छोटे देशमे लोगोको रसदका कष्ट न हो।

बेगमोंमेंसे केवल वही प्रसिद्ध और बड़ी बड़ी बेगमे साथ गई हैं जो सदा रौशनआरा बेगमके साथ रहती है अथवा वह स्त्रियां जिनकी सेवा करनेके लिये साथमे रहना आवश्यक है। अमीर और फौजी सिपाही भी जहांतक सम्भव होगा कम होंगे। जिन अमीरोको साथ जानेकी आज्ञा मिली है उनके सवारोंमेंसे केवल चौथाई सवार ही जा सकेगें। इन नियमोका उल्लंघन करना असम्भव है क्योंकि एक अमीर पहाड़के दर्रेपर नियत किया गया है जो आदमियोको गिन गिनकर अन्दर जाने देता है और मन्सबदारोकी भीड़को जो काश्मीर देखनेकी नियतसे जाते है अथवा उन छोटे छोटे दूकानदार और बाजारवालोको जो केवल कमानेके लिये काश्मीर जाया चाहते हैं, अन्दर जानेसे रोकता है।

कुछ चुने हुए हाथी भी बेगमो अथवा माल लादनेके लिये बादशाहके साथ है। यद्यपि इन जानवरोंका डीलडौल बहुत भारी है तौभी वे बहुत ही संभालकर पैर रखते है। टेढ़ी अथवा ऊंची नीची भूमिपर वे इतना जांच जांचकर पैर रखते है, कि जबतक पहला पैर भली भांति जम न जायगा तबतक दूसरा पैर नहीं उठाते। बादशाह के साथ कुछ खच्चर भी है लेकिन ऊंट जो बहुत काम आते है नीचे ही छोड़ दिये गये है। क्योंकि उनके लम्बे लम्बे पैर इस पहाड़ी भूमिके लिये उपयुक्त नहीं है। उनके बदले कुलियोंसे काम लिया जाता है। मैने सुना है कि केवल बादशाहके कामके लिये छः हजार कुली आवश्यक होते हैं। इसीसे आप अनुमान कर सकते है कि सारे लश्करके लिये कितने कुलियोंकी आवश्यकता होगी। यद्यपि मैंने अपना बड़ा खेमा तथा और बहुतेरा असबाब लाहौरमें छोड़ दिया है तौभी मुझे तीन चार कुली दरकार होते है। इसी प्रकार

प्राय: सभी बड़े अमीरों तथा बादशाहने अपना असबाब छोड़ दिया है। गणनासे निश्चित हुआ है कि इस समय पन्द्रह हजार मजदूरे भिभटमे उपस्थित हैं; जिनमेंसे कुछ तो काशमीरके सूबेदार और आसपासके राजाओंने भेजे हैं और कुछ अपनी इच्छासे चले आये हैं। बादशाहकी ओरसे निश्चय किया गया है कि पचास सेर असबाबकी मजदूरी पचीस रुपये दिये जांय। अनुमान किया गया है कि इस समय सब मिलाकर कोई तीस हजार मजदूरे आवश्यक होंगे। पर ऐसी अवस्थामे जबकि बादशाह, अमीर, और व्यापारी आदि सब असबाब और रसद आदि एक मास पहिलेही भेजते रहे तो मजदूरोंकी यह संख्या बहुतही अधिक हो जायगी।

ग्रन्थकारका नवां पत्र।

—o—

महाशय!

काशमीरके प्राचीन इतिहासमे लिखा है कि पहले यह सारा देश एक बड़ी भारी झील था जिसका जल एक वृद्ध ऋषिने जिसका नाम कश्यप था बारामूलाके पहाड़को चीरकर निकाल दिया। इसका पूरा वृत्तान्त उस पुस्तकमे मिलता है, जो जहांगीरकी आज्ञासे काशमीरके प्राचीन इतिहासके आधारपर फारसीमे लिखी गई थी और जिसका अनुवाद मैं आजकल कर रहा हूं। निस्सन्देह मेरी इच्छा भी इस बातके अस्वीकार करनेकी नहीं होती कि किसी समय यह सारा देश जलमय था। थिसली तथा अन्य देशोंके सम्बन्धमे भी यही किम्वदन्ती चली आती है। पर मैं साधारणत यह विश्वास नहीं कर सकता कि पानी निकलने का जो रास्ता बना है वह किसी मनुष्यका बनाया हुआ है। क्योंकि यह पहाड़ जिसमेंसे पानी होकर निकलता है बहुतही ऊंचा है। मैं अनुमान करता हूं कि किसी समय भूकम्प के कारण जो इस देशमें प्राय आते रहते हैं, वह पहाड़ कुछ धंस गया है। यदि हम अरबके निवासियोंकी बात मानले तो हमे विश्वास

करना पड़ेगा कि वाबुलमन्दवके स्थानमे पहले बहुतसे नगर आदि बसे हुए थे पर अन्तमें वे सब धंस गये और वहां झील बन गई ।

अस्तु. इस समय काशमीर एक झील नहीं बल्कि बहुत सुन्दर देश है जिसमें बहुतसे पहाड़ पहाड़ियां है । उसकी लम्बाई तीस लीग अर्थात् नब्बे मील और चौड़ाई दस वा बारह लीग है । लाहौरसे उत्तरकी ओर भारतकी सीमापर यह देश स्थित है । उसकी सीमा पर वह पहाड़ है जो छोटे और बड़े तिब्बतके राजाओंके राज्यमें है । जो पहाड़ काशमीरके बहुतही निकट और चारो ओर हैं उनकी ऊंचाई साधारणही है । उनपर अच्छे अच्छे वृक्ष और गोचर आदि है. जिनसे गौएं. भेड़. बकरियां और घोडे अधिकतासे चरते रहते है। उनपर, तीतर. खरगोश. हरिन (जिनकी नाभीसे कस्तूरी निकलती है. आदि शिकारके लिये अधिकतासे पाये जाते हैं । ·

यहां एक और बात भारतवर्षसे बिलकुलही विपरीत है । अर्थात् यहां हिंसक जन्तु जैसे शेर. रीछ. चीता. सांप आदि बिलकुल नहीं होते । इन्हीं कारणोसे इन पहाड़ोको केवल सुन्दरही नहीं कहना चाहिये बल्कि कहा जा सकता है कि इनमें अधिकतासे दूध और शहदकी नदियां हैं । इन पहाड़ोसे और आगे बढ़कर बहुत ऊंचे ऊंचे पहाड़ोकी चोटियां दिखाई देती है जो ओलम्पियस पर्वतके समान. बर्फसे ढंके होनेके कारण बहुतही सुन्दर और स्वच्छ दिखाई देती हैं । इन पहाड़ोमेंसे अनगिनत छोटी छोटी नदियां निकलती हैं जो अनेक उपायोसे उन टीलो परभी पहुंचा दी जाती हैं जो इन घाटोंमें स्थित है । इनकी सहायतासे धानके खेत भली भांति सींचे जाते है । इन हजारो छोटी छोटी नदियोसे मिलकर जो इस देशसे बड़ी सुन्दरतासे फैली हुई हैं. एक बड़ी नदी बन जाती है । यह नदी वैसीही सुन्दर और नावोके चलनेके योग्य है जैसी हमारे देशमें सीन । यह नदी धीरे धीरे इस देशके चारो ओर घूमती हुई यहांकी राजधानी से होकर बारामूलाकी ओर निकल गई है जहां वह दो पहाड़ोंके बीचमें होती हुई और अनेक छोटी छोटी नदियों सहित सिन्ध नदी

मे जा मिलती है। अनगिनत नदियां तथा नहरें जो पहाड़ोंमे निकलती हैं इस देशको भलीभांति सींचती हैं और सारा देश मनो एक सुन्दर हरा भरा बाग मालूम होता है। यहांकी सोहनी हरियालीमें कहीं गांव, कहीं गोचर और कहीं अंगूर, धान, गेहूं सन तथा तरकारियों आदिके खेत होते हैं; और कहीं नहरे, झरने और छोटी छोटी नदियां जिनका दृश्य बहुतही मनोहर होता है, बहा करती हैं। सारी भूमि इङ्गलैण्डके फूलो और छोटे वृक्षोंसे भरी मालूम होती है। यहां मेवोके वृक्षभी जैसे सेव, नाशपाती, आलूचा और अखरोट आदि अधिकतासे होते हैं। खरबूजा, तरबूज और हमारे देशकी अधिकांश तरकारियां चुकन्दर आदि और अनेक प्रकारके सागपात जिनसे हम लोग अपरिचित हैं यहां बहुत होते है।

हमारे देशके फल यहाँकी अपेक्षा बहुत स्वादिष्ट होते है; पर मैं समझता हूँ कि इसका कारण खेतिहरों और मालियोंकी अनभिज्ञता है जो फ्रान्सकी तरह खेती करना और पेड़ोको भलीभांति लगाना तथा उनकी रक्षा करना नहीं जानते। तथापि मैंने यहां बहुतही अच्छे अच्छे मेवे खाये हैं। इसमे सन्देह नहीं कि यदि यहांके लोग इस विषयमें कुछ उन्नति करें और विदेशी वृक्षोंकी कलमे लगावे तो यहांके मेवे विदेशी मेवोंके मुकाबिलेमे बहुत उत्तम और स्वादिष्ट हो सकते हैं।

काश्मीर देशकी राजधानीका नाम भी काश्मीरही है और उसके चारो ओर कोई शहरपनाह नहीं है। यह नगर दो मीलसे कुछ अधिक लम्बा है और चौड़ाई इसकी डेढ़ मील है। पहाड़ोंसे छ: मील दूर एक मैदानमे काश्मीर नगर बसा हुआ है और इसके निकट चन्द्राकार पहाड़ हैं। 'डल' नामक एक झीलके किनारे जो बारह या पन्द्रह मीलकी है और जिसका जल बहुतही स्वच्छ और उत्तम है यह नगर बसा है। यह 'डल' उन नालों और झरनोंके जलसे बनी है जो यहां आकर गिरते हैं। इसका जल एक नहरके द्वारा जिसमें नावे भलीभांति चल सकती हैं इस नदीसे जा मिलती

है जो नगरके बीचमें बहती है। नगरमें इस नदीपर लकड़ी के दो पुल बने हुए हैं। नगरकी सारी इमारतें बिलकुल लकड़ीकी हैं और दो अथवा तीन खण्डकी बनी हैं। यद्यपि इस देशमें एक विशेष प्रकारका बहुत अच्छा पत्थर अधिकतासे मिलता है और यहांकी कुछ पुरानी इमारतें और हिन्दुओंके मन्दिर आदि भी पत्थरहीके हैं, तौ भी यहांके लोग पत्थरकी अपेक्षा लकड़ीका अधिक व्यवहार इस लिये करते हैं कि एक तो वह सस्ती होती है और दूसरे पहाड़ोपरसे नदियोद्वारा शीघ्रही पहुँच जाती है। प्रायः मकानोंमें जो नदीके दोनो किनारे बने हुए हैं छोटे छोटे सुन्दर बाग लगे हुए हैं जिनके कारण गरमीके दिनोंमें जबकि बहुतसे जलसे नदीमें होते हैं बड़ाही आनन्द आता है। नगरके प्रायः मकानो और महलोंमें नावें पड़ी रहती हैं जिनपर लोग सवार होकर जब इच्छा होती है 'डल' की सैर कर आते हैं। नगरके अन्तिम भागमें एक ऐसा टीला है जो उससे बिलकुलही अलग है। इसकी ढलान पर कई सुन्दर मकान बने हुए हैं। प्रत्येक मकानमें एक एक बाग है। टीलेकी चोटीपर एक अच्छी मसजिद है जिसमें फकीरोंके लिये छोटी छोटी कोठरियां बनी हुई हैं। वहां बहुतसे घने वृक्ष भी लगे हुए हैं। इन सबोंका दृश्य बड़ाही सुहावना है। इन सब पेड़ो और बागोंके कारण इस स्थानका नाम हरिपर्वत है।

इस पहाड़के सामने एक और पहाड़ है जिसपर एक छोटी मसजिद और एक बाग है। साथही एक बहुत पुरानी इमारत है जिसके चिन्होंसे मालूम होता है कि वह हिन्दुओंका मन्दिर है। यद्यपि लोग उसे "तख्त सुलेमान" कहते हैं और वहांके मुसल्मानोंका कथन है कि हज़रत सुलेमानने जब कि वे काश्मीरकी सैरके लिये आये थे इसे बनाया था तथापि वे लोग उसका कोई ठीक प्रमाण नहीं दे सकते। और जहांतक मैं समझता हूं कि कदाचित् हो उस प्रसिद्ध बादशाहने इस देशको अपने आगमनसे सुशोभित किया हो।

"डल" में बहुतसे छोटे छोटे सुन्दर टापू हैं जो बहुतही

हरेभरे और सुन्दर हैं और जिनमे मेवोंसे भरे हुए वृक्ष हैं। उनमे बहुत अच्छी अच्छी रविशे बनी हुई है जिनपर दोनो ओर सफेदके वृक्ष दो दो कदमकी दूरीपर लगे हुए हैं। यद्यपि इन वृक्षोकी मोटाई इतनी कम है कि एक आदमी उन्हें अपनी बगलमे ले सकता है, तौ भी उनकी ऊंचाई जहाजके मस्तूलके बराबर है और उनकी चोटीपर खजूरके समान डालियो और पत्तोकी छतरी है। 'डल' की दूसरी ओर जो पहाड़ है उनपर भी बहुतसे मकान और बाग आदि बने हुए हैं। यहांका जलवायु बहुत ही अच्छा है। यहां स्थान स्थानपर झरने बहते हैं। यहांसे डल, उसके टापुओ तथा नगरका सारा दृश्य भली भांति दिखाई देता है।

इन सब बागोंमेंसे बादशाही बागका नाम शालामार है जो बहुत ही सुन्दर है। डलकी एक चौड़ी नहरमेंसे इसके अन्दर जानेका मार्ग है जिसके दोनों ओर घास उगी हुई है। इसी रास्तेसे होकर एक मकानमेंसे होते हुए बागके मध्यमे पहुंचना होता है। इस नहर के अतिरिक्त एक और नहर है जो इससे भी सुन्दर है। उसमेंसे होकर एक और वैसेही मकानमेंसे होते हुए बागके दूसरे सिरेतक जाना होता है। इस दूसरी नहरमें एक विशेष प्रकारके रेतीले पत्थरोका फर्श है और उसके किनारे भी उसी पत्थरके बने हुए हैं। इस नहरके बीचमे पन्द्रह पन्द्रह कदमकी दूरीपर फौव्वारे लगे हुए हैं। इसके अतिरिक्त इधर उधर और बहुतसे गोल हौज बने हुए हैं जिनमे फौव्वारे लगे हैं। इन नहरोके बीचमें बने होनेके कारण वह मकान चारो ओर पानीसे घिरा हुआ है और उसके दोनो ओर पेड़लगे हुए हैं। यह दोनो मकान गुम्बदके समान हैं। उसमें चार दरवाजे हैं। उनमेसे दो तो दोनों ओरकी नहरोंकी ओर निकलते हैं और दो उन दोनों पुलोकी ओर निकलते हैं जिनपरसे होकर किनारेतक पहुंचना होता है। प्रत्येक मकानके बीचमे एक बडा कमरा और चारो कोनोपर चार छोटे छोटे कमरे हैं जिनके अन्दर सुनहरी और रङ्गीन नक्काशी बनी हुई है। सब कमरोंकी दीवारोपर फारसी भाषाके कुछ काव्य

लिखे हुए हैं। इनके चारों दरवाजे जो पत्थरके बने हुए हैं बहुतही बहुमूल्य हैं। प्रत्येक दरवाजेकी महराब दो खम्भोंपर स्थित है जो देखनेमें बहुत ही सुन्दर है। यह महराब तथा खम्भे हिन्दुओंके किसी मन्दिरसे जिसे शाहजहांने गिरवा दिया था, आये थे। इस कारण उनके मूल्यका अनुमान करना बहुतही कठिन है। मैं इस पत्थरके सम्बन्धमें कुछ अधिक नहीं कह सकता, पर हां, वह सब प्रकारके संगमरमरोंसे बहुत अच्छा है।

मुझे आशा है कि आपने पहलेही अनुमान कर लिया होगा कि काश्मीर मुझे बहुत पसन्द है। इसकी सुन्दरता और मनोहरताके सम्बन्धमें आजतक मैंने जो कुछ अनुमान किया था उससे भी बढ़कर मैंने उसे पाया। यह देश अनुपम है और संसारमें कोई देश इतनाही बड़ा ऐसा नहीं है जो सुन्दरतामें इसका मुकाबला कर सके। बात तो यह है कि इसे होना भी ऐसाही चाहिये था। क्योंकि प्राचीन समयमें बड़े बड़े राजाओंकी राजधानी भी यहीं थी; और आसपासके सभी देश तातार, सारा भारत आदि यहांके राजाओंके अधिकारमें थे। इसी लिये मोगल सम्राट् उसकी उपमा स्वर्गसे देते हैं। अकबरशाह इसीके लिये बहुत दिनोंतक चेष्टाएँ करता रहा और अन्तको उसने यह देश किसी न किसी प्रकार वहांके राजाओंके हाथसे छीनही लिया। उसका बेटा जहांगीर तो इसपर इतना अधिक रीझा था कि उसने इस छोटेसे देशको अपना निवास-स्थान नियत कर लिया था। वह प्रायः कहा करता था कि उसे अपने इस बड़े साम्राज्यके हाथसे निकल जानेका इतना दुःख न होगा जितना कि काश्मीरके निकल जानेका।

यहां काश्मीरी तथा बादशाही कवियोंकी एक बहुत बड़ी सभा हुई थी जिसमें मैंभी सम्मिलित था। हम लोगोंके काश्मीर पहुंचतेही वहांके कवियोंने बहुतसी कविताएं जिनमें काश्मीरकी प्रशंसा की गई थी, औरङ्गजेबके सामने पेश कीं। जिन्हें सुनकर औरङ्गजेबने उन्हें बहुत कुछ पारितोषिक दिया। इन कविताओंमें बहुत अधिक

अत्युक्तिसे काम लिया गया था । मुझे स्मरण है कि एक कविने काश्मीरके चारों ओरके पहाड़ोंके सम्बन्धमे कहा था—इन ऊंचे पहाडोंसे स्पर्श करनेके कारणही आसमानका रङ्ग इतना सुन्दर है । साथही यह भी कहा था—'सृष्टिकर्त्ता परमेश्वरने अपनी सारी कारीगरी इसी देशके बनानेमें खर्च कर दी थी । उसने पहाड़ोंके किलेमे इस देशको बनाकर शत्रुओंसे सुरक्षित कर दिया । यह देश सबका शिरोमणि है इसलिये यही उचित है कि वह विना किसी के अधीन हुए सुखसे सारे देशोंपर राज्य कर सके ॥ आगे चलकर कवि कहता है—' जो पहाड़ कुछ दूर और अधिक ऊंचे हैं उनकी चोटियां स्वच्छ और चमकती हुई हैं और जो छोटे हैं वह हरे भरे हैं । सब देशोंके शिरोमणिके लिये ताज भी ऐसा ही होना चाहिये ।' जब मेरे आकाने मुझे यह कविता दिखलाई तो मैंने कहा—' यदि कवि अपनी उक्तिको इतना और बढ़ाकर आसपासके देशोंको भी इसीमें मिला लेता और कहता कि गङ्गा, यमुना, सिन्ध और चनाब आदि नदियां यहींसे निकलती हैं तो कुछ चिन्ता की बात न थी । और इसी लिये वह यह भी कह सकता था कि बाग अदन भी आरमेनियांसे नहीं बल्कि काश्मीर हीमे लगाया गया था जैसा कि बहुतसे लोगोंका विश्वास है ।

काश्मीरी बहुत ही हँसमुख हैं और भारतवासियोंकी अपेक्षा अधिक बुद्धिमान् और चतुर समझे जाते हैं और कविता आदिमे भी ईरानियोंसे कुछ कम नहीं हैं । यह लोग मेहनती और फुरतीले होते हैं । पालकी, पलङ्गकेपाये, सन्दूक, कलमदान और चमचे आदि बनानेमे इनकी कारीगरी प्रशंसनीय है । यहांकी बनी हुई चीजें भारतके प्राय सभी प्रान्तोंके लोग काममे लाते हैं। यहांके लोग वार्निश बहुत ही उत्तमतासे करते हैं । ये लोग महीन सुनहरी तारोंको किसी चीजमें जमाकर ऐसी सुन्दरतासे लकड़ीपर लगाते और चित्रकारी करते हैं कि मैंने आजतक ऐसी उत्तम वस्तुएं और कहीं नहीं देखी ।

वह वस्तु जो विशेषता और अधिकतासे काश्मीरमे बनती है

और जिसके व्यापारके कारण वहांके लोग बहुत धनी हो गये हैं. शाल है। यह शाल यहींके कारखानोंमे बनता है और कामकी अधिकताके कारण कारीगरोंके छोटे छोटे लड़के भी उसमें सहायता देते हैं। यह शाल प्रायः डेढ़ फरान्सासी गज लम्बी और एक फरान्सीसी गज चौड़े होते है। इनके दोनो पल्लोपर बेल बूटे बने होते हैं जो एक गज लम्बे अड्डोंपर बनाये जाते है। मोगल और हिन्दुस्थानी, स्त्रियां तथा पुरुष सभी इन शालोको जाड़ेके दिनोंमें ओढ़ते है। शाल दो प्रकार के होते है। एकतो काशमीरी ऊनसे बनता है जो स्पेनके ऊनसे अधिक मुलायम और उत्तम होता है और दूसरा उस ऊनसे जिसे तोज कहते हैं और जो तिब्बतकी एक प्रकारकी बड़ी बकरियोकी छातीपरसे उतारा जाता है। काशमीरी ऊनके बने शालकी अपेक्षा तोजका शाल अच्छा होता है। मैंने बहुतसी शाले देखे है जो अमीरोके वास्ते बनाई गई थीं और जिनका मूल्य डेढ डेढ़ सौ रुपये था। लेकिन काशमीरी ऊनका शाल मैंने आजतक पचास रुपयेसे अधिक मूल्यपर बिकते नहीं सुना। इन शालोको यदि बीच बीचमें खोलकर हवामे न रखा जाय तो इनमे कीड़ा लग जाता है। पटना, आगरा और लाहोरमे ऐसाही शाल बनानेके लिये बहुतसी चेष्टाएं की गई पर सब विफल हुई और वे काशमीरी शालके बराबर मुलायम न बन सके। सम्भवतः उस देशके जलवायु हीके प्रतापसे उनमे यह विशेषपना आती है। मछलीपटनकी छींटजो हाथसे छापी जाती है और धोनेसे अधिक उत्तम निकलती है वह भी वहांके जलवायुके कारण ही बढ़िया बनती है।

काश्मीरके निवासी—काशमीरके निवासी सुन्दरतामे युरोपियनोके समान आदर्श हैं। न तो तातारियोंकी तरह उनकी चिपटी नाक होती है और न सूभरकीसी छोटी भद्दी आंखे। विशेषत वहांकी स्त्रियां और भी अधिक सुन्दर होती हैं। प्राय सभी लोग जो पहलेपहल मोगल राज्यमे आते हैं इसी देशकी स्त्रीसे अपना विवाह करना पसन्द करते हैं जिससे उनकी सन्तान गर्म

गोरी हो और उसकी गणना मोगलोंमें हो सके। जब कि बाजारमें दुकानोंपर साधारण स्त्रियां भी सुन्दर दिखाई देती हैं तो मैं समझता हूं कि ऊंचे ऊंचे घरोंकी स्त्रियां और भी अधिक रूपवती होंगी। जब मैं लाहोरमें था तो मैंने वहांकी सुन्दर स्त्रियोंके देखनेके लिये वही उपाय किया था जो यहाँके मोगल (बुरी नियतसे) करते हैं; क्यों कि सारे भारतकी अपेक्षा वहांकी स्त्रियां अधिक सुन्दरी होती हैं। मैं एक बड़े हाथीके पीछे पीछे चल पड़ा जिसपर बहुमूल्य झूल पड़ी हुई थी। इस उपायमें मुझे विश्वास था कि मेरी इच्छा पूर्ण हो जायगी। क्योंकि वहांकी स्त्रियां हाथियोंके उन चांदीके घण्टोंका शब्द सुनते ही जो उनकी गरदनके दोनों ओर लटकते होते हैं, खिड़कियोंमेंसे अपना सिर निकालकर देखने लगती हैं। पहलेपहल काश्मीरमें भी मैं इसी प्रकार अपना दिल बहलाया करता था, पर जब वहांके एक प्रसिद्ध वृद्ध मुल्लाने जिससे मैं फारसी कविताकी पुस्तक पढ़ता था, मुझे इससे भी अच्छा उपाय बताया तो मैं उसीके अनुसार काम करने लगा। वह बुड्ढा बहुत सी मिठाई लेकर घर घर फिरता और मैं उसके साथ रहता था। घरोंमें पहुंचकर जहां उसके लिये किसी प्रकारकी रोक टोक न थी, वह मुझे अपना सम्बन्धी बतलाता और सबोंसे कहता कि यह एक बड़ा धनी है, अभी ईरानसे आया है और यहां विवाह किया चाहता है। घरोंमें पहुंचतेही वह मिठाई बांटने लग जाता; और न केवल मिठाई लेनेकी इच्छासे बल्कि इस अभिप्रायसे भी कि मैं उन्हें देख लूं वहांकी सभी स्त्रियां कुंवारी तथा विवाहिता हम लोगोंके चारों ओर एकत्रित हो जाती थीं। यद्यपि इस काममें मेरा बहुतसा धन व्यय हुआ पर इसमें सन्देह नहीं कि मुझे इस बातका विश्वास हो गया कि वास्तवमें काश्मीरमें भी वैसी सुन्दरता है जैसी सारे युरोपमें।

अब मुझे केवल उसी यात्राका हाल लिखना बाकी है जो पहाड़ोंके अन्दर भिम्भरसे काश्मीरतक मुझे करनी पड़ी थी और जिसका वर्णन मुझे इस पत्रके आरम्भ हीमें करना चाहिये था।

इस वर्णनमे बहुतसी बातें तो ऐसी हैं जो मैंने स्वयं उन पहाड़ों में देखा हैं और बहुतसी आसपासके गांवोंके लोगोंके मुँहसे सुनी हैं। जब कि मैं भिंभटके निकट ऊंचे और वृक्षलता-रहित काले पहाड़से होकर काश्मीरके अन्दर पहुँचा तो मुझे बहुतही अच्छी और सुगन्धित हवा मिली जिससे मेरा चित्त प्रफुल्लित हो गया और मुझे ऐसा मालूम होता था कि मानो मैं भारतसे निकलकर अचानक युरोपमे पहुँच गया हूँ। जिन पहाड़ोंमेसे होकर हमलोग आये थे उनमे सब प्रकारके युरोपियन वृक्ष आदि लगे हुये थे। पर उनमें जोफा जीरा जेमरान और रोजमेरी जातिके गुलाब न थे। उस समय मानों मैं फ्रान्सके 'आवर्न' प्रान्तके जिलोंके पहाड़ोमे था, जिनमे सनोवरके वृक्ष अधिकतासे थे। भारतके जलते हुए मैदानोमे जिन्हे हम अभी छोड़कर आये हैं और जहां इस प्रकारकी कोई वस्तु मन बहलानेको न थी, तथा इस स्थानमे बहुत ही भेद था। विशेषतः मेरा ध्यान उस पहाड़पर और भी अधिक था जो भिंभटसे दो दिनके रास्तेकी दूरीपर था और जिसके दोनो ओरकी ढालोपर भांति भांतिके वृक्ष लगे हुए थे। दक्षिणकी ओरकी ढालपर जो भारतकी ओर है हिन्दुस्थानी तथा विलायती दोनो वृक्ष लगे हुए थे पर उत्तरकी ओरकी ढाल केवल विलायती वृक्षो और लताओंसे भरी हुई थी। अनुमान होता था कि एक ओर भारत और युरोप दोनोका जलवायु मिला हुआ था और दूसरी ओर केवल युरोप हीका जलवायु था। मार्गमें मुझे यह देखकर बहुत ही आश्चर्य हुआ कि खोहोमे जहां मनुष्योंको जानेका कभी साहस भी नहीं हो सकता, बहुतसे वृक्ष आदि उगे हुए थे और साथही बहुतसे छोटे छोटे हरे भरे पेड़ उनके स्थानापन्न होनेके लिये बढ़ रहे थे। मैंने कई स्थानोपर बहुतसे जले हुए वृक्ष भी देखे पर मैं यह नहीं कह सकता कि उनपर बिजली गिरी थी अथवा वे आपसमें रगड़ जानेके कारण जले थे क्योंकि तेज हवा चलनेके कारण प्रायः उनमें आग लग जाती है। अथवा जैसा कि यहांके लोगोंका विश्वास है पुराने होनेके कारण स्वयंही उनमे आग लग जाती है।

उन झरनोंके कारण जो चट्टानोंके बीचमें बड़े जोरसे गिरते हैं, यहांके दृश्योंकी सुन्दरता और भी बढ़ जाती है। मैंने एक विशेष झरनेको जो बहुतही सुन्दर था एक ऊंचे, पहाड़पर चढ़कर दूरसे देखा था । उसका पानी एक लम्बे पतले रास्तसे जो वृक्षोंसे ढंका हुआ था आकर ऊची चट्टानपर इतने वेगसे गिरता था कि कान सन्न हो जाते थे । जहांगीरने इस झरनेके सामने एक पहाड़ खुदवाकर उसपर एक बहुत अच्छी इमारत इसलिये बनवा दी है कि दरबारी तथा अमीर आदि वहीं बैठकर वहांका दृश्य देखें।

इस स्थानपर एक ऐसी दुर्घटना हो गई जिससे हमारी इस यात्रा और सैरका सारा आनन्द किरकिरा हो गया । बादशाह उस समय पीरपंजल पर्वतकी चढ़ाई चढ़ रहा था जो यहांके सब पर्वतोंसे ऊंचा है और जहांसे काश्मीर पहलेपहल दिखाई देता है । बादशाहके पीछे पीछे बहुतसे हाथी थे जिनपर हौदों तथा मेघडम्बरोंमें बेगमें सवार थीं । लोग कहते हैं कि इनमेंसे सबसे पहला हाथी बड़े ऊंचे रास्तेको देखकर भयभीत हुआ और हटकर अपने पीछेवाले हाथीपर आ गिरा। और इसी प्रकार पन्द्रह हाथी एक दूसरेपर गिर पड़े। अब न तो वे आगे बढ़ सकते थे और न दाईं अथवा बाईं और घूम ही सकते थे। अन्तमें वे सबके सब नीचे गिर पड़े। पर सौभाग्यवश वह स्थान जहां हाथी गिरे थे अधिक नीचा न था; इसलिये केवल तीन या चारही स्त्रियां मरीं। पर हाथियोंके बच निकलनेका कोई उपाय नहीं था। क्योंकि हाथी जब किसी बोझके कारण दबकर बैठ जाता है तो फिर सम भूमिपर भी नहीं उठ सकता, फिर भला ऐसी ऊंची नीची पथरीली भूमिपर कैसे उठ सकता था । जब हमलोग दो दिन बाद इस स्थानपर पहुंचे तो मैंने देखा कि अबतक वे बेचारे पड़े हुए अपनी सूंड़ हिला रहे थे । उन फौजको जो चार दिनसे पहाड़पर चढ़ रही थी, इस घटनाके कारण बहुत कष्ट उठाना पड़ा क्योंकि वह सारा दिन और रात बेगमोंकी जान बचाने तथा असबाब निकालनेमें बीत गई। इतनी देरतक सिपाहियोंको विवश होकर

उसी स्थानपर खड़े रहना पड़ा; क्योंकि बहुतसे स्थान ऐसे पेंचीले थे कि जहांसे आगे बढ़ना अथवा पीछे हटना बिलकुल ही असम्भव था और वह कुली जिनके पास असबाब था नियत स्थान पर पहुंच नहीं सकते थे। सौभाग्यवश मैं मार्गसे अलग निकलकर एक ऐसे स्थानपर पहुंच गया कि जहां मैं अपने घोड़े सहित अच्छी तरह ठहर सका और थोड़ी सी रोटी जो मेरे नौकरके पास थी हम लोगोंने बांट खाई।

मुझे स्मरण है कि उसी स्थानपर पत्थरोंके नीचे हम लोगोंने एक बड़ा काला बिच्छू देखा, जिसे एक मोगल युवकने जो मेरी जान पहचानवालोंमेंसे था, अपने हाथमें उठाकर अपनी मुट्ठीमें दबा दिया और फिर मुझे तथा मेरे नौकरको दे दिया। पर उस बिच्छूने हम लोगोंमेंसे किसीको न काटा। उस युवकने इसका कारण यह बतलाया कि मैंने कुरानकी एक आयत पढ़कर उसे फूंक दिया है और प्रायः बिच्छुओंको मैं इसी प्रकार फूंक दिया करता हूं। पर उसने वह आयत मुझे न सिखलाई और कहा कि यदि वह आयत मुझे सिखला दूंगा तो फिर वह स्वयं उसका उपयोग न कर सकेगा। उसने कहा था कि जब मेरे गुरुने वह आयत मुझे सिखला दी तो फिर उसका गुरु बिच्छुओंको नहीं फूंक सकता था।

जब मैं पीरपञ्जल पर्वतपर चढ़ रहा था तो मैंने तीन विचित्र बातोंपर विचार किया था जिनका हाल लिखना मैं उचित समझता हूं। एक तो यह कि एकही समयमें हम लोगोंको गरमी और सर्दी दोनो मालूम हुई थी। अर्थात् चढ़ाईके समय बहुत कड़ी धूप थी और हमलोग पसीने पसीने हो गये लेकिन चोटीपर पहुंचतेही हमने अपने आपको जमी हुई बरफमें पाया जिसे काटकर रास्तेके लिये मार्ग बनाया गया था। उस समय वहां हलकी हलकी वर्षा हो रही थी और इतनी ठण्डी हवा चल रही थी कि हिन्दुस्थानी जो कभी गर्मी सरदीमें नहीं रहे थे, बहुतही आश्चर्यित हुए और उनमेंसे कितने तो भाग गये। दूसरे यह कि दो सौ कदमकी दूरीपर ही दो ओरसे हवा चल रही थी। विचारनेपर इसका कारण यह मालूम

हुआ कि चारो ओरसे उष्ण भाप उठकर पहाड़की चोटीपर पहुंचती है और वहांकी सरदीके कारण उस हवाकी उत्पत्ति होती है। दोनों ओरकी उतराईमे विपरीत हवाके चलनेका कारण यह है कि नीचेकी गरमीसे जब हवा हलकी हो जाती है तो ऊपरकी भारी हवा उसके स्थानपर आ जाती है। तीसरे यह कि उसकी चोटीपर मैंने एक वृद्ध फकीरको देखा जो जहांगीरके समयसे वहीं रहता है। मैं नहीं जानता कि उसका धर्म्म क्या है पर लोग इतना अवश्य कहते थे कि वह ईश्वरतक पहुंचा हुआ व्यक्ति है। वह ऐसी करामातें करता है जिससे वादलोमे विचित्र गर्ज, वरफ, ओले, वर्षा आदिका आविर्भाव होता है। उसकी लटे उलझी हुई दाढ़ी बहुत घनी और लम्बी थी और उसकी आकृतिसे रूखापन झलकता था। वह बड़ेही अक्खड़पनसे भिक्षा मांगता था। वह लोगोको उन मट्टीके प्यालोमेसे पानी पीनेको कहता था जो उसने एक वड़े पत्थरपर रखे हुए थे। साथही वह हाथसे लोगोको न ठहरने और नीचे उतर जानेके लिये इङ्गित करता था; और जो लोग वहां शोर करते थे उनपर वहुत बिगड़ता था। जब मैं उस खोहपर पहुंचा जहां वह वैठा हुआ था तो मैंने बड़ेही नम्रभावसे उसके हाथपर एक अठन्नी रखी जिससे उसने कुछ शान्त होकर कहा कि इस स्थानपर शोर करनेसे बहुत कड़ी आन्धी और वर्षा आती है। उसने यहभी कहा कि यह औरङ्गजेबकी वुद्धिमत्ता है जो उसने सारे लशकरको यहांसे चुपचाप उतर जानेकी आज्ञा दी और उसका वाप शाहजहान भी इसी प्रकार लशकरको आज्ञा दे दिया करता था। पर जहांगीरने एक बार मेरी वात हसींमे उड़ा दी और मेरे बहुत मना करने परभी नकारे वजानेकी आज्ञा दे दी जिससे ऐसी आन्धी आई कि उसका लशकर नष्ट होते होते बचा।

अब मैं उस यात्राका हाल लिखता हूं जो मैंने इस देशके भिन्न भिन्न भागोंसे की है। काशमीर नगरमे पहुंचतेही मेरे आका नवाव दानिशमन्दखांने मुझे इस देशकी सीमापर भेजा जो यहांसे तीन दिनका रास्ता है। मेरे आकाने मुझे इसलिये भेजा कि मैं वहांके

एक विचित्र उबलते हुए झरनेको देखूं। मेरे साथ वहांका एक निवासी और रक्षाके लिये एक सवारभी था। बात यह है कि मई मासमें जब बरफ पिघलने लगता है तो पन्दरह दिनोंतक यह झरना बराबर फौवारेकी तरह बहता रहता है और दिन रातमें तीन बार अर्थात् प्रातःकाल, दोपहर और सन्ध्याको बन्द हो जाता है। प्रायः ४५ दिन तक उसमेंसे पानी बराबर निकलता रहता है। यह पानी उस चौकोर हौजको जो बारह फ्रांसीसी-फीट गहरा और इतनाही लम्बा और चौड़ा है, भर देनेके लिये आवश्यकतासे अधिक है। पन्दरह दिनके बाद पानीकी तेजी कम हो जाती है और एक मास बाद पानी बिलकुल बन्द हो जाता है। पर अधिक वर्षाके दिनोंमें और झरनोंके समान उसमें जल अधिकतासे बहता रहता है। उस हौजके किनारे हिन्दुओंका एक देवमन्दिर है जहां दूर दूरसे यात्री दर्शनके लिये आते हैं। यहीं वे उस पवित्र जलसे स्नान करते हैं। इस झरनेकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें बहुतसी विलक्षण बातें सुननेमें आती हैं जिनका वर्णन करना मैं उचित नहीं समझता। मैं पांच छः दिनोंतक उस स्थानपर ठहरा रहा और उसकी विचित्रताका कारण जाननेके लिये मैंने बहुत चेष्टाएं कीं। मैंने उस पहाड़को जिसकी जड़मेंसे यह झरना निकलता है, बहुत ध्यानसे देखा और बड़ी कठिनतासे उसकी चोटीपर चढ़कर कदम कदमपर देखा और इस प्रकार उस पहाड़का कोई भाग ऐसा न बचा जो मैंने ध्यानसे न देखा हो। उसकी लम्बाई उत्तरसे दक्षिणकी ओर है और यद्यपि अन्य पहाड़ोंके बहुतही निकट है तथापि सबसे अलग है। वह पहाड़ गधेकी पीठके समान है और उसकी चोटी बहुत लम्बी है पर चौड़ाई उसकी सौ कदमसे अधिक न होगी। उसके उत्तरकी ओर हरी घास उगी हुई है और उसपर सामनेके ऊंचे पहाड़ोंके कारण प्रातःकाल आठ बजेतक धूप नहीं आती। उसके दक्षिणकी ओर वृक्ष और लता आदि हैं। इन बातोंको देखकर मैंने यह अनुमान किया कि सूर्य्य तथा उस पहाड़के अन्दरकी गरमीके कारण उस झरनेमें यह विचित्रता है। मैं समझता हूं,

कि जाड़के दिनोंमें जब सारी जमीन बरफसे ढंक जाती है तो कुछ पानी रुककर उस पहाड़के अन्दर जाकर जम जाता है और सवेरे जब सामनेकी धूपसे पहाड़का वह भाग गरम हो जाता है तो वह पानी पिघलकर दोपहरके समय पहाड़के दरोंसे झरनेके स्थानपर छुट निकलता है । और जब वह स्थान जो प्रातःकालकी धूपसे गरम हो गया था सूर्य्यके ऊंचे हो जानेके कारण ठण्ढा हो जाता है तो उस स्थानका पानी आना बन्द हो जाता है । और दोपहरके समय जब उसकी चोटीपर गरमी पड़ती है तो पहाड़के दूसरे भागका पानी पिघलने लगता है और धीरे धीरे और भागोंसे होता हुआ झरनेके मुंहपर आ जाता है और रातके समय बहने लगता है। और फिर जब सूर्य्यकी धूप पहाड़के पूरबी भागपर पड़ती है तो वहांका पानी पिघलकर प्रात कालके समय बहने लगता है । सवेरे जलके धीरे बहनेका कारण यह है कि पूरबकी ओर जहां पानी रहता है वह स्थान झरनेके मुखसे कुछ दूर है; और वृक्ष आदिके कारण सूर्य्य की गरमीका ठीक प्रभाव उसपर नही पड़ता । अथवा केवल रातकी सरदी उसका कारण है कि जिससे पानीका वहां आना कम हो जाता है ।

सवेरे पानीके अधिकतासे निकलने और फिर धीरे धीरे घट कर बिलकुल बन्द हो जानेसे यह बात मालूम होती है कि जो पानी पहाड़की दरारोंमें पहले अधिकतासे निकलता था वह अन्तमें कम हो गया; और इस बातपर विचार करनेसे मेरे विचार औरभी दृढ़ हो जाते हैं । इसके अतिरिक्त यहभी एक विचारने योग्य बात है कि इस झरनेके पानीका बहाव निश्चित रूपसे नहीं होता । कभी कभी सवेरे अथवा रातकी अपेक्षा दोपहरको अधिक जल बहता है और दोपहरकी अपेक्षा सवेरे अधिक जल निकलता है जिसका कारण यह है कि किसी दिन गरमी अधिक होती है और किसी दिन कम । और कभी कभी बादलके कारण धूपकी गरमी कम हो जानेसे पानीका बहाव कम हो जाता है ।

वहांसे लौटते समय सड़क छोड़कर और कुछ चक्कर खाकर मैं अक्षयवट पहुंचा। काश्मीर नगरके निकट यह एक बाग है जो पहले काश्मीरके राजाओंके हाथमें था और अब मोगल सम्राट् के अधीन हो गया था। देखने योग्य यहां एक बहुत अच्छा झरना है जिसका पानी सैकड़ों छोटी छोटी नहरोंमेंसे होकर उस मकान के चारों ओर सारे बागमे पहुंचता है। इस झरनेका पानी बहुत उछलता है; और इतना अधिक होता है कि उसे झरना न कह कर नदी कहना चाहिये। इसका जल बरफके समान ठण्ढा होता है। यह बाग बहुत सुन्दर और उसकी रविशे बहुत अच्छी बनी हैं। इसमें सेब, नाशपाती, आलूचे आदि मेवोंके वृक्ष भरे हुए हैं और अनेक प्रकारके फौवारे और मछलियोंके लिये हौज बने हैं। इस स्थानपर एक झरना इतना ऊंचा है कि गिरते समय उससे तीस या चालीस कदम चौड़ी एक सफेद सुन्दर चादर बन जाती है। यहांका दृश्य बहुतही सुन्दर है। विशेषकर रातके समय जब इसके नीचेकी दीवारोंके ताकोंमें सैकड़ों चिराग जला दिये जाते हैं तो उसकी सुन्दरता औरभी बढ़ जाती है।

अक्षयवटसे चलकर मैं एक बड़े शाही बागमें पहुंचा। उस बागमें हौजकी मछलियां मनुष्योंसे इतनी अधिक हिलमिल गई हैं कि बुलाने अथवा कुछ खानेको देनेसे पास आ जाती हैं; और बड़ी बड़ी मछलियोंके झबड़ोंमें सोनेके बाले पडे हैं जिनपर कुछ लिखा हुआ है। कहते हैं कि यह बाले औरङ्गजेबके दादा जहांगीरकी बेगम नूरमहलके पहनाये हुये थे।

जब मैंने लौटकर सब बातें दानिशमन्दखांसे कहीं तो वे बहुत प्रसन्न हुए। इसके उपरान्त उन्होंने मुझे एक और स्थानको जानेकी आज्ञा दी जहांकी विचित्रताको वे और लोगोंकी तरह करामात समझते थे। उनका अनुभव था कि उस करामातको देखकर मैं भी मुसल्मान हो जाऊंगा। उन्होंने कहा—आप जाकर बारामूलातक हो आइये। वहां एक प्रसिद्ध पीरका मकबरा है। यद्यपि वह पीर

साहब अब इस संसारमे नहीं है तथापि अवतक उनकी कृपासे बीमार वहां जाकर भला चङ्गा हो जाता है। कदाचित् आप उस बातको न भी माने पर वहां एक और भी विचित्र बात उन पीर साहिबकी कृपासे देखनेमे आती है। वहां पत्थरकी एक बड़ी गोल सिल पड़ी है जिसे बलवान्से बलवान् व्यक्ति भी नहीं उठा सकता। लेकिन ग्यारह आदमी उस पीरके लिये कुछ फातिहा पढ़कर अपनी उङ्गलियोपर बड़ी सरलतासे उठा लेते है।" मैंने बड़ी प्रसन्नतासे इस दूसरी यात्राके कष्टको भी सहना स्वीकार किया और अपने पहले दोनो साथियो सहित बारामूलाका मार्ग लिया।

बारामूला बडा ही रमणीक स्थान है। वहांका मकबरा यद्यपि कुछ अधिक लागतका न था पर उस पीरकी कब्र बहुत अच्छी तरह सजाई हुई थी। उसके चारों ओर बहुतसे लोग दुआ पढ़ रहे थे और कहते थे कि हम बीमार हैं। मकबरेके सामने एक भोजनगृह था जहां मैंने बड़ी बड़ी देगे गोश्त और चावलोंसे भरी हुई देखी। मैं उसी समय समझ गया कि यही देगे बीमारोंको यहां लानेका कारण है और उन्हींसे वे रोगमुक्त भी होते हैं। मकबरेके दूसरी ओर एक बाग और मुल्लाओंके रहनेके लिये कोठरियां बनी हुई हैं। यह मुल्ला उस पीरकी करामातकी ओटमें अपना पेट पालते हैं और प्रायः बड़ी तेजीसे सब करामातोंका हाल कहते रहते हैं। पर ऐसी करामातोंका देखना मेरे भाग्यमें नहीं लिखा था इसलिये जबतक मैं बारामूलामें रहा पीर साहबने अपनी योग्यताका प्रभाव किसी रोगीपर न डाला और मैं उस करामातके देखनेमे वञ्चित ही रह गया।

अब उस भारी सिलका हाल सुनिये जो मुझे मुसलमान बनाती थी। मैंने देखा कि ग्यारह मुल्ला उस सिलके चारो ओर कमर बांधकर खड़े हो गये। उनकी नीची कबाओं और नित्यप्रतिके पत्थर उठानेके अभ्यासके कारण मुझे पत्थर उठानेकी तरकीब समझनेमें बहुत कठिनता हुई। पर विचारनेसे मुझे उनकी सारी धूर्तता और चालाकी मालूम हो गई। यद्यपि वे लोग यही कहते थे कि उनमेंसे प्रत्येक

व्यक्तिने अपनी उङ्गलीकी केवल एकही पोर लगाई है और वह पत्थर एक परके समान हलका मालूम होता है तथापि मैंने ताड़ लिया कि शरीरका सारा बल लगाये बिना वह पत्थर जमीनसे नहीं उठाया गया। मुझे यह भी मालूम हो गया कि उन मुल्लाओंने केवल अपनी उङ्गलियां ही उस पत्थरके उठानेमें नहीं लगाई थीं बल्कि अपने अँगूठे भी लगाये थे। लेकिन इतना होनेपर भी मैं उन लोगोंसे मिल गया जो जोरसे चिल्लाकर "करामात करामत" कहते थे। मैंने एक रुपया उन्हें नजर किया और बड़े सादेपनसे उनसे प्रार्थना की कि यदि आप लोग आज्ञा दें तो मैं भी एक वार आप लोगोंके साथ मिलकर पत्थर उठानेका सौभाग्य प्राप्त करूं। पहले तो वे लोग कुछ हिचके पर जब मैंने उन्हे एक रुपया और दिया और उस करामातकी सत्यतापर अपना पूरा विश्वास प्रकट किया तो वे राजी हो गये और उनमेंसे एकने मुझे अपना स्थान दे दिया; क्योंकि उन्हे आशा थी कि दस आदमी अधिक जोर लगाकर उस पत्थरको उठा लेंगे; चाहे मैं अपनी उङ्गलीकी एक पोर लगानेके अतिरिक्त उन लोगोंको और कुछ भी सहायता न दूं। उन्हे यह भी आशा थी कि वे उसे ऐसी धूर्त्ततासे उठा लेनेका प्रवन्ध करेंगे कि मुझे उनकी चालाकी बिलकुल न मालूम होगी। पर जब उन्हें यह मालूम हुआ कि पत्थर उठानेमें केवल एक उङ्गलीके सहारेसे अधिक न लगानेका कारण वह पत्थर बराबर मेरी ओर झुका जाता था तो वे बहुत घबराये। अन्तमें मैंने उसे उङ्गली और अँगूठेके सहारे बहुत जोर लगाकर उठाना उचित समझा और फिर हम लोग बड़ी कठिनतासे उसे नियत ऊंचाई तक उठा लाये। पर जब मैंने देखा कि सब लोग बुरी नजरसे मेरी ओर घूर रहे हैं और न जाने मेरे सम्बन्धमें क्या क्या सोच रहे हैं, तो मैंने चिल्लानेवालोंमें मिलकर "करामत करामत" कहना आरंभ किया और फिर एक और रुपया उन्हें देकर और उस भीड़से निकल कर रास्ता लिया। यद्यपि मैंने प्रातःकालसे कुछ भोजन न किया था पर मैंने वहां अधिक ठहरना उचित न समझा और उसी समय अपने

घोड़ेपर सवार होकर चल पड़ा और पीर साहब तथा उनकी करामातको वहीं छोड़ दिया। हां, यहां आनेसे मुझे यह लाभ अवश्य हुआ कि मैने उन प्रसिद्ध चट्टानोंको देख लिया जिनमें गिरकर काश्मीरकी सब नहरोंका पानी मिलकर एक नदी बन जाता है और जिसके सम्बन्धमें मैने इस पत्रके आरम्भमे कुछ लिखा है।

सड़कसे अलग होकर मैं एक बड़ी झीलके पास गया। इस झीलमे मछलियां बहुत अधिकतासे थी, और मुरगाबियां राजहंस तथा अन्य जानवर भी बहुत थे। जाड़ोंमे काश्मीरके सूबेदार प्रायः यहीं शिकार खेलने आते हैं। उस समय यहां जानवरोंकी और भी अधिकता हो जाती है। इस झीलके बीचमे एक फकीरकी छोटी सी कुटि और बाग है जिसके सम्बन्धमे लोगोंका कथन है कि वह करामातसे पानीपर तैरता है और बहुत दिनोंसे वहीं रहता है और कभी बाहर नहीं आता। केवल उस जनश्रुतिके अतिरिक्त कि काश्मीरके किसी प्राचीन नरेशने तमाशेके लिये कुछ दद शहतीरोंको जोड़कर उसपर वह बाग और कुटि बनवा दी है, मैं उन सैकड़ो व्यर्थकी जनश्रुतियोंसे जो इसके सम्बन्धमे प्रसिद्ध हैं कागज काला नहीं किया चाहता। वह नदी जो बारामूलाको जाती है इसी झीलके बीचसे होकर निकलती है।

यहांसे चलकर मै एक झरनेकी ओर गया जिसे लोग बहुत ही विचित्र समझते थे। यह झरना बुलबुलेकी तरह धीरे धीरे उबलता और कुछ ऊंचा हो जाता है। इसके पानीमें साफ रेत मिली हुई है जो जोरके कारण कुछ और ऊपरको उठकर नीचे गिर पड़ती है। इसके उपरान्त कुछ क्षणके लिये पानीका उछलना और रेतका ऊपरको चढ़ना थम जाता है और फिर उसी तरह पानी ऊपरको चढ़ता है और रेत ऊपर उठकर फिर नीचे बैठ जाती है। सबसे बढ़कर चमत्कार लोग इसके सम्बन्धमें यह बतलाते हैं कि जरासा बोलने अथवा जमीनपर पैर पटकनेसे पानी उछलने लगता है और इसी लिये पानी उबलता और बहता है। पर अनुसन्धान करनेसे मुझे

मालूम हुआ कि न तो बोलनेसे वह पानी बहता है और न पैर पटकनेसे; बल्कि चाहे आप बोलें या न बोलें उसका उबलना और बहना सदा एक समान रहता है । मैंने इसके सम्बन्धमें कोई विशेष जांच नहीं की इसलिये आपको इसका ठीक कारण नहीं बतला सकता । पर कदाचित् इसका यह कारण हो कि ऊपरसे गिरकर रेत इस झरनेके तङ्ग मुँहमें गिरता है जिससे पानीका उछलना बन्द हो जाता है और जब अन्दर पानी अधिक जमा हो जाता है तो रेतके हटानेके लिये फिर जोर करता है । अथवा पानीके उछलनेका कारण वह हवा हो जो उसके अन्दर भरी हो और क्षण क्षणपर ऊपरकी ओर उठती हो जैसा कि फौवारोंमें होता है ।

जब हम लोग इस झरनेको देख चुके तो एक और बड़ी झीलको देखनेके लिये पहाड़पर चढ़े जिसमें गरमीके दिनोंमें भी बरफ जमी रहती है और तेज हवा चलनेके कारण बरफके बड़े बड़े टुकड़े कभी इधर उधर और कभी इकट्ठे हो जाते हैं । इसके उपरान्त हम लोग उस स्थानपर पहुंचे जिसे 'सङ्ग सफेद' कहते हैं । सङ्ग सफेद दो बातोंके लिये प्रसिद्ध है । एकतो यह कि वसन्त ऋतुमें यहां वैसेही उत्तम फूल होते हैं जैसे किसी बड़े बागमें और दूसरे यह कि प्राचीन समयसे यह जनश्रुति है कि जब आदमियोंकी बहुत भीड़ होती है और वे शोर करते हैं तो यहां जोरसे वर्षा होने लगती है । चाहे इस प्रकार सदा वर्षा न होती हो तथापि इसमें सन्देह नहीं कि कुछ वर्ष हुए जब शाहजहान बादशाह यहां आया था तो शोर करनेकी मनाही करनेपर भी असाधारण वर्षाके कारण उसके साथी मरते मरते बच गये थे । इन कहानियोंको सुनकर आपको उस बुड्ढेकी बात याद आ जायगी जो पीरपंजल पर्वतपर उसने मुझसे कही थी ।

मेरी इच्छा थी कि मैं वह पहाड़की खोह भी देखना चलूं जो यहांसे दो दिनकी राहपर थी क्योंकि मैंने सुना था कि वहां बहुत सी चीजें देखने योग्य थीं । पर इतनेमें मेरे पास खबर पहुंची

कि नवाब साहेब मेरी इस लम्बी चौड़ी अनुपस्थितिसे चिन्तित हैं इसलिये मुझे अपना वह विचार छोड़ना पड़ा।

जबसे मैं यहां आया हूं मैं इसी प्रकारकी बात सोचा करता हूं पर अबतक मुझे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो मुझे सहायता दे सके और जिसे उन विषयोका पूरा ज्ञान हो जिसका मैं अनुसन्धान किया चाहता हूं। इसलिये मुझे दुःख है कि मैं काश्मीरके आस-पासके पहाड़ोके सम्बन्धमे आपको अपूर्ण बातेंही बता सका हूं। पर फिर भी मुझे जो कुछ मालूम हो सका है वह मैंने आपको लिखा है । वे व्यापारी जो शाल बनानेके लिये बढ़िया ऊन इकठ्ठा करनेके लिये हर साल पहाड़ोपर जाते हैं, कहते हैं कि उन पहाड़ोकी भूमि जो अबभी काशमीरकी सीमाके अन्दर ही हैं, बहुत उपजाऊ है । उनमेंसे एक प्रान्त ऐसा है जिसमे वार्षिक कर केवल चमड़ा और ऊनही दिया जाता है और वहांकी स्त्रियां सुन्दरता, पातिव्रत और कलाकुशलमे आदर्श हैं । उससे आगे बढ़कर एक घाटी है जिसमे बहुत बड़े बड़े मैदान हैं । वहां चावल, अनेक प्रकारके अनाज, सेब, नाशपाती, अच्छे खर-बूजे और अंगूर जिससे मदिरा बनती है, उत्पन्न होते हैं । वहां के लोग भी कर स्वरूप चमड़ा और ऊनही देते हैं । कभी कभी ऐसा होता है कि वहांके निवासी अकाल अथवा किसी अन्य कठिनताके कारण कर नहीं देते इससे सरकारकी फौज वहां जाकर वसूल करती है । व्यापारी यह भी कहते हैं कि दूर दूर के पहाड़ोमे जो अब काशमीरके अधीन नहीं हैं, इससे भी और उपजाऊ स्थान हैं । वहांके निवासी बहुत सुन्दर होते हैं और स्वदेशसे इतनी प्रीति रखते हैं कि कदाचित् ही वहांसे बाहर निकलते हैं । उनमेसे किसी किसी प्रान्तमें कोई अधिकारी नहीं होता । उन लोगोका कोई धर्म्म नहीं मालूम होता । पर वहांकी कोई कोई जाति मछलीको अपवित्र समझकर नहीं खाती ।

अब मैं आपको वह बात बतलाता हूं जो मुझसे एक बुड्ढेनेजिस

का विवाह काशमीरके एक प्राचीन राजवंशमे हुआ था; कही थी। जिस समय जहांगीर बादशाह काशमीरके राजवंशो की खोज कर रहा था उस समय यह बुड्ढा अपने तीन सम्बन्धियो सहित पूर्वोक्त पर्वतोंकी ओर निकल गया। उसे इस बातका कुछभी ज्ञान नहीं था कि वह किधर चला जा रहा है। अन्तमें वह चलते चलते एक ऐसे स्थानपर पहुँच गया जहांके निवासियोने यह जानकर कि वह राजवंशी है उसकी बहुत प्रतिष्ठा की और उसके सामने बहुमूल्य चीजों का जो नजरके तौरपर थीं, ढेर लगा दिया और सन्ध्या समय अपनी सुन्दर कन्याएं उनके सामने पेश की और प्रार्थना की कि आप उनमें से किसीको पसन्द करके उस देशको कृतार्थ करें। इसके उपरान्त यह व्यक्ति वहांसे चलकर एक और स्थानपर पहुंचा जो वहांसे निकट ही था। वहां भी लोगोंने उसका वैसाही सन्मान किया। पर यहांकी नजरमे कुछ भेद था। अर्थात् पहलेवालोने तो अपनी कन्याएँ पेश की थीं पर यहांवालोने उनके इस कार्य्यको उनकी मूर्खता समझकर और यह विचारकर कि कन्याएँ तो अन्तमे अपने पतिके साथही चली जांयगी; अपनी विवाहिता स्त्रियोको पेश किया।

छोटे तिब्बतके अधिकारियोंमें जो काश्मीरकी सीमापर है कुछ वर्षोंसे बहुत झगड़े हो रहे थे। अन्तमे उनमेंसे एक व्यक्तिने जो राज्यका अधिकारी था, काशमीरके सूबेदारसे सहायताके लिये प्रार्थना की। उसपर शाहजहानने सहायताकी आज्ञा दे दी। निदान सूबेदारने उनपर चढ़ाई की। कुछ लोग तो मारे गये और कुछ भाग गये और वह व्यक्ति इस शर्तपर राज्यासनपर बैठाया गया कि प्रतिवर्ष कुछ कस्तूरी और शाल बनाने की कुछ ऊन कर स्वरूप दिया करे। यही कारण था कि उस व्यक्तिको यह सब चीजें लेकर औरंगजेबकी नजर करनेके लिये उपस्थित होना पड़ा था। पर उसकी इस तुच्छ नजर को देखकर मैं इसे बड़ा आदमी नहीं समझ सकता। हमारे नवाबने उसके देशका हाल जाननेकी इच्छासे उसे भोज दिया था। भोजमे उसने हमलोगोंसे कहा कि यह तिब्बत हमारी राजधानीकी पूर्व सीमा

पर है और उसकी लम्बाई नव्वे या एक सौ बीस मील है । हमारे देशमे बिल्लौर, कस्तूरी और ऊन होता है; मै कोई बड़ा अमीर नही हूं । लोगोका यह अनुमान कि मेरे देशमें सोनेकी खाने है, ठीक नहीं है । उसने यह भी कहाकि मेरे देशमें कहीं कहीं बढ़िया मेवे भी होते हैं विशेषकर कई प्रकारके तरबूज होते हैं । बरफकी अधिकताके कारण वहां बहुत जाडा पडता है । वहांके निवासी पहले मूर्तिपूजक थे पर अब मुसलमान हो गये है । मै भी मुसलमानही हूं । ” तिब्बतकी चढ़ाईके सम्बन्धमें उसने कहा था—“ सत्तरह अठारह वर्ष हुए शाहजहानने बड़े तिब्बतपर चढ़ाई करनेका विचार किया । उसकी फौजने सोलह दिनकी कठिन पहाड़ी लडाईके उपरान्त वहांके एक किले पर अपना दखल जमा लिया । तिब्बतवालोमे इतनी गड़बड़ी फैली थी कि यदि शाही फौज एक बड़ी नदीको जो मार्गमें पड़ती थी पार कर लेती तो निस्सन्देह तिब्बतवाले परास्त हो जाते । पर शरद ऋतु आजानेके कारण काश्मीरका सूबेदार जो इस फौजका अफसर था, बरफमें दबजानेके भयसे लौट आया; और उस किलेमें कुछ सिपाही इसलिये छोड़ आया कि बरसात ऋतुमे फिर चढ़ाई की जायगी । पर जो फौज किलेमें थी, वह या तो शत्रुओंके भयसे अथवा रसदकी कमीके कारण अचानक किलेसे निकल आई और इस प्रकार बडे तिब्बत को जिसपर बसन्त ऋतुमे चढ़ाई होनेवाली थी पराधीन होनेसे बचाया ।

अब भी तिब्बतवालोको औरंगजेबकी चढ़ाईका भय था इसलिये वहांके प्रधानने औरङ्गजेबके यहां पधारनेका हाल सुनकर उसकी सेवामे अपने दूतके हाथ स्फटिक, कस्तूरी, सङ्ग यशब और सुरागाय की सफेद बढ़ियादुमें जो उसी देशमें होता हैं और भारतमे प्रायः हाथियोंके कानोपर लटकाई जाती है, भेजी है । सङ्ग यशब जो इसबार पेश किया गया है, बहुत बड़ा और बहुमूल्य है । मोगल दरबारमें इन पत्थरोंकी बहुत कदर होती है । इसका रङ्ग कुछ हरा होता है और उसमें सफेद धारियां होतीहै । यह पत्थर इतना कड़ा होता है कि केवल हीरे

सेही काटा जा सकता है। प्याले तथा फूलदान इसी पत्थरके बनाये जाते हैं। मेरे पास भी इस पत्थरकी बनी हुई कई बढ़िया चीजें है जिनमे सुनहरे तार तथा जवाहिर जड़े हैं।

इस दूतके साथ तीन चार सवार और दश बारह लम्बे और दुबले प्यादे है जिनके मुंहपर चीनियों के समान ठोढ़ीपर कोई बाल नहीं है। ये लोग हमारे देशके मल्लाहोंकी तरह एक प्रकारकी लाल रङ्ग की टोपी पहने हुए थे। उनके बाकी पहनावेका अन्दाज भी आप इसी प्रकार लगा सकते हैं। मुझे भलीभांति स्मरण है कि उनमेसे केवल चार या पांच आदमियोके पास तलवारे थी और बाकी आदमियोंके पास लाठीतक न थी और वे बिलकुल खाली हाथ इस दूतके पीछे २ चला करते थे। उस व्यक्तिने औरङ्गजेबके सामने कहाकि तिब्बतकी राजधानीमे एक मसजिद बनवाई जायगी और उसमे मुसलमानोंके नियमानुसार नमाज पढ़ी जायगी। और वहांके सिक्कोंके एक ओर औरङ्गजेब का नाम खुदा रहेगा। यहभी निश्चय हुआ कि थोड़ीसी रकम वार्षिक कर स्वरूप दी जायगी। पर इसमे कुछ सन्देह नहीं कि औरङ्गजेबके काशमीरसे लौटतेही इन बातोंपर कुछभी ध्यान न दिया जायगा। और इन नियमोंका पालनभी उसी प्रकार किया जायगा जैसा शाहजहानके समयमे किया गया था।

इस दूतके साथ एक लामा वैद्यभी था। भारतवर्षके ब्राह्मणोंकी तरह तिब्बतमे धार्मिक विषयोमे लामाओंका प्रधानता है। पर लामाओंमे एक सबसे बड़ा गुरु भी होता है जिसे केवल लासा निवासी बल्कि सारे तातारी पूज्य मानते हैं और उसकी पूजा एक बड़े देवताके समान करते हैं। उक्त वैद्यके पास वैद्यक सम्बन्धी एक पुस्तक थी जिसे मैंने खरीदना चाहा पर उसने मुझे न दी। दूरसे उस पुस्तककी लिपि हमारी लिपिके समान दिखाई देती थी। मैंने उस लिपिके वर्णाक्षर लिखवाये जिसे उसने ऐसी कठिनता और देरसे लिखा कि मुझे विश्वास हो गया कि वह निरक्षर भट्टाचार्य था। बहुतही विचित्र बाते करते हुए उसने यह भी कहा था कि एक

वार जब बड़ा लामा बहुत वृद्ध हो गया और उसकी मृत्युका समय निकट आ पहुँचा तो उसने एक सभामे कहा कि मेरी आत्मा एक बालकके शरीरमे प्रवेश करेगी । जिस बालकके सम्बन्धमें उसने यह बात कही थी उसका पालन पोषण बड़ीही सावधानीसें किया गया; और जब वह छः सात वर्षका हुआ तो बहुतसी चीजें परीक्षार्थ उसके सामने उपस्थित की गई और उसने अपनी तथा पराई चीज़ोको अलग कर दिया। पहले तो मैंने यह अनुमान किया कि वह हँसी कर रहा है पर पीछे मालूम हुआ कि उसे इसकी सत्यता पर पूरा विश्वास था। एक दिन मैं उस दूतके मकानपर उस वैद्यसे मिलने गया और उसकी बाते समझनेके लिये अपने साथ एक काश्मीरी व्यापारीको लेता गया । यह तो केवल एक बहानाही था कि मैं उससे पशमीना खरीदना चाहता था पर मेरा वास्तविक तात्पर्य यह था कि मैं उसके देशकी बहुतसी बाते जिन्हे मै नही जानता, सुन लूँ। पर कोई विशेष बात मालूम न हुई। प्रायः वह यही कहता रहा कि हमारे देशमे वर्षमे पांच माससे अधिक समयतक बरफ पड़ती है, और तातारियोसे सदा लड़ाई छिड़ी रहती है। पर वह यह न बतला सका कि तातारियोसे उसका क्या अभिप्राय था। अन्तमे मुझे मालूम हो गया कि जो समय उससे बातचीत करनेमें लगा वह बिलकुलही व्यर्थ गया। क्योकि मैंने उसे अपने प्रश्नोके उत्तर देनेके लिये बिलकुल अयोग्य पाया।

बीस वर्ष पहले काश्मीरसे प्रतिवर्ष चीनकी ओर बड़े व्यापारी तिब्बतके पहाड़ों तथा तातार देशसे होकर जाया करते थे, और प्रायः तीन मासमे चीन पहुंच जाते थे। यह मार्ग बड़ाही कठिन है और इसमे ऐसी ऐसी तेज नदियां पार करनी पड़ती हैं कि जिनपरसे पार उतरना केवल उन बड़े बड़े रस्सोंके सहारे संभव है जो नदियों पर आरपार बड़े पत्थरोसे बंधे रहते हैं । ये व्यापारी चीनसे कस्तूरी चोबचीनी और ममीरा जो आंखोंके लिये बहुत उपयोगी और लाभदायक है, लाते थे । लौटते समय जब यह लोग तिब्बतसे

होकर आते थे तो वहांसे कस्तूरी स्फटिक, संग-यशव और विशेषकर भेड़ों तथा जंगली बकरियोंकी पशम लाते थे। पर जबसे शाहजहांने बड़े तिब्बतपर चढ़ाई की तबसे वहांके अधिकारीने आज्ञा दी है कि कोई काशमीरनिवासी उसके राज्यकी सीमामे पैरभी न रख सके। यही कारण है कि भारतवर्षके व्यापारी पटनासे होकर जो गङ्गाके किनारे बसा है सीधे लासा जा पहुंचते है और बड़े तिब्बतको बायें हाथ छोड़ देते हैं।

अब मै उस देशके सम्बन्धमे जिसे यहांवाले काशगर कहते हैं और जिसका नाम संभवतः हमारे भूगोलके नकशोंमें कासकर लिखा है वह सब बातें लिखूंगा जो मुझे उस देशके व्यापारियोंसे मालुम हुई हैं। वहांके निवासी यह सुनकर कि औरंगजेब काशमीरकी सैरको आया चाहता है बहुतसे युवक गुलाम तथा लौंडियां बेचनेको लाये हैं। उन लोगोंका कथन है कि काशकर काशमीरके पूर्व और थोड़ासा उत्तरको ओर झुकता हुआ है; ओर इन दोनों देशोंमे सीधा मार्ग बड़े तिब्बतमेंसे होकर है। पर अब उस मार्गके बन्द होनेके कारण हम लोग छोटे तिब्बतसे आये हैं। लौटते समय हम लोगोंके मार्गमे जो पहला नगर पड़ता है उसका नाम गौरटस है जो काशमीरके आधीन और उसकी सीमापर स्थित है और काशमीरसे चार दिनका रास्ता है। गौरटससे चलकर हम लोग आठ दिनमे इसकरडो पहुंचते हैं जो छोटे तिब्बतकी राजधानी है। ओर वहांसे दो दिनमें चोकर नामक स्थानमें पहुचते हैं जो छोटे तिब्बतमें हैं और उस नदीके किनारे बसा हुआ है जिसके जलके सम्बन्धमें यह बात प्रसिद्ध है कि वह औषधिके समान है। वहांसे पन्द्रह दिनमें एक बड़े बनमें पहुंचते हैं और फिर पन्द्रह दिनमे काशगर पहुंचते है। काशगर एक छोटासा नगर है। पहले उस प्रान्तका प्रधान वहां रहता था ! वह अब जोरकन्धमें रहता है. जो काशगरसे जरा उत्तरकी ओर वहांसे दस मंजिलपर है। उन व्यापारियोंने यह भी कहा था कि काश्मीरसे चीनतककी यात्रा दो मासमे समाप्त होती है। कश्मीरसे प्रतिवर्ष व्यापारी चीनको जाते

हैं। और वहांसे उपर्युक्त वस्तुएं लेकर आजवक देशमे होते हुये ईरानको चले जाते हैं। कोई कोई व्यापारी चीनसे पटना होते हुये भारतवर्षमे आते हैं। इन व्यापारियोसे मुझे यहभी मालुम हुआ कि काशगरसे चीन जानेके लिये एक और मार्गभी है। काशमीरसे काशगर जानेका मार्ग बहुतही खराब है और उसमे अनेक कठिनाइयोके अतिरिक्त एक ऐसा स्थानभी मिलता है कि जहां हर मौसिममे यात्रीको आध मीलतक बराबर बरफहीपर चलना पड़ता है।

महाशय, यह सब बाते मैंने ऐसे लोगोसे सुनी हैं जो अपनी मूर्खता और अयोग्यताके कारण दयाके पात्र हैं। इसलिये जो बातें ऐसे लोगोसे मालूम हो वे निःसन्देह अपूर्ण और गड़बड़ होंगी। इसके अतिरिक्त विदेशियोसे बातें करनेके लिये मुझे ऐसे अनुवादकोंसेभी काम लेना पड़ा था जिन्हे मेरे प्रश्नोके समझने तथा उनसे कहने तथा उनका उत्तर देनेमे बहुतही कठिनता हुआ करती है।

मान्शियर थेविनाटके पांच प्रश्न और उनके उत्तर।

इस अवसरपर मेरी इच्छा थी कि मैं अपने इस पत्रको जिसे एक पुस्तक कहना चाहिये समाप्त कर दूं। और देहली पहुंचनेतक आपसे विदा हो जाऊं। पर मेरा शौक मुझे चुप होनेकी आज्ञा नहीं देता। इस समय कुछ अवकाशभी है इसलिये मैं मिष्टर थेविनाटके पांच प्रश्नोंका उत्तर लिखना चाहता हूं; क्योंकि यह महाशय, बड़ेही विचारवान् हैं: और उन लोगोकी अपेक्षा जो देशोमें भ्रमण करते फिरते हैं आप पुस्तकोके अध्ययनसेही बहुतसी अच्छी और नई बातें मालुम कर लेते हैं। उनका पहला प्रश्न है कि क्या यह बात सच है कि यहूदी बहुत दिनोंसे काशमीरमें रहते हैं और कि उनके पास पवित्र धार्मिक पुस्तक है वा नहीं; और यदि है तो उनकी;

तथा हमारी पुस्तकमें भेद है या नहीं। दूसरे यह कि भारतवर्षकी वर्षाऋतुके सम्बन्धमें मुझे क्या क्या बाते मालुम हुई है। तीसरे यह कि पूर्वी समुद्रोंमे कुछ नीयत सम्यपर तथा एक विशेश प्रकारमे हवा तथा पानीका वहाव क्यों रहता है। चौथे यह कि क्या सच-मुचही बंगदेश ऐसाही सुन्दर और उपजाऊ है जैसा कि साधरणतः खयाल किया जाता है। पांचवें यह कि नील नदीकी बाढ़के सम्बन्ध मे प्राचीन समयसे जो बाते चली आती है, उनके सम्बन्धमें मेरी क्या सम्मति है।

पहले प्रश्नका उत्तर—जब मैं इस पहाड़ी देशमे यहूदियोंको देखता था तो मुझे बहुत ही प्रसन्नता होती थी। मेरा अभिप्राय: उन यहूदियोंसे है जिनका हाल जाननेकी यह महाशय इच्छा रखते हैं। अर्थात् उन यहूदियोसे जिनके पूर्वपुरुपोको सालमन्सर ने देशनिकाला दिया था। लेकिन आप उन्हे विश्वास दिलाइये कि यद्यपि कई कारणोंसे यह निश्चय होता है कि उनमेसे कई लोग इस देशमें आकर बसे थे लेकिन अब तो यहांके निवासी हिन्दू हैं या मुसल्मान। हां चीनमें उस जातिके लोग निवास करते हैं। क्योंकि मैंने जसविट वर्गके पादरीके पास जो कि देहली मे रहते हैं, एक जर्मन पादरीके हाथके पत्र देखे थे जो आज कल पेकिङ्गमें रहता है। उस पत्रमें पादरीने लिखा था कि "इस शहर (पेकिङ्ग) मे मुझसे यहूदियोसे बातचीत हुई थी। तौरेतादि ही उनकी धार्मिक पुस्तकें हैं। उनको ईसाकी मृत्यु का हाल कुछ मालुम नहीं। उन्होने यह इच्छा प्रकट की है कि यदि जास्विट वर्गके पादरी सूअरका गोश्त खाना छोड़ दे तो हम उन्हें अपना काकान ※ बनालें।" पर फिरभी काशमीरमें यहूदियोंके बहुत

※ 'काकान' शब्दका ठीक अर्थ नहीं लगता। पर सम्भव है कि यह 'खाकान' का अपभ्रंश हो, जिसका अर्थ है 'अगुआ।'

रा० चं० वर्म्मा।

से चिन्ह पाये जाते हैं। फिर पञ्जावसे बढ़कर जब मैंने इस देशमें प्रवेश किया तो उन्हे यहांके गांवोंके निवासियोंसे मिलता जुलता देखकर आश्चर्य हुआ। उनके आकृति तथा चालढाल पुरानी यहूदी जातियोंकीसी मालुम होती थी। मेरी इन वातोंको आप केवल अनुमानही न समझियेगा। इन देहातियोंके यहूदियोंसे मिलते जुलते होनेकी वात हमारे पादरी तथा और वहुतसे यूरोपियनोंने मेरी काश्मीर यात्रासे वहुत पहले लिखा है। दूसरा प्रमाण यह है कि इस नगरके मुसलमान निवासियोंमेंसे वहुतोंका नाम मूसा है। तीसरे यहां जनश्रुति है कि हजरत सुलेमान इस देशमे आये थे और वारामूलाके पहाड़को काटकर उन्होंनेही पानीके निकलनेका रास्ता वनाया था। चौथे यहांके लोग समझते हैं कि काशमीरहीमे हज़्रत मूसाका देहान्त हुआ था। और उनका मजार नगरसे तीन मीलपर है। पांचवे यह कि वहां ऊंचे पहाड़ोंपर एक छोटा और वहुत पुराना मकान बना है। साधारणतः लोगोंका विश्वास है कि उसे हज़्रत सुलेमानने वनवाया था। और इसी कारण उसे आजतक तख्त सुलेमान् कहते हैं।

महाशय! उपर्युक्त कारणोंसे आप समझ लेंगे कि मैं इस वातको अस्वीकार करना नहीं चाहता कि यहूदी काशमीरमें आकर न वसे थे। पर मैं समझता हूं कि पहले तो समय पाकर उनके धार्मिक विचार वदल गये। फिर धीरे धीरे वे मूर्तिपूजक वन गये, और फिर वहुतसे मूर्तिपूजकोंके समान उन्होंने मुसलमानी धर्म ग्रहण कर लिया। यह वात तो प्रमाणित ही है कि वहुतसे यहूदी ईरानमें लार तथा असफाहानमे वसे हुये हैं और भारतवर्षमें भी गोआ और कोचीन उनकी वस्ती है। मैं सुनता हूं कि एथियोपियामे यहूदियोंकी वहुत वड़ी वस्ती है जो अपनी वीरता तथा सामरिक योग्यताके कारण वहुत प्रसिद्ध है। और यदि मैं उनही दूतोंकी वातपर विश्वास कर लूं जो हालहीमे ऐथीयोपियाके वादशाहकी ओरसे औरंगजेवके दर्वारसे आये थे तो पंद्रह सोलह वर्ष हुये, वहां एक यहूदी ऐसा वीर

था कि जिसने एक छोटेसे पहाड़ी प्रान्तमें स्वाधीन राज्य स्थापित कर लेनेकी चेष्टा की थी।

दूसरे प्रश्नका उत्तर—भारतवर्षमें सालभरमे विशेषकर आठ मास इतनी कड़ी गर्मी पड़ती है कि भूमि जल जाती है और खेतीके योग्य नहीं रहती। पर ईश्वरने कृपाकर उसके लिये यह प्रबंध कर दिया है कि जुलाईमें जब गर्मी अधिकतासे पड़ने लगती है तो वर्षा आरम्भ हो जाती है और लगातार तीन मासतक जल बरसता रहता है और इस प्रकार गरमी भी कम हो जाती है और भूमि भी खेतीके योग्य हो जाती है। पर यह वर्षा इस प्रकार निश्चित रूपसे नहीं होती कि अमुक दिन अथवा अमुक सप्ताहमे अवश्य ही पानी बरसेगा। इसलिये भिन्न भिन्न स्थानोंमे विशेषकर देहलीमें जहां मैं बहुत दिनोंतक रहा हूं, मैंने देखा है कि एक वर्षकी वर्षा कभी दूसरे वर्षके बराबर नहीं होती। किसी किसी स्थानपर दो या तीन हफ्ते पहले या पीछे वर्षा प्रारंभ तथा समाप्त होती है और किसी वर्ष पहले वर्षकी अपेक्षा अधिक होती है। मैंने एक बार यह भी देखा है कि दो वर्षतक बिलकुल ही पानी नहीं बरसा और इस असाधारण अनावृष्टिका फल यह हुआ कि चारों ओर बीमारी और अकाल फैल गया। इस बातका भी ध्यान रखना चाहिये कि इस देशके भिन्न भिन्न प्रान्तोंमे वर्षा उतनी ही आगे या पीछे तथा न्यूनाधिक होती है जितना कि वे समुद्रके निकट या दूर होते हैं। अर्थात् बंगालमे कारोमंडलसे लेकर सरनदीप तक मालाबारकी अपेक्षा वर्षा एक मास पहले प्रारम्भ और समाप्त हो जाती है। बंगालमें चार मास तक बहुत वर्षा होती है और कभी कभी आठ आठ दिनतक बड़े जोरोंसे वर्षा होती है और थोड़ी देरके लिये भी बन्द नहीं होती; पर देहली और आगरेमें न तो इतनी वर्षाही होती है और न इतने अधिक समयतक रहती है। प्रायः दो तीन दिन योंही खाली गुजर जाते हैं या प्रातःकाल नौ दस बजेतक हलकी वर्षा होती है और कभी कभी बिलकुल ही नहीं होती। मैं इस बातको देखकर

बहुत ही आश्चर्यित हुआ कि भिन्न भिन्न प्रान्तोमें भिन्न भिन्न ओर से वर्षा आती है । जैसे देहली और उसके आसपास बंगालेकी ओर से. बंगाल और कारोमंडलमें दक्षिणकी ओरसे और मालाबारमें प्राय. पश्चिम की ओरसे वर्षा आती है । इसके अतिरिक्त मैंने एक और विचित्र वात यहां देखी जिसके सम्बन्धमे सारे भारतवासियों की एकही सम्मति है । अर्थात् जिस प्रकार गरमी पहले अथवा पीछे आरम्भ होती है उसी प्रकार वर्षा भी पहले अथवा पीछे होती है और जितनी अधिक वा कम गरमी पड़ती है उतनीही अधिक वा कम वर्षा भी होती है । इन सब वातोंको देखते हुए मै समझता हूं कि गरमी और हवाके कारण वर्षा होती है । आसपासके समुद्रोंकी वायु ठण्ढी और भारी होनेके कारण उसमें वाष्प सम्मिलित हो जाती है जो गरमीकी अधिकताके कारण पानीसे उठता है । जब आसपास की वायु उसे ढकेलती है तो वह वायु बादल बनकर उस स्थानपर पहुंचकर जहांकी अपेक्षा अधिक गरम और हलकी होती है उस जल को गिरा देती है और इस पानीका गिरना उतना ही कम वा अधिक होता है जितना कि गरमी कम वा अधिक पड़ती है । जो कारण मैंने लिखे हैं उनपर विचार करनेसे यह वात भी ध्यान देने योग्य है कि मालाबार तथा कारोमण्डलपर पहले वर्षा होनेका कारण यह है कि वहां गरमी पहले पड़ती है । इसके अतिरिक्त और भी कारण होंगे जिनकी जांच करना इस देशमे भ्रमण करनेपर कुछ कठिन नहीं है । आप जानते है कि देशके भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें समुद्र, पहाड़ो और जङ्गलोंसे भरे होने अथवा कम वा अधिक होनेके कारण गरमी शीघ्र अथवा विलम्बसे तथा कम और अधिक पड़ती है । वर्षाका भिन्न २ ओरसे आना कुछ आश्चर्यकी वात नहीं है । क्योंकि यह वात स्पष्ट ही है कि जिस ओर निकट समुद्र होगा उसी ओरसे वर्षा आवेगी । कारोमण्डलके निकटका समुद्र दक्षिण ओर है और मालाबारके निकट का समुद्र पश्चिमकी ओर वाबुलमन्दब, अरब और फारसकी खाड़ी तक है । यद्यपि देहलीके वादल पूरबकी ओरसे आते हैं पर फिर भी

मै अनुमान करता हूं कि उनकी उत्पत्ति दाक्षिणी समुद्रोंसे है और रास्तेमें ऐसे पहाड़ोंके होनेके कारण जिनकी वायु ठण्डी है अपना मार्ग बदल लेते हैं और ऐसे प्रान्तमें जाकर बरसते हैं जहांकी वायु हलकी होती है। एक और बात मैं लिखना भूल गया हूं। मेरा निजका अनुभव है कि देहलीमें जबतक बादल आकर पश्चिमकी ओर न जालें तबतक कभी अच्छी वर्षा नहीं होती। मानों वर्षाके लिये यह बात आवश्यक है कि पहले देहलीका पश्चिम भाग बादलो से भर जाय, और फिर वहां उसे कोई विशेष वायु रोककर उसे बरसनेके योग्य बना दे। ठीक वैसेही जैसे कि किसी पहाड़की हवा बादलोंको रोक देती है और वह बरसने लगते हैं।

तीसरे प्रश्नका उत्तर—अक्तूबर मासके प्रारम्भमें जब वर्षा ऋतुका अन्त हो जाता है तो दक्षिण समुद्र दक्षिणकी ओर बहता है और उत्तरकी ओरसे ठण्डी हवा चलती है जो चार पांच मासतक बराबर एकही ओर बहती रहती है। हां, कभी कभी एक आध दिनके लिये रुक जाती है अथवा उसका रुख बदल जाता है। इसके उपरान्त लगभग दो मासतक अनिश्चित रूपसे हवा चलती रहती है। इन दो मासोंके उपरान्त समुद्र फिर उत्तरकी ओर बहने लगता है और दाक्षिणी वायु चलने लगती है। चार पांच मासतक यही दशा रहती है और इसके उपरान्त फिर दो मासतक हवा निश्चित रूपसे चलती है। इन दो मासोमे समुद्र-यात्रा बहुत कठिन होती है। लेकिन साधारण ऋतुओंमे केवल दाक्षिणी वायुके अन्तिम समय में यह यात्रा बहुतही सुहावनी और सरल होती है। इसी लिये भारतवासियोंको बड़ी बड़ी समुद्री यात्राएं करनेपर आपको आश्चर्यित नहीं होना चाहिये। अर्थात् बङ्गालसे तनासरम, कोचीन, मलाका, स्याम, मेडागास्करकी ओर अथवा मच्छलीपटन, सरन द्वीप, मालद्वीप, मुखा, बन्दर अब्बासकी ओर अपने जहाज ले जाते हैं। लेकिन इतना होनेपर भी कभी कभी ऐसा होता है कि किसी स्थानपर नियत समयसे अधिक दिन ठहरनेपर विपरीत वायुके कारण

उनके जहाज नष्ट हो जाते हैं। कभी कभी युरोपियनोंको भी जो बड़े अनुभवी होते हैं यह कठिनता उठानी पड़ती है। दक्षिणी हवा चलने के उपरान्त दो मासतक जहाजोंका चलना बहुतही कठिन पड़ जाता है और इससे बढ़कर और कोई ऋतु भयङ्कर नहीं होती। यह बात लिखना मैं भूल गया कि दक्षिणी हवाके उपरान्त समुद्रके शान्त होने पर भी किनारोंपर पचास साठ मीलतक आन्धी चलती रहती है। इसलिये युरोपियनों तथा अन्य जहाजियोंको उचित है कि वे वर्षा ऋतुके समाप्त होनेपर भारतमें सूरत अथवा मछलीपटनके बन्दरोंपर न जायं; क्योंकि ऐसी अवस्थामें जहाजोंके भूमिसे टकरा जानेका भय है। मैं अपने निजके अनुभवसे कह सकता हूं कि भारतकी ऋतुएं इसी प्रकार बदलती हैं।

चौथे प्रश्नका उत्तर—सदासे मिस्र देश सबसे अच्छा और उपजाऊ समझा जाता है। किसी और देशमें इतनी अधिकताके साथ वह प्राकृतिक बातें नहीं हैं जो मिस्रमें हैं। लेकिन बङ्गदेशमें दो बार जानेसे मुझे जो अनुभव हुआ है उससे मुझे विश्वास है कि मिस्रकी जो प्रशंसा की गई है वह वास्तवमें बङ्गालकी होनी चाहिये। बङ्गालमें चावल इतनी अधिकतासे होता है कि न केवल आसपासके स्थानोंको बल्कि दूर दूरके देशोंको भी भेजा जाता है। गङ्गाके रास्ते पटनाको तथा समुद्रके मार्गसे मछलीपटन कारोमण्डल और विशेषतः सरन्द्वीप और मालद्वीपको भेजा जाता है। खांड़ भी वहां इसी प्रकार अधिकतासे होती है जो गोलकुण्डा और करनाटकतक जहां कि वह बहुत कम होती है, भेजी जाती है। और मुखा और बसरा होकर अरब तथा बन्दरअब्बाससे ईरानतक जाती है।

बङ्गालके मुरब्बे भी प्रसिद्ध हैं। विशेषकर उन स्थानोंका मुरब्बा और भी अच्छा होता है जहां पुर्त्तगालनिवासियोंकी बस्ती है। पुर्त्तगालवाले बहुत बढ़िया मुरब्बे बनाते और उसका बड़ा व्यापार करते हैं। वे लोग वैसेही बड़े बड़े चकोतरोंका जैसे इङ्गलैण्डमें होते

हैं, आम और अनानास जो भारतके दो प्रसिद्ध मेवे हैं, तथा आँवले नींबू और अदरकका मुरब्बा बनाते हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि बङ्गालमें मिस्रके बराबर गेहूं नहीं होती। लेकिन यह यहांके निवासियोंका कसूर है जो प्रायः चावल ही खाते हैं और रोटी बहुत कम। पर फिर भी देशकी आवश्यकताको देखते हुए गेहूं कम नहीं बोई जाती। डच, अङ्गरेज तथा पुर्त्तगीज आदि सस्ते दामोंपर गेहूं मोल लेकर बिस्कुट बनाते हैं। इस देशके निवासी तीन चार प्रकारकी तरकारियां, चावल और घी खाते हैं जिनपर दाम कम लगता है। यहां एक रुपयेमे बीससे अधिक मुर्गे मिल सकते हैं और बत्तखें तथा मुरगाबियां भी इतनी ही सस्ती हैं। भेड़ व बकरियां भी यहां अधिकतासे हैं। सूअर इतने सस्ते हैं कि वहांके पुर्त्तगीज प्रायः सूअरहीका मांस खाते हैं। सस्ता होनेके कारण अँगरेज और डच भी सूअरके मांसको नमक लगाकर अपने जहाजोंमें रख लेते हैं। इसके अतिरिक्त मछलियोंकी भी यहां कमी नहीं है। बंगालमें भोजनकी सामग्री बहुत ही सस्ती है। इसलिये बहुतसे अँगरेज, दोगले पुर्त्तगीज तथा अन्य ईसाई जिन्हें डचोंने भिन्न भिन्न उपनिवेशोंसे निकाल दिया है, इस देशमें आकर निवास करने लगे हैं। जेस्विट और अगास्टियन वर्गके ईसाइयोंने जिनकी यहां अधिकता है और जो अपने धर्मका प्रचार बड़ीही सरलता और स्वतन्त्रतासे कर सकते हैं, मुझे विश्वास दिलाया है कि केवल हुगलीमे आठ या नौ हजार ईसाई हैं। इस देशके अन्यान्य प्रान्तोंमें कोई पचीस हजार ईसाई निवास करते हैं। इस देशकी उपजाऊ शक्ति और स्त्रियोंकी सुन्दरतासे प्रसन्न होकर पुर्त्तगीज, डच और अँगरेज लोग प्रायः कहा करते हैं कि—'बंगालमें प्रवेश करनेके लिये तो सैकड़ो मार्ग हैं, पर निकलनेके लिये एक भी नहीं।'

उन व्यापारोंको देखते हुए जिनके कारण विदेशी किसी देशमें प्रवेश करते हैं, बङ्गालके बराबर और कोई दूसरा देश नहीं है। खांड़के अतिरिक्त इस देशमें रूई और रेशम इतनी अधिकतासे होता है कि

जिसके कारण इस देशको न केवल भारतका बल्कि सारे युरोपका गोदाम कहना चाहिये। कभी कभी मैं रूईके सब प्रकारके महीन, मोटे, सफेद और रङ्गीन कपड़ोके ढेरोको देखकर चकित होता था। डच लोग यह कपड़े भिन्न भिन्न देशोंको विशेषकर जापान और युरोप को भेजते है और यही हाल रेशम तथा रेशमी कपड़ोंका है। रूईका जितना कपड़ा यहाँसे मोगलराज्यके लाहौर और काबुलको जाता है उसका हिसाब लगाना असम्भव है।

वास्तवमें यहाँका रेशम उतना अच्छा नहीं होता जितना कि ईरान, शाम, सैदा और बैरूतका। हाँ यहाँका रेशम सस्ता बहुत होता है। और मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि यदि अच्छा रेशम छाँट लिया जाय और भलीभांति साफ किया जाय तो उससे बहुत अच्छा कपड़ा बन सकता है। डच लोगोके कासिमबाजरवाले कारखानेमे सात आठसौ आदमी काम करते हैं और लगभग उतने ही आदमी अंगरेजो तथा अन्य व्यापारियों के कारखानोमे काम करते है। बङ्गालमे शोरेकी भी बहुत बड़ी मण्डी है। यहांसे बहुतसा शोरा पटनेके मार्गसे विदेशको भेजा जाता है। डच और अङ्गरेज भी बहुतसा शोरा भारतसे युरोप तथा अन्य देशो को भेजते है। इस देशमे गोद, अफीम, मोम, एक विशेष प्रकारकी कस्तूरी, पीपल, तथा और और औषधियां उत्पन्न होती हैं। घी आप की दृष्टिमे बिलकुल ही तुच्छ पदार्थ है जो यहां अधिकतासे होता है और समुद्रके मार्गसे बाहर भेजा जाता है।

यहांकी वायु—विशेषकर समुद्रतटकी—विदेशियोंके लिये बहुत ही हानिकारक है। डच और अंङ्गरेज जब पहलेपहल इस देशमें पहुंचे तो अधिकतासे मरे थे। बालामोर नामक स्थानमें मैंने दो जहाजोंको देखा था जो डचोसे लड़ाई होनेके कारण एक वर्षतक यहीं ठहरे रहे थे, और जो जहाजियोके मरजानेके कारण इस योग्य न थे कि स्वदेशको जा सके। पर अब लोग यहांपर कम मरते हैं। जहाजके मालिक प्रायः इस बातका अधिक ध्यान रखते हैं कि उनके नौकर मदिराको 'पञ्च' बनाकर न पीएं। (मदिरामे नीबूका रस, जल

और जायफल डालकर पञ्च बनाया जाता है। यह पञ्च बहुत ही हानिकारक होता है।) वे अपने नौकरोंको देशी स्त्रियों अथवा मदिरा और तम्बाकू बेचनेवालोंके निकट नहीं जाने देते। लेकिन बढ़िया अङ्गूरी शराब और सब प्रकारकी कच्ची शीराजी शराब यदि आवश्यकतासे अधिक न पीएं तो यहांके जलवायुसे बहुत कुछ रक्षा हो सकती है।

इस देशकी सुन्दरताका हाल लिखते हुए यह भी कह देना उचित है कि गङ्गाके किनारे राजमहलसे समुद्रतक जो तीनसौ मील भूमि है उसमें शहरसे अनगिनत नहरें बड़े परिश्रमसे इसलिये काटी गई हैं कि व्यापारके लिये माल ले जानेमें सुविधा हो और गङ्गाजल जिसे भारतवासी और नदियोंके जलसे बहुत अच्छा और गुणकारी समझते हैं सरलतासे सब स्थानोंपर पहुंच सके। इन नहरोंके दोनों ओर छोटे छोटे नगर और गांव बसे हुए हैं जिनमें हिन्दुओंकी बहुत घनी बस्ती है। उनके आसपास चावल, ऊख, सरसों तिल और सागपातके बड़े बड़े खेत हैं। रेशमके कीड़ोंके खानेके लिये दो या तीन फरान्सीसी फुट ऊंचे शहतूतके पेड़ होते है।

बंगालको, भूमिके उन छोटे छोटे टुकडोंने जो गंगाकी नहरोंके बीचमें हैं, बहुत ही सुन्दर बना रखा है। इन टापुओंकी लम्बाई बराबर नहीं है। यह सब टुकड़े मेवे और अनन्नासके वृक्षोंसे भरे हुए हैं। उनमें हजारों नहरे इतनी दूरतक बहती रहती हैं कि दिखलाई नहीं देती और ऐसा मालूम होता है कि मानो वृक्षोंकी महरावोंके नीचे लम्बी लम्बी घासोंकी रविशें हैं।

समुद्रके तटपर जिन टापुओंमें पहले अराकाननिवासी डाका डाला करते थे, अब वहांके निवासियोंने उन टापुओंको छोड़ दिया है और वे बिलकुल उजाड पड़े हैं। उनमें आजकल हरिनों, जंगली सूअरों और शेरोंके अतिरिक्त जो कभी तैरकर एक टापूसे दूसरे टापूतक चले आते हैं, और कोई जीव नहीं रहता। छोटी नावोंमें बैठकर गंगा नदीको पार करनेके लिये मार्गमें उतरना उचित

नहीं। रातके समय नावको नदीके किनारे बांधनेके समय इस बातका भी ध्यान रखना चाहिये कि नाव किनारेसे कुछ दूर रहे । क्योंकि कभी कभी यात्री इन पशुओंका शिकार बन जाते हैं । कहते हैं कि जब लोग नावपर सोते रहते है तो हिंसक पशु आ जाते है और यदि सच हो तो इस देशके मल्लाहोंके कथनानुसार सबसे मोटे आदमियों को उठा ले जाते है ।

मुझे वह नौ दिनोंकी यात्रा याद है जो मैंने पीवलीसे हुगलीतक इन टापुओं और नहरोंमेंसे होते हुए की थी । उस यात्रामें कोई दिन ऐसा नहीं गुजरा जिस दिन कोई विचित्र घटना न हुई हो । जब हमारी सात डांडवाली नाव पीवली नदीसे बढ़कर दस पन्द्रह मील आगे बढ़ गई तो मैंने समुद्रको मछलियोंसे जो देखनेमें 'कार्प' के समान मालूम होती थी और जिनके पीछे डालफिन नामक मछलियां लगी थी, भरा हुआ पाया । मैंने बहुतसी मछलियां मुरदोंकी तरह पड़ी हुई देखीं और बहुतसी अधमरी । हम लोगोंने चौबीस मछलियां हाथोंसे पकड़ लीं। सबोंके मुंहसे एक फुकना निकला हुआ था जो उन्हें डूबने नहीं देता था। मै समझ न सका कि यह फुकना बाहर क्यो लटक रहा है। पर विचारनेसे मालूम हुआ कि कदाचित् इसका कारण यह हो कि डालफिनने बहुत देरतक इनका पीछा किया हो और अपने बचावके लिये ये इतना दौड़ी हो कि इनका फुकना लाल हो गया हो और झूलकर बाहर निकल पड़ा हो। मैंने सैकड़ों मल्लाहों से यह बात कही पर किसीने इसपर विश्वास नहीं किया । हां एक मल्लाहने मुझसे कहा था कि उसने चीनके किनारे कुछ मछलियोंका यही हाल देखा था और उनमेंसे कुछ मछलियां पकड़ भी ली थीं ।

दूसरे दिन हम लोग कुछ देर करके एक टापूमे पहुंचे और एक ऐसे स्थानपर जहां शेरका भय न था, उतर पड़े। मैंने अपने नौकरोंको दो मुर्गे और कुछ मछलियां तैयार करनेके लिये कहा और तैयार होने पर बड़े आनन्दसे भोजन करके मैंने कूच किया और अपने नौकरों को आज्ञा दी कि रात होनेतक चलते रहे क्योंकि रात हो जानेपर

और जायफल डालकर पञ्च बनाया जाता है। यह पञ्च बहुत ही हानिकारक होता है।) वे अपने नौकरोंको देशी स्त्रियों अथवा मदिरा और तम्बाकू बेचनेवालोंके निकट नहीं जाने देते। लेकिन बढ़िया अङ्गूरी शराब और सब प्रकारकी कच्ची शीराजी शराब यदि आवश्यकतासे अधिक न पीएं तो यहांके जलवायुसे बहुत कुछ रक्षा हो सकती है।

इस देशकी सुन्दरताका हाल लिखते हुए यह भी कह देना उचित है कि गङ्गाके किनारे राजमहलसे समुद्रतक जो तीनसौ मील भूमि है उसमें शहरसे अनगिनत नहरें बड़े परिश्रमसे इसलिये काटी गई हैं कि व्यापारके लिये माल ले जानेमें सुविधा हो और गङ्गाजल जिसे भारतवासी और नदियोंके जलसे बहुत अच्छा और गुणकारी समझते हैं सरलतासे सब स्थानोंपर पहुंच सके। इन नहरोंके दोनों ओर छोटे छोटे नगर और गांव बसे हुए हैं जिनमें हिन्दुओंकी बहुत घनी बस्ती है। उनके आसपास चावल, ऊख, सरसों तिल और सागपातके बड़े बड़े खेत हैं। रेशमके कीड़ोंके खानेके लिये दो या तीन फरान्सीसी फुट ऊंचे शहतूतके पेड़ होते हैं।

बंगालको, भूमिके उन छोटे छोटे टुकड़ोंने जो गंगाकी नहरोंके बीचमें हैं, बहुत ही सुन्दर बना रखा है। इन टापुओंकी लम्बाई बराबर नहीं है। यह सब टुकड़े मेवे और अनन्नासके वृक्षोंसे भरे हुए हैं। उनमें हजारों नहरें इतनी दूरतक बहती रहती हैं कि दिखलाई नहीं देती और ऐसा मालूम होता है कि मानो वृक्षोंकी महराबोंके नीचे लम्बी लम्बी वासोंकी गविशे हैं।

समुद्रके तटपर जिन टापुओंमें पहले अराकान-निवासी डाका डाला करते थे, अब वहांके निवासियोंने उन टापुओंको छोड़ दिया है और वे बिलकुल उजाड़ पड़े हैं। उनमें आजकल हरिनों, जंगली सुअरों और शेरोंके अतिरिक्त जो कभी तैरकर एक टापूसे दूसरे टापूतक चले आते हैं, और कोई जीव नहीं रहता। छोटी नावोंमें बैठकर गंगा नदीको पार करनेके लिये मार्गमें उतरना उचित

जा गिरते और वहीं मर जाते। क्योंकि हिन्दुस्थानी मल्लाहोंसे, जो कि बिलकुल भयभीत हो गये थे, हम लोगोंको कुछभी आशा न थी। वर्षा भी जोरोंसे हो रही थी, विजली रह रहकर चमकती थी और बादल गरजता था। उस रातको हमलोग अपने जीवनसे निराश हो चुके थे, पर बाल बाल बच गये और यात्राके बाकी दिन बहुत आनन्दसे बीते।

नवे दिन हम हुगली पहुंचे। उन सुन्दर दृश्योंके देखनेसे जो नहरके किनारे थे, मेरी तृप्ति नहीं होती थी। उस समय मेरा सन्दूक तथा सारे कपड़े भीग गये थे। मुरगियां और मछलियां मर चुकी थीं और सारे बिस्कुट तर हो गये थे।

पांचवें प्रश्नका उत्तर—मै नहीं कह सकता कि पांचवें प्रश्नके उत्तरसे आपका सन्तोष होगा या नही। मैने नील नदीकी बाढ़ दो बार देखी है; और उसके सम्बन्धमे विचार भी किया है। भारतमे भी मुझे कुछ ऐसी बातें मालूम हुई है जिनसे मुझे इस उत्तरके लिखनेमे बहुत कुछ सहायता मिली है। मै समझता हूं कि उस प्रसिद्ध व्यक्ति (थेविनट) को भी ऐसे मसाले न मिले होगे जिसने विना मिस्र देशको देखे, केवल पुस्तकावलोकन और अपनी योग्यतासे इस विषयपर एक विद्वत्तापूर्ण लेख लिखा है।

मै पहलेही लिख चुका हूं कि जब ऐथियोपियाके दो दूत देहली मे आये थे तो मेरे आका दानिशमन्दखां उन्हे प्रायः भोज दिया करते थे। मै भी उसमे योग दिया करता था। इस भोज देनेसे उनका अभिप्राय यह था कि अन्य देशोकी अवस्था और राजनीतिका हाल जाने। और और बातोंके अतिरिक्त मैंने उनसे नीलके सम्बन्ध में जिसे वह अबावाइल कहते हैं, बाते की थीं। उन्होंने कहा कि नीलके उत्पत्तिस्थानका हाल प्रायः सभी लोग जानते हैं। उन दोनों मेंसे एक दूतने एक मोगलके साथ जो भारतमे लौट आया था, उसके उत्पत्तिस्थानको देखा था। उन्होने कहा कि नील नदीका उद्गम एगोस देशमे है। पहले तो दो छोटे झरने बहकर तीस चालीस कदम

इन नहरोंमे मार्ग भूल जानेका भय था। सन्ध्याके समय हमलोग नहर छोड़कर एक सुरक्षित खाड़ीमे चले गये और नाव एक वृक्षके साथ किनारसे कुछ दूरपर बांध दी गई। रातके समय मैंने एक विचित्र बात देखी। अर्थात् मुझे चन्द्रमाका एक इन्द्रधनुप दिखलाई दिया। मैंने अपने सब साथियोको जगाकर दिखाया; वे लोग उसे देखकर बहुत चकित हुए। विशेषकर उन पुर्त्तगीजोंको औरभी आश्चर्य्य हुआ जिन्हे मैने अपने एक दोस्तके कहनेसे रक्षाके लिये अपने साथ ले लिया था। उन लोगोने ऐसा धनुप पहले कभी न देखा था। तीसरे दिन हम लोग उन नहरोंमें मार्ग भूल गये और यदि एक टापूमे कुछ नमक बनानेवाले पुर्त्तगीज हमे न मिलते तो हम लोगोका वहांसे निकलना कठिन हो जाता। उस रातको जबकि हमारी नाव एक सुरक्षित खाड़ीमे बन्धी हुई थी, मेरे पुर्त्तगीज साथियोंने जो रातभर उस विचित्र धनुपको देखनेके लिये जागते रहे थे मुझे जगाया और फिर एक वैसाही धनुप दिखलाया।

चौथे दिन सन्ध्या समय हम लोग नियमानुसार बड़ी नहरको छोड़कर एक खाड़ीमें आ ठहरे। वहां हमने एक असाधारण रात काटी। उस समय हवा बिलकुल न थी और गरमीके कारण सांस लेना कठिन था। आसपासकी झाड़ियोंमें बहुतसे जुगनू चमकते थे। उन झाड़ियोंमेंसे ठहर ठहरकर आगकी लपटे निकलती थीं। हमारे मल्लाह उनसे बहुत डरते थे;—उन्हे विश्वास था कि यह भूतों और प्रेतोंका काम है। हम लोगोंने यहां दो बातें बहुत विचित्र देखीं;—एक तो बड़ा आगका गोला, जो थोडी देरतक रहा और दूसरा एक छोटा आगका पेड़ जो पाव घंटेसे अधिक देरतक ठहरा रहा।

इस यात्राकी पांचवी रात बड़ी कठिनतासे बीती। यद्यपि हमारी नाव एक सुरक्षित स्थानमे बन्धी हुई थी, तौभी इतनी तेज आन्धी आई कि लंगरका रस्सा टूट गया। यदि मेरे दोनों पुर्त्तगीज साथी दो घंटे (जबतक वह आन्धी रही) तक पेडकी टहनियोंको अपने हाथोंसे न पकड़े रहते तो निस्सन्देह हमलोग बहकर बड़ी नहरमे

जाता। यद्यपि यह विचार असम्भव न था तौभी दु:साध्य था जिससे वह कार्य्यरूपमें परिणत न हुआ। यह सब बातें मुझे पहले ही मुखामें मालूम हो चुकी थीं। क्योंकि दस बारह व्यापारियों से जो एथियोपिया राज्यकी ओरसे यहां भारतीय जहाजोंसे लेन-देन करने आते थे, मुझे बातचीत करनेका अच्छा अवसर मिला था। यद्यपि मुझे उनसे बहुतसी उपयोगी बातें मालूम हुई थीं, क्योंकि उन्होंने भी नीलकी बाढ़का कारण उसके उद्गमके निकटकी वर्षाको बतलाया था, पर तौभी मैं अपने निजके अनुभवोंको उनकी अपेक्षा अधिक विश्वसनीय समझता हूं। अब आप समझ सकेंगे कि मिस्रनिवासियोंकी उस विषयमें जो सम्मति है वह बिलकुल ही निर्मूल है। बल्कि मैं समझता हूं कि वह केवल ऐसे लोगोंके गढ़े हुए किस्से हैं जो गरमीके दिनोंमें एक ऐसे देशमें जहां वर्षाका कोई नाम भी नहीं जानता नदीकी बाढ़ देखकर चकित हो जाते है।

वहांके निवासी कहते है कि नीलमें बाढ़ आनेके लिये एक विशेष दिन नियत है। दूसरे यह कि उसी दिनसे एक विशेष प्रकारकी ओस जिसे 'गौट' कहते हैं, पड़ने लगती है; जिसके पड़तेही प्लेग शान्त हो जाता है। तीसरे यह कि "गौट" पड़नेके उपरान्त जो लोग इस रोगसे ग्रसित होते है, वे बच जाते है। चौथे यह कि इस नदीकी बाढ़के कारण गुप्त है जिन्हे कोई नही जानता। पर मुझे निश्चय हो गया है कि नियत दिनसे एक मास पहलेही एक फरान्सीसी फुटसे अधिक जल चढ़ा हुआ था और उसका जल बहुत गन्दला हो रहा था। मैंने यह भी देखा है कि जब बाढ़ आती है तो नहरोंके खुलनेके पहले उसका जल एक या दो फिट चढ़ता है और फिर धीरे धीरे उतरने लगता है। यह चढ़ाव या उतार उतना ही होता है जितना कि उसके उद्गममे जल बरसता है। ठीक यही अवस्था हमारे देशमे ल्वायर नदीकी है जो उन पहाड़ोकी वर्षाके अनुसार ही चढ़ती और उतरती है जहांसे कि वह निकलता है।

इसी नियत दिनसे प्राय: एक मास पहले डेमेगने कायरोकी

लम्बी एक झील बनती है और फिर उसमेंसे निकलकर यह नदी बहुत बढ़ जाती है। यह नदी इतना बल खाकर गई है कि जमीनका एक बड़ा भाग टापू बन गया है। इसके उपरान्त बड़ी बड़ी चट्टानोपरसे उतरकर एक बड़ी झीलमें जो डेम्बियामे,—ऐथियोपियाकी राजधानी गोण्डारसे तीन मंजिलपर है, जाकर गिरती है। इस झीलसे होकर और उसका सारा पानी लेकर वह आगेकी ओर बढ़ती है और फिजी देशसे होती हुई मिस्रके मैदानोंमें आ गिरती है। जब ये लोग नीलके उद्गमका हाल बता चुके तो मैंने पूछा कि डेम्बिया बाबुलमन्दबसे किस ओर है और अफरीकाके किस भागमें स्थित है। लेकिन वे इसके अतिरिक्त और कुछ उत्तर न दे सके कि पश्चिम की ओर है। इन दूतोंके कथनानुसार नीलका उत्पत्तिस्थान भूमध्य रेखाके उत्तरकी ओर है न कि दक्षिणकी ओर जैसा कि क्लाडिमसने लिखा है; और नकशोंमें उत्त्पतिस्थान भूमध्य रेखाके दक्षिण ओर बतलाया गया है।

मैंने उनसे प्रश्न किया कि एथियोपियामें वर्षा कब होती है और भारतकी तरह निश्चित समयपर होती है या नहीं। उन्होंने उत्तर दिया कि स्वाकन, आरकीको और बाबुलमन्दबमें मुखासे अधिक वर्षा नहीं होती जो इस समुद्रकी दूसरी ओर यमनमें है। डेम्बियाके एगोस नामक प्रान्तमें गरमीके समय दो मासतक जबकि भारतमें भी जल गिरता है, वर्षा होती है। मैं समझता हूं कि ठीक इसी समय नीलमें बाढ़ आती है। इन दूतोंने दृढ़तापूर्वक कहा था कि नीलकी बाढ़ का मुख्य कारण एथियोपियाकी वर्षा है। मिस्रके उपजाऊ होनेका कारण वह चिकनी मट्टी है जो नील नदी अपने साथ ले आती है। उन्होंने कहा कि इन्हीं कारणोंसे एथियोपियाधीशको मिस्रवालोंसे कर लेनेका अधिकार था। जब मिस्रमें मुसलमानोंका अधिकार हुआ और वहांकी ईसाई प्रजापर अत्याचार हुए तो एथियोपियाके बादशाहकी इच्छा हुई कि नीलका रुख फेर दिया जाय। इस उपायसे सम्भव था कि मिस्रकी सारी उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाती और सारा देश उजड़

छोटे टापू समय पाकर बन गये हैं, और अब द्वीपमें मिल गये हैं, मुझे नीलके मुहानेका स्मरण दिलाते हैं, जब मैं मिस्रमें था तो प्राकृतिक दृश्योंको देखकर मुझे ध्यान हुआ कि अरस्तूका यह कथन कि—'नील नदीसे मिस्रदेश बना है' बङ्गालके लिये भी उपयुक्त है। इन दोनों नदियोंमे भेद केवल इतनाही है कि गंगा नदी नीलकी अपेक्षा बहुत बड़ी है और इसी लिये वह नीलकी अपेक्षा अधिक मट्टी अपने साथ ले जाती है। यही कारण है कि वहां वृक्ष आदि बिलकुल नहीं हैं और गंगाके टापू चार महीनेकी लगातार वर्षाके कारण, वृक्षोंसे सदा लदे रहते है।

खेतीके लिये जो नहरें नीलसे काटी जाती हैं, अधिक वर्षाके कारण बंगालमें इनकी कोई आवश्यकता नहीं है। मिस्र और बंगाल मे भेद यह है कि मिस्रमें समुद्रके किनारे कुछ हलकी वर्षा होती है और बाकी सारे मिस्रमे कोई वर्षाका नाम भी नहीं जानता और भारतमे जहां बहुतसी नदियां भी हैं नियत समयपर वर्षा हुआ करती है। पर कभी कभी भारतमें भी वर्षाका अभाव हो जाता है। सिन्ध नदीके मुहानेपर सिन्ध देशमे जो फारसकी खाड़ीकी ओर है बरसोंतक बिलकुल वर्षा नहीं होती और उस समय यह देश मिस्रके समान नहरोंसे सींचा जाता है।

॥ समाप्त ॥



श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस बनारस।

ओर आते हुए सवेरे हमारे कपड़े ओससे भीग गये थे। उस "गौट" के गिरनेके आठ दस दिन बाद रेसिया नामक स्थानमें मुझे अपने वाइस कौन्सिल मानशियर डी वरमनके साथ भोजन करनेका अवसर मिला था। उपस्थित व्यक्तियोंमेसे तीनको उसी दिन प्लेग हुआ और वे आठवें दिन मर गये। और तीसरा रोगी (जो स्वयं वरमन साहब ही थे) भी मर जाता यदि मैं उस ओसपर निर्भर रहकर उनका फोड़ा न चीर डालता और उन्हें दवा न देता। इस अवसरपर स्वयं मुझे यह बीमारी हो गई और यदि मै उसी समय बटर आफ एन्टीमनी का उपयोग न करता तो मैं भी मर जाता। और यह बात असत्य प्रमाणित हो जाती कि 'गौट' गिरनेके उपरान्त मनुष्य प्लेगसे नहीं मर सकता है। इस के लानेवाली औषधिने जो मैंने बीमारीके आरम्भ हीमे पी ली थी, अपना अच्छा प्रभाव दिखलाया और मैं तीन चार दिनमे अच्छा हो गया।

मैं इस बातको अस्वीकार नहीं कर सकता कि "गौट" गिरनेके उपरान्त रोगीके मरनेका भय नहीं रहता। पर मैं, समझता हूं कि 'गौट' गिरनेके कारण यह भय बहुत कुछ जाता रहता है; बल्कि मैं समझता हूं कि बीमारीके कम होनेका कारण वह गरमी है जो पहलेकी अपेक्षा बढ़ जाती है जिससे सब विषैले पदार्थ पसीनेके साथ शरीरसे बाहर निकल पड़ते हैं।

मैंने एक बार सोन्नारके कुछ हबशियोसे जो नौकरीके लिये कायरो जाते थे और जो नीलके किनारेके पहाड़ी प्रान्तोंमें रहते हैं, वर्षाके सम्बन्धमे प्रश्न किया था; उन्होंने उत्तर दिया कि जब मिस्रमें बाढ़ आती है तो हमारे देशमे भी नदीका जल बढ़ जाता है। इस बाढ़का कारण न केवल वही बरसात है जो हमारे देशमें होती है, बल्कि हमारे देशके दक्षिण ओर एथियोपियाकी वर्षासे भी बहुत कुछ सहायता मिलती है।

जब मैं बंगालमें था तो यह विचार मेरे दिलमें उठे थे। उस समय मैंने लिखा था—'गंगा नदीके मुहानोंपर बंगालकी खाड़ीमें जो छोटे

सूचीपत्र ।



नये नये उपन्यास ।

मोतीमहल दो भाग	१)
जहर का प्याला	||।)
राजदुलारी	|||)
सूर्यकांता चारभाग	||)
नवाब नंदनी दो भाग	१।)
मूर्ख और बुद्धिमान	।)
मदन मोहनी	||=)
गौहरजान	।-)
श्रीकृष्ण	||)
वारन हेस्टिंग	१)
देवी जाकिया	||)
मलका चांदबीबी ४ भाग	२)
दो नकाबपोश ९ भाग	२||=)
भारतका इतिहास	≡)
सिक्खों का साहस	=)
कामिनी	-)
जवाहरात की पेटी	-)
लक्ष्मी देवी	।)

पुस्तक मिलने का पता —

गंगाप्रसाद अरोड़ा

कल्पतरु प्रेस बनारस सिटी ।